

अथ शार्ङ्गधरसंहितायाः सूचीपत्रम्



विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
श्रीमद्भलाचरण	१	प्रयोगके पहले औषधों के नाम	
अन्य ग्रन्थों से इसकी उत्तमता		विशिष्ट प्रयोगों का धरना	३
व प्रमाणता	२	इति भागध परिभाषा ॥	
परीक्षा के अनन्तर औषध		अथ दलिंगपरिभाषा ॥	
करनेकी अनुज्ञा	२	जाने के लिये पहले कहीं हुई	
औषधियों का प्रभाव तथा		कलिङ्गपरिभाषा	७
प्रयोजन	२	कलिङ्गपरिभाषा का मान	७
वैद्यकादि अविच्छेद प्रयोगों के		औषधों के योगायोग का	
कथन व संक्षेप करने से ग्रन्थ		विचार	८
का मोहात्म्य	३	गिलोयआदि मीठी द्रव्यों का	
प्रथमखण्ड की अनुक्रमणिका ...	३	सदैव ग्रहण करना	७
मध्यखण्डकी	३	साधारण औषधका योग ...	७
उत्तरखण्डकी	३	अनुक्तकालादिकों का योग ..	७
संहिता की निरुक्ति व श्लोकों		योगमें फिर कष्ट द्रव्यका मान	७
की गणना	४	चूर्णादिकों में फिस चन्दन का	
औषधों की तौलकी परिभाषा		ग्रहण कराना	८
भागध परिभाषा	४	सिद्धकी औषधों के समय ची-	
त्रसरेणुका प्रमाण	४	तजानेपर हीनता व शुष्यता	
परमाणुके लक्षण	४	का कथन	८
मश्या, शाण और फोल का मशन		रोगों के लिये उक्तानुक्त का	
कर्प, अर्द्धपल व पल का मान		कथन	८
प्रकृति से ले मानिका पर्यन्त		औषधोंके लानेकेलिये समयवि-	
की संज्ञा	५	कथन	८
प्रस्थ, आड़क और द्रोण का		औषध लाने का विधान	९
मान	५	चुरे स्थान में उपजी औषध	
द्रोणी, रासी, भार और तुला		का मान	९
का मान	६	औषध ग्रहण का चाल	९
सर्वमानयोधक, श्लोकका कथन		औषधोंके घाला अगोंका कथन	९
पतले	६	औषधोंके प्रसिद्ध जगोंका धरण	९
... ..	६	इति शार्ङ्गधरप्रथमाध्यायः ॥	
... ..	६		

विषया	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
अथ द्वितीयाध्यायः ॥		इतः तृतीयाध्यायः ॥	
प्रातः कालभौषध, वषाय, स्वरस, फलक, काढ़ा, फाण्ट और हिमके भक्षण का कथन ..	१०	दूत तथा वैद्यके शूद्रन ..	१५
भौषध भक्षणके पांचकाल ...	१०	त्रिक्रिस्तायोग्य रोगोंके लक्षण	१६
प्रथम, द्वितीय और तृतीयकाल	१०	वैद्यलक्षण, दुस्स्वप्न व दुस्स्वप्न का परिहार ...	१७
चतुर्थ व पञ्चमकाल ..	११	सुस्वप्नका विचार ...	१८
द्रव्यों में रसादिकों की विशेष-पस्था ...	११	अथ चतुर्थीध्यायः ॥	
मधुवादि, पहरसों का स्वरूप रसोंकी उत्पत्ति व गुणों का स्वरूप ...	११	दोषन व पाचन भौषध ...	
वीर्य, विपाक और प्रभाय का स्वरूप ..	१२	सशमन, अनुलोमन व न्यस्तन भौषध ...	
रसादिकों की उत्कृष्टता व उन के उदाहरण ..	१२	भेदन, रचन, घमन, संशोधन, छेदन और छेदन भौषध	
घानादि द्रोणोंका सचय, प्रकोप व उपशमन ...	१३	प्राण, स्तम्भन व रसायन भौषध	
क्रतुओं के नाम व क्रतुभेद से पातादिकों का सचय, प्रकोप व उपशमन ...	१३	घाजीकरण, धातुवृद्धिकरण व धातु चैतन्यकरण भौषध ...	२०
यमद्वैष्टासजा में लघु भोजन का निरूपण ..	१३	वैद्यप्रवर्तन भौषध विशेष व सूदन भौषध ..	२०
प्रातः पित्त व कफ का प्रकोप व उपशमन ..	१४	व्यवायी, विकारायी व मदशारी भौषध ..	२१
इति द्वितीयाध्यायः ॥		शान्तारी, प्रमायी व अभिव्यन्दी के लक्षण	२१
		इति चतुर्थीध्यायः ॥	
		अथ पञ्चमाध्यायः ॥	
अथ तृतीयाध्यायः ॥		शारीरिकव्यवस्था ..	२२
नाड़ीपरीक्षा ...	१४	शरीर की सात बलाओं का निरूपण ...	२२
दोषोंके अपने रूपकी चेष्टा	१४	रसादिबाट धातुओंका विवरण	२३
साम्रपात व द्विदोषकी नाड़ी	१४	धातुओं के मूल व उपधातुओं का निरूपण ...	२३
असाध्य नाड़ी का लक्षण ...	१५	सप्त त्वचा व तीनों दोषों का कथन ...	२४
उपरादिकी नाड़ीके लक्षण	१५	प्रधानता से धातुका स्वरूप	२४
उत्तमप्रकृति के लक्षण व दूत परीक्षण ..	१५	पित्तका विवरण ...	२५

विषयः	पृष्ठाङ्कः
कफका विवरण ...	२६
स्नायुकार्य तथा सन्धिलक्षण...	२६
हृदियों व ममोंके कार्य ...	२६
शिराओं व धमनियों के कार्य ...	२७
पेशी, कण्ठराव छेदों का विवरण,	२७
लक्षण...	२७
चूक, घृषण व लिङ्गका लक्षण ...	२८
हृदय के लक्षण व देहपुष्ट्यर्थ	
व्यापार ...	२८
प्राणवायुका व्यापार ..	२८
आयु व मरण के लक्षण	२८
अवार्य मृत्युको कहकर रोगों का	
निवारण...	२८
साध्यव्याधि का उपाय न कर	
दूसरी अवस्था में जाना ...	२८
दोषोंकी विषम व समअवस्था	
सृष्टिक्रम का निरूपण ..	२९
परमात्मा का प्रकृति द्वारा विश्व	
रचना ...	२९
एकसे कार्यकी उत्पत्ति का क्रम	
तीन प्रकार अहङ्कार के कर्म ...	२९
तन्मात्राओंकी उत्पत्ति व तन्माना	
पञ्चकों का विशेष ...	३०
पृथिव्यादि पञ्चभूतों की उत्पत्ति	
व इन्द्रियों के विषय ...	३०
मूल प्रकृति के नाम व चौबीस	
तत्त्वों का पृथक्करण, षोडशवि-	
कार तथा चौबीसतत्त्वराशि	३०
जीवके बन्धन, काम, क्रोध, लोभ,	
मोह और अहङ्कार ...	३१
बन्धन, अबन्धन, व्याधि और	
आरोग्य के लक्षण ...	३१

इति पञ्चमाध्यायः ॥

विषयः पृष्ठाङ्कः
अथ षष्ठाध्यायः ॥

आहार की गति व अवस्था ...	३१
उक्त आहार की दो अवस्था ...	३१
रस और आम के वृत्त्य ...	३२
आहार का सार कहकर ति-	
स्तार का कथन ...	३२
मलका अधोगमन करना ...	३२
कार्यत्व से सारभूतरस का भी	
स्थानान्तर में जाना ...	३२
रुधिर की प्रधानता ...	३२
रसादि धातुओं का उत्पत्तिक्रम	३२
गर्भोत्पत्ति व पुत्र तथा कन्याके	
जनने का कारण ...	३२
बालकों की मात्राओं का माग	३३
अज्ञानादि लगाने का समय, व-	
मन व विरेचनादि कर्म ...	३३
बाल्यादि दश पदार्थों की हानि	३३
घातप्रकृति, पित्तप्रकृति तथा	
कफप्रकृति के लक्षण ...	३४
द्वित्रिदोषज प्रकृति के लक्षण	३४
निद्रादिकों की उत्पत्ति तथा	
ग्लानि व बालस्य के लक्षण	३४
जंभाई, छींक और डकार के	
लक्षण ...	३५
इति षष्ठाध्यायः ॥	

अथ सप्तमाध्यायः ॥

त्वरादि रोगोंकी गणना ...	३६
अतीक्षार व संग्रहणीरोग ...	३६
प्रवाहिका व अजीर्णरोग ..	३७
अलसक व विरूच्यादिरोग	३८
धवाक्षार, चर्मकाल व वृमिरोग	३९
पाण्डुरोग, कामला, पुम्भकाम	
ला, हलीमक व रकपित्तरोग	४०

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
फास (खांसी) व क्षीररोग ...	४०	वीसभांति के कफरोग ...	६४
शोथ व द्रनासरोग ...	४१	रक्तरोग तथा शोथरोग ...	६५
हिचकी व जठराग्निविषकार ...	४१	दशभांति के दन्तरोग व तेरह	
अरोचक व छटिरोम ...	४२	प्रकार के दन्तमूलरोग ...	६५
स्वरभेद, कृष्णा, मूच्छी, घ्रम, निद्रा, वन्द्रा और संम्यासरोग तथा म्दरोग ...	४२	जिह्वा, तालु और गले के रोग ...	६६
मदात्यय, दाह, उन्माद व भूतो- न्मादरोग ...	४३	आठभांति मुखान्तर्गतरोग ...	६७
✓अपस्मार (मिरगी) व आमघात रोग तथा शूलरोग ...	४४	अठारह भांति के कर्णरोग ...	६७
परिणाम शूल व उदावर्तरोग ...	४५	सातभांति के कर्णपालीरोग ...	६८
जानाह, प्रत्यानाह, उरोग्रह और उदररोग ...	४६	कर्णमूल व नासारोग ...	६९
अष्टविध शुक्ल (गोला) रोग ...	४६	दशभांति के शिरीरोग ...	६९
तेरहप्रकार का सूनाघात व सूत्र- कृच्छररोग ...	४७	नयनभांति के कपालरोग ...	७०
✓पथरीरोग तथा प्रमेहरोग ...	४८	चौरानये भांति के नेत्ररोग ...	७०
एक प्रकारका सोमरोग ...	४८	श्रीवीस धर्मरोग ...	७१
✓प्रमेहपिटिका, मेदोरोग व शोथ रोग ...	४९	नेत्रसन्धिगत व नेत्रशुद्ध्युत्तरोग	७१
वृद्धि, अण्डवृद्धि, गण्डमाला, मलगण्ड व अपचीरोग ...	५०	नेत्रके कालेयवृले के रोग ...	७१
अर्बुद, इलीपद और विद्रधिरोम	५१	छ भांतिका फाचबिन्दुरोग ...	७२
घन्ह प्रकार के प्रणरोग, वाग- न्तुन प्रणरोग, कोष्ठ तथा न- स्थिभंगरोग ...	५२	तिमिर, लिंगनाश, दृष्टि, अभि- चन्द, अधिमन्थ, सर्वाक्षि रोग, पहरोग और शुक्रदोष	७४
अग्निवृग्ध, नाड़ीव्रण, भगन्दर व उपश्ररोग ...	५३	क्षिर्यो के आर्तय व प्रदररोग	७३
मूत्ररोग तथा कुष्ठरोग ...	५४	वीसभांति के योनिरोग ...	७३
कुष्ठ, विरुकोदक तथा मसुरिका रोग ...	५५	योनिकन्दरोग तथा गर्भकेरोग	७३
नवप्रकार का विसर्परोग ...	५७	स्तनरोग, रीदोप, मसृतिरोग तथा घालरोग ...	७४
श्रीतपित्त व अम्लपित्तरोग ...	५८	घारहभांति के चाटग्रह ...	७६
घातरक्त व घातजरोमगणना ...	६०	अजुकरोगों का संग्रह ...	७७
व्यकलीस भांति के पिचरोग ...	६३	पञ्चकर्मों के मिथ्यादि धोग से भावीरोग या स्नेहादिकों से	
		उपजे रोग ...	७७
		श्रीतादिकों से उपजेरोग ...	७७
		रथावर, जंगम व वृत्रिमभेद से	
		तीनभांति का विषरोग ...	७८
		विषभेद, अन्यविषभेद, उपद्रव और आगन्तुक भेद ...	७९
		इति सप्तमाध्यायः ॥ (इति प्रथमखण्डः)	

विषयः	पृष्ठाङ्काः	विषयः	पृष्ठाङ्काः
अथ मध्यखण्डः ॥		अथ द्वितीयाध्यायः ॥	
स्वरसादि पञ्चकपाय ...	८०	आमनातपरदूसरासौंठिपुटपाक	८५
स्वरस व स्वरसकी दूसरीविधि	८०	बनासीर पर खुरन पुटपाक ..	८५
स्वरस की तृतीयाविधि व उसमें		हृदयशूलपर हरिणशुक्रपुटपाक	८५
औषध मिलाने का मान ...	८०	इति प्रथमाध्यायः ॥	
अमेहपर अमृतादिस्वरस ..	८०	अथ द्वितीयाध्यायः ॥	
रक्तपित्तादिकों पर अडूसादि		काथ (काढ़ा) बनाने का	
काथ	८१	विधान	८५
कामलापर त्रिकलादि स्वरस ...	८१	काढ़े में खांड़, मिथी और शहद	
धिपमज्वरपर तुलस्यादिस्वरस	८१	ढालने का प्रमाण ...	८५
रक्तातिसारपर जम्बूवादिस्वरस	८१	काढ़े में जीरादि व दूधआदि	
अतीसार पर धवूरादिस्वरस ...	८१	मिलाने का मान	८५
अण्डकोश व द्वास पर आर्द्रक		सर्वज्वरों पर गुडूच्यादि काथ	८६
स्वरस	८१	घातज्वरपर गिलोयादिकाथ ..	८६
पार्श्यादि शूलों पर यिजौरे का		घातज्वरपर शालपण्यादिकाथ	८६
स्वरस	८१	घातज्वर पर कादमर्यादिकाथ	८६
पित्तशूल पर शतायरीस्वरस ...	८२	वित्तज्वर पर कट्फलादिकाथ	८६
गण्डमाला व अपची पर गोरख-		पित्तज्वरपर पित्तपापरादिकाथ	८६
मुण्डीका स्वरस	८२	वित्तज्वर पर द्राक्षादिकाथ ...	८६
खुर्योयर्तादि पर मुण्डीस्वरस	८२	कफज्वर पर यिजौरा पाचन ...	८७
उन्माद पर घ्राह्यादिस्वरस ...	८२	कफज्वर पर चिरायतादिकाथ	८७
उन्मादपर श्वेत कृष्णण्डस्वरस	८२	कफज्वर पर पटौलादिकाथ ..	८७
घावपर परियारा स्वरस ...	८२	घातज्वरपर पित्तपापरादिकाथ	८७
पुटपाकरस का विधान ...	८२	कफघातज्वरपरछोटीभटव देया	
सूर्यातीसारपर कुरैयापुटपाक	८३	काथ	८७
घावल धोवन की विधि ...	८३	घात कफज्वरपरअमलतासादि	
अरलूपुटपाक	८३	काथ	८७
न्यग्रोधादि व दाहिमादिपुटपाक	८३	अमृताष्टक काथ	८८
उवाफीपर यिजौरिका पुटपाक ..	८३	सप्त ज्वरोंपर भटकटैयादिकाथ	८८
रक्तपित्त व कासज्वरपर अडूसा		घातकफपर दशमूलकाथ ...	८८
पुटपाक	८४	सन्निपातज्वरपर हरीतकीकाथ	८८
कास द्वास पर भटकटैया का		सन्निपातादिकों पर अष्टादशाङ्ग	
पुटपाक	८४	काथ	८९
पुराने शामातीसारपर सौंठि		कासादिकोंपर कायफरादिकाथ	८९
पुटपाक	८४	गुडूच्यादि काथ तथा पर्पटादि	
		काथ	८९

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
सर्षपशीतज्वरपर भटकट्टैयाकाथ	८९	कफशूलपर परण्डमूलादिफाथ	९५
विषमज्वर पर मोथाकाथ ...	८९	हृत्पररोग पर दशमूलादिफाथ	९५
नित्यधातेज्वर पर पटोलादि काथ	९०	सूत्रकृच्छ्रपर अर्जुनादि फाथ...	९५
सृतीयज्वरपर गुडूच्यादिफाथ .	९०	अश्मरी (पथरी) व शर्करादि पर पलादिफाथ... ..	९५
चातुर्थिकज्वर पर देवदाहकाथ	९०	मूत्रकृच्छ्र पर गोभुरादिफाथ...	९६
ज्वरातीसार परसुडूच्यादि फाथ	९०	सूत्रकृच्छ्र पर त्रिफलादिफाथ ..	९६
ज्वरातीसार पर नागरादिफाथ	९०	प्रमेह पर त्रिफलादिफाथ ...	९६
आमशूल पर धान्यपञ्चदशकाथ	९०	प्रदरपर दारुहल्दीकाथ ...	९६
सरक्तातीसार आमातीसार पर कुरैया काथ	९१	क्षतमणादिपर चटादिफाथ ...	९६
सर्वातीसार पर कुटजाष्टक फाथ	९१	मेदोरोग पर पिलवादिफाथ ...	९७
अतीसार पर नेत्रमालादि फाथ	९१	पुनस्त्रिफलादिफाथ ...	९७
वालकों के सब अतीसारों पर घबफूलादि फाथ	९१	उदररोग पर चच्यादिफाथ ...	९७
संमहणी पर चनउर्दीकाथ	९१	पेट फूलनेपर गदापुरैनादिफाथ	९७
आमासक ग्रहणीपर चतुर्भद्रक काथ	९१	पिलही पर हरीतक्यादिफाथ...	९७
सर्वातीसारपर इन्द्रयनादि फाथ	९२	शोथपर गदापुरैनादिफाथ ...	९७
रुमियों पर त्रिफलादिफाथ, ..	९२	अण्डबुद्धिशोथ पर त्रिफलादि काथ	९७
कामला पर त्रिफलादि फाथ ...	९२	अन्त्रबुद्धि पर रोस्नादिफाथ...	९८
शोथादिक, फास व पाण्डु पर गदापुरैनाकाथ	९२	गण्डमाळा पर कांबनारोंदि काथ	९८
रक्तपित्त पर रूसादिफाथ ...	९२	फालपावपर सहोडादि फाथ	९८
फासज्वर पर वासादिफाथ ...	९२	अन्तर्दिश्रधि पर गदापुरैनादि काथ	९८
फासदमास पर शुद्रादिफाथ ...	९३	वरणादिगणकाथ	९८
द्विचकी पर मेघझीकाथ ...	९३	भगन्दर पर खादिरादिफाथ ...	९८
उदकाई पर पिलवादिफाथ ...	९३	उपदश (गरमी) पर पटोलादि काथ	९९
गृध्रसीनायुपर दशमूलाकाथ ...	९३	वातरक्तपर गुडूच्यादि फाथ व द्वितीय पटोलादिफाथ ...	९९
वायुपर रास्नापञ्चकाथ ..	९३	वातरक्त व कुष्ठपरलघुभोजिष्ठादि काथ	९९
वायुपर रास्नासप्तक फाथ .	९३	सर्षपुष्पबुद्धि पर वृहन्मजिष्ठादि काथ	९९
सर्ववायुपर महारास्नादि फाथ छाती फी वायुपर परण्डासक काथ	९३	शिरस्शूल व नेत्ररोगों पर हरीतक्यादिफाथ ...	१००
घातशूल पर सौंठिआदि फाथ	९४		
पित्तशूल पर त्रिफलादि फाथ	९४		

विषयः	पृष्ठाङ्कः
नेत्ररोगोपरस्त्रासादि व शुद्धच्युआदि	...
काथ	१००
क्षतपर पिप्पल्यादिकाथव द्वितीया	...
काथ का विधान	१०१
रक्तातीसार परमोषादिप्रमथ्या...	१०१
यवागू व यूपका विधान	१०१
सन्निपात पर संतमुष्टियूप	१०१
पानादिकल्पना	१०२
ज्वर में तृषा (प्यास) पर उशी- रादिपान	१०२
उष्णजल का विधान	१०२
क्षीरपाकविधि	१०२
संक्षेप से अन्नो का विधान	१०२
धिलेपी विधान	१०३
पेयाविधान	१०३
भातका विधान	१०३
शुद्धमांड का विधान	१०३
अठगुने मांडका विधान	१०३
पित्तादिको पर यवमण्ड	१०३
लाजमण्ड का विधान	१०३
इति द्वितीयाध्यायः ॥	
अथ तृतीयाध्यायः ॥	
घातपित्तज्वरपर मधूकादिफाण्ट	१०४
प्यास पर आम्रादिफाण्ट	१०४
पित्तजप्यासपरमधूकादिफाण्ट ..	१०४
फाण्टभेदीय मन्थका विधान	१०५
इमली का मन्थ	१०५
उदकाई पर मसुरादि मन्थ	१०५
तृष्णापर यवमन्थ	१०५
इति तृतीयाध्यायः ॥	
अथ चतुर्थाध्यायः ॥	
हिम व शीतका विधान	१०५
रक्तपित्त पर आम्रादिहिम	१०५
तृष्णादिपर मरिचादिकाथ	१०५

विषयः	पृष्ठाङ्कः
पित्तज्वरपर नीलफमलादिहिम	१०६
जीर्णज्वर पर गुद्दच्युआदिहिम	१०६
रक्तपित्त पर धान्यादिहिम	१०६
इति चतुर्थाध्यायः ॥	
अथ पञ्चमाध्यायः ॥	
कलक का विधान	१०६
पाण्डु पर वर्धमान पीपरि	१०७
घावपर निम्बककलक	१०७
गृद्धसी पर यजायन कलक	१०७
श्रौपधमोगी का पथ्य	१०८
ऊरुस्तम्भपर पिप्पल्यादिककलक	१०८
परिणाम शूलपर विष्णुकान्ता-	...
दिककलक	१०८
पुनर्नागरादिककलक	१०८
सूनी यवासीर पर चिरचिरादि	...
कलक	१०८
रक्तातीसार पर धेरककलक	१०९
रक्तक्षयी पर लाहीककलक	१०९
रक्तप्रदर पर चौराईककलक	१०९
अतीसार पर अंकोलककलक	१०९
विपपर सिखसाककलक	१०९
दीपन व पाचन हरीतकीककलक	१०९
कृमिरोग पर निशोथककलक	१०९
रक्तातीसार पर नवगीतककलक	१०९
इति पञ्चमाध्यायः ॥	
अथ षष्ठाध्यायः ॥	
चूर्णका विधान	११०
सर्वज्वर पर आमलकादिचूर्ण	११०
ज्वरादिको पर पीपरिचूर्ण	१११
प्रमेह पर त्रिफलाचूर्ण	१११
कफादि पर पञ्चकोलचूर्ण	१११
त्रिगन्ध, चातुर्जात व जीवनीय	...
गण
विष्णुत्रपर लवण पञ्चकचूर्ण	११२

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
गुल्मादि पर चार	११३	घातपित्त कफ छर्दि पर पलादि	
खवज्वर पर सुदर्शनचूर्ण ...	११३	चूर्ण	१२५
कासद्वारासज्वर पर त्रिफलादि		कुष्ठ पर पञ्चनिम्ब चूर्ण ...	१२५
चूर्ण	११४	पुष्टिपर शतावरीचूर्ण ...	१२६
कफज्वर पर कायफलादि चूर्ण	११४	पुष्टिपर अश्वगन्धादिचूर्ण ...	१२६
वालकोंके कासज्वरपर काकड़ा-		धातुवृद्धि पर नयायसादि चूर्ण	१२६
सिंगीधादिचूर्ण	११४	स्तम्भनपर अकरकरभादि चूर्ण	१२७
आमातीसार पर शुष्ण्यादिचूर्ण	११५	हिलतेहुये दांतोंपर मौतस्तिरी	
आमवात पर हरीतक्यादिचूर्ण	११५	की छालके चूर्णका मञ्जन	१२७
सर्वातीसारपर लघुगङ्गाधरचूर्ण	११५	इति पद्याभ्यायः ॥	
अतीसार पर वृद्धगङ्गाधरचूर्ण	११५		
संम्रहणी पर कपित्थाष्टकचूर्ण...	११६	अथ सप्तमाध्यायः ॥	
महणी पर दाडिमामृष्टकचूर्ण ...	११६	घटिका, गुटिका, घटी घमोद-	
अतीसारपर वृद्धदाडिमामृष्टकचूर्ण	११६	कादिको की कल्पना ...	१२७
क्षयीपर लयगादिचूर्ण ...	११७	घघासीर पर याहुशालगुड ...	१२८
जातीफलादिचूर्ण	११७	कासपर मरिचादिगुटिका ...	१२८
अरुचिपर महाखाण्डघसंज्ञकचूर्ण	११८	श्यासादिकोंपर शुङ्गादिगुटिका	१२९
उदररोग पर नारायणचूर्ण ...	११८	प्यासपर बांधलादिघटिका ...	१२९
पेट फूलने आदिषोम अनुपान...	११९	सन्निपातपर संजीवनी गुटिका	१२९
अजीर्ण पर हनुपादिचूर्ण ...	११९	पीनसादिकों पर शिशुटादिघटी	१२९
शूलादि पर पञ्चसमचूर्ण ..	१२०	अशं पर वृद्धदारमोदक ...	१३०
अफरा आदिपर पिप्पल्यादिचूर्ण	१२०	अशं पर सूदनघटिका ...	१३०
यहूत् घ ड़ीहादिकों पर लघण		यवासीर पर वृहत्सूदनघटिका	१३०
त्रयादिचूर्ण	१२०	घामलादिकोंपर मण्डूरघटिका	१३१
शूलादिकों पर नुम्यवादिचूर्ण...	१२१	प्रमेहादिकोंपर चन्द्रमभाघटिका	१३२
गुल्मादिकों पर चित्रकादिचूर्ण	१२१	गुल्मपर अजघायनगुटिका ...	१३२
अरुचिपर आदिकों पर यष्टुपतल		यातादिकेयोंपरयेगराजगुग्गुल	१३३
चूर्ण	१२२	यातरत्तादिकोंपर कैशोरगुग्गुल	१३४
घातादिकों पर अजमोदादिचूर्ण	१२२	भगंदरादिकोंपर त्रिफलागुग्गुल	१३६
शूलादिकों पर हिंवादिचूर्ण	१२२	प्रमेहादिकोंपर गोक्षुरादिगुग्गुल	१३६
अरुच्यादिकों पर यवानोषाण्डय		कुष्ठादिकों पर त्रिफलामोदक	१३६
चूर्ण	१२३	गण्डमालादिकों पर कांचनार	
अरुच्यादिकोंपर तालीसादिचूर्ण	१२३	गुग्गुल	१३७
कासक्षयपित्तादिपरसितोपलादि		गन्धमज्जल में इमका अनुपान ..	१३८
चूर्ण	१२४	धातुपुष्टिपर भापाविमोदक ...	१३८
महणी पर लवणभास्करचूर्ण ...	१२४	इति सप्तमाध्यायः ॥	

विषयाः पृष्ठाङ्काः

अथ अष्टमाध्यायः ॥

पंचलेह व लेहकी कल्पना	१३८
हिचकी, फोस व स्वासीदिकों पर	
भटकटैयावलेह	१३९
क्षयोदिकों पर च्यवनप्राशावलेह	१३९
रक्तपित्त पर कूष्माण्डपाक	१४१
अर्शो (ववासीर) पर खण्डकूष्मा- ण्डावलेह	१४२
क्षयोपर अगस्त्यहरीतकी	१४२
ववासीर पर कुरैयावलेह	१४२
बकरी के दुग्धादिकों से इसका अनुपान	१४३
सर्वातीसार पर कुरैयाष्टक	१४३

इति अष्टमाध्यायः ॥

अथ नवमाध्यायः ॥

घृत व तैलादिकों का साधन	१४४
पिलहीआदिकोंपर क्षीरपदपल	१४६
संग्रहणी, अतीसार पर चाहेरी घृत	१४६
श्रुतीसारदिकों पर मसूरघृत	१४७
रक्तपित्त पर कामदेवघृत	१४७
अपस्मारदिकों पर कल्याणघृत	१४८
घातरक्तपर अमृतादिघृत	१४९
घातकुष्ठादिपर महातिक्रादिघृत	१४९
कुष्ठ, दाह व पाजपर कासीसा- दिघृत	१५०
घावां पर जात्यादिघृत	१५०
उदररोग पर विन्दुघृत	१५१
नेत्ररोगादिकोंपर त्रिफलादिघृत	१५१
घावोंपर गौर्यादिघृत	१५२
शिरोरोग पर मयूरघृत	१५२
अध्यांरोग पर फलघृत	१५३
योनिदोषों पर त्रिफलादिघृत	१५३
विषमज्वर पर पञ्चतिकघृत	१५४

इति नवमाध्यायः ॥

विषयाः पृष्ठाङ्काः

अथ दशमाध्यायः ॥

तैलसाधनप्रकार	१५४
लाक्षादितैल	१५४
सर्पघातपर नाराणतैल	१५५
घातपर बरियारतैल	१५६
घातकफजन्य विकार व घादी पर प्रसारिणीतैल	१५७
ग्रीवास्तम्भादिकोंपर मापादितैल	१५७
शूल व चांतादिकों पर शतावरी तैल	१५८
ववासीर पर कासीसादितैल	१५९
वातरक्त पर पिण्डतैल	१६०
खुजलीआदिकों पर मदारतैल	१६०
कुष्ठादिकों पर मरिचादितैल	१६०
मणों पर त्रिफलादितैल	१६०
पलितरोग पर निम्बचीजतैल	१६०
यालआनेपर मुलेठीतैल	१६१
इन्द्रलुप्त पर करआदितैल	१६१
पलित्तादिरोगों पर नीलिकादितैल	१६१
पलित्तादि रोगोंपर भृङ्गराज तैल	१६१
मुखदन्तादिरोगों पर इरिमेवादि तैल	१६२
कर्णशूल पर हिंवादितैल	१६२
धधिरत्वपर विट्वादितैल	१६२
कानबहनेपर खारतैल	१६२
पीनसरोग पर पाठादितैल	१६३
नासिकारोग पर भटकटैयावलेह	१६३
छोफ आनेपर कुष्ठादितैल	१६३
गांसाशं पर शूद्रधूमादितैल	१६३
सपडुछों पर वज्रतैल	१६४
लोमशातनपर करवीरादितैल	१६४
अथ आस्यकल्पना	१६४
शीघुआदि मद्योंका भेद	१६५
रक्तपित्तादिकों पर अशीशास्य	१६६
क्षयोपर पिंपल्यास्य	१६६

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
पाण्डुपर रोहासव	१६७	सुरमा व गेरुआदिकों का शोधनः	
उजरादिकों पर कुरैयारिष्ट ...	१६७	व मारण	१८०
विट्पौआदिकों में विउडारिष्ट	१६८	मैनशिलका शोधन व मारण ...	१८१
प्रमेहादिकों पर देषदारअरिष्ट	१६८	हरतालका शोधन	१८१
कुष्ठादिकों पर खदिरारिष्ट ...	१६९	उपरिया का शोधन	१८१
क्षयादिकों पर पच्यूलारिष्ट ...	१७०	सप्त धातुओं के सत निकालने	
उत्क्षतादिकों पर ब्राक्षारिष्ट ...	१७०	का विधान	१८१
यथासौरआदिकों पर रोहितारिष्ट	१७१	हीराका शोधन व मारण ...	१८१
क्षयो व प्रमेहादिकों पर दशमू-		हीरेकी भस्मका दूसरा विधान ..	
लारिष्ट	१७१	व तीसरा विधान ...	१८२
इति दशमाध्यायः ॥		वैकान्तका शोधन व मारण ...	१८२
अथ एकादशाध्यायः ॥		सर्षेरुओं का शोधन व मारण ...	१८३
स्वर्णादि धातुओं का शोधन		शिलाजीत का शोधन ...	१८३
प्रकार	१७३	शिलाजीत शोधने का दूसरा	
सोना मारने का विधान ..	१७३	प्रकार	१८३
सोनेकी भस्मका द्वितीय विधान	१७३	मण्डूर ज्ञाने का विधान ...	१८४
सोनेकी भस्मका तीसरा विधान	१७४	द्वार बनाने का विधान ...	१८४
स्वर्ण भस्मका प्रकारान्तर ...	१७४	इति एकादशाध्यायः ॥	
चौथीकी भस्मका विधान ...	१७५	अथ द्वादशाध्यायः ॥	
नृपायन्त्र के बनानेकी रीति ...	१७५	सर्षेरोगहारक व पुष्टिकारक पारा	
चौथीभस्मका दूसरा विधान ...	१७५	का निरूपण	१८५
पीतलकी भस्मका विधान ...	१७५	पाराके नाम व सूर्यादि नक्षत्रों	
तांबेकी भस्मका विधान ...	१७६	के नामसे तांबाआदि धातुओं	
सीसेकी भस्मका विधान ...	१७७	के नाम	१८५
सीसेके मारनेका दूसरा विधान	१७७	पाराके शोधने का प्रकार ...	१८५
सीसेकी भस्मका प्रकार ...	१७७	गन्धक व सिंगरफ का शोधन	१८६
लोहेकी भस्मका प्रकार ...	१७७	सिंगरफ से खार निकालने का	
लोहभस्म का दूसरा प्रकार ...	१७८	विधान	१८६
लोहभस्म का तीसरा प्रकार ...	१७८	शुद्ध किये पाराके मुन्न करने का	
सात उपधातुओं का शोधन ...	१७८	विधान	१८६
सोनामातीका शोधन व मारण	१७९	मुख व पक्षच्छेदन का दूसरा	
रूपामातीका शोधन व मारण	१७९	प्रकार,	१८७
तृनिषा का शोधन	१७९	कच्छपयन्त्र के द्वारा गन्धक फूँ-	
धसकका शोधन व मारण ...	१७९	फनेका विधान	१८७
अन्नरु शोधनका दूसरा विधान	१८०	पारा मारण का विधान ...	१८८

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
पाराभस्मकरणे का दूसराप्रकार	१८८
तथा तीसरा व चौथा प्रकार ...	१८९
सर्वज्वरापहारक ज्वराकुश रस	१८९
पेकाहिकादि ज्वरों पर ज्वरारि	
रस	१८९
शीतज्वरारिरस	१९०
ज्वरघ्नी गुटिका	१९०
क्षयादिरोगोंपर लोकनाथरस ...	१९१
क्षयादिकों पर मृगांक रोटलीरस	१९३
कफक्षयादिकों पर हेमगर्भपोट-	
लीरस	१९५
कासादिकों पर हेमगर्भरस ...	१९६
अतीसारादिकों पर आनन्दभैर-	
घरस	१९७
सन्निपात पर लघुसूचकाभरण	१९७
सन्निपात पर जलबुन्दरस ...	१९८
सन्निपात पर पञ्चवक्त्ररस ...	१९८
मदारमूलकाय	१९९
सन्निपात पर उन्मत्तरस ...	१९९
सन्निपात पर अङ्गन ...	१९९
शूलादिकों पर नाराचरस ...	१९९
शूलादिकों पर इच्छाभेदीरस	२००
क्षयीर्षर राजमृगाङ्गरस ...	२००
क्षयादिकों पर स्वयमग्निरस ...	२००
इनासपर सूर्यावर्तरस ...	२०१
घातरोग पर स्वच्छन्दभैरव रस	२०१
संग्रहणी पर हंसपोटलीरस ...	२०२
अश्वरी (पथरी) पर त्रिवि-	
क्रमरस	२०२
कुष्ठदिकोंपर महातालेश्वररस	२०२
कुष्ठपर कुठाररस	२०३
कुष्ठपर उदयादित्यरस ...	२०३
श्वेत कुष्ठपर लेप का विधान ...	२०४
कुष्ठदिकों पर सर्वेश्वररस ...	२०४
सुतिकुष्ठपर स्वर्णक्षीरीरस ...	२०५
प्रमेहरोग पर प्रमेहपद्धरस ...	२०५

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
समस्त उदररोगों पर महाबलि	
रस	२०६
गुन्नादिरोगोंपर विद्याधररस ...	२०६
पक्ति (परिणाम) शूलादिकोंपर	
त्रिनेत्ररस	२०७
शूलादिकोंपरशूल गजकेसररस	२०७
मन्दाग्न्यादिकों पर अग्निवृण्डी	
रस	२०७
अजीर्ण व हैजादिकों पर अजीर्ण-	
कण्टक रस	२०८
कफरोग पर मन्थानुभैरवरस ...	२०८
घातविकारोंपर घातनाशनरस	२०८
सन्निपात पर कनकसुन्दररस ...	२०९
सन्निपात पर भैरवरस ...	२०९
संग्रहणी पर व्रणोक्तपाटरस ...	२१०
संग्रहणी पर घञ्जकपाटरस ...	२११
वाजीकरणपर मदनकामदेवरस	२१२
वाजीकरण पर कन्दर्पसुन्दररस	२१२
क्षयादिकों पर लोहरसायन ...	२१३
इति षाडशाध्यायः ॥	
(इति मध्यखण्डः)	

अथ उत्तरखण्डः ॥

प्रथम स्नेहपानक्रिया ...	२१६
स्नेहभेद व स्नेहपानका समय...	२१६
स्नेहका सातत्य व स्थलविशेषमें	
योजना	२१६
स्नेहमात्रा प्रकार	२१६
अमात्रा से स्नेह पीने में दोष ...	२१७
दीत, मध्य व अल्पाग्नि में मात्रा	
प्रमाण	२१७
स्नेह की मात्राओं का भेद ..	२१७
अल्प, मध्य व ज्येष्ठमात्राओं के	
गुण	२१७
दोषों में उचित अनुपात ..	२१७

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
अपस्वरोर्णां परं घौं पिलाने योग्य प्राणी	२१८
तेल पिलानेयोग्य रोगी ...	२१८
वसापानयोग्य अस्थिमज्जायोग्य स्नेहपान करने का समय ...	२१८
पृतादिक कर्मविशेषों पर नास के कारण	२१८
स्नेहपानमें अनुपानविधान ...	२१९
भात के साथ स्नेहपिलाने योग्य रोगी	२१९
स्नेहके बिना यथागू से शीघ्र स्नेहनहोनेवाले	२१९
घारोष्णदूध से उसी क्षण धातु का उपजना	२१९
मिश्रयाहार विहारदिकों से अपक्व स्नेहका उपाय	२१९
स्नेहजन्य अर्जाणों का उपाय ...	२१९
स्नेहजन्यपित्तकोष का यत्न ...	२१९
स्नेहपान के अयोग्यरोगी ..	२२०
स्नेहपान करने में योग्य प्राणी गुणदायक स्नेहके लक्षण ...	२२०
अत्यन्त स्नेहपान के दोष ...	२२०
रूपेको स्निग्ध घ स्निग्धको रूपा करना	२२०
स्नेहादिक सेवने के गुण ..	२२०
स्नेहक्षेपी को वर्जनीयपदार्थ ..	२२१

इति प्रथमाध्यायः ॥

अथ द्वितीयाध्यायः ॥

स्नेहपानानन्तर स्वेद निकालने का विधान	२२१
वायुजी तात्त्वम्यता से न्यूना-धिक स्वेदकी योजना ...	२२१
शोणविशेष से स्वेदविशेष की योजना	२२१

विषयाः	पृष्ठाङ्काः
त्रिणके पहले स्वेद निकालना योग्य उनके लिये नार्सादिकों का विधान ..	२२२
भगन्दरादि रोगों में पसीना निकालने की अनुज्ञा	२२२
स्वेदके निकालने में देश व काल स्वेदनिकालने पर किस मार्ग से दोषों का दूर होना	२२२
स्वेदोंके चित्तस्वस्थ करने का यत्न स्वेदके अरोग्यरोगी का निरूपण अल्पपसीना निकालने योग्य प्राणी के अंग	२२३
यहुतपसीना निकालने में उपद्रवों का उपजना	२२३
घार भौंति के स्वेदोंमें तापस्वेदके लक्षण	२२३
ऊष्मसंज्ञक स्वेदके लक्षण ...	२२३
उपनाहसंज्ञक पसीनाके लक्षण उपनाहमें महाशाल्वण क्रिया का धातुपोदलिकासिक्रविधि ...	२२४
द्रवसंज्ञक स्वेदके लक्षण ...	२२५
पसीना निकालनेकी अवधि ..	२२५
स्वेदनिकालनेके अनन्तर उपचार इति द्वितीयाध्यायः ॥	२२६

अथ तृतीयाध्यायः ॥

घमन (छर्दि) विरेचन (दस्त) में कालका विधान ..	२२६
घमनयोग्य रोगियोंका निरूपण	२२६
घमनमें अयोग्यरोगी	२२६
घमनके पूर्व उपचारोंका निरूपण	२२७
घमनमें सहायकारी पदार्थ	२२७
घमनमें काढ़ा करने का प्रमाण ...	२२७
घमनमें काढ़ा पीनेका प्रमाण ...	२२७
घमनमें बरतका दिशोंका प्रमाण ...	२२७
घमनमें उत्तम, मध्यम व कनिष्ठ-धेनोंका प्रमाण	२२८

विषयः	पृष्ठाङ्कः
घमनके विषयमें प्रस्थका प्रमाण	२२८
घमनमें औषध विशेषोंसे कफादिकों का जीतना	२२८
घमनसे कफादिकों के निकालने की औषध	२२८
घमन करनेमें याहिरीउपचार	२२९
मलीभांति घमनके न होने में उपद्रव	२२९
घटुत घमनहोनेमें उपद्रव	२२९
अतिघान्तमें चिकित्सा	२२९
घमनमें जीमफेपठनेपर चिकित्सा	२२९
अतिघान्तसे जीम बाहर निकल आने का यज्ञ	२२९
घमनद्वारा नेत्रोंमें विकार होनेका उपचार	२२९
घमन करते २ ठोड़ी रहजाने पर उपचार	२२९
घान्तकरनेमें हनुस्तम्भका उपचार	२३०
घमनके घान्तमें रक्त गिरनेका यज्ञ	२३०
अतिघमनसे प्यारा बढ़ने का यज्ञ	२३०
रसाञ्जन बनानेका विधान	२३०
घान्तके उत्तम होनेका लक्षण	२३०
घान्तके होजाने पर रोगी के लिये पथ्य	२३०
घमनके उत्तम होनेपर संयम	२३०
इति सृतीबाध्यायः ॥	
अथ चतुर्थाध्यायः ॥	
घमनान्तमें विरेचनका विधान	२३०
रेचन (वस्त) का दूसरा प्रकार	२३१
विरेचनका सामान्यकाल	२३१
विरेचनयोग्य रोगीका कथन	२३१
दोषनिवारणमें विरेचनकी उत्कर्षता	२३१
वस्त करानेमें अयोग्यरोगी	२३२
विरेचनमें मृदु, मध्य च दूरकोष्ठ	२३२

विषयः	पृष्ठाङ्कः
मृदु व मध्यमादिकोष्ठों में मृदु-ध्यादिऔषध	२३२
उत्तमादि नेदोंसे दस्तोंका प्रमाण	२३३
विरेचनमें कफादि की मात्राओं का प्रमाण	२३३
विरेचनमें कलकादिकों का मान	२३३
रेचनमें द्रव्योंका प्रकार	२३३
अपरऔषधोंसे रेचनका विधान	२३३
शतुभेदसे रेचनका प्रकार	२३३
शरदमें रेचन	२३३
हेमन्तमें विरेचन	२३४
शिशिर, वसन्त तथा ग्रीष्ममें रेचन	२३४
रेचनपर अमयादिक मोक्ष	२३४
अच्छेप्रकार रेचनहोनेका यज्ञ	२३५
रेचनसमयका साधनाप्रकार	२३५
रेचन देनेपर घेगोंके न उपजने पर उपद्रव	२३५
उत्तम जुलावके न होनेपर उपचार	२३५
अत्यन्त विरेचनमें उपद्रव	२३६
अतिविरेचन में उपजे उपद्रवों का यज्ञ	२३६
वस्त पन्दकरनेकी औषध	२३६
दस्तोंके रोकनेका उपाय	२३६
उत्तम वस्त होनेके लक्षण	२३६
जुलाबलेनेमें गुणोंका निरूपण	२३६
रेचनमें वर्जितपदार्थ	२३६
रेचनमें रोगीके लिये पथ्य	२३७
इति चतुर्थाध्यायः ॥	
अथ पञ्चमाध्यायः ॥	
घस्तिकर्मका विधान	२३७
अनुवासनवस्तिकीं द्रव्यों का प्रमाण	२३७
अनुवासनवस्तियोग्य रोगी	२३७

विषयः	पृष्ठाङ्कः	विषयः	पृष्ठाङ्कः
धूम्रगान में उपयोगी की प्रवृत्ति	२५९	प्रतिसारण का प्रकार	२६३
धूम्रमें नलीका विचार	२५९	प्रतिसारण (मंजन) के लिये	२६३
धूम्रपान के लिये इपिना (नैचा)		चूर्ण	२६३
का विधान	२६०	गण्डूपादि के हीनयोगादि होने	२६३
धूम्र विधान व धूम्रमें फलकों की		के लक्षण	२६३
औषध	२६०	भलीभाँति सुखे गण्डूपाके लक्षण	२६४
घान्मटौलक्यटादिगण	२६०	इति दशमाध्यायः ॥	
वालग्रह त्रिप्रारक घूप	२६१	अथ एकादशाध्यायः ॥	
धूम्रपान में परिहार	२६१	लेपका विधान	२६४
इति नवमाध्यायः ॥		दोपनाशकलेप का विधान	२६४
अथ दशमाध्यायः ॥		दशाङ्गलेप का विधान	२६४
गण्डूपा, कवल व प्रतिसारण का		विषहारकलेप का विधान	२६५
विधान	२६१	लेपका दूसरा विधान	२६५
दोपमेंदो से स्नेहिकादि गण्डूपा		मुखकान्तिकारक लेपका विधान	२६५
की योजना	२६१	काविकारक लेपका दूसरा प्रकार	२६५
गण्डूपा तथा कवल की रीति	२६१	तारुण्यपिटका (मुँहासे) परलेप	२६५
गण्डूपा व कवल में द्रव्यों का		व्यङ्ग (हाई) रोगपर लेप	२६५
प्रमाण	२६२	मुखपर की हाईपर लेप	२६५
गण्डूपा व कवलयोग्य अवस्था	२६२	तारुण्यपिटकादिकों पर लेप	२६६
अवस्था भेदसे कुले करने का		भरुंगिका (रुखी) पर लेप	२६६
प्रमाण	२६२	रुखी पर दूसरालेप	२६६
गण्डूपा धारण करने में दूसरा		दारुणरोग पर लेपका विधान	२६६
प्रमाण	२६२	लेपका दूसरा प्रकार	२६६
बादीके रोगोंमें स्नेहिकगण्डूपा	२६२	इन्द्रजित पर लेपका विधान	२६६
पित्तमें क्षमनसंशक गण्डूपा	२६२	लेपका दूसराप्रकार	२६६
व्रणादि रोगों पर मधुगण्डूपा	२६२	केशधर्धकलेप का विधान	२६६
विपादियोंपर गण्डूपाका विधान	२६२	वाल जमानेका लेप	२६७
दाँतोंके हिलने पर गण्डूपा	२६२	इन्द्रजितरोग पर लेप	२६७
मुखसोप रोग पर गण्डूपा	२६२	वाल धाजाने पर दूसरा लेप	२६७
फफादिदोषों पर गण्डूपा	२६२	वाल स्याह करने का लेप	२६७
कफ व रजपित्त पर गण्डूपा	२६३	लेपका दूसरा प्रकार	२६७
मुखपाक (छालोंपर) गण्डूपा	२६३	तीसरा तथा चौथा प्रकार	२६७
गण्डूपा के समान प्रतिसारण		फालेकेश करनेवा पाँचवाँ प्रकार	२६८
कवल का विधान	२६३	लोमनातन (बालगिराने) पर	
कवल का प्रकार	२६३	लेप	२६८

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
होमशासन का दूसरा प्रकार ...	२६८	कफजन्यशोथ पर लेप ...	२७४
सफेद फोड़पर लेपका विधान	२६९	भाग्यनुक तथा रक्तजशोथ पर	
लेपका दूसरा व तीसरा प्रकार	२६९	लेप	२७४
सेहुवांपर लेपका विधान ...	२६९	मणफोरने पर लेप	२७४
लेपका दूसरा प्रकार ...	२६९	मणफोरने पर लेप	२७४
नेत्ररोग पर लेपका विधान ...	२६९	मणफोरने पर दूसरा व तीसरा	
लेपका दूसरा प्रकार ...	२६९	लेप	२७४
खुजली पर लेपका विधान ...	२७०	मणशोधन में लेपका प्रकार ...	२७४
सूतीखाज पर लेप	२७०	मणशोधन व रोपणपर लेप ...	२७५
लेपका दूसरा प्रकार ...	२७०	प्लामिरोननाशकलेप	२७५
रक्तपित्त पर लेप	२७०	पेदपीड़ा में नाभिपर लेप ...	२७५
उदरादिरोगों परलेपका विधान	२७०	वातविद्रधिपर लेप	२७५
वातविसर्पेणपर लेप	२७१	पित्तविद्रधिपर लेप	२७५
पित्तविसर्प पर लेप	२७१	कफविद्रधिपर लेप	२७५
कफविसर्पेण पर लेप	२७१	बायन्तुहविद्रधिपर लेप	२७५
पित्तवातरक्त पर लेप	२७१	वातजन्यशोथ पर लेप	२७५
नासिकारकसावपर लेप	२७१	कफजन्यशोथ पर लेप	२७५
वातज शिर पीड़ा पर लेप ...	२७१	मस्तकरोधक लेप	२७५
शिरपीड़ा पर दूसरा लेप ...	२७१	मस्तकरोधक लेप	२७५
पित्तसंभव शिरारोग पर लेप ...	२७१	मस्तकरोधक लेप	२७५
कफसंम्यन्धी मस्तकपीड़ापर लेप	२७२	मस्तकरोधक लेप पर लेप ...	२७५
मस्तकपीड़ा पर दूसरा लेप ...	२७२	मस्तकरोधक लेपका विधान ...	२७५
स्यार्चन तथा अर्धभेदकपरलेप...	२७२	मस्तक (अर्धभेदक) लेप पर	
कनपटी अनन्तवात तथा सर		लेप	२७५
शिर रोगों पर लेप	२७२	मस्तक (मन्त्री) लेपपर लेप	२७५
लेपका दूसरा विधान	२७२	लेपक दुन्नादवर्तिकागन्धार ...	२७५
प्रलेप व प्रदेहक लेपांकी उँवाई		लेपके कठोर करने का लेप ...	२७५
का प्रमाण	२७२	लेपके सँघीठनेका दूसरा लेप	२७५
साधारण लेप विषयमें निषेध ...	२७२	लिङ्ग व स्तनों के कठोर करने	
रात्रिमें लेपनिषेधका कारण ...	२७२	का लेप	२७५
रात्रिमें प्रलेपादिकों का विधान		लिङ्गवृद्धि पर दूसरा लेप ...	२७५
व उसके योग्य रोगी	२७३	यौनिद्रव करने का लेप ...	२७५
मणोपचार सबप्रकार लेपपर	२७३	देहदुर्गन्धनिवारक लेप ...	२७५
मणसंम्यन्धी वातशोषनिवारक		घर्षाकरप्रकारक लेप	२७५
लेप	२७३	मस्तकमें तैललगानेका विधान	२७५
पित्तजशोथ पर लेप	२७३	शिरावस्त्रि का विधान	२७५

विषया.	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
शिरोवस्ति प्रकार ...	२७९	रुधिर के दुष्ट होने के लक्षण ...	२८४
शिरोवस्ति प्रमाण तथा मात्राओं का प्रमाण ...	२७९	रुधिर बढ़ने के लक्षण ...	२८४
शिरोवस्ति का समझ ...	२७९	क्षीणरुधिर के लक्षण ...	२८४
शिरोवस्तिके पीछे कर्तव्यक्रिया	२७९	घातदूषित रक्तके लक्षण ...	२८४
शिरोवस्तिके गुण ...	२७९	पित्तदूषित रुधिर के लक्षण ...	२८४
फानमें औषध डालनेका विधान	२८०	कफदूषित रुधिर के लक्षण ...	२८४
फानमें द्रव्यधारने का प्रमाण ...	२८०	द्विदोष व त्रिदोष दूषित रुधिर के लक्षण ...	२८४
तथा मात्राओं का प्रमाण ...	२८०	अतिदुष्ट रुधिर के लक्षण ...	२८४
फानमें रसादिक तथा तैलादिक डालने का समय ...	२८०	शुद्धरक्तके लक्षण ...	२८५
कर्णव्यथा पर औषध ...	२८०	रक्तमोक्षणयोग्य रोगी ...	२८५
कर्णशूल पर मूत्रप्रयोग ...	२८०	रक्तमोक्षणका प्रकार ...	२८५
कर्णशूल पर तीसरा प्रयोग ...	२८०	शिराच्छेदन में अयोग्य रोगी ...	२८५
कर्णशूल पर पांचवां प्रयोग ...	२८१	घातादिदूषित रुधिर निकालने का विधान ...	२८६
कर्णशूल पर क्षीपिक तैल ...	२८१	सिंगीबादि से रुधिर छींचने का प्रमाण ...	२८६
कर्णशूल पर इयोनाकतैल ...	२८१	रुधिरमोक्षणमें अयोग्यरोगी ...	२८६
कर्णनादपर तैल ...	२८१	शिरारक्त न देनेका यज्ञ ...	२८६
कर्णनादादिकों पर घेष्ठतैल ...	२८१	रक्तमोक्षण का समय ...	२८६
रुधिरत्वपर अपामार्गक्षारतैल ...	२८२	अतिरुधिरस्त्राव में कारण ...	२८७
कर्णव्यणपर शम्बूकतैल ...	२८२	अत्यन्तरुधिर निकलनेपर उपाय	२८७
कर्णस्त्रावपर औषध ...	२८२	दग्धहत रोगशामनोपाय ...	२८७
पञ्चकपायवृक्षों के नाम	२८२	दुष्टरक्तके निकालनेपर अवशिष्ट के गुण ...	२८८
कर्णस्त्रावपर औषध ...	२८२	रुधिरसे देहोत्पत्तिआदिका प्रकार	२८८
फान से राद बहनेपर औषध ...	२८२	रुधिरमोक्षण पर दोषदूषित होने का यज्ञ ...	२८८
कर्णकीट के दूर होनेका तैल ...	२८२	रुधिरमोक्षणपर पथ्यविचार ...	२८८
कर्णकीट के दूर होनेका दूसरा व तीसरा प्रयोग ...	२८३	अच्छे प्रकाररक्तमोक्षणके लक्षण	२८८
इति एकादशाध्यायः ॥		रक्तमोक्षण पर निषिद्ध पदार्थ ...	२८८
अथ द्वादशाध्यायः ॥		इति द्वादशाध्यायः ॥	
रुधिरमोक्षण का विधान ...	२८३	अथ त्रयोदशाध्यायः ॥	
रुधिरस्त्रावका सामान्यकाल ...	२८३	नेत्रोपचार प्रकार ...	२८९
रुधिर का स्वरूप ...	२८३	सेकविधान ...	२८९
रुधिर में पृथिव्यादि पञ्चतत्त्वों के गुण ...	२८३		

विषयः	पृष्ठाङ्कः	विषयः	पृष्ठाङ्कः
स्नेहनादिभेदोंसेसेककेतीनप्रकार	२८९	अञ्जननामिका पिष्टिकी पर	...
सेककी मात्राओंकाप्रमाण ...	२८९	लेप	२९३
सेक सेवन करने का समय ...	२८९	नेत्ररोगपर तर्पण का विधान ...	२९४
घाताभिष्यन्दरोगपर सेकविधान	२८९	तर्पणकी मात्राओंका प्रमाण ...	२९४
घाताभिष्यन्द पर दूसरा प्रकार	२८९	तर्पण में कफकी अधिकताका	...
पित्तरक्त व अभिघात पर सेक	२९०	उपाय	२९५
रक्ताभिष्यन्द पर सेक ...	२९०	तर्पण में दिनों का प्रमाण ...	२९५
नेत्रशूलपर सेक	२९०	भलीभांति तर्पण होने के लक्षण	२९५
आश्च्योतन का विधान ...	२९०	अत्यन्त तर्पण होने के लक्षण...	२९५
लेखनादि आश्च्योतन में बिन्दु	...	हीन तर्पण के लक्षण...	२९५
डालने का प्रमाण ...	२९०	तर्पण से अतिस्निग्ध व हीन	...
आश्च्योतन में मात्राओंका प्रमाण	२९१	स्निग्ध नेत्रों का उपाय ...	२९५
भ्रश्रयाताभिष्यन्दपर आश्च्यो-	...	पुटपाककी रीति का निरूपण...	२९५
तन विधान	२९१	पुटपाकसम्बन्धी रस नेत्रों में	...
घात व रक्तपित्तपर आश्च्योतन	२९१	धारने का विधान ...	२९६
सर्वाभिष्यन्द पर आश्च्योतन...	२९१	स्नेहनादि भेदों से पुटपाकक्रिया	२९६
रक्तपित्ताभिष्यन्दपर आश्च्यो-	...	स्नेहनपुटपाक विधान ...	२९६
तन	२९१	रोपण नामक पुटपाक का प्रकार	२९६
पिण्डी या कवलिकाका प्रकार	२९१	दोषोंके संपाक होने से अञ्जन	...
नेत्राभिष्यन्द पर शिरोविरेचन	२९२	व साधारण अञ्जन का	...
सर्वाधिग्रन्थपर उपचार ...	२९२	विधान	२९७
अभिष्यन्दादिपर पिण्डिकाचंधन	२९२	अञ्जन के भेदों का निरूपण...	२९७
घात व पित्ताभिष्यन्द पर कवलि-	...	गुटिकादि भेदों से अञ्जन के	...
काविधान	२९२	तीन प्रकार	२९७
पित्ताभिष्यन्दपर द्वितीयपिण्डी	२९२	अञ्जन में अयोग्य रोगी ...	२९७
कफाभिष्यन्दपर पिण्डी का	...	तीक्ष्ण अञ्जन की दृष्टी का	...
विधान	२९२	प्रमाण	२९७
कफपित्ताभिष्यन्दपर पिण्डी ...	२९२	अञ्जन में रसका प्रमाण ...	२९७
रक्ताभिष्यन्दपर पिण्डी ...	२९२	विरेचन अञ्जन में चूर्ण का	...
नेत्रशोथ व राजपर पिण्डी ...	२९२	प्रमाण	२९७
बिडालनामकलेप का विधान...	२९३	पत्थर व घातु आदि शलाका	...
सर्वाक्षिरोगों पर बिडाल ...	२९३	(सर्दार) का प्रमाण ...	२९८
सर्वनेत्ररोगोंपर दूसरा विधान	२९३	अञ्जन लगाने का समय ...	२९८
सर्वनेत्ररोगोंपर तीसरे व चौथे	...	चन्द्रोदयवर्ती का विधान ...	२९८
लेपका प्रकार... ..	२९३	शुक्रादिक (फूली आदि)	...
भ्रमररोग पर लेपका प्रकार ...	२९३	पर लेखनवर्ती	२९९

विषया	पृष्ठाङ्कः	विषया	पृष्ठाङ्कः
तथा फूली आदिकों पर दूसरा प्रकार	२९९	नेत्र स्वच्छ होनेकेलिये रसक्रिया	३०२
लेखनी दन्तवर्ती ...	२९९	शिरोत्पातरोग पर रसक्रिया ...	३०२
तन्द्रानियारक लेखनी वर्ती ...	२९९	धुनिघ्नरोगपर रसक्रिया ...	३०२
रोपिणी कुसुमिका वर्ती ...	२९९	लेखनचूर्णाञ्जन ...	३०२
रत्नांधों दूर करने की वर्ती ..	२९९	रतोष्ठीपर लेखनचूर्ण ...	३०२
नेत्रस्त्रावपर स्नेहन वर्ती ..	३००	फण्डू आदिकोंपर लेखनचूर्णाञ्जन	३०२
रसक्रियाका निरूपण	३००	सर्व नेत्ररोगों पर मृदु चूर्णाञ्जन	३०३
फूली दूर करने की रसक्रिया ...	३००	सर्वाक्षि रोगोंपर सोवीराञ्जन ...	३०३
भ्रति निद्रा नाशक लेखनी रसक्रिया ...	३००	सीसे की शलाका वा विधान	३०३
तन्द्रानियारक रसक्रिया ..	३००	प्रत्यञ्जन करने का विधान ...	३०३
सन्निपातपर लेखनरसक्रिया ..	३००	सदोषनेत्रपर निषेद ...	३०४
नेत्रदाहपर रसक्रिया	३०१	प्रत्यञ्जन चूर्णका विधान ...	३०४
घहनी रोगपर रसक्रिया .	३०१	सर्पविष निवारक अञ्जन ..	३०४
तिमिररोग पर रांपणी रसक्रिया	३०१	नेत्रवाधाहारक शीतल जल का प्रकार ...	३०४
अक्षनान्तमें अनुपान का विधान	३०१	ग्रन्थ की समूलत्व सूचनापूर्वक निजाभिमानका परिहार ...	३०४
नेत्रस्त्रावपर रोपणी रसक्रिया ...	३०१	ग्रन्थ के पढ़ने वा फल व अभ्यास करने का प्रयत्न ...	३०५
नेत्रस्त्रावपर दूसरा प्रकार .	३०२		

इति श्रीमत्सुबुलशक्तिधररिचिंतशाङ्गधरसंहितायाः
सूचीर्षनसमाप्तिमगादिति शिष्यम् ॥



शाङ्गधरसंहिता ॥

भाषाटीकासमेता ॥

श्रियंसद्व्याद्भवताम्पुरारिर्यदङ्गतेजःप्रसरेभवानी ।
विगजतेनिर्मलचन्द्रिकायां महौषधीवज्वलिताहिमाद्रौ १

श्रियभित्ति स कहे सो श्रीके देनगरे होहु सो पुरारि कैसे हैं जिनके तेजप्रसारित ग्रंथ में भवानी विराजमान हैं कैसी हैं भवानी जिनके निर्गत निर्मलमुख मण्डली चन्द्रिकाकहे चादनी प्रकाश करिरही हैं कमिव काकीनाई जैसे हियरुहे पाला अद्रिरुहे पर्वत हिमाद्रि विषे महाओषधि संजायन्यादि ज्वलितरुहे प्रकाशित होइ रहीहैं यह अर्द्धांगी अलुपम स्वरूप निराकार निप्रकार जगदाधार सदाशिव परमेश्वर ने अनादिरचनादि एकत्रलोपकरि अनेकत्र प्रकाशकरन इच्छासमय अदृश्य प्रकृति पुरुषसंयुक्त दृश्यमान अर्द्धांगीस्वरूप धारण किया है इस स्वरूप की महिमा वा उपमा वेदशास्त्र पुराण काव्यादि नहीं कहिसक्ते काहेसे कि एवही रूपहैं इस स्वरूप की उपमा उपमाविना है रूपसंयुक्त किये नहीं होसक्ती हैं और द्वै उपमासे द्वैत भासित होता है इसलिये परमेश्वर की उपमा हिमाद्रि परमेश्वरी की उपमा महौषधि करते भये फिर हिमाद्रिगुण शीतलता भगवती के मुखचन्द्र की चन्द्रिका में घटितकरी और ओषधिन की मज्जलिता भगवान् के तेजमें प्रकट करी अथवा तेज चन्द्रिका का एक ठौर होना असंगत है परन्तु इहा दोनों समान प्रकाश करते है क्योंकि भगवती की शीतल चन्द्रिका करिके सदा शातिमूर्ति सतोगुणी श्वेत कर्पूरवर्ण विश्वनाथ शोभित दृश्ये हैं और श्रीभगवान् के तेजवरिके त्रैलोक्यजननी श्रीपार्वतीजी काचनवर्ण दीपमान हैं रही है अर्थात् दोनों उपमा

प्रसिद्धयोगासुनिभिः प्रयुक्ताश्चिकित्सकैर्ये बहुशाऽनुभू-
ताः । विधीयते शार्ङ्गधरेण ते पांसुमं ग्रहस्सज्जनगञ्जनाथ २
हेत्वादिरूपाकृतिसात्स्यजातिभेदैः समीच्यातुरसर्वरो-
गान् । चिकित्सातं कर्षणवृंहणख्यंकुर्वीतवैद्यो विधिवत्सु-
योगैः ३ दिव्यौषधीनां बहवः प्रभेदा वृन्दारकाणां भिववि-
स्फुरन्ति । ज्ञात्वेति सन्देहमपास्यधीरैस्सम्भावनीया विवि-
धप्रभावाः ४ स्वाभाविकागन्तुककायिकान्तरारोगाभवेद्युः

अर्द्धांगी सूचित भी क्योंकि प्रकृति की उपमा के गुण पुरुष में पाये गये पुरुष की
उपमा के गुण प्रकृति में पाये गये पुनरर्थः प्रथम कविलोग अपने इष्टदेवसे मंगला-
चरण में यान्यमान होइ ग्रंथको घटित करते हैं कि महादेवजीका तेज उष्ण पित्ता-
धिपति पार्वतीजी की चन्द्रिका शीतल रलेष्मानिपति और मत्तारणभ्रम वा ज्वाल
भूषण करिके चाग्रधिपति जैसे गौरीराडर को शोभास्वी गुणसहित सेइरहै तैसे
शार्ङ्गधरवेत्ता वेद्यों की सेवा में श्रीयशके देनेवाले होइंगे कैसा है शार्ङ्गधर जैसे
द्विमाद्रि महाओषधीन करिके ज्वलित कहे प्रकाशित होइरहा है तैसे शार्ङ्गधर म-
हौषधीयुक्त है ॥ १ ॥ शार्ङ्गधर जू कहते हैं कि मैं सञ्जन मनुष्यन के मनोरंजन
के निमित्त सुधृत चरकादि गुनि और श्रेष्ठ प्राचीन वैद्यों के निश्चित किये प्रसिद्ध
योग या शार्ङ्गधर में संग्रहकरि ग्रन्थित करताहूँ ॥ २ ॥ प्रथम वैद्य इन पंचप्रकारमें
व्युत्पन्न होय हेतु १ आदिरूप २ आकृति ३ सात्स्य ४ जातिभेद ५ तत्र पीडित रोगी
की निदानपूर्वक कर्षण वृंहणादि चिकित्साकरै कर्षण कहे घटावना वृंहणकहे व-
दायना वातादि दोषन को घटावै हेत्वादिलक्षणा हेतु कहे निदान आदिकारण
जिससे रोगकी उत्पत्ति है १ आदिरूप कहे प्रथम रोगी की देहदृष्टना जँभवाईमा-
वना २ आकृति कहे श्रेष्ठा मलिनहोना वृष्णा मूर्च्छा सम्भ्रम दाह निद्रानाश ३
सात्स्य कहे रोगीकी अपेक्षा जित वस्तुको मन चाहै यथा गर्मीलगी पवनप्लासे में
पानी वा हितकारक जैसे जाडालगै बर हित करै ४ जाति कहे इन्द्रियपरिज्ञान
अपने अङ्गमें सायमान वा विहलता ॥ ३ ॥ जैसे वृन्दारक कहे देरतनमें बहुत श्रेष्ठ
गुण निस्फुरित कहे प्रकाशित हैं तैसेही दिव्यकहे उत्तम ओषधिन में भी भाशित है
सो ज्ञात्वा कहे जानिकै धीर वैद्य सन्देह छोड़िकै ऐसी सम्भावना करै कि भेरे
निरक्षय से भी अधिक गुण और प्रभाव ओषधिन में है ॥ ४ ॥ और स्वाभाविक

किलकर्मदोषजाः । तच्छेदनार्थदुरितापहारिणःश्रेयोमया
 न्योगवरात्रियोजयेत् ५ प्रयोगानागमात्सिद्धान्प्रत्यक्षाद्
 नुमानतः । सर्व्वलोकहितात्त्र्यायवक्ष्याम्यनतिविस्तरात्
 ६ प्रथमंपरिभाषास्याद्भैषज्याख्यानकन्तथा । नाडीपरीक्षा
 दिविधिस्ततोदीपनपाचनम् ७ ततःकालादिकाख्यानमा
 हारादिगतिस्तथा । रोगाणांगणनाचैवपूर्वखण्डोऽयमी
 रितःऽस्वरसःकाथफ्राण्टौचहिमःकल्कश्चचूर्णकम् । तथै
 वगुटिकालेहो स्नेहसन्धानमेवच ९ धातुशुद्धिरसाश्चैव
 खण्डोऽयमध्यमःस्मृतः । स्नेहपानंस्वेदविधिर्वमनंचविरे
 चनम् १० ततस्तुस्नेहवस्तिःस्यात्ततश्चापिनिरूहणम् ।

आगन्तुक कायिक आन्तरिक इन चारों से वा तीनों दोषन से वा प्रारब्धकर्म से
 रोग होइ ताके नारा करिवे को दुरित कहे पातक प्रहार करनचारे श्रेष्ठ योग वैद्य
 करै स्वभावादिलक्षणा स्वाभाविक विदाराहार विषमता यथा चित्तुशुभा गतशुभा-
 राम या हीन विपरीत भोजन वा निर्मोजन योंही तृपा और अन्न ते मरणपर्यं ।
 अवस्थासे विपरीत कर्म होना १ आगन्तुक शङ्खापघात पतन प्रहार विष मद् सर्प
 पशु पीडितादि २ कायिक व्यायाम श्रम मैथुनादि प्रातुन्यूनाधिकत्वसे दोषत्र
 कुपित होना ३ अन्तर मनमें खेद क्रोध चिन्ता शोक मूर्च्छा संन्यास श्वासनिरो-
 धादि ४ ॥ ५ ॥ मत्पत्रसे औ अनुमानसे शास्त्रसे जे प्रसिद्धयोगसो लोकके हितार्थ
 संक्षेप करि कहता हूं ॥ ६ ॥ या शर्द्ध्वर के तीन सण्ड हैं ताके प्रथमसण्ड में
 पहिले परिभाषा कहे ओपधि की तोलकी फिरि भैषज्याख्यान कहा ओपधिम-
 क्षणत्रिधि फिरि नाडीपरीक्षा स्वप्न शकुन विचार श्वर टीपन अग्निज्वलित क-
 रना पाचन जो मलको भस्म करि पचावै ॥ ७ ॥ ताके पीछे ओपधिमल्लय समय
 फिरि आहार अन्तरमवेश गति कही और रोगोंकी संख्या कही इतनी बातें प्रथम
 सण्डमें हैं ॥ ८ ॥ (अथ मध्यखण्डेऽनुक्रमणिका) द्रव्यनज्ञा रक्त काथ कही
 कादा फ्राण्ट कही द्रव पदार्थ का अग्नियोगसे फाड़ना रतिकी भिजोई ओपधि
 का मातः बल लेइ इसे हिम कहिये करककहे पीठी चूर्ण गोली अबलेह कही चटनी
 तेल ॥ ९ ॥ धातुशुद्धिरसक्रिया ये मध्यसण्ड में कही (अथोत्तरखण्डानुक्र-
 मणिका) घृततेल पीना स्वेदविधिरेकना और ओपधिशे से पसीना निकालना

ततश्चाप्युत्तरोवस्तिस्ततो नस्यविधिर्मतः ११ धूमपा-
नविधिश्चैव गण्डूपादिविधिस्तथा । लेपादीनांविधिः
ख्यातस्तथाशोणितविस्त्रुतिः । नेत्रकर्मप्रकारश्चखण्डः
स्यादुत्तरस्त्वयम् १२ द्वात्रिंशत्प्रमिताध्यायैर्युक्तेयंसंहिता
स्मृता । षड्विंशतिरातान्यत्रश्लोकानांगणितानिच १३ ॥

परिभाषा ॥ नमानेनविनायुक्तिर्द्रव्याणां जायतेकचित् ।
अतःप्रयोगकार्यार्थमानमत्रोच्यतेमया १४ जालान्तरगते
भानौयत्सूक्ष्मं दृश्यतेरजः । तस्यत्रिंशत्तमोभागःपरिमाणुः
स्य उच्यते १५ त्रसरेणुर्वुधैः प्रोक्तस्त्रिंशत्तमपरिमाणुभिः । त्रस-
रेणुस्तुपर्यायैर्नाम्नावंशीनिगद्यते १६ जालान्तरगतेरसूर्य
कर्मवंशीनिगद्यते । षड्वंशीभिर्मरीचिःस्यात्ताभिः षड्भिरतु-
राजिका । त्रिगभीराजिकाभिश्चसर्षपः प्रोच्यतेवुधैः १७
यवोऽष्टसर्षपैः प्रोक्तोगुञ्जास्यात्तच्चतुष्टयम् । षड्भिस्तुरक्लि-
काभिः स्यान्मापकौ हेमयान्यकौ । माषैश्चतुर्भिः शोणः स्या-
वमन कही उद्धार विरेचन कही दस्त ॥ १० ॥ स्नेहस्ति कहे गुदमार्ग से पिच-
कारी देना निरुद्ध्य कहे कादा दूधही पिचकारी देना उचारवस्ति कहे पिचकारी
का प्रियान अनन्तर नासविधि ॥ ११ ॥ घुवां पीनेही विधि गण्डूपाधिधि जिते
पवनकुत्रा कहते हैं लेपादि की विधि अरु शोणितत्रिकुति कही रक्त निकालना
नेजांजन ये सब उत्तरखण्ड में कहे हैं ॥ १२ ॥ यह वृत्तिस अध्याय में कहा
इस में दो सहस्र छत्ती श्लोक हैं ॥ १३ ॥

(परिभाषा) विनतुली ओपधि अयोग्यहै इसलिये प्रयोगके निमित्त में मागव
परिभाषाको बहवाहं ॥ ११ ॥ भरो पाके द्विद्रोमें जो सूर्यकी आभासे रजकणउड़ते
देखपडते हैं उनके तीसरे भागको परिमाणु कहते हैं ॥ १५ ॥ किसी २ के मतसे जो
द्विद्रोमें सूर्यकी किरणें दिनाई पड़ती हैं उस ३० परिमाणुका एक त्रसरेणु होताहै
इसीको वंशी कहते हैं वा छः वंशीकी एक मरीचीछः मरीचीकी एक राई तीन राई
की एक सरसौं ॥ १६ । १७ ॥ आठ सरसौंका एक यत्र चार यत्रकी गुंजा अर्थात्
एकरची छः रचीवा एकमाशा सोई हेम औं प न्यन्न कहा है चारमाशेका एक

द्वरणःसनिगद्यते १८ टङ्कःसएवकथितस्तद्व्यंकोलउ-
 च्यते । क्षुद्रःकोलवटश्चैवद्रङ्गणस्मनिगद्यते १९ कोलद्व-
 यंचकर्षःस्यात्साप्रोक्तापाणिमानिका । अक्षःपिचुःपाणित-
 लंकिञ्चित्पाणिश्चतिन्दुकम् २० विडालपदकंचैवतथा
 षोडशिकामता । करमध्यंहंसपदंसुवर्णकवलग्रहः २१ उ-
 दुम्बरश्चपर्यायैःकर्षएवनिगद्यते । स्यात्कर्षाभ्यामर्द्धपलं
 शुक्तिरष्टमिकातथा २२ शुक्तिभ्यांचपलंज्ञेयं मुष्टिराष्ट्रं च
 तुथिका । प्रकुञ्चःषोडशीविल्वंपलमेवात्रकीर्त्यते २३
 पलाभ्यांप्रसृतिर्ज्ञेयाप्रसृतश्चनिगद्यते । प्रसृतिभ्यामञ्ज-
 लिःस्यात्कुडवोर्द्धशरावकः २४ अष्टमानंचसंज्ञेयंकुडवा-
 भ्यांचमानिका । शरावोष्टपलंतद्वज्ज्ञेयमत्रविचक्षणैः २५
 शरावाभ्यां भवेत्प्रस्थश्चतुष्प्रस्थैस्तथाढकम् । भाजनं
 कांस्यपात्रंचचतुःषष्टिपलंचतत् २६ चतुर्भिराढकैर्द्रोणः
 कलशोनलवणोर्मणः । उन्मानश्चघटोराशिर्द्रोणपर्याय
 संज्ञितः २७ द्रोणाभ्यांशूर्पकम्भौचचतुःषष्टिशरावकः ।
 शाण यद्दी धरण ॥ १८ ॥ औ टङ्क कहाताहै दो टङ्क का एक कोल उसी रो क्षुद्र, को-
 ल वट, द्रंक्षण कहतेहै ॥ १९ ॥ दो कोल का कर्ष होताहै उसे पाणिमानिका, अक्ष,
 पिचु, पाणितल, किञ्चित्पाणि, तिन्दुक, ॥ २० ॥ विडालपदक, षोडशिका, करमय,
 हंसपद, सुवर्ण, कवलग्रह ॥ २१ ॥ और उदुम्बर कहतेहै ये सत्र कर्ष के पर्यायहै दोकर्ष
 को अर्द्धपल, शुक्ति व अष्टमिका कहतेहै ॥ २२ ॥ दो शुक्ति को एकपल औमुष्टि,
 आष्ट्र, चतुथिका, प्रकुञ्च, षोडशी, विल्व कहतेहै ये सत्र पल की पर्याय कहिये ॥ २३ ॥
 और दोपलकी एक प्रसृति जानना चाहिये और प्रसृतभी कहते है दो प्रसृतको अञ्ज-
 लि, कुडव और अर्धशराव कहतेहै ॥ २४ ॥ और अष्टमान भी कहतेहै दोकुडवको
 मानिका उसीको जो सद्वैह है अष्टपल कहते हैं ॥ २५ ॥ दो शरावकी एक प्रस्थ
 संज्ञा है २ प्रस्थ वा आठ शराव वा चौसठि पल की आठक संज्ञाहै इसे भाजन
 औ वास्यपात्र भी कहते हैं ॥ २६ ॥ चार आढकको एक द्रोण उसके सात नाम
 है कलश, नलगण, अर्मर्माण, उन्मान, गट, राशि द्रोण ॥ २७ ॥ दो द्रोणका एक

शूर्पाभ्यां च भवेद्द्रोणीवाहोगोणी च सांस्मृता २८ द्रोणी
 चतुष्टयं खारी कथितासूक्ष्मबुद्धिभिः । चतुःसहस्रपलिका
 षण्णवत्यधिका च सा २९ पलानां द्विसहस्रं च भार एकः प्रकी
 र्तितः । तुलापलशतं ज्ञेयं सर्वत्रैवैष निश्चयः ३० मापट
 ङ्काक्षविल्वानिकुडवः प्रस्थमाढकम् । राशिर्गोणी खारिकेति
 यथोत्तरचतुर्गुणाः ३१ गुञ्जादिमानमारभ्य यावत्स्यात्कु
 डवस्थितिः । द्रवार्द्रशुष्कद्रव्याणां तावन्मानं समं मतम् ३२
 प्रस्थादिमानमारभ्य द्विगुणं तद्द्रवार्द्रयोः । मानं तथा तुला
 यास्तु द्विगुणं न क्वचित्स्मृतम् ३३ मृदस्तु वेणुलोहादेर्माण्डं
 यच्चतुरङ्गुलम् । विस्तीर्णं च तथोच्चं यत्तन्मानं कुडवं वदेत्
 ३४ यद्दोषधन्तु प्रथमं यस्य योगस्य कथ्यते । तज्जाम्नेवसयो
 गोहिकथ्यतेऽत्र विनिश्चयः ३५ ॥ इति मागधपरिभाषा ॥

स्थितिर्नास्त्यवमात्रायाः कालमग्निवयो बलम् । प्रकृ
 तिदोषदेशोच दृष्ट्वा मात्रां प्रकल्पयेत् ३६ यतो मन्दाग्नि
 शूर्प, कुम्भ इसे चौसठि शरावभी कहते हैं दोशूर्पकी एकद्रोणी और वाह और गोणी
 भी कहते हैं ॥ २८ ॥ चारद्रोणी की एक खारी चारिसहस्र धानवे पलकी खारी
 संज्ञा है ॥ २९ ॥ दोसहस्र पलको भार कहिये सौ पलको तुला कहिये सब और यही
 निश्चय जानो ॥ ३० ॥ माशे से चौगुना द्रव द्रवते चौगुना अन्न गन्तते ४ पिल
 धिल्वते ४ कुडव कुडवते चौगुना प्रस्थ प्रस्थते ८ आढक आढकते ४ राशि राशि
 ते ४ गोणी गोणीते ४ खारी एकते एक चौगुनी जानो ॥ ३१ ॥ गुञ्जाते कुडवलों
 सजलपस्तु सम लेना ॥ ३२ ॥ कुडवते तुलालों सजलीरनीलेना तुला ते ऊपर
 ओदी द्रव्य दूनीलेना ॥ ३३ ॥ चारि अंगुल चौडा वा ऊंचा समान वासन मा
 दी वा लोहादि किसी वा होय उसकी कुडवसंज्ञा जानो ॥ ३४ ॥ जिस रोगपर
 जो औषध कहेंगे तिस में जिस द्रव्यका प्रथम नाम आवै उसीको योग निश्चित
 करते हैं जो रास्नादिद्रव्य इसमें प्रथम नाम रास्ना है ॥ ३५ ॥ इति मागधपरिभाषा ॥

(अथ कलिंगपरिभाषा) मात्राका कुक्षममाणहीं स्थितिकिया समयअग्नि
 अस्तथा बल प्रकृति रोग देश देखकर वैद्य मात्राका प्रमाण करै ॥ ३६ ॥ क्योंकि

प्रोह्स्वाहीनसत्त्वानराःकलौ । अतस्तुमात्रातद्योग्याप्रो
 व्यतेसुक्ष्मसम्मता ३७ यवोद्वादशभिर्गौरसर्षपैःप्रोच्य
 तेषुधैः । यवद्वयेनगुञ्जास्यात्त्रिगुञ्जोवह्लउच्यते३८ मा
 षोगुञ्जाभिरष्टाभिःसप्तभिर्वाभवेत्कचित् । स्याच्चतुर्माषकैः
 शाणःसनिष्कष्टङ्कएवच ३९ गद्यानोमाषकैःषड्भिःकर्षः
 स्याद्दशमाषकः । चतुष्कर्षैःपलंप्रोक्तंदशशाणमितंबुधैः ।
 चतुष्पलैश्चकुडवंप्रस्थाद्याःपूर्ववन्मताः ४० कालिङ्गमा
 गधंचेति द्विविधंमानमुच्यते । कालिङ्गान्मागधंश्रेष्ठमि
 तिमानविदोविदुः ४१ नवान्येवहियोज्यानि द्रव्याण्य
 खिलकर्मसु । विनाविडङ्गकृष्णाभ्यां गुडधान्याज्यमाक्षि
 कैः ४२ गुडूचीकुटजोवासाकूष्माण्डश्चशतावरी । अ
 श्वगन्धासहस्रौ शतपुष्पाप्रसारणी । प्रयोक्तव्यास्सदे
 वार्द्राद्विगुणानैवकारयेत् ४३ शुष्कलघ्वीनंयद्द्रव्यंयोज्यं
 सकलकर्मसु । आर्द्रञ्चद्विगुणंयुञ्ज्यादेषसर्वत्रनिश्चयः
 ४४ कालेऽनुक्तेप्रभातंस्यादङ्गेऽनुक्तेजटाभवेत् । भागेऽनु
 कलियुगमें मनुष्य मन्दाग्नि लघुशरीर और बलहीन होयगे इससे सदैरोंका मतहै
 कि मात्रा रोगी को यथायोग्य देनी ॥ ३७ ॥ चारह गौर सरसों का एक पव दो
 यव की एक गुंजा तीन गुंजाका एक बल्ल कहाताहै ॥ ३८ ॥ आठ गुंजा तथा सत्त
 गुंजाका माशा चार माशे का शाण उसी को निष्क और टंकरी कहते हैं ॥ ३९ ॥
 छःमाशे का गद्यान दश माशे का कर्ष चार कर्षका पल उसे दश शाणमी कहतेहैं
 चारि पलका कुडच और प्रस्थाटिकोंको प्रथम कही रीतिसे जानो ॥ ४० ॥ कनि
 गममाण से मागधप्रमाण सदैव उत्तम मानने हैं ॥ ४१ ॥ सर्वकर्मों में सब औषध
 नवीन लेना यिना पीपरि, घिडंग, धनियां, धी और शहदके ॥ ४२ ॥ गुर्चे, सुरैया, रूना
 कुम्हडा, श्वेतशतारि, असगन्ध, पात कटसरैया, कृष्णकडमरैया, सौंफ, गंधस्तार
 णी ये द्रव्य ओदी दूनी न लेना और सूनीद्रव्य सकल प्रयोगमें नवीनदेना और
 ओदी द्रव्य सूली से दूनी देना यह सर्वत्र निश्चयहै ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ निम्न औषधिके
 खान पानका काल नहीं कहा उसका मातःकाल जानना और निम्न औषधिके संग

क्लेचसान्द्रंस्यात्पात्रेऽनुक्तेचमृन्मयम् ४५ एकमप्योषधं
 योगे यस्मिन्पत्पुनरुच्यते । मागतोद्विगुणंप्रोक्तं तद्द्रव्यं
 तत्त्वदर्शिभिः ४६ चूर्णरनेहासवालेहाः प्राचशश्चन्द
 नान्विताः । कषाथलेपयोः प्रागोयुज्यतेरक्तचन्दनम् ४७
 गुणहीनं भवेद्वर्षादूर्ध्वतद्रूपमौषधम् । मासद्वयात्तथा चूर्णं
 हीनवीर्यत्वमाप्नुयात् ४८ हीनत्वं गुटिकाले हौलभेते वत्सरा
 त्परम् । हीनाः स्युर्धृततैलाद्याश्चतुर्मासाधिकारस्तथा ४९
 ओषध्यो लघुपाकाः स्युर्निर्वीर्यावत्सरात्परम् । पुराणाः स्युं
 र्गुणैर्युक्ता आसवाधात्तवोरसाः ५० व्याधेरयुक्तं यद्द्रव्यं गु
 णोक्तमपितस्यजेत् । अनुक्तमपियुक्तं यद्योजयेत्तत्रतद्बुधः ॥
 आग्नेयाविन्ध्यशैलाद्याः सौम्योहिमगिरिर्मतः ५१ अत
 रतदौषधानि स्युरनुहूपाणि हेतुभिः । अन्येष्वपि प्ररोह

का नाम नहीं लिखा तथा मूल लेना जहाँ कई ओषधि हैं ओर भागभेद नहीं है
 वहा समभाग लेना जहा ओषधि उनाने के पात्र की जाति नहीं लिखी तथा मा
 दीकही पात्र लेना जहा ओषधि को गीली करना होय और रस वा पानी वा
 दूध सिरका वा मूल कुछ नहीं लिखा तथा जान लेना ॥ ४५ ॥ जिस प्रयोगमें ग्रंथ
 कार जहा एकही ओषधि को दोबार लिखे तथा चर्षी ओषधि के दोभाग लेना यह
 प्रकार तत्त्वदर्शी वैद्य कहते हैं ॥ ४६ ॥ और चूर्ण, तेल, तृत हिम अर्क अश्लेह
 आदिकन में केवल चन्दन लिखा हो तहाँ श्वेत लेना कादे और लेपमें लाल च
 न्दन लेना ॥ ४७ ॥ वर्षभर ओषधिमें गुण रहता है फिर कम होजाताहै दोमास
 बीते चूर्ण क्षीणताको प्राप्त होताहै ॥ ४८ ॥ वर्षरहिते गोली अश्लेह का गुणहीन
 होनाहै सोलह मास बीते धी, तेल गुणरहित होते हैं ॥ ४९ ॥ वर्षरहिते लघुपाक
 निर्गुण होतेहैं जैसे भेषी, मोदक और दारु, धातुर, रस पुराने गुणदायकहोतेहैं ॥ ५० ॥
 जो ओषधि रोगको असगुणदायकहो उसे ग्रंथकी लिखी भी त्यागदेइ और जो रोग
 को हितकरै सो अनलिखी भी ग्रहणकरै ॥ ५१ ॥ दक्षिणके विंध्याचम्नादि पर्वत
 उत्पन्नप्रकृति हैं उनपर उत्पन्न ओषधि भी उत्पन्नप्रकृति होती हैं उत्तर के हिमाद
 लादि पर्वत शीतल हैं उनपरकी उत्पन्न ओषधि भी ठण्डी होतीहै और बन

न्ति वनेषूपवनेषु च ५२ गृहीयात्तानिसुमनाः शुचिः प्रा-
 तःसुवासरे । आदित्यसम्मुखोमौनीनमस्कृत्यशिवंहृदि ॥
 साधारणंधराद्रव्यं गृहीयादुत्तराश्रितम् ५३ बल्मीककु-
 तिसतानूपशमशानोपरमार्गजाः । जन्तुवह्निहिमव्याप्ता-
 नौपध्यःकार्यसाधकाः ५४ शरद्यखिलकार्यार्थं ग्राह्यं सर-
 समौषधम् । विरेकवमनार्थंचवसन्तान्तेसमाहरेत् ५५ अ-
 निस्थूलजटायास्तुतासांग्राह्यास्त्वचोबुधैः । गृहीयात्सू-
 दमसूलानिसकलान्यपिबुद्धिमान् ५६ न्यग्रोधादेस्त्वचो-
 ग्राह्यासारःस्याद्बीजकादितः । तालीसादेशचपत्राणिफलं
 स्यात्त्रिफलादितः ॥ धातक्याद्देशचपुष्पाणिस्तुह्यादेःक्षी-
 रमाहरेत् ५७ ॥ इतिशार्ङ्गधरेपरिभाषाऽध्यायःप्रथमः १ ॥

वन में जो द्रव्य होती हैं सो जैसा उस पृथ्वीका स्वभाव होताहै वैसाही उसकी
 उत्पन्न द्रव्यका भी स्वभाव होताहै ॥ ५२ ॥ मनुष्य प्रातःकाल पवित्रहो शुभदिन
 गौनटोके हृदयमें शिवका ध्यानकरि सूर्यके समुत्पत्तौ औपत्रिलावै साधारण
 जगहकी द्रव्य उत्तर मुखही होके लेना ॥ ५३ ॥ और इतनी जगहकी द्रव्य न लेना
 सर्पकी बांवी कुतिसतभूमि जहां रणभयाहो शमशानकी उत्तर जहां रेहू चूना निक-
 लता होइ उत्तरमार्ग की जहां गदहे लोटते हैं और मार्गकी दलदल कृमिस्थान
 की दग्धभूमि की पाला मारी हुई इत्यादि भूमिकी द्रव्य कार्य साधक नहीं हैं ॥
 ५४ ॥ सर्व कार्य अर्थ शरद्ऋतु में ओदी ओपधि लावै और वमन विरेचन
 के अर्थ वसन्त के अन्त में ओदी वस्तुलावै ॥ ५५ ॥ और अतिस्थूल वृत्तके
 जड़की छाल सदैव लेते हैं और सब छोटे वृत्तन की जड़ ग्राह्य है ॥ ५६ ॥ और
 धरगदादि वृत्तनकी छाल ग्राह्यहै विजयसेनारादि वृत्तका हीर लीजै तालीमांदि
 वृत्तकी पाती लीजै त्रिफलादिक का फल लीजै धनआदिकके पुष्प लीजै सेंहुडा-
 दिक का दूध लीजै इस रीति से वही ग्रहणकरै जहां केवल वृत्तका नाम है
 अज्ञ नहीं है ॥ ५७ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरेव्याख्यायां परिभाषाऽध्यायः प्रथमः ॥ १ ॥

भैषज्यमभ्यवहरेत्प्रभातेप्रायशोबुधः । कपायश्चवि
 शेपेणतत्रभेदस्तुदर्शितः १ ज्ञेयःपञ्चविधःकालोभैषज्यग्र
 हणेनृणाम् । किञ्चित्सूर्योदयेजातेतथादिवसभोजने ॥ सा
 यन्तनेभोजनेचमुहुश्चापितथानिशि २ प्रायःपित्तकफोद्रे
 केविरेकवमनार्थयोः । लेखनार्थंचभैषज्यंप्रभातेतत्समाच
 रेत् ॥ एवंस्यात्प्रथमःकालोभैषज्यग्रहणेनृणाम् ३ भैष
 ज्यंविगुणेषाने भोजनाग्रेप्रशस्यते । अरुचौचित्रभौज्यै
 श्चमिश्रंरुधिरमाहरेत् ४ समानवातेविगुणेमन्दाग्नाव
 ग्निदीपनम् । दद्याद्भोजनमध्येचभैषज्यंकुशलोभिषक् ५
 व्यानकोपेचभैषज्यंभोजनान्तेसमाहरेत् । हिक्काक्षेपककम्पे
 पुपुर्त्रमन्तेचभोजनात् ॥ एवंद्वितीयःकालश्चप्रोक्तोभैषज्य
 कर्मणि ६ उदानेकुपितेवातेस्वरभङ्गादिकारिणि । यासेग्रा
 सान्तरेदेवंभैषज्यंसान्ध्यभोजने ७ प्राणप्रदुष्टेसान्ध्यस्यभु

वैद्यलोग ओषधि सभरे खवायै और कपायादि विशेष प्रातःकाल में फांट हिम
 स्वरस कल्क आवश्यक देना और जो ओषधि देने का समय है सो आगे कहता
 हूँ ॥ १ ॥ ओषधि खानेके पांच समय हैं प्रथमकाल किञ्चित् सूर्योदयमें दूसरा
 दिनके भोजन समय में तीसरा संध्याको चौथा निशिमें भोजनके समय पांचवां
 रात्रिमें सोनेके समय ॥ २ ॥ जिस मनुष्यको पित्त और कफका वेगहो उसे रेचन
 या वमनरुही उद्धार वा लेखनक्रिया प्रातःकाल करै लेखन कहे चमड़ेकी पट्टी
 माथेपर धारिकै ओषधि भरे पित्त के अधिकार में वमन कफके अधिकार में रे-
 चन और लेखन यह ओषधि करनेका प्रथम कालचांधा ॥ ३ ॥ अपानवायुके
 विगरे में भोजनके प्रथम ओषधिदेय अरुचि में विचित्र भोजनके संग रुधिकारक
 ओषधि खवावे ॥ ४ ॥ सदैव समानवायु और मन्दाग्नि में अग्निज्वलित कारक
 द्रव्य भोजन के मध्यमें देय ॥ ५ ॥ व्यानवायु के कोपमें भोजन के अन्त में ओष-
 धि खवावे और हिचकी आत्पेक कम्पवायु में भोजनके आदि अन्त में देय यह
 दूसरा कालहै ॥ ६ ॥ स्वरभंगादि करनेवाली उदानवायु के कोप में संध्या
 समय प्राण ग्रसके अन्त में ओषधि देइ ॥ ७ ॥ माण वायु के कोप में

कस्यान्तेचदीयते । औषधंप्रायशोधीरैः कालोयंरयात्तृती
 यकः ८ मुहुर्मुहुश्चतुर्छर्दिहिकाश्वासगरेषुच । सान्नञ्च
 भेषजंदद्यादितिकालश्चतुर्थकाः ९ ऊर्ध्वजत्रुधिकारेषुले
 खनेवृंहणे तथा । पाचनंशमनंदेयमनन्नंभेषजंनिशि ॥ इ
 तिपञ्चमकालस्स्यात्प्रोक्तोभेषज्यकर्मणि १० द्रव्यैरसो
 गुणोवीर्यं विपाकःशक्तिरेवच । सम्बन्धेनक्रमादेताःप
 ञ्चावस्थाःप्रकीर्तिताः ११ मधुरोऽम्लःपटुश्चैव तिक्तःक
 टुकपायकः । इत्येतेषुद्रसाख्यातानानाद्रव्यसमाश्रिताः
 १२ धराम्बुद्धमानलजलज्वलनाकाशमारुतैः । वाय्व
 ग्निद्वमानिलैर्भूतद्वयैरसभवःक्रमात् १३ गुरुस्निग्धश्च
 तीक्ष्णश्च रूक्षौलघुरितिक्रमात् । धराम्बुद्धिपवनव्यो
 म्नां प्रायोगुणाःस्मृताः । एष्वेवान्तर्भवन्त्यन्येगुणेषुगुणस
 ञ्चयाः १४ वीर्यमुष्णं तथाशीतं प्रायशोद्रव्यसञ्चयम् ।
 तत्सर्वमग्निषोमीयं दृश्यतेभुवनत्रये ॥ अत्रैवान्तर्भविष्य
 सांक्रो भोजन के अन्त में देइ यह तृतीय काल वांवा ॥ ८ ॥ और बार बार
 प्यास छर्दि हिचकी रसास में और त्रिपपीड़ित को अन्न के संग ओषधि देइ
 यह चौथा काल वांवा ॥ ९ ॥ हसली के ऊपर कर्णरोग नेत्र गुण नासिका के
 रोगनमें लंखनके निमित्त रातको विना अन्नपाचन समय ओषधि देइ यह पथम
 काल जानना ॥ १० ॥ ओषधि के पांच अधिकार है रस १ गुण २ वीर्य ३ वि
 पाक ४ शक्ति ५ ॥ ११ ॥ सत्र द्रव्यों में द्रव्वाद्दु हैं मयुर १ सट्टा २ लवण ३
 तीक्ष्ण ४ कडुया ५ कपाय ६ ॥ १२ ॥ पृथ्वी और जलने मयुर रस होताहै १
 पृथ्वी पानसे सट्टा होताहै २ जल और अग्निसे लवण होताहै ३ आकाश और
 वायु से तीक्ष्ण होताहै ४ वायु और अग्नि से कडुया होताहै ५ पृथ्वी और अ
 ग्नि से कसैला होताहै ६ यों दो तत्त्व मिलके एकरम होताहै ॥ इति स्फोटनिः
 १३ ॥ (अथ गुण) पृथ्वीका गुण भारी है जलका चिपना अमिलानेन दादु
 का रुग्ना और आकाश का गुण हलका है ये पांचों तत्त्व के पांच गुण हैं और जो
 गुणादि भी इनके मेल से होते है सो अनुमान से जानना ॥ इति गुण ॥ १४ ॥

न्तिवीर्याण्यन्यानिचान्यपि १५ मिष्टःपटुश्चिमधुरमम्ले
 ऽम्लंपच्यतेरसः । कपायकटुतिक्तानां पाकःस्यात्प्राय
 शःकटुः १६ मधुराज्जायतेऽलेष्मापित्तमम्लाच्च जायते ।
 कटुकाज्जायतेवायुःकर्माण्येतानिपाकतः १७ प्रभावस्तु
 यथाधात्री लकुचश्चरसादिभिः । समोपिकुरुतेदोषत्रित
 यस्यविनाशनम् १८ क्वचित्तुकेवलंद्रव्यं कर्मकुर्यात्प्रभा
 वतः । ज्वरंहन्तिशिरोवद्वासहदेवीजटायथा १९ क्वचि
 द्रसोगुणोवीर्यविपाकःशक्तिरेवच । कर्मस्वस्वंप्रकुर्वन्ति
 द्रव्यमाश्रित्ययेस्थिताः २० चयकोपसमायस्मिन्दोषा
 (अथ चोत्पन्न)सर्व द्रव्यका स्वभाव गर्भ या ठंढा होताहै सो सूर्य वा चन्द्रमा करिकै
 उष्ण शीतहै इन्हीं दोनों से तो मधुरादि स्यादु द्रव्य के अन्तर उदात्त होताहै ॥ इति
 वीर्य ॥ १ ॥ (अथ विपाक) मीठे लूनजरे से मधुर रस होताहै सदा विपाकपर
 भी सदा रहताहै, कपाय कटु तिक ये तीनों विपाक पर कसुये होते हैं ॥ १६ ॥
 मधुररस से कफ होताहै अम्ल से पित्त होताहै कटु से वायु होताहै रसोंके पाक
 से तीनों दोष होते हैं ॥ इति विपाकः ॥ १७ ॥ (अथ प्रभावगुण) आंचरेका रस
 गुणवीर्य विपाक अधिकारते ममान गुण हैं यद्यपि हलकाहै तो भी निदोष नाश
 कहै कहीं लकुचस्य ऐसा पाठहै (आंचरेका गुण) वीर्य विपाक निदोषनाशहै
 और पड़हनका गुण ॥ वीर्य विपाक निदोषकारकहै जो दोनों मिलायकै देइ तो
 भी आचरा अपने प्रभावने निदोष नाश करताहै यह रागनिपटुका मतहै ॥ १८ ॥
 कोई कोई केवल द्रव्य के प्रभावसे रोग दूर होजाते हैं जैसे सहदेई की मूढ़ मापे
 पर बांधने से ज्वर छूटजाताहै ॥ इति प्रभाव ॥ १९ ॥ किमी औषधि का रस किसी
 का गुण किसी का वीर्य किसी का विपाक किसीकी शक्ति ये सब द्रव्य के आ-
 धीनहै अपनी अपनी प्रकृति के अनुसार गुण करतीहै गुरुका रस कटुवा औ गम
 है तो भी पित्त नाश करता है ॥ इति रस उदाहरण (गुण ७०) मूली कडुई है
 तौभी कफ करती है (वीर्य ७०) बड़े पञ्चमूल का काथ कडुहै तौभी वातशमन
 परताहै क्योंकि उष्ण वीर्य विपाकहै ॥ सोंठि तीवणहै तौभी वातशमनहै क्योंकि
 मधुर विपाकहै (शक्ति ७०) जैसे सुधुतमे काहै और लुप्तको नाश करताहै ॥ २० ॥
 वात पित्त कफ के पड़ानेवाली औ कृपित करनेवाली सम करनेवाली अतु का

षांसम्भवन्तिहि । ऋतुषट्कंतदाख्यातंरवेराशिषुसङ्क्र
 मात् २१ ग्रीष्मोमेषवृषौप्रोक्तौप्रावृट्मिथुनकर्कयोः । सिंह
 कन्येस्मृतावर्षांतुलावृश्चिकयोःशरत् । धनुर्ग्राहौचहेमन्तो
 वसन्तःकुम्भमीनयोः २२ ग्रीष्मेसञ्चीयतेवायुःप्रावृट्का
 लेप्रकुप्यति । वर्षासुचीयतेपित्तंशरत्कालेप्रकुप्यति २३
 हेमन्तेचीयतेश्लेष्मावसन्तेचप्रकुप्यति । प्रायेणप्रशमं
 यातिस्वयमेवसमीरणः २४ शरत्कालेचहेमन्तेपित्तंप्रावृ
 ङ्गतौऋतुः । कार्तिकस्यदिनान्यष्टावष्टावाग्रहणस्यच ।
 यमदंष्ट्रासमाख्याताश्रुत्पाहारीसजीवति २५ चंयकोप
 समादोपाविहारहारसेवनैः । समानैर्यान्त्यकालेपिधिपरी
 तैर्विपर्ययम् २६ लघुरुक्षमिताहारादतिशीताच्छ्रमात्
 प्रमाणं संक्रांति सेह ॥ २॥ मेष संक्रांति से वृष संक्रांति ताई ग्रीष्म ऋतु है मिथुन ते
 कर्क ताई प्रावृट्ट है सिंह ते कन्या ताई वर्ष है तुला ते वृश्चिक ताई शरद है धनु ते मकर
 ताई हेमन्त है कुम्भ ते मीन अर्थत वसन्त है योंयों दो दो पासकी एक एक ऋतु
 होती है ॥ २२ ॥ ग्रीष्म में वायु संचित कहे इकट्ठी हो प्रावृट्ट में कोप करती है वर्षा में
 पित्त बढ़के शरद में कोप करता है ॥ २३ ॥ हेमन्त कहे शिशिर में कफ इकट्ठा हो
 वसन्त में कोप करता है और वायु इन महीनों के बीते आपसे ज्ञान पांचरें मरिचि
 में समान होजाती है ॥ २४ ॥ शरद ऋतु औ हेमन्त ऋतु में पित्त सन होजाता है और
 प्रावृट्ट ऋतु पाइके कफ समवर्ती होता है और कार्तिक शुक्रव्रत की ऋतुओं से मन्त्र
 कृष्ण अष्टमी ताई सोलह दिन पर्यंत इन दिनों की यमदंष्ट्रा संज्ञा है इस यमदंष्ट्रा
 भर सूक्ष्म आहार करनेवाला मनुष्य सुखी रहता है बरोंके इन दिनों में पित्त के
 कोपसे विशेष अग्नि दीसहो रुधि बढ़ता है तो भोजन विशेष करता है विशेष
 भोजन अग्नि सन्तुष्ट फरदेता है तिस के ज्ञायेकी ऋतु में रूप संचय होता है
 उससे अग्नि मन्द होती है तब अन्नके परिचाक न होनेसे रोग उत्पन्न होते हैं और
 जो यमदंष्ट्रा के दिनोंमें अग्नि सन्तुष्ट न होवे वीर्य अग्नि दंष्ट्र रहै ॥ २५ ॥
 जो मनुष्य आहार विहार के समयका संवत् रत्नते है उनके देह सम रहते है और
 जो समय से विपरीत करते है उनके देह दृढे बने और करते समोते रहते
 हैं ॥ २६ ॥ और हजके, रुवे, योड़े, दंडे, जेहूर जैत यम सन्ध्याके समय गेयुन

था । प्रदोषेकामशोकाभ्यांभीचिन्तारात्रिजागरैः २७ अ
 भिघातादपाङ्गाहाज्जीर्णेन्निघातुसङ्क्षयात् । वायुःप्रकोपंया
 त्येभिःत्रिपरीतैश्चशाम्यति २८ । विदाहिकटुकाम्लोष्ण
 भोज्यैरत्युष्णसेवनात् । मध्याह्नेक्षुत्तृषारोधाज्जीर्णप्रत्यन्ने
 र्द्धरात्रके । पित्तप्रकोपंयात्येभिःत्रिपरीतैश्चशाम्यति २९
 मधुरस्निग्धशीतादिभोज्यैर्दिवसनिद्रया । मन्देग्नौतुप्र
 भातेच भुक्तमात्रेतथाश्रमात् । श्लेष्माप्रकोपंयात्येभिः
 प्रत्यनीकैश्चशाम्यति ३० ॥ इति श्रीदामोदरसूनुशार्ङ्ग
 धरेण विरचितायांसंहितायांसूत्रस्थाने भैषज्याख्यानकद्वि
 तीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ अथ नाडीपरीक्षा ॥

करस्याङ्गुष्ठमूले या धमनीजीवसाक्षिणी । तच्चेष्टया
 सुखंदुःखं ज्ञेयंकायस्यपण्डितैः १ नाडीधत्तेमरुत्कोपे
 जलौकासर्पयोग्गतिम् । कुलिङ्गकाकमण्डूकगतिंपित्त
 रयकोपतः । हंसपारावतगतिं धत्तेश्लेष्मप्रकोपतः २
 लावतित्तिरवर्त्तीनागमनंसन्निपाततः । कदाचिन्मन्दग

अथ शोकभयचिन्ता रातिके जागनेसे ॥ २७ ॥ चोट से पैरने से वासी भोजन से
 धानुन्नय से वात कोप करता है जो इनसे यचै तो वायु सम है ॥ इति वायुः ॥ २८ ॥
 दाहवाली वस्तु कटु, सटी, गरम, अतिगरम वस्तु सेवन दोषहरी को भूय प्याप्त
 रोकना आशी रात्रि के भोजन इनसे पित्त कुपित होता है इनसे सावधान रहै
 सम होता है ॥ इति पित्त ॥ २९ ॥ मीठा खटमिद्धा षडे दिनमें निद्रा भूले रहना सचेरे
 खाना अनश्रप इनसे कफ कुपित होता है ॥ इति कफ ॥ ३० ॥ इति श्रीदामोदरसूनु
 शार्ङ्गधरेण विरचितायांसंहितायांसूत्रस्थाने भैषज्याख्यानकद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

(अथ नाडीपरीक्षा) हाथके अंगुठे की जड़ में जो नाड़ी चलती है सो जीव
 की साक्षी है वैसे उसकी चेष्टा देखि कै दुःख सुख पाईवान लेइ ॥१॥ वायुप्रमान
 नाड़ी जोक सर्पकी नाई चलती है पित्तप्रमान नाड़ी गौरा और मेढककी चाल
 चल भी है कफप्रमान नाड़ी हंस और कशूतर की चाल चलती है ॥२॥ सन्निपात

मनाकदाचिद्वेगवाहिनी ॥ द्विदोषकोपतोज्ञेया हन्तिच
स्थानविच्युता ३ स्थित्वास्थित्वाचलतियासास्मृताप्राण
नाशिनी । अतिक्षीणाचशीताचजीवितंहन्त्यसंशयम् ४
ज्वरकोपेनधमनीसोष्णात्रेगवतीमता । कामक्रोधाद्वेगव
हाक्षीणाचिन्ताभयक्षुता ५ मन्दाग्नेःक्षीणधातोश्चनाडी
मन्दतराभवेत् । असूक्पूर्णाभवेत्कोष्णागुर्वीसामागरीय
सी ६ लघ्वीवहतिदीप्ताग्नेस्तथात्रेगवतीमता । सुखित
स्यस्थिराज्ञेयातथावलवतीस्मृता ॥ चपलाक्षुधितस्य
स्यात्तृप्तस्यवहतिस्थिरा ७ ॥ अथ दूतलक्षणम् ॥ दूताः
स्वजातयोऽव्यङ्गाः पटवोनिर्मलाम्बराः । सुखिनोऽवष्ट
षारूढाः शुभ्रपुष्पफलैर्युताः ८ सुजातयस्सुचेष्टाश्चस
जीवदिशिसंश्रिताः । भिषजंसमयेप्राप्तारोगिणस्सुखहेत
वे ९ ॥ इति दूतलक्षणम् ॥ वैद्याह्वानायदूतस्यगच्छतो
रोगिणःकृते । न शुभं सौम्यशकुनं प्रदीप्तंच सुखाव
की तीतर व वटेर की चाल चनती है द्वन्द्वग दो दोषकी नाड़ी कहीं घीने कहीं
जल्दी चलती है और जो नाड़ी अपने स्थानको त्यागदे तो प्राणकी इत्नेबली
है ॥ ३ ॥ जो नाड़ी दश पांचवेर चनके बन्दहोदे चन वा बन्दे घीरी चलै
औ अनिठणदीहो तो रोगो न जिणे ॥ ४ ॥ ज्वर की नाड़ी गरम है जन्द् बढ़ती है
कामातुर और क्रोधीकी नाड़ी जल्दी चलती है चिन्ता और भयकी नाड़ी क्षीण
होतीहै ॥ ५ ॥ मन्दाग्नि प्रौ धातुक्षीण भये नाड़ी अतिशीर चलती है रक्तविकार
की कुछ गरमहो पत्थरसी भारी चलतीहै आंनसंयुक्त तटे मटिपकी गनि होती
है ॥ ६ ॥ जिसकी अग्नि दीप्तहै उसकी नाड़ी हनकी जो जन्दी चलती है आ-
रोग्यकी स्थिर चलवान् होतीहै धूनेकी चन बननेकी स्थिर चलती है ॥ ७ ॥
इति नाड़ीपरीक्षा (अथ दूतलक्षणम्) अच्छी जाति वा बली जाति शंभुद
श्वेताम्बरधारी चतुर सुती घोड़ेपर सवार स्तेव फल फलसंयुक्त दूतहो जो अन्त
दूतजानिये ॥ ८ ॥ अपनी जाति होय सुन्दरहो जो बँधकी चलव दवाना क
और बैठे बँधके पास शुभ समय जाय तो रोगी सुती होय ॥ ९ ॥ इति दूतलक्षण-

हम् १० चिकित्सांरोगिणःकर्तुंगच्छतोभिपजःशुभम् ।
यात्रायांसौम्यशकुनंप्रोक्तंदीप्तंनशोभनम् ११ नारीपुत्र
वतीमागर्गेकुमारीदीपमालिका । ज्वलतोग्नेश्शुभाशश
ब्दामङ्गलंशङ्खनादिकम् १२ मृदङ्गादिध्वनिःपूर्णाकल
शोदधिमृत्तिका । फलंचमदिरामांसंमत्स्यादिकुङ्कुमादि
कम् १३ गजाश्वरथताम्बूलंचामरंकनकादिकम् । शुभं
स्याद्गच्छतोमागर्गेवैद्यस्यलाभदायकम् १४ ॥ इति शकु
नम् ॥ निजप्रकृतिवर्णाभ्यांयुक्तस्त्वैनसंयुतः । चिकि
त्स्योभिपजारोगीवैद्यभक्तोजितेन्द्रियः १५ ॥ इति रोगि
लक्षणम् ॥ कुचैलःकर्कशस्त्वयःकुग्रामीस्वयमागतः ॥
पञ्चवैद्यानपूज्यन्तेधन्वन्तरिसमा अपि १६ वैद्यःस्याद्
गुरुसन्निधानकुशलःपीयूषपाणिः शुचिर्दक्षःकालवयोव

यम् ॥ और दूनरो वैद्यके दुलाने जाते समय राहमें शुभशकुनते गशुभ प्रशुभते शुभ
जानो ॥ १० ॥ जब वैद्य रोगीके यहां यात्राकरै और उससमय यदि सौम्य शकुनहोय
तो शुभहै और दोस शुभ नहींहैं ॥ ११ ॥ जो मार्गमें पुरती स्त्री गिनै तथा दीपककी
माना ग्रहण कियेहुये रज्या मिनै, मज्वनित अग्निशिखा शंख मृदंगादिकी ध्वनि
होती मम्बुग्य दृष्टिरे तथा कुम्भ दही मिट्टी फल मदिरा मांस मदली आदिक केनर
आदि सुगन्ध पदार्थ हाथी घोड़ा रथ पान चामर सुवर्णादि पदार्थ यदि जातेहुये
मार्गमें मिनै तो शुभहै ॥ १२ ॥ १४ ॥ इति शकुनविचारः ॥ चिकित्सायोग्य जिस
रोगीकी प्रकृति और वर्ण जैसेका तैसाहै और सत्त्वसंयुक्तहै और रोगीको वैद्यसे
भक्तिहोय अर्थात् वैद्यके वाक्यमें निश्चय होय और जितेन्द्रिय अर्थात् कुपथसेवी
न होय इन्द्रिनके मंथममें नाशधानहो ऐमा रोगी चिकित्साके योग्यहै ॥ १५ ॥ इति
रोगीलक्षणम् ॥ कुचैल कही जो मैले कुचैने कुतिसतबत्त धारणकरै और विवादी
कनही जड कुग्रामत्रासी होय और बिना बुलाये आपही आवै ये पांच वैद्य यदि
धन्वन्तरि के भी समान होयें तौभी पूज्य नहींहैं ॥ १६ ॥ जिस वैद्यने सबगुण से
शास्त्राध्ययन कियाहोय और जिसकी ओपपिते प्रायशः रोगी आरोग्य होतेहोयें
अर्थात् जिसके हाथकी दीदुई ओपपि अमृतसरीसा गुणकरे व जो पवित्र व दत्तकही

लौषधिगदज्ञानोदीतःशास्त्रवित् । धीरान्तःकरणःक्रियासु
 कुशलःकारुण्यपूर्णोऽस्पृहायुक्तोभूतनियन्त्रमन्त्रचतुरोवा
 ग्नीप्रगल्भःसुखी १७ इति वैद्यलक्षणम् ॥ स्वप्नेषु न ग्नान्मु
 एडांश्चरंक्तकृष्णाश्वराद्यतान् । व्यङ्गांश्च विकृतान्कृष्णा
 न्सर्पाशान्सायुधानपि १८ बध्नतो निघ्नतश्चापि दक्षिणां दि
 शन्नाश्रितान् । महिषोष्ट्रखरारूढान्स्त्रीपुंसोर्यस्तु पश्यति ।
 सस्वस्थोलभते व्याधिं रोगीयात्येव पञ्चताम् १९ अधोयो
 निपतत्युच्चाञ्जऽलेऽग्नौ वा विलीयते । स्वापदैर्हन्यते योपि म
 तस्याद्यैर्गिलितो भवेत् २० यस्य नेत्रे विलीयेते दीपो निर्वा
 णतां व्रजेत् । तैलं सुरां पिवेद्वापि लोहं वालभते तिलान् २१ प
 काश्लं भतेऽश्नाति विशेत्कूपं रसातलम् । सस्वस्थोलभते
 रोगं रोगीयात्येव पञ्चताम् २२ दुःस्वप्नानेव मार्दांश्च दृष्ट्वा ब्रू
 यान्न कस्यचित् । स्नानं कुर्याद्दुपस्येव दद्याद्देम तिलानि च
 २३ पठेत्स्तोत्राणि देवानां रात्रौ देवालये वसेत् । कृतवैवांत्रि
 प्रीण तथा काल पराक्रम वयोनुसार रोगका धर्मात् ज्ञान करिके ओषधिकरै
 श्चैर शास्त्रवेत्ता अत्यन्तधीर क्रियाम् कुशल कर्ही प्रीण और दयालु तथा धनादि
 वाङ्मरहित यत्र मंत्रमें अतिही चतुर-प्रत्यन्त प्रगल्भ प्रसन्नचित्त धनी सम्पूर्ण
 सुखकरके सहित सर्पदा मयुर संभाषण करै-ऐसे वैद्यकी ओषधि सर्पदा श्रेयस्कर
 होती है ॥ १७ ॥ इति वैद्यलक्षणम् ॥ रोगी स्वप्नमें नंगा शिरमुंडा रक्त कृष्णवत्
 पहिरे भयंकर अंगभंग काला व फांसी और शस्त्रभी घरे ॥ १८ ॥ वांधता मारता
 किसीको दक्षिण लिये जाता अत्रता देसे वा भैस ऊंऽ व गधेपर सवार नारी
 पुरुष कोई देखै तो आरोग्यके रोगहीय और रोगीहो तो मरिजाय ॥ १९ ॥ और
 ऊंचेसे नीचे गिरा जलमें वूड़ा अग्निमें जलता पिपत्तिमें पड़ा या कुत्तेने काटाहो
 या मित्र वांधत्र वा मकरादि के मुखमें लीलताहूया देसे ॥ २० ॥ नेत्रते अन्य
 भय दीसैदीपक बुझता देखै तैल सुराभिये स्वप्नमें लोहा वा तिलपात्रे ॥ २१ ॥
 पकावापते वलाते कुयां में गिरै वा रसातल जाय ऐसे स्वप्न देखेनेवाला अच्चाहो
 वो रोगीहो रोगीहो तो मरै ॥ २२ ॥ ऐसे २ स्वप्नोंकी देखिकर किसीसे न कहै

दिनंमर्त्योद्दुःस्वप्नात्परिमुच्यते २४ स्वप्नेषुयःसुरान्भूपा
 ज्जीवतःसुहृदोद्विजान् । गोसमिद्धाग्नितीर्थानिपश्यन्सुख
 मपाप्नुयात् २५ तीर्त्वाकलुषनीराणिजित्वाशत्रुगणानपि।
 आरुह्यसोधगोशैलकरवाहान्सुखीभवेत् २६ शुभ्रपुष्पा
 णिवारांसिमांसमत्स्यफलानिच । दृष्ट्वातुरःसुखीभूयात्स्व
 स्थोधनमवाप्नुयात् २७ अगम्यागमनंलेपोविष्टायारुदि
 तंमृतम् । आममांसाशनंस्वप्नेधनारोग्याप्तयेविदुः २८
 जलौकाभ्रमरीसर्पोमक्षिकावापिचंद्रशेत् । रोगीसभूया
 दारोग्यःस्वस्थोधनमवाप्नुयात्-२९ -इति श्रीशार्ङ्गधर
 संहितायांसूत्रस्थाने । नाडीपरीक्षादिस्वप्नलक्षणदूतशकु
 नरोगिलक्षणवैद्यप्रशंसाख्यानं नामाध्यायोऽथतृतीयः ३ ॥

पचन्नामं वह्नि कृच्च दीपनं तद्यथा मिशिः । पचत्यामं नव
 ह्निचकुर्याद्यत्तद्विपाचनम् । नागकेसरवद्विद्याच्चित्रोदीप
 सपेरे नहाके सोना तिल वयवदानकरै ॥ २३ ॥ वतीन दिन प्राणी देवताओं
 के स्तोत्रादिकों का पाठकरै और रात्रिको देवस्थानमें रहै तो दुःस्वप्नके फलसे
 छूटजाताहै ॥ २४ ॥ (अथ सुस्वप्न, स्वप्नमें जो देवताओं राजा और जीवत, भिन्न,
 ब्राह्मण, गऊ, यज्ञ व तीर्थादि ऐसा काम देखै तो वह सुखको प्राप्तहोय ॥ २५ ॥ और
 मलिन जलमें पैरत शत्रुकी सेना जैसे गटारी या परित वा हाथी वा घोडा इनसजन
 पर चढ़ा देखै तो सुखहोय ॥ २६ ॥ श्वेतफूल, सूक्ष्म वस्त्र, मांस, मद्यरी व फलों
 को रोगी स्वप्नमें देखै तो रोगसे निर्मुक्तहोय जो आरोग्य होय देखै तो धनप्राप्त
 होय ॥ २७ ॥ अगम्यागमन कहे जिन स्त्रीन से गमन अयोग्यहै तिनकागमन करै,
 मललपेटै, रोता, मरवा, कचामांस खावा देखै वा बातेंकरै तो रोगी आरोग्य होय,
 और अच्छेको द्रव्य मिलै ॥ २८ ॥ और जौक, भौरी, सर्प, माली इन्हें डसे देखै
 तो रोगी आरोग्य होय और आरोग्य द्रव्य पावै ॥ २९ ॥

इति दामोदरमूनुशार्ङ्गधरविरचितसंहितायांभाषाटीकायांसूत्रस्थाननाडीपरीक्षा
 स्वप्नलक्षणदूतशकुनरोगिलक्षणवैद्यप्रशंसाख्याननामाध्यायोऽथतृतीयः ३ ॥
 (अथ दीपनपाचन) आचको न पचवै व अग्नि ज्वलितकरै उसे दीपन कहतेहैं

नपाचनः १ नशोधयति नद्वेषिसमान्दोषांस्तथोद्धतान् ।
 शमीकरोति विषमाऽऽमनंतद्यथा मृता २ कृत्वा पाकं मला
 नां यद्विस्वावन्धमधोनयेत् । तच्चानुलोमनं ज्ञेयं यथा प्रोक्ता
 हरीतकी ३ पक्तव्यं यदपक्त्वं वै वशिलं प्रकोष्ठे मलादिकम् । नय
 त्यधः स्रंसनंतद्यथा स्यात्कृतमालकः ४ मलादिकमवच्छं
 चवच्छं वापि ण्डितं मलैः । भित्वा भ्रूः पातयति तद्भेदनं कटुकी
 ५ विपक्वं यदपक्वं वा मलादिद्रवतां नयेत् । रेचयत्यपि
 तं ज्ञेयं रेचनं त्रिवृता यथा ६ अपक्वपित्तश्लेष्माणौ वलादूर्ध्वं
 नयेत्तु यत् । वमनंतद्विविज्ञेयं मदनस्य फलं यथा ७ स्था
 नाद्बहिर्नयेदूर्ध्वमधो वामलसञ्चयम् । देहसंशोधनंतत्स्या
 देवदालीफलं यथा ८ शिलष्टान्कफादिकान्दोषानुन्मूलय
 तियद्बलात् । छेदनंतद्यवक्षारो मरिचानि शिलाजतु ९ धा
 तून्मलान्वादेहस्य विशोष्यो ल्लेखयेच्च यत् । लेखनंतद्यथा
 यथा सौंफ और आंवको पचावै अग्नि न बढ़ावै उसे पाचन कहते हैं यथा नागमेसर
 और चीता ये दोनों दीपन व पाचन कहाने हैं ॥ १ ॥ जो द्रव्य कोठे को न शुद्ध
 करे व मल न वायै और बदेदोष को शमन करे उसे शमन कहते हैं यथा गुर्बि ॥
 २ ॥ और जो द्रव्य मलको पकाय भेदनकर गिरावै उसको अनुलोमन कहते हैं
 यथा हड़ ॥ ३ ॥ जो वस्तु पकनेयोग्य अन्नपची होय कोठे में लपटिकै रहिगई
 हो तिसे अधोमार्ग से गिरावै उसे संमन कहते हैं यथा अमलतास ॥ ४ ॥ जो
 मल वातादिक दोष से बंधा होय वा गोठे पड़गये हो उसे फोरिकै अधोमार्ग से
 गिरावै तिस द्रव्यको भेदन कहते हैं यथा कुटुकी ॥ ५ ॥ जो मल वातादि दोषसे
 विशेष पकगया हो या अपक्वहो उसे पतलाकरि बहावै उसको रेचन कहते हैं यथा
 मिश्रोय ॥ ६ ॥ जो द्रव्य कच्चा पित्त कच्चा कफ ऊर्ध्वमार्ग से निकालै उसे वमन
 कहते हैं यथा मैनफल ॥ ७ ॥ जो द्रव्य दुष्टमल वा पित्त कफ स्वान्नुद्धाकर ऊर्ध्व
 मार्ग या अधोमार्ग से गिरावै उसे शरीरशोधन कहते हैं ऐसी गरीरशोधी कौन
 द्रव्यहै यथा देवदाली कहे बनेतोरई ॥ ८ ॥ जो ऊँड़के ————— नोपनतो स्व
 शक्तिकरि निकारै उसे छेदन कहते हैं यथा यपात्तारादि और सौंदि, मिर्च, पीपरी,

क्षौद्रं नीरमुष्णं वचा च वाः १० दीपनं पाचनं यत्स्याद्द्रव्यत्वाद्
 द्रसशोषकम् । ग्राहितञ्च यथाशुण्ठी जीरकं गजपिप्यली ११
 रौक्ष्याच्चैत्यात्कपायत्वाच्छुपाकाञ्च यद्भवेत् । वालकृत्स्त
 म्भनंतत्स्याच्चथावत्सकटुष्टकौ १२ रसायनञ्च तज्ज्ञेयं यज्ज
 राव्याधिनाशनम् । यथाऽमृतारुदन्ती च गुग्गुलुश्च हरी
 तकी १३ यस्माद्द्रव्याद्भवेत्स्त्रीषु हर्षोवाजीकरञ्च तत् ।
 यथानागत्रलाद्याः स्युर्वीजं च कपिकच्छुजम् - १४ सद्यः शु
 क्रकरं यच्च तद्बृह्यं स्याद्यथापयः । देहस्थूलकरं यच्च वृंह
 णंतद्यथाभिपम् । यस्माच्छुक्ररयवृद्धिः स्याच्छुक्रलञ्च तद्दु
 च्यते । यथाश्वगन्धामुञ्जली शर्करा च शतावरी १५ दुग्धं
 माषाश्च मल्लान्फलमञ्जामलाभिच । प्रवर्तकानि कथ्य
 न्ते जनकानि च रेतसः १६ प्रवर्तनं स्त्रीशुक्रस्थरेचनं बृहती
 फलम् । जातीफलं स्तम्भनञ्च शोषणी च हरीतकी १७ दे
 हस्यसूक्ष्माच्छिद्रेषु विशेषत्सूक्ष्ममुच्यते । तद्यथासैन्धवं क्षौ
 शिलाजीत इति छेदन ॥ ६ ॥ रसादि धातु और शरीरके मल किन्हें सुला के
 देहको दुर्बल करे उसे लेसन कहते हैं यथा उष्णजल च च यव ॥ १० ॥ जो
 दीपन और पाचन करे और गर्मी करिबे कफ धातुमल इनके रमको सुम्नवैतिसे
 ग्राही कहने हैं यथा सौंठि श्वेतजीरा और गजपीपरि ॥ ११ ॥ जो द्रव्य रुक्तहो
 और ठण्डाहो कपायहो और पाचनशक्ति नीरहो उस मातहत द्रव्यको स्तम्भन कहते
 हैं यथा फुरैया और (स्योमरू) सोहनपत्ती ॥ १२ ॥ जो द्रव्य बरस्रथाके रोगन
 को दूरकरे उसे रसायन कहते हैं यथा गुर्ध, वृद्धवन्ती, गुग्गुलु ॥ १३ ॥ जिस द्रव्यसं
 भैधुनमें विशेष गुल्लहो उसे याजीकरण कहते हैं यथा बरियारा क्रिमाचर्मीगी ॥ १४ ॥
 जो शीघ्रहो शुक्र कबी रीषिको यदावे उसे बृह्य कहते हैं यथा दूध-और जो देहको
 स्थूल करी हृष्ट पुष्ट मोटाकरे उसे वृंह्य कहते हैं यथा आमिष कही मास-जो धा
 तुको यदावे उसे शक्रन कहते हैं यथा श्वसगन्ध, मुशन्ती, शर्करा और शतावरि ॥
 १५ ॥ और जो धातुकी वृद्धिकर उसे रेतजन्य कहते हैं यथा, दूध, उर्द भिलौनी आं-
 चरा ॥ १६ ॥ शुक्रको प्रकट करनेवाला क्षौकी धातुको रचन करनेवाला षडी

द्विनिम्बतैलंरूद्रवम् १८ पूर्वव्याप्याखिलंकायंततःपाक
 उच्यते। व्यवायितयथाभङ्गाफेनंचाहिसमुद्भवम् १९
 सन्धिवन्धास्तुशिथिलान्यत्करोतिविकाशितत् । विश्ले
 ष्यौजरचवातुभ्योयथाक्रमककोद्रवः २० बुद्धिलुम्पन्ति
 यद्द्रव्यंमदकारितदुच्यते । तमोगुणप्रधानञ्चयथाम
 द्यंसुरादिकम् २१ व्यवायिचविकाशिस्थात्सूक्ष्मंछेदिमदा
 वहम् । आग्नेयंजीवितहरंयोगवाहिस्मृतंविषम् २२ नि
 जवीर्येणयद्द्रव्यंस्त्रोतोभ्योदोषसञ्चयम् । निरस्यतिप्र
 माथिस्थात्तद्यथामरिचंवचा २३ पैच्छिल्याद्गौरवाद्द्रव्यं
 रुद्धारसवहासिसराः । धत्तेयद्गौरवंतस्यादभिष्यन्दियथा
 दधि २४ ॥ इति श्रीदामोदरसूनुशार्ङ्गधरविरचितसं
 हितायांचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

धात्वाशयान्तरस्थरतुयःक्लेदस्त्वधितिष्ठति । देहोष्ण
 णाविपक्रोयःसाकलेत्यभिधीयते । कलास्सप्ताशयास्सप्त
 भद्रकटैया का फल है और वीर्यस्तंभी जायफल है और वीर्यरोक्क इह इत्यर्थ
 है ॥ १७ ॥ जो वस्तु रोममार्ग से शरीरमें पैठे उसे सूचन करते हैं वस्तु क्लेद
 शब्द, नीप और रेडीका तेल ॥ १८ ॥ मम शरीरको बन्दन करे वस्तु जो बने
 व्यवायी कहते हैं यथा भांग और अपीप ॥ १९ ॥ देहके उच्च धनिद्रवसादिक
 घातु और शुक्रको क्षीणकरे उसेविकाशी कान्ते वस्तु जो और कोद्रव ॥ २० ॥
 जो वस्तु बुद्धिको संभ्रमकरे मदकरे और उच्च होइ मो तमोगुणी है मन्सुरादि
 नशा ॥ २१ ॥ व्यवायी, विकाशी, सूक्ष्म, वेदनहृद्, मज्ज, अग्निवर्द्धन और मन्सु-
 कारक ये सब द्रव्य जिस थोपविकासंग पावे उत्तीक सा गुणकरे ऐसा विष होना
 है ॥ २२ ॥ जो द्रव्य अपने पराक्रमसे संचित दोषोंको निकाले दार तने प्रमायी
 करतेहैं यथा मरिच और वच ॥ २३ ॥ जो पदार्थ आपसे निम्नप्राणुगुणके समान
 हिनी सिराओंको निरोध करे और शरीरको बद्ध करे उसे अभिष्यन्दी कहतेहैं यथा
 दही ॥ २४ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरभाषाटीकासमेता चतुर्विंशत्यध्यायः ॥ ४ ॥
 जो आर्द्रपदार्थ घातु और आमाराज के बन्दन में मिन और देहकी उष्णता

धातवस्सप्ततन्मलाः १ सप्तोपधातवस्सप्तत्वचस्सप्तप्र
कीर्तिताः । त्रयोदोषानवशतंस्नायूनांसन्धयरतथा । द
शाऽधिकंचद्विशतमस्थनांषत्रिंशतंमतम् २ सप्तोत्तरंमर्म
शतंसिरास्सप्तशतंतथा । चतुर्विंशतिराख्याताधमन्योर
सवाहिकाः । मांसपेश्यःसमाख्यातानृणांपञ्चशतंबुधैः३
स्त्रीणांचविंशत्यधिकाःकण्डराश्चैवषोडशानृदेहेदशरन्ध्रा
णिनारीदेहेत्रयोदश । एतत्समासतःप्रोक्तंविस्तरेणाधुनो
च्यते ४ मांसामृग्मेदसांतिस्त्रोयकृत्प्लीहोश्चतुर्थिकाः ।
पञ्चमीचतथान्त्राणां षष्ठीचाग्निधरामता । रेतोधरास
प्तमीस्यादितिसप्तकलाःस्मृताः५ श्लेष्माशयः स्यादुरसि
तस्मादामाशयस्त्वधः । ऊर्ध्वमग्न्याशयोनाभेर्वाभभागे
व्यवस्थितः ६ तस्योपरितिलंज्ञेयं तदधःपवनाशयः ।
मलाशयस्त्वधस्तस्य वस्तिर्मूत्राशयस्त्वधः । जीवरक्ता
विषफ हो उसका कलानाम है (अथ शारीरक) शरीरमें कला ७ स्थान ७
धातु ७ धातुमल ७ ॥ १ ॥ उपधातु ७ त्वा ७ दीप ३ सूक्ष्म नस २०० जूड
२१० इट्टी ३०० ॥ २ ॥ मर्मस्थान १०७ मध्यमनस ७०० शूलनाडी २४ पुरुष
के मासग्रथि ५०० ॥ ३ ॥ स्त्रीके मासकी गांठि ५२० पुष्टनसे फैलने समिटने
वाली २६ पुरुषके शरीर में छेद २० स्त्रीके २३ यह सन्नेप कहा आगे विस्तारसे
कहेगे ॥४॥ (अथ शरीर की ज्ञात कला पहिले कहते हैं) मासकोधारण
करनेवाली मासधरा पहलीकला रक्तको धारण करनेवाली रक्तधरा दूजी कला २
मेदको धारे यह मेदोपरा तीसरी ३ कफको धारण करनेवाली चौथी यकृतप्लीहा ४
अन्न धारणेवाली पाचर्षी पुरीपधरा ५ अग्निधारिणी छठीकला पित्तपरा ६
शुक्रधारणी सतई कला रेतोधरा ७ ये सातों कला है ॥ ५ ॥ छातीमें कफस्थान
है जिसेसे कुछ नीचे आमस्थान है नाभि के ऊपर बाईओर अग्निस्थानहै ॥ ६ ॥
तिस अग्निस्थानके ऊपर विलहे उसे श्लोम कहतेह रही प्यासस्थान कहतेहैंऔर
अग्निस्थानके तरे पत्रनाशयहै उसे वायुस्थान कहते है उसी के नीचे जामभागमें
मलस्थान है जिसे पकाशय कहते हैं और उसी पवनोशय के नीचे टक्षिणभाग

शयमुरोज्ञेयास्सप्ताशयास्त्वमी ७ पुरुषेभ्योधिकाश्चान्येनारीणामाशयास्त्रयः । धरागर्भाशयःप्रोक्तःस्तनौस्तन्याशयौमतौ ८ रसासृच्छ्वांसमेदोस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः । जायन्तेन्योन्यतःसर्वे पाचिताःपित्ततेजसा ९ जिह्वानेत्रकपोलानांजलंपित्तंचरञ्जकम् । कर्णविडूसनादन्तकक्षामेढ्रादिजंमलम् १० नखानेत्रमलंबक्त्रेस्निग्धत्वंपि टकास्तथा । जायन्तेसप्तधातूनांमलान्येतान्यनुक्रमात् ११ कफपित्तमलश्चैव प्रस्वेदोनखरोमच । स्नेहान्नित्वंस्वंसौजश्चधातूनांक्रमशोमलाः । रसाद्रक्तंततोमांसंमांसान्मेदःप्रजायते १२ मेदसोऽस्थिततोमज्जामज्जायाश्शुक्रसंभवः । स्तन्यंरजश्चनारीणांकालेभवतिगच्छति । शुद्धमांसंभवःस्नेहो यस्सात्सृष्ट्यन्तेवसा १३ स्वेदोदं

तास्तथाकेशास्तथैवौजश्च सप्तमम् । ओजःसर्वशरीरस्थं
शीतं स्निग्धं स्थिरं मतम् । सोमात्मकं शरीरस्य वलपुष्टि
करं मतम् । इति धातुभवा ज्ञेया एते सप्तोपधातवः १४
ज्ञेयावभासिनीपूर्वा सिध्मस्थानं च सा मताः । द्विती
यालोहिताज्ञेया तिलकालकजन्मभूः १५ इवेतातृती
यासङ्ख्याता स्थानञ्चर्मदलस्यसा । ताम्राचतुर्थीवि
ज्ञेया किलासद्वित्रभूमिका १६ पञ्चमीवेदिनीख्याता
सर्वकुष्ठोद्गवाचसा । विख्यातालोहिताषष्ठी ग्रन्थिगण्डा
पचीस्थितिः १७ स्थूलात्वक्सप्तमीख्याता विद्रध्यादेः
स्थितिश्चसा । इति सप्तत्वचः प्रोक्ताः स्थूलात्रीहिद्वि
मात्रया १८ वायुः पित्तं कफो दोषा धातवश्च मलास्तं
था । तत्रापि पञ्चधा ख्याताः प्रत्येकं देहधारणात्
१९ पवनस्तेषुबलवान्विभागकरणान्मतः । रजोगुणमयः
धातुकी उपधातु रजजो स्त्रीके काल पाय होती है अरु कालही पाय जाती रहती
है शुक्र मांसकी उपधातु, वसा मेदकी उपधातु पत्तीना अस्थिकी उपधातु, दांत
मज्जाकी उपधातु, बल पुरुषार्थ ऐसेही सातों धातुनमे सातों उपधातु होती हैं ॥ १३ ।
१४ ॥ (अथसप्तत्वक्) यही अवभासिनी ऊपरकी खाल जिसमें से छुत्तोंकी जन्म
भूमि है १ तृती लोहिता तिसमें तिलकालक रोम होते हैं ॥ १५ ॥ तीजी श्वेतामें दाढ़
होता है ३ चौथी ताम्रा जिसमें किलास कुष्ठ होता है ४ ॥ १६ ॥ पञ्चमी वेदिनी
सर्वकुष्ठभूमि है ५ छठी लोहिता में गण्डमाला त्रीधे अपची ये रोगहोते हैं ६ ॥
१७ ॥ सप्तम स्थूला में जहरनात नासूर भगंदरादि होते हैं ये सातों मिलकौ दोष
समान मुद्राई पाती है यह चरक कहते हैं जहां मांसविशेष मोटा होता है वहां
इतनी मोटी होती है ॥ १८ ॥ (अथ तीनों दोष) वात, पित्त, कफ ये प्रत्येक देहधारी
के मसिद्ध हैं सो रसादिक धातुन का मलिन करते हैं इससे इनका नाम मल भी
है सो पांच पांच प्रकारके मुद्घुत में लिखे हैं (संस्कृत) तत्रमस्यन्तनोद्गहनपूरणवि
वेकपरणलक्षणोवायुः ॥ १९ ॥ वायु सर्वमसुन को निज निज स्थानमें पहुँचा
देता है इस कारण तीनों दोष में वायुही प्रबल है और रजोगुणी सूक्ष्म ठंडी रुखी

सूक्ष्मः शीतो रूक्षो लघुश्चलः । शरीरदूषणाद्दोषाधातु-
 देहधारणात् २० वातपित्तकफाज्ञेया मलिनीकरणान्म-
 लाः । पित्तं पङ्क्तुः कफः पङ्क्तुः पङ्क्तुवोमलधातवः । वायुनाय-
 त्रनीयन्ते तत्र गच्छन्ति मेघवत् २१ मलाशये च स्त्रकोष्ठे
 वह्निस्थाने तथा हृदि । कण्ठे सर्वाङ्गदेशेषु वायुः पञ्चप्रकार-
 तः । अपानः स्यात्समानश्च प्राणोदानौ तथैव च २२ व्या-
 नश्चेति समीरस्य नामान्युक्तान्यनुक्रमात् । हृदि प्राणो गु-
 देऽपानः समानो नाभिसंस्थितः । उदानः कण्ठदेशस्थो व्या-
 नस्सर्वशरीरगः २३ पित्तमुष्णं द्रवं पीतं नीलं सस्त्रगुणोत्तर-
 म् । कटुतिक्तसंज्ञेयं विदग्धं चान्तरजैत् । अग्न्याशये
 भवेत्पित्तमग्निरूपं तिलोन्मितम् २४ त्वचिकान्तिं करं ज्ञेयं
 लेपाभ्यङ्गादिपाचकम् । दृश्यं यकृतियत्पित्तं तद्रसं शोणितं
 नयेत् । यत्पित्तं नेत्रयुगले रूपदर्शनकारितम् २५ यत्पित्तं
 हृदये तिष्ठन्मेधाप्रज्ञाकरञ्चतत् । पाचकं भ्राजकञ्चैव रज्ज-

कालोचकेतथा । साधकं वैवपञ्चैवपित्तनामान्यनुक्रमात्
 २६ कफःस्निग्धोगुरुःश्वेतःपिच्छिलःशीतलस्तथा । तमो
 गुणाधिकःस्वादुर्विदग्धोलवणोभवेत् २७ कफश्चामाश
 येमूर्द्धिकण्ठेहृदिचसन्धिषु । तिष्ठन्करोतिदेहेषुस्थैर्यसर्वा
 ज्ञप्राटवम् २८ क्लेदनःस्नेहनश्चैवरसनश्चावलम्बनः ।
 श्लेष्मणश्चेतिनामानिकफस्योक्तान्यनुक्रमात् २९ स्ना
 यत्रोवन्धनंप्रोक्तादेहेमांसास्थिमदसाम् । सन्धयश्चाङ्गस
 न्धानादेहेप्रोक्ताःकफान्विताः । आधारश्चतथासारःकाये
 स्थीनिबुधाविदुः ३० सर्माणिजीवाधाराणिप्रायेणमुनयो

और धारणा चैतन्यता रखता है ताकी पांच नाम से स्थिति जानना पाचक ?
 भ्राजक २ रंजक ३ आलोचक ४ सायक ५ इसमकार पिचके पांच स्थान व पांच
 नाम क्रमसे जानना चाहिये ॥ २६ ॥ (अथ कफ) कफ बिकला, भारी, लसलसा
 श्वेत, ब्यादा, तमोगुणी विशेष है और मयुर है दग्धभये जुनखरा होजाता है अन्य
 मतवाले हलका कहते हैं कि पानी पर तिरताई सो कारण यह है कि स्निग्धता
 करिके पानी में भवेश नहीं करता वास्ताय गुरुही है ॥ २७ ॥ और आम स्थान में
 माथेमें कण्ठमें हृदयमें संधिन में ऐसे देहमें स्थितहो पुष्ट रखता है ॥ २८ ॥ तिसके
 नाम क्लेदन १ स्नेहन २ रसन ३ अवलम्बन ४ और श्लेष्मण ५ ये नाम स्थानक्रमसे
 जानना यथा आमस्थाने क्लेदन इसमकार से ॥ २९ ॥ नौसै संधिवाली नसै मास
 दाड़ चरनीको लपटी रहती है और देहमें श्रंग २ प्रति संधिकरुहें जो उसे कफसे लपटे
 हैं सो संधि दोषकारकी है चर और अचर चरतो ठोड़ी कपर शारदा कण्ठ की हैं
 और अंगनकी अचर कहते हैं जैसे तेलके संयोग से रथके पहिया अपने ठौरमें फि
 रते हैं तैसे कफके संयोगसे हड्डी विना श्रम फिरा करती हैं और बुधजन कहते हैं कि
 अस्थिन के आधार देहदे ताते देहका सारहै ॥ ३० ॥ और मर्मस्थान मुनि जीवाधार
 कहते हैं सो पाचमकारकाहै मांसमर्म १ १ तिरामर्म ४१ स्नायुमर्म २७ अस्थिमर्म ८
 संधिमर्म २० सत्र मर्म १०७ हैं संधिबंधनी सिरा दौप और धातुवाहकहैं सो २४ हैं
 निवमें दश नाभिस्थानमें हो नीचेजाती हैं वात, पूत्र, मल, शुक्र, अन्नपान रसका नीचे
 पहुँचाना उनका कर्भहै और दश ऊर्ध्वगतहै सो शब्द, रस, गन्ध, रसास, जमुदाई और
 सुभा, तृप्ता, शक्ति, उकार इन सत्रको अपने २ स्थान में दीपन करती हैं और चार

जगुः । सन्धिवन्धनकारिण्योदोषधातुवहाः सिराः ३१ धम
 न्योरसवाहिन्योधमन्तिपवनंतनी । मांसपेश्योवलायस्युर
 वृष्ट्मभायदेहिनाम् ३२ प्रसारणाकुञ्चनयोरङ्गाणांकण्डरा
 मताः । नासानयनकर्णानांद्वेद्वैरन्ध्रेप्रकीर्तिते ३३ मेहना
 पानवक्राणामेकैकरन्ध्रमुच्यते । दशमंमस्तकेप्रोक्तरन्ध्राणी
 तिनृणांविदुः ३४ स्त्रीणांत्रीण्यधिकानिस्युःस्तनयोर्गर्भ
 वर्त्मनः । सूक्ष्मछिद्राणिचान्यानिमतानित्वचिजन्मिनाम्
 ३५ तद्वामेफुफ्फुसंस्त्रीहादक्षिणाङ्गैश्चकृन्मतम् । उदानवायो
 राधारःफुफ्फुसंप्रोच्यतेबुधैः ३६ रक्तवाहिसिरामूलंस्त्रीहा
 र्व्यातोमहर्षिभिः । यकृद्रज्जकपित्तस्यस्थानंरक्तस्यसंश्र
 यम् ३७ जलवाहिसिरामूलंतृष्णाच्छादनकंतिलम् । वृ
 जिनकी तिर्धी गतिहै सो अगणित शाखाहो सर्वागमें जालेकी नाई रोम २ प्रति
 पूरित हैं उन्हीं के मुखों से स्वेद देहके बाहर रोमों में होके आताहै और उसी
 मार्गहो लेपन मर्दानादि पदार्थ प्रवेश करते हैं ॥ ३१ ॥ और रसवाहिनी धमनी
 को नाड़ी कहतेहैं वे बायुको अपने वेगसे शरीरमें पहुँचाती हैं सो सिरा दोमकार
 की है सूक्ष्म और स्थूल तिनकी जड़ नाभिमें है वहा होके तले ऊपर दहिने बायें
 आगे पीछे सर्वत्र फैलतीहैं ये चालिसहैं १० वातवाहिनी १० पित्तवाहिनी १०
 कफवाहिनी १० रक्तवाहिनी १० सब ४० वातवाहिनी सिराके समीप दूसरी वात
 चारी १७५ नसैं हैं ऐसे दश २ चारों के पास उतनी २ है इसतरह सातसै ७०० हैं
 और देह में फैलीहैं सो बलके और रोकने के लियेहै ॥ ३२ ॥ अंगके फैलने सभेठ-
 ने को कंडराहै और दो छिद्र नाक में दो नेत्रमें दो कान में कहेंहैं ॥ ३३ ॥ एक गुल
 एक गुदा एक लिङ्ग एक मस्तक के ऊपर ये दशछिद्रहै ॥ ३४ ॥ स्त्रीके तीन छिद्र
 विशेषहै दां पयोधरपर एक गर्भस्थान और अतिसूक्ष्म छिद्र त्वचामें अगणितहैं ॥
 ३५ ॥ हृदयके वामभागमें फुफ्फुस और स्त्रीहै दक्षिणभाग में यकृदहै फुफ्फुसको
 उदानवायुके आश्रित बैद्यलोग कहते हैं ॥ ३६ ॥ और रुधिरवाही सिराओंकी
 जड़को स्त्रीहा कहतेहैं और यकृतको सद्बैध रंजक पित्तक स्थान कहतेहैं और
 रक्तका आधारहै ॥ ३७ ॥ शोणितकी कीटसे उत्पन्न हुआ दक्षिणभागमें यकृतके
 पास तिलहै उसे क्रोम कहिये सो जलवाहि सिराकी जड़में रहिके प्याम १ गताहै और

क्रौण्टिकरौप्रोक्तौजठरस्थस्यमेदसः ३८ बीजवाहिसिरा
 धारौवृषणौपौरुषावहौगर्भाधानकरंलिङ्गमयनंवीर्यमूत्र
 योः । त्रिविधःसोपिसञ्जातोरजस्सत्त्वतमोगुणैः । तस्मात्स
 त्वरजोयुक्तादिन्द्रियाणिदशाभवन् । हृदयंचेतनास्थानमो
 जसश्चाश्रयंमतम् ३९ सिराधमन्योनाभिस्थास्सर्वाव्या
 प्यस्थितास्तनुम् । पुष्पान्तिचानिंशवायोस्संयोगात्सर्व
 धातुभि ४० नाभिस्थःप्राणपवनःस्पृष्ट्वाहृत्कमलान्तरम् ।
 कण्ठाह्वहिर्विनिर्घाति पातुंविष्णुपदामृतम् ४१ पीत्वा
 चाम्यरपीयूषंपुनरायातिवेगतः । प्रीणयन्देहमखिलंजी
 वंचजठरानलम् ४२ शरीरप्राणयोरेवंसंयोगादायुरु
 च्यते । कालेनतद्वियोगाच्चपञ्चत्वंकथ्यतेबुधैः ४३ न
 जन्तुःकश्चिदमरः पृथिव्यांजायतेक्वचित् । अतोमृत्युर
 वार्यंस्यात्किन्तुरोगान्निवारयेत् ४४ याप्यत्वंयातिसा
 ध्यश्चयाप्योगच्छत्यसाध्यताम् । जीवितंहन्त्यसाध्य

जठरमें जो मेद और रक्त है सो एक पुष्टिकारक गोनाकार दोनों कहे हैं ॥ ३८ ॥
 बीजवाही सिराके आधार पुरुषार्थ करनेवाले वृषण हैं और गर्भ धारण करनेवाला
 लिङ्गवीर्य और मूत्रदा मार्ग हैं सो लिङ्ग हृदय गलेको ग्राहक चारि कण्ठराकार मरोह
 हैं और चेतनाका स्थान हृदय यलका आश्रय है ॥ ३९ ॥ और नाभिमें स्थित चौबीस
 सिरानाम धमनी सो सब शरीर में व्याप्त होके वायुके संयोगते रसादि धातुन की
 संचिकै सदा शरीर को पुष्ट करती हैं ॥ ४० ॥ नाभिवासी प्राणवायु हृदयकमल
 को स्पर्श करिकै विष्णुपदामृत पीनेको कण्ठते बाहिरहो शिरसे जाइके ब्रह्माण्ड
 से गिरताहुआ अमृत पीके फिर उसी मार्गसे आश्रयके सब शरीरको सन्तुष्टकरती
 हुई अग्निको पावनशक्ति देती है ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ पूर्वभाषित शरीर और प्राणके
 संयोग रहनेको बुधजन आयु कहते हैं और शरीर प्राण के वियोग होने को
 काल कहते हैं ॥ ४३ ॥ पृथ्वी में कोई शरीर अमर नहीं है इसी से मरने की
 ओषधि नहीं है रोगनिवारणीय ओषधि है ॥ ४४ ॥ जो मनुष्य ओषधि नहीं
 करते सो सुन्दरसाध्य रोगको कष्टसाध्य करते हैं कष्टसाध्य से असा यहते हैं ।

स्तुनरस्याप्रतिकारिणः ४५ अतोरुग्भ्यस्तनुरक्षेत्रः
 कर्मविपाकवित्तु । धर्मार्थकाममोक्षाणां शरीरसाधनंच
 यत् ४६ धातवस्तन्मलादोषानाशयन्त्यसमास्तनुम् ।
 समाःसुखायविज्ञेया बलायोपचयायच ४७ ॥ इति क
 लादिकथनम् (अथ सृष्टिक्रमः) जगद्योनेरनिच्छस्यधि
 दानन्दैकरूपिणः । पुंसोस्तिप्रकृतिर्नित्याप्रतिच्छायेवभा
 स्वतः ४८ अचेतनापिचैतन्ययोगेनपरमात्मनः । अक
 रोद्धिश्चमंखिलमनित्यंनाटकाकृतिः ४९ प्रकृतिर्विश्चज
 ननीपूर्वबुद्धिमजीजनत् । इच्छार्थीमहद्रूपामहङ्कारस्त
 तोभवत् ५० त्रिविधःसोपिसञ्जातो रजस्सत्त्वतमोगुणैः । त
 स्मात्सत्त्वरजोयुक्तादिन्द्रियाणिदशाभवन् । मनश्चजातं
 तान्याहुःश्रोत्रंत्वह्नयनंतथा ५१ जिह्वाघ्राणत्वचोहस्त
 पादोपस्थगुदानिच । पञ्चबुद्धीन्द्रियाण्याहुःसंप्रोक्तानीतरा
 णिच । कर्मेन्द्रियाणिपञ्चैवकथ्यन्तेसूक्ष्मबुद्धिभिः ५२ तमः
 असाध्य होके प्राण देते हैं ॥ ४५ ॥ जिससे कि धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इनका
 साधनहेतु शरीर है इससे शुभाशुभ ज्ञाता पुरुष अवश्य शरीर की रक्षाकरे ॥
 ४६ ॥ घटे, घड़े रसादिक धातु वा धातुमल वा वात पित्त कफ देहके हन्ता हैं
 जब ये सम रहते हैं तब सुख देते हैं व बल और पुष्टिको करते हैं ॥ ४७ ॥ इति
 कलादिकथनम् ॥ (अथ सृष्टिक्रमः) जगद्योनि इच्छारहित ज्ञानधर्मका एकही
 रूपहै ऐसे विष्णुकी नित्यप्रकृति सूर्यकी छायाकी नाई है ॥ ४८ ॥ सो प्रकृति
 चैतनरहित चैतन्य इन्द्रजालकी नाई परमात्मा के योगकरिके अनित्य संसार रचनी
 भई ॥ ४९ ॥ ऐसी विश्वजननी प्रकृतिने पहिले बुद्धिको उत्पन्न किया सो इच्छा-
 मयी महद्रूपा कहे सूक्ष्मरूपा हैं उसी बुद्धिसे अहङ्कार होताहै सो भी अहङ्कार रजः
 सत्त्व तमोगुणों से तीन प्रकारका हुआ ॥ ५० ॥ इन तीनों अहङ्कारे साहित
 पूर्ण अहङ्कार से दशइन्द्रिय और मनभया सो इन्द्रिय दोप्रकारकी कहताहैं श्रवण
 त्वचा, नेत्र ॥ ५१ ॥ जीम, नाक ५ बाणी, हाथ, पाँय, लिंग. गुदा ५ पहिले

१ पूर्वजन्मकृतपापव्यापिरूपेष्वनापते । अतोदानादिवकुर्ष्यात्सर्वतीक्ष्णविचक्षण इति ॥

सत्त्वगुणोत्कृष्टादहङ्कारादथाभवत् । तन्मात्रं पञ्चकंसस्यना
मान्युक्तानिसूरिभिः ५३ शब्दतन्मात्रकंसर्षतन्मात्रं
पमात्रकम् । रसतन्मात्रकंगन्धतन्मात्रं चेति तद्विदुः ५४ त
न्मात्रपञ्चकात्तस्मात्सञ्जातं भूतपञ्चकम् । व्योमानिलान
लजलक्षोणीरूपं च तन्मतम् ५५ शब्दस्पर्शश्चरूपं च रस
गन्धावनुक्रमात् । तन्मात्राणां विशेषास्स्युः स्थूलभावमुपा
गताः ५६ बुद्धीन्द्रियाणां पञ्चैव शब्दाद्याविषयामताः । क
र्मेन्द्रियाणां विषयाभापादानविहारतः । आनन्दोत्सर्गकौ
चैव कथितास्तत्त्वदर्शिभिः ५७ प्रधानं प्रकृतिः शक्तिर्नित्या
चाविकृतिस्तथा । एतानितस्यानामानिशिवमाश्रित्यया
स्थिता ५८ महानहङ्कृतिः पञ्चतन्मात्राणि पृथक्पृथक् ।
प्रकृतिर्विकृतिश्चैव सत्तैतानिबुधाजगुः ५९ दशेन्द्रियाणि
चित्तञ्च महद्भूतानि पञ्च च । विकाराः षोडशज्ञेयाः सर्वव्या
प्यजगत्स्थिताः ६० एवं चतुर्विंशतिभिस्तत्त्वैः सिद्धेषु
कहीहुई ज्ञानइन्द्रिय जानी पीढे कही पांच कर्मेन्द्रियहै ॥ ५२ ॥ सत्त आर तम से
उत्कृष्ट रजोगुणी अहंकार भया निसर्मे पंचतन्मात्रा भई उनका नाम पण्डितजन
कहते हैं ॥ ५३ ॥ शब्द तन्मात्रा १ स्पर्श २ रूप ३ रस ४ गन्ध ५ ये पंचतन्मात्राहै
सो पांचों ज्ञानइन्द्रिन के लक्ष्य हैं लक्ष्य यह कि जिसकी जो तन्मात्रा है उसी का
उत्त इन्द्रियको ज्ञानहै ॥ ५४ ॥ तिन तन्मात्रासे पंचभूत भये आकाश १ वायु २
अग्नि ३ जल ४ पृथ्वी ५ ॥ ५५ ॥ इनकी क्रमसे जानना सो शब्दादिक क्रमसे
स्थूलभाव को प्राप्तहोके ये पांचों विशेष हैं ॥ ५६ ॥ ज्ञानेन्द्रिन के शब्दादिक पांच
विषय माने हैं सोई कर्मेन्द्रिन के वचन १ गहिलेना २ चलना ३ सुखी ४ मल
त्याग ५ पण्डित कहे हैं ॥ ५७ ॥ प्रधान १ प्रकृति २ शक्ति ३ नित्या ४ अविद्धत ५
ये प्रकृति के नामहै इसी रीति से जानना जोकि परब्रह्मका आश्रयकरि स्थितहैं ॥
५८ ॥ महत्त्व अहंकार और पंचतन्मात्रा इन सातों को पण्डितजन प्रकृति व
विकृति कहते हैं ॥ ५९ ॥ और दशइन्द्रिय एक चित्त पंचमहाभूत ये सोलह विकार
जानना ये सब जगत् में व्याप्तहो स्थितहैं ॥ ६० ॥ इन चौंसिस तत्त्वजनसहित देहमें

गृहे । जीवात्मानियतोनित्यं वसतिस्वान्तदूतवान् ६१
 सदेहीकथ्यतेपापपुण्यदुःखसुखादिभिः । व्याप्तोवक्ष्यश्च
 मनसा कृत्रिमैःकर्मबन्धनैः ६२ कामक्रोधौलोभमोहाव
 हङ्कारश्चपञ्चमः । दशेन्द्रियाणिवृद्धिश्चतस्यबन्धायदे
 हिमः ६३ आप्तोतिबन्धमज्ञानादात्मज्ञानाच्चमुच्यते । तं
 दुःखयोगकृद्भ्याधिरारोग्यंतत्सुखावहम् ६४ ॥ इति श्रीशा
 ङ्गधरेकलादिकारुष्यानेपञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

यात्यामाशयमाहारः पूर्वप्राणानिलेरितः । माधुर्यैफेन
 भावञ्चषड्रसोपिलभेतसः १ अथपाचकपित्तनविदग्ध
 श्याम्लतां व्रजेत् । ततःसमानमरुताग्रहणीमभिधीयते २
 ग्रहण्यां पच्यते कोष्ठवह्निनाजायतेकटुः । रसोभवति स
 म्पक्वादपक्वादासम्भवः ३ वह्नेर्वलेनमाधुर्यं स्निग्धतांया
 तितद्रसः । पुष्टिःपित्तधरानामसाकलापरिकीर्तिता ४ पक्वा
 माशयमध्यस्थाग्रहणीत्यभिधीयते । पुष्णातिधातूनखि
 जीवात्मा सदैव स्थितरहताहै और जो ममहै सो उसका दूत है ॥६१॥ च उसीको
 देही कहते हैं जो पाप, पुण्य, दुःख व सुख करिके व्याप्तहै सो मनके करे कर्मनके संग
 धैयाहै ॥६२॥ काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहङ्कार ५ इन्द्रिय १० और बुद्धि ये सोहाह देह
 बन्धनके हेतु हैं ॥ ६३ ॥ जीवात्मा अज्ञान करिके इनमें वँजारहताहै और ज्ञान करिके
 बन्धनते मुक्त होजाताहै अज्ञानते दुःखके योगमें दुःखपाताहै और ज्ञान करिके सुख
 पाताहै ॥ इति सृष्टिक्रमः ॥६४॥ इति श्रीशाङ्गधरेकलादिकारुष्यानेपञ्चमोऽध्यायः ५

(अध्याहार) जो कहु भोजनकिया सो प्राणवायुसे प्रेरित मयम आमाशयमें
 जाताहै परस में कोई रसहो मधुर और फेनासा होजाताहै ॥ १ ॥ अन्वद्वन्द्वों में
 लिखाहै कि कफाशयमेंहो आमाशयमें जा फेनभाव होजाताहै इति,, मो रमभाव
 हो पाचक पित्त में दग्धमय सृष्टाहो जाताहै तब समानवायुका प्रेरित ब्रह्ममें पड़ता
 है ॥ २ ॥ फिर ग्रहणीसे अग्निकोष्ठमें पाचक कहुवा होजाताहै जो अग्नि आमाशय
 में अच्छीतरह पचा तो रसहुया अरु जो अपकरहा तो अां व होगया ॥३॥ तौन
 रस अग्निके बलसे पचिके मधुर और चिकना होजाताहै सोवर पचयरा पुष्टिकला

लान्सम्यक्पक्वोऽमृतोपमः ५ मन्दवह्निविदग्धश्च कटु
 श्याम्लोभवेद्रसः। विषभावंत्रजेद्वापिकुर्याद्वारोगसङ्करम् ६
 आहारस्यरसःसारःसारहीनोमलद्रवः । सिरामिस्तज्जलं
 नीतं वस्तौ मूत्रत्वमाप्नुयात् । तत्किञ्चमलं ज्ञेयं तिष्ठेत्पकाश
 ये च तत् ७ बलित्रितयमार्गेणयात्यपानेन नोदितम् । प्रवा
 हिनीसर्जनीचग्राहिकेतिबलित्रयम् ८ रसस्तु हृदयं याति स
 मानमरुतेरितः । रञ्जितः पाचितस्तत्रपित्तेनायातिरक्तता
 म् ९ रक्तं सर्वशरीरस्थं जीवस्याधारमुत्तमम् । स्निग्धं गुरु
 चलं स्वादुविदग्धं पित्तवद्भवेत् १० पाचिताः पित्तापेन र
 साद्याधातवः क्रमात् । शुक्रत्वं यान्ति मासेन तथा स्त्रीणां रजो
 भवेत् ११ कामान्मिथुनसंयोगेशुद्धशोणितशुक्रजः । गर्भः
 सञ्जायते नार्याः सजातोवाल उच्यते १२ आधिक्याद् रजसः

कहाती है और पकाशय आमाशय के मध्यमें स्थित ग्रंथी कही जाती है सो अच्छी
 तरह, पकाशय अमृतकी तुल्य अखिल धातुनको पोषता है ॥ ४ ॥ जो मन्दाग्नि
 करि अपकरइ तत्र कहुवा खटा विपसमान बहुतरोग उत्पन्न करत है ॥ ६ ॥ सोरस
 आहारका सार है जब आहार से रस भिन्न भया सो सारहीन आहार मल और
 जल रह गया उस जलको मूत्रवाहिनी सिराने लेके वस्ती जो मूत्रकी पैली तिस
 में छोड़ा सो मूत्र है तिसके नाम उसीकी कीटमलहो पकाशय में रहता है ॥ ७ ॥
 सो मल अपानवायुपेरित, भिजली में हो निकलता है त्रिजली कहै मलमार्ग जिस
 में तीन बल शक्तकी नाई है तिसके नाम मवाहिनी, सर्जनी, ग्राहिका ३ ॥ ८ ॥ सो
 रस समानवायुपेरित हृदय में जाता है व रंजित पित्ते पचिके रक्त होजाता है ॥ ९ ॥
 वह रक्त उत्तम जीवायारु सर्ग शरीरमें स्थित है और, चिकना है गुरु है चर है स्वादु है
 व जब दग्ध होता है तत्र पित्तसम कटु होजाता है ॥ १० ॥ पित्तकी आंचसे पचिके
 मासभरे में रसादिकघातु क्रमसे शुक्रको प्राप्त होती है तथा स्त्रीके शरीरमें उसी क्रम
 से रज होता है इसरीतिसे एक दिनमें भोजनकारक फिर रस पचिके पांचदिनमें रु
 धिर पेसे मतिघातु पांच दिनमें पचि पचिके महीनाभर में शुक्र होता है ॥ ११ ॥
 अब, सौ पुरुषकी, कामना से संयोगद्वारा शुद्ध रक्त नीर्यमिथित होता है - तत्र स्त्री

कन्यापुत्रःशुक्राधिकेभवेत् । नपुंसकंसमत्वेनयथेच्छापार
 मेश्वरी १३ अस्थीनिमज्जाशुक्रंचपितुरंशास्त्रयोमताः ।
 शुक्राश्रितोभवेच्छयावोगौरश्चरजसाश्रितः १४ बालस्य
 प्रथमेमासिदेयाभेषजरक्तिका । अवलेहीकृतेकैवक्षीरक्षौद्र
 सिताघृतैः १५ वर्षेयत्तावदेकैकांयावद्भवतिवत्सरः । माषै
 र्वृद्धिस्तदूर्ध्वस्याद्यावत्षोडशवत्सरः १६ ततःस्थिराभवे
 त्तावद्यावद्वर्षाणिसप्ततिः । ततोवालकवन्मात्राहसनीया
 शनैःशनैः । मात्रेयंकल्कचूर्णानां कषायाणांचतुर्गुणा १७
 अञ्जनंचतथालेपःस्नानमभ्यङ्गकर्मच । चमनंप्रतिमर्श
 श्चजन्मप्रभृतिशस्यते १८ कवलःपञ्चमाहर्षादष्टमात्र
 स्यकर्मच । विरेकःषोडशाहर्षाद्विंशतेऽथैवमैथुनम् १९
 बाल्यंवृद्धश्छविर्मेघात्वग्दृष्टिःशुक्रविक्रमौ । बुद्धिकर्मिन्द्रि

अथैतो जीर्णितं दशतो ह्रसेत् २० (इति आहारपाकगर्भो
 त्पित्तिकुमारपोषणानि) अल्पकेशः कृशोरुक्षो वाचाल
 शंचलमानसः । आकाशचारी स्वप्नेषु वातप्रकृतिकोनरः
 २१ अकाले पलितैर्व्याप्तो धीमान्स्वेद्री च रोपणः । स्वप्ने
 पुज्योतिपाद्रष्टापित्तप्रकृतिकोनरः २२ गम्भीरबुद्धिः स्थू
 लाङ्गः स्निग्धकेशो महाबलः । स्वप्ने जलाशया लोकीश्ले
 ष्मप्रकृतिकोनरः २३ ज्ञातव्यामिश्रचिह्नैश्च द्वित्रिदोषो
 ल्वणानरः । कौमार्यौवनवाद्धै प्राणिनां त्रिविधं वयः । क
 फपित्तानिलप्रार्थक्रमतः प्रकृतिलिधा २४ (इति हितोपदे
 शात्) तमः कफाभ्यां निद्रास्यान्मूर्च्छां पित्ततमो भवा । रजः
 पित्तानिलैर्भ्रान्तिस्तन्द्राश्लेष्मतमो निलैः २५ ग्लानिरोज
 क्षयादुःखादजीर्णान्निश्रमाद्भवेत् । यः सामर्थ्येऽप्यनुत्साहस्त
 धारणशक्ति पचासतक त्वचा साठतक दृष्टि सचरलो वीर्य अस्तीतक बल नव्ये
 लो बुद्धि सौतक कर्मेन्द्रिय चलनशक्ति एकसौ दशतक चेत एकसौ वीसतक जी-
 वत्व दश दशवर्ष प्रति यह क्रम जानना ॥ २० ॥ इति आहारपाकगर्भोत्पित्तिकु-
 मारपोषणानि (घातप्रलक्षण) सूक्ष्मकेश दुर्बल रूपा दक्षवादी मनस्थिर नहीं
 आकाशचारी स्वप्न देखे ये वानप्रकृति नरके लक्षण हैं ॥ २१ ॥ (पित्तप्रकृति) लघु-
 वयसमें येश पकें बुद्धि तीव्र स्वेद बहुत निकरै क्रोधी अग्नि नक्षत्रादि स्वप्न में देखे
 ये पित्तप्रकृति मनुष्य के लक्षण हैं ॥ २२ ॥ (कफप्रकृतिलक्षण) गम्भीर बुद्धि
 स्थूलशरीर धिकले केश अधिक बल जन्नादि स्वप्नमें देखे ये कफप्रकृति पुरुषके
 लक्षण हैं ॥ २३ ॥ (अथ द्वित्रिदोषप्रकृतिलक्षण) जो दो दोषके लक्षण हों तो द्वि-
 दोषप्रकृति जानो तीनोंके लक्षण हों तो त्रिदोषप्रकृति जानो कौमार-यौवन-
 वृद्ध यह तीनप्रकारकी अवस्था है—और कफपित्त वायुकी आधिक्यता से प्रकृतिभी
 तीनप्रकारकी है ॥ २४ ॥ इति हितोपदेशात् ॥ तमोगुण और कफ मिलके भीद
 आती है इषे स्वभावस्था रहते हैं पित्तमें तमोगुण मिलाने से अचेत होता है तिसे
 मूर्च्छा कहते हैं रजोगुण पित्तघात मिलेसे संभ्रम होता है तमोगुण कफघात संयु-
 क्त होनेसे तंद्रा होती है तंद्रावहे निद्रा स्थित न होय ॥ २५ ॥ पल्लवानिसे दुःखसे

दालस्यमुदीर्यते २६ चैतन्यशिशिलत्वाद्यःपीत्वैकंश्वास
मुद्धरेत् । विदीर्णवदनःश्वासंजृम्भासाकथ्यतेबुधैः २७ उ
दानप्राणयोरूर्ध्वयोगान्मौलिकफस्रवात् । शब्दस्सञ्जाय
तेतेनक्षुतं तत्कथ्यतेबुधैः २८ उदानकोपादाहारस्सुस्थिर
त्वाच्चयद्भवेत् । पवनस्योर्ध्वगमनंतमुद्गारंप्रचक्षते २९
इति प्रकृतिलक्षणानि ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरपण्डोऽध्यायः ६ ॥

रोगाणां गणनापूर्वमुनिभिर्द्याप्रकीर्तिता । मयात्र प्रो
च्यतेसैवतद्भेदावहवोमताः १ पञ्चविंशतिरुद्दिष्टाज्वरा
स्तद्भेद उच्यते । पृथग्दोषैस्त्रिधाहन्द्भेदेनत्रिविधःस्मृतः
२ एकरचसन्निपातेनतद्भेदावहवस्मृताः। प्रायशःसन्निपा
तेनपञ्चस्युर्विषमज्वराः ३ सन्ततःसततश्चैव अन्येषुष्क
स्त्वृतीयकः । चातुर्थिकश्चपञ्चैतेकीर्तिताविषमज्वराः ४
तथागन्तुज्वरोप्येकस्त्रयोदशविधोमतः । अभिचारग्रहावे

अजीर्णसे ग्लानि होती है सामर्थ्य रखकर कृत न कर उसे आलस्य कहते हैं ॥ २६ ॥
चैतन्य स्थानकी शिथिलता से एकरश्वासको रैचिकै मुख फैलायके झोंड़े उसे जं-
भाई कहते हैं ॥ २७ ॥ उदान और प्राणवायु के ऊपर चढ़ने से शिरका कफ गिरा-
ता है उसके शब्दको झोंक कहते हैं ॥ २८ ॥ जब आहार अपने स्थान में गया
वहाँ की भरी हुई उदानवायु कोपकरि ऊपर निकलती है उसे टकार कहते हैं ॥ २९ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसंहितायामाहारकथननामपण्डोऽध्यायः ६ ॥

प्रथम मुनियोंकी कही हुई रोगों की गणना सो इस ग्रन्थ में मैं कहता हूँ रोगोंके
बहुत भेद हैं ॥ १ ॥ पचीस भांति के ज्वरका भेद कहा है व तीनप्रकार के भिन्न भिन्न
हैं वातज्वर कफज्वर और दो दो दोष ते तीनप्रकार के हैं वातपित्तज्वर वातकफ-
ज्वर कफपित्तज्वर ऐसे कहते हैं ॥ २ ॥ और एक सन्निपातज्वर है तिसके बहुतसे
भेद कहे हैं बहुधा सन्निपातसे पांचप्रकार के विषमज्वर उत्पन्न होते हैं ॥ ३ ॥
वा जो ज्वर सदैव बनारहे उसे सन्तत कहते हैं १ एक वसा है दूसरा किसीवेर
फिर आवे उसे सतत कहते हैं २ दूसरे दिन आवे उसे अन्तरिया कहते हैं ३ तीजे
दिनवाले को तिजरिया कहें ४ चौथे दिन आवे उसे चातुर्थिक कहें ५ ये पांचवि-

शंशापैरागन्तुकस्त्रिधा ५ अमाच्छेदात्क्षतादाहाच्चतुर्धाधा
 तजोज्वरः । कामाद्गीतिः शुचोरोषाद्विषादापधगन्धतः । अ
 भिषङ्गज्वराः पट्युरेवज्वरविनिश्चयः ६ पृथग्दोषैः सम
 स्तैश्चशोकादामाद्रयादपि । अतीसारस्सप्तधास्याद्ग्रह
 पमज्वरैः ॥ ४ ॥ एकप्रकारका आगन्तुकज्वरैः सो तीन कारण करके तेरह प्र-
 कारका होताहै अमिचार कहे दोना मन्त्रादि से १ ग्रहदशा से २ शाप से ३ ये
 तीन प्रकार हैं ॥ ५ ॥ अमसे १ चोटसे २ क्षतसे ३ व जलनेसे ४ ये चारप्रकार
 आघातके कहे कामचेष्टा में स्त्रीका अभाव भये अथवा चित्तासक्त स्त्रीके वियोग
 से १ दर से २ शोकसे ३ क्रोधसे ४ विपसे अथवा विपगन्ध से ५ मयलओपधिते-
 वनसे ६ ये छः अभिपंगज्वरहै ये सय ज्वर २४ निरचय कियेगयेहै ॥ ६ ॥ अथ १२
 प्रथम कहे और तेरह आगन्तुकपक्षीसों के लक्षण कहताहै ज्वरके आनेसेदेहकापै
 ज्वर आनेका कोई समय बन्धन नहीं ॥ दोहा ॥ मूलहोठ गर्नादिनहिं अक्षुतिरुक्त
 मुखफीक । शिरहृदि शूलोदरफुले मलबधमम्भालीक ॥ इति घातज्वर ॥ वेगदस्त
 भ्रंफहडवकि कषठघ्राणमुखपाक । श्वेतप्रलापी सूड कटु मूर्च्छादाहमद्राक ॥ तृ-
 प्णा पियरो मूत्रमल नयनत्वचान्द्रमुपीत । वचन भुलाने भ्रमसहितसो पित्तज्वर
 नीत ॥ २ ॥ इति पित्तज्वर ॥ शीतलता संकुचिततन आलस मध्य सताय । श्वेत
 मूत्रमलपीठगुरु गुरुताअरुविजडाय ॥ जाडारोमांचौअवकि अतिनिद्रा तन पीर ।
 रोध नासिका अश्वणहल भवलमूत्र गम्भीर ॥ सूक्ष्मस्वेद लघुउष्णता अपचनासि-
 द्रवकासु । अरुचिनयन सितनयनरंगकफज्वर कहियेतासु ॥ इति कफज्वर ॥
 तृपणा मूर्च्छा दाहभ्रमर्नादि नमस्तकपीर । रोमहर्षगरमुखमुखैधुंधअरुचिउपकीर ॥
 शंठि शंठि पीडाकरै यात पिच्छज्वर जान ॥ इति वातपित्तज्वर ॥ संकुच शीतल
 जकड़ तन खांसी नाद प्रधान । सन्धिपीर मस्तक जकड़ घ्राण द्राव अतिस्वेद ।
 मध्यमज्वरसंतापयुतवातकफज्वरखेद ॥ इति वातकफ ॥ कटुलसलसमुख दन्तक्षत
 हिक्काकासरुप्यास । खनजांडाखनहीअरुचिकफापित्तज्वरयास ॥ इतिकफपित्त ॥ खन
 जाडा खनदाहपुनि अस्थिमायमेंपीर । लारनयनजल अश्वणमेशब्दबिलक्षणचौर
 तंद्राकंठककंठगत मोहप्रलापकास । श्वासअरुचिभ्रमजम्भखरदग्धसदृशआभास ॥
 तनमस्तफरतउतअधिररक्तमुपित्तकफन । प्यासअनिद्राहृदयभय दुष्टस्वेद मनहैन ॥
 अति दुर्बलतायातनहिं परधर कषठहिं होइ । उष्णगात फिरकीअसित दामकले-
 दरमोइ ॥ गुंगकाग पक पेटगुरु दोष बहुत दिनपाक । दोषवददोषावकषटैलक्षणस

पीपञ्चमती ७ पृथग्दोषैः सन्निपातात्तथाचामेन प्रञ्चमी ।
 प्रवाहिकाचतुर्द्वास्यात् पृथग्दोषैस्तथास्रतः ८ अजीर्णं

त्रिनिशाक ॥ कहि असाध्य लक्षण सकल कष्टसाध्यजोपाट । थोरलक्षण साध्य
 ये जो लघु सरितापाट ॥ इति सन्निपात ॥ सातकि दश द्वादश दिवस घटेनसंतत
 साप । सततचर्द द्वैमार नित कहत वैद्य निष्पाप ॥ इति संततसततज्वर ॥ वद्वैअन्येष्टु
 वारइक टिकैवटीउञ्चास । अंतरिया दिन बीचर्द तिजरी द्वैतमिजास ॥ चातुर्थिक
 दिनत्रै विरै कहत सकल रुग्णहार । भूत भेत विपरीतजप, होमजनित अभिचार ॥
 राजसादि पीडाजनित कहिज्वरग्रह आगेश ॥ वृद्ध सिद्धद्विजगुरु शपित कहतशाप
 ज्वर देश ६ ॥ अतिसारसप्तप्रकार । प्रतिदोष दोषविकार ॥ पुनिशोकअवढराय ।
 ग्रहणीपुंषकहाय ॥ प्रतिदोषसंतोत्राम । रहिजातजो भुगखाम ७ (अथातीसार
 रोग) अतीसार सातप्रकारकेहैं वातातीसार, पित्तातीसार, कफातीसार, त्रिदोषा
 तीसार, शोकातीसार, आमतीसार और भयातीसार ७ (लक्षण) जिसकेमलमेंआं
 वा फेनामिला पतला गिरै लालरंग रूखा वा हलका होय वारवार ज्वेग होहो भर-
 भराहटसे शूल से होये वातातीसारके लक्षण हैं ॥ पीत व नीला व ताव्रमल गिरै
 मूर्च्छा होय गुदा में जलन और गुदा पक जाय प्यास ये पित्तातीसारके लक्षणहैं ॥
 स्वैतरंग गाढा कफसहित त्रिसेदी गंधमलवढादेहमेंरोमहर्षहोय इति कफातीसार ॥
 सूकर मेना तथा मांस रोवन, सा मल गिरै और वातादि दोषातीसारनके लक्षण
 मिलै उसे त्रिदोषातीसार जानिये बहुत कठिनसाध्यहैं ॥ इति ॥ जो धन पुत्रादि
 वा प्रतिष्ठादि हानिके शोकसे भोजन न करे उसके शोककी उष्णता ओभङ्गी में
 हो अग्निको विकल करती है उसके तेज से रधिर उफना ताध्ररंगहोय मलकेसाथ
 गिरै वा केवल रधिर गिरै औ आमगन्ध हो वा अतिदुर्गन्ध हो उसे शोकाती
 सार कहते हैं सो भी अतिही कष्टसाध्य है अतिउष्णचीज औ पित्तकचीज खाने
 से वा व्रतसे गरमी होके निरे रधिर का भाड़ा होता है उसे रक्तातीसार कहतेहैं
 और मूलव्याधि अर्शे शोक से भी निरारक्त गिरताहै इति रक्तातीसार ॥ और अन्न
 व रसके परिपाक न होनेसे आंखहोतीहैसोमलके संगअनेकरंगहो गिरतीहैऔरशूल
 फरती है उसे आमतीसार कहतेहैं भयसे अतीसार होता है भयसे तीनों दोषकोप
 करते हैं जिस दोष के लक्षण मिलै उसी दोषका कोपजानना ॥ इति अतीसार-
 लक्षण (अथ ग्रहणीरोग) पांचतरहकी ग्रहणी होतीहै ॥ ७ ॥ वातग्रहणी, पित्त-
 ग्रहणी, कफग्रहणी, त्रिदोषग्रहणी, आमग्रहणी ४ (गृहणीलक्षण) जष अग्न्याशय

त्रिविधंप्रोक्तं विष्टब्धं वायुनामंतम् । - पित्ताद्विदग्धं विज्ञेय
 कफेनामंतदुच्यते ६ विपाजीर्णरसादेकदोषैः स्यादल
 सखिधा । विसूचीत्रिविधाप्रोक्ता दोषैः सास्यात्पृथक्पृथ
 क् ॥ दण्डकालसकश्चैवमेकैकस्याद्विलम्बिका १० अ

में वातादिकदोष स्थित होके कोपकरतेहैं उससे उत्पन्नग्रहणीरोग होताहै उससे
 आंचगिरता है दुर्गन्धसमेत वा वायुकरिके स्थित खून के भाड़ा नहीं होता और
 पित्त करिके क्षणक्षण भर में दिशालगती है तब कधी आंच या जितनी प्रकृत
 नी गिरती है शक्ति घटतीहै आलस्य, वदवाहै अग्नि मन्दहोती है उससे अन्नना
 पाक अश्रीमरह नहीं होता और वही आन्न शरीरको जड़ करती है यह संग्रहणी
 का अथम रूपाहै वायु के कुपितभये शूल, पेटफूनना, लांसी, और ग्वास होता है
 उसे वातसंग्रहणी कहिये-पित्तके कुपितभये खट्टीडकारआतीहै छाती कंड जकाता
 है खसि न होइ उसे पित्तसंग्रहणी कहतेहैं-कफ, केकुपित भये उवासी, मुत्तमीठा,
 लिबलिवा, खासी, नाकरहना, आलस्य ये कफसंग्रहणी के लक्षण जानिये-
 जिसमें तीनोंदोष के लक्षण होयें वह सन्निपातसंग्रहणी है आमवातसेहो सो आम
 संग्रहणी और संचितहोके अर्थयें चौथेदि न गिरै तिसे अमातीसार कहतेहैं और मवा-
 हिका चार भातिकी है सो अतीसारके भेद जानीयातसे पित्तसे कफसे वरक्तसे इन
 चारों से होताहै वायु कोप करिके ओझड़ीमें कफसंचयकरै फिर कुप्यके कारण
 पाके कफ मल में मिल पतला करि बहताहै उसे मवाहिका कहते हैं जो वायुहोतो
 शूल हो और मलके संग फेन गिरै यह वातमवाहिकाहै और दाहहो पीतमल गिरै
 सो पित्तमवाहिका है जो देह टूटै आलस्य होके कफमिश्रित पांडुरंगमलगिरै उसे
 कफमवाहिका कहतेहैं जो खरि मिल पतलामलयहै कैनहीं उसे रक्तमवाहिका कह-
 तेहैं ॥८॥ अजीर्ण के तीन भेदहै किया हुआ भोजन यथ योग्य न पचै उसे अजीर्णक
 हतेहैं जो वायु करके कोष्ठबद्ध होता है तब शरीरमें शूल, दड़फूटन, पेटफूलै, उसे
 विष्टब्ध अजीर्ण कहते है जो सम्भ्रम, मूर्च्छा, दाह, देहपीर, खट्टी डकारआचै जो
 वायुकरके कोष्ठबंधे उसे पित्तविदग्धाजीर्ण कहतेहैं जो उबकाई, डकार, देहभारी,
 देहभ्रजन उसे कफ अमातीर्ण कहतेहैं ॥९॥ वो अन्नभोजनकरि रस होताहै उससे
 एक विपाजीर्ण होताहै जो रस न पचै सो विष तुल्य होके मरणावस्थाके अनेक
 रोगको संचय करताहै सो वीतप्रकारकाहै विसूची, दयडालस, विलंबिना, लक्षण)
 भाड़ा खरदी २ आचै मूर्च्छा, सुषाकी शूल, भ्रम, देह में दाह, वृम्भा, देहपुनना

शीसिषड्विधान्याहृवातपित्तकफास्रतः । सन्निपाताश्च
संसर्गात्तेषांभेदोद्विधास्मृतः । सहजोत्तरजन्मभ्यांतथाशु
ष्काद्रभेदतः ११ त्रिधैवचर्मकीलानिवातात्पित्तात्कफाद्
पि।द्वाविंशतिप्रकारेणक्रमयःस्युर्द्विधोच्यते १२ बाह्यास्त
थाभ्यन्तराःस्युस्तेषुयुक्तावहिश्चराः १३ लिख्याश्चान्ये
भ्यन्तरास्स्युःकफात्तेहृदयादकाः । अन्त्रादाउदरावेष्टाश्चु
रवश्चमहागुहाः १४ सुगन्धादूर्ध्वकुसुमास्तथारक्ताश्चमा
तरः।सौरसालोमविध्वंसारोमद्वीपाह्युदुम्बराः १५ केशादा
श्चतथैवान्येशकृज्जातामकेरुकाः । लेलिहाश्चमलूनाश्च
अतिस्वेद इसे विसृचिका कहतेहैं कोई हलका कहतेहैं शरीर दंङ्गाकारहो अंकड
जाय प्यास ठकार इसे दयडालस कहतेहैं व अधो ऊर्ध्वयायुर्द्वयेके पेटस्तम्भहो फूल
शूलहो इसे पिलम्बिका व गुमशीतरस व बन्द हैजा कहतेहैं ॥ १० ॥ अर्शकहें व
धोमर छः प्रकारकी है वातार्श, पित्तार्श, कफार्श, सन्निपातार्श, रक्तार्श व संसर्गार्श व
इनके दो भेदहैं एक शरीरसे होताहै जिसे गुण्क कहतेहैं दूसरा विपरीताहार विहार
से होताहै जो श्लोकार चक्र मलमार्गमें साडे पांच अंगुलकाहै उसमें वातादिक
के कोपसे मांसका अंकुर उभर आताहै (लक्षण) माथेमें शूल, कटिरीडा, मन्दाग्नि
ये लक्षण वातार्शकेहैं ज्वर, दाह, स्वेद, मूर्च्छा ये लक्षण पित्तार्शकेहैं देवासभेद, क
रुचि, मापाभारी औ अंकुरफूलके पीडाकर बैठने में जेरा ये लक्षण कफार्शकेहैं ऐनेरी
सन्निपातार्शहैं और अति गरमी से रक्त गिरै देह पीली यन्त्राण यह रक्तार्शहैं
मलके वेगसे अंकुर रक्तदेह कांटेसे गड़ ये संसर्गार्श के लक्षणहैं ॥ ११ ॥ चर्मकील
नीनि भांतिकी होतीहै वातज, पित्तज व कफज देहमें दाहसतरह के छुपिहैं दीन
ऊर्ध्वशासी जुवा चीबहर किलनी ये केश वस्त्रकी मलिनतासे होतेहैं और अठारह
अन्तरवासीमें सात भेदहैं सो कफसे होतेहैं हृदयादिक ? अत्राद् २ उदरावेष्टश्चुरव
(चिन्ता) ४ महागुह ५ सुगन्ध ६ दूर्ध्वकुसुम ७ ये कफागुह से आमारय प्रयत्न होते
हैं कुपित होके ऊर्ध्वमार्ग अधोमार्ग हो निव लतेहैं रवेदबर्द, वात्रदण, मोटे, लम्बे
तथा धानसमान लक्षण मन्दाग्नि उदाकी ज्वर नाभिलान्त ॥ १२ ॥ १३। आर. छः
रक्तसे शत है मातर १ सौरस २ लोमविध्वंस ३ रोमहृद ४ उदुम्बर ५ ॥ १५ ॥
आर वेशादेदये रक्तवाही सिराके धानमें होतेहैं (लक्षण) लाल अतिमृद्म जो

सौसुरादामकेरुकाः । तथान्येकफरक्ताभ्यांसञ्जाताःस्नायु
काःस्मृताः १६ त्रणस्यकृमयश्चान्येधिपमावाह्ययोन्मयः ।
पाण्डुरोगाश्चपञ्चस्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा १७ त्रिदोषैर्मृ
त्तिकाभिश्चतथैकाकामलास्मृता । स्यात्कुम्भकामलाचै
कात्तथैवचहलीमकम् १८ रक्तपित्तत्रिधाप्रोक्तमूर्ध्वगंकफ
सम्भवम् । अधोगंगमारुताज्ज्ञेयंतद्वयेनद्विमार्गगम् १९ का
साःपञ्चसमुद्दिष्टास्तेत्रयःस्युस्त्रिभिर्मलैः । उरःक्षताच्चतुर्थः
स्यात्क्षयाद्वातोश्चपञ्चमः २० ज्ञयाःपञ्चैव विज्ञेयास्त्रि

देव नहीं परं वह कष्ट उत्पन्न करते हैं और मकेरुक, लिलह, मन्नुन, सौसुराद व
मकेरुक ये पाच भवततर कृमि मलमें होते हैं कचे मलमें रहते हैं श्वेत पीतदीर्घोटे
कभी मुखसे कभी मलकेसंग गिरते हैं अग्निमन्द पीड़नादि उपद्रव होते हैं कफ और
रक्तसे उत्पन्न होते हैं उसे स्नायुक (नाहरू) कहते हैं ॥ १६ ॥ और बहुत विषम व
बाह्योनि ये त्रणके कृमि हैं (अथ पाण्डु) पाण्डुरोग पांच भातिका होता है मातज,
पित्तज, कफज, त्रिदोषज, माटी भक्षण से ५ (लक्षण) मुस कातिहीन भावर कंप
सूजन पेट पजावा आलस्य ये पाहुस्वरूप हैं और कमलपाहु कुम्भकपाहु हलीमकपाहु
इनके (लक्षण) पीतचमरा, हरदीसा मूत्रनाल मल उष्ण बलहीन ये कमल पाहुदेह
उष्ण वा पीत कभी हरित सामर्थ्यहानि अनिमन्द सूक्ष्मज्वर नपुंसकतावासी ये कुम्भ
कपाहु के लक्षण हैं ऐसे ही लक्षण हलीमकपाहु हैं ॥ १७ ॥ रक्तपित्तके तीन् भेद
ज्ञानो निदान उसका यह है परिधम शो कर्मागमन यमैथुनइत्यादि आति करनेसे कथिर
उपनाय मुख और दिशासे गिरनेसे रक्तपित्त बहते हैं जय वह उपना रधिर निदान
उसका यह है कफोपता है तो मुखसे गिरता है जो वायु कोपता है तो मलमार्गसे गिरता
है अग्निकोपसे नाकमे गिरता है और कफवात दोनोंसे मुख और दिशासे गिरता है
१८ ॥ १९ ॥ कासकहे खासी पाच प्रकारकी है वातसे, पित्तसे, कफसे, कलेजेके विष
हो व धातुक्षीणसे ५ पेटकोप हृदय मस्तकपीडा सूती घास खोखी ये वातकास के लक्षण
हैं ॥ २० ॥ ज्वर, मस्तकदाह, रुमेरु, पीतकफ निकलना ये पित्तकासके लक्षण हैं ॥
खुजरी, कफसे देह जरुड़ना ये कफकासके लक्षण हैं ॥ और वातसे करेजेमें वायु
सूखी खासीकेपीडे रक्तमाना, पसुरी पीडाये क्षव कासके लक्षण हैं ॥ पाहु पाहु
१. दृश सर्वसन्धि पीडाकारके खासी उत्पन्न होती है यह पाहु क्षयकाल लक्षण है ॥ २

भिर्दोषैश्च यश्चतोचतुर्थस्सन्निपातेन पञ्चमः स्यादुरःक्षता
 त् २१ शोवाः स्युः षट्प्रकारेण स्त्रीप्रसङ्गाच्छुचोत्रणात् । अ
 ध्वश्रमाञ्च व्यायामाद्वा र्द्धक्यादपि जायते २२ श्वासाश्च
 पञ्चविज्ञेयाः क्षुद्रस्स्यात्तमकस्तथा । ऊर्ध्वश्वासो महाश्वा
 सश्छिन्नश्वासश्च पञ्चमः २३ कथिताः पञ्चहिक्कास्तुता
 सुक्षुद्रान्नजातथा । गम्भीरायमलाचैव महती पञ्चमीत
 था २४ चत्वारोग्निविकाराः स्युर्विषमो वातसम्भवः तीक्ष्णः
 पांचमकारकी क्षयीकहते हैं वातक्षय, पित्तक्षय, कफक्षय, सन्निपातक्षय, उरःक्षय
 इनका चरकके मतसे निदान कहताहूँ भुजा कौलें जलना, हाथ पावें जलना, ज्वर,
 घ्यथा, कंठस्वर विपरीत, हाथ पावें पिराना, खांसी ये वातक्षयके लक्षण हैं दाह
 होना, ज्वररहना, अतीसार, रक्तसहित मल गिरना यह पित्तक्षय के लक्षण हैं
 फोफुम पीड़ा होइ, कफगिरै, ज्वर होइ, खांसी यह कफक्षयके लक्षण हैं ज्वर रहे,
 खांसीरहे, अन्तर्दाह होइ यह सन्निपातक्षय के लक्षण हैं कण्ठ घरघराना, ज्वर
 होना, खांसी आना, अग्निमन्द, दुर्गन्धि सहित कफकी गांठिगिरै यह उरःक्षय
 के लक्षण हैं ॥ २१ ॥ शुष्करोग छःप्रकारका अतिमैथुनसे, शोचसे, क्षयसे, अति
 चलने से, अतिपरिभ्रम से, अति बुढ़ापे से जब रसादिक सात धातु शरीर को
 सुखाती हैं ॥ २२ ॥ श्वास कहे (दमा) पांच प्रकारका है क्षयीरवास, तमक
 श्वास, ऊर्ध्वश्वास, क्षिद्रश्वास, महाश्वास वायुकोप से ऊर्ध्वश्वास चढ़ती है देह
 में मंद पीर ये क्षीरश्वास साध्यलक्षण हैं कंठ घरघराना, पसुरी पीर, अतिदुःख
 से कफ निकलै, दमरहै ये तमकश्वासके लक्षण हैं बहुत ऊंची श्वासरतीं वसे
 ऊर्ध्वश्वास कहते हैं घरघराके जोरसे श्वासआवै विह्वलहो खांसने की शक्ति न
 रहे वसे महाश्वास कहतेहैं हृदयमें जाड़ा, मूर्च्छा, मलाप (अतिथक) श्वास टू-
 ना यह ऊर्ध्वश्वास असाध्यहै ॥ २३ ॥ हिक्काकहे हिचकी पांच प्रकारकी है क्षुद्रा,
 अन्नजा, गम्भीरा, यमला, महती जो बारबार वायु मद्देग से ऊर्ध्वगमनकरै उने
 क्षुद्रहिक्का कहते हैं विशेष खाने पीनेसे अन्नजा हिक्का होती है भारी शब्दसे हिचकी
 आवै वसे गम्भीरा कहतेहैं रहि रहिके आवै वसे यमला कहते हैं देह कांपिके निरं-
 तर हिचकी आवै तिसको महाहिक्का कहतेहैं ॥ २४ ॥ जठराग्नि के चार प्रकारके
 विकार हैं वातकोपसे हो वसे विषण कहतेहैं पित्तसेहो वसे तीक्ष्ण कहतेहैं कफसे
 हो वसे मन्दाग्नि कहते हैं वातपित्तसे हो वसे भस्माग्नि कहते हैं (अथलक्षण)

पित्तात्कफान्मन्दोभस्मकोवातपित्ततः २५ पञ्चैवारोचका
 ज्ञेयावातपित्तकफैस्त्रिधा । सन्निपातान्मनस्तापाच्छर्दयः स
 तधामताः २६ त्रिभिर्दोषैः पृथक्त्रिः कृमिभिः सन्निपाततः ।
 घृणायाश्चतुर्थाणां गर्भाधानाञ्च जायते २७ स्वरभेदाः
 षडेव स्युर्वातपित्तकफेष्वयः । मेदसात्सन्निपातेन क्षयात्पृष्ठः
 प्रकीर्तितः २८ तृष्णाचषड्विधा प्रोक्ता वातात्पित्तात्कफाद्
 पि । त्रिदोषैरुपसर्गेण क्षयाद्वातोश्च षष्टिका २९ मूर्च्छा च
 तुर्विधा ज्ञेयावातपित्तकफैः पृथक् । चतुर्थी सन्निपातेन तथै
 कश्च भ्रमः स्मृतः । निद्रा तन्द्रा च सन्न्यासो ग्लानिश्चैकैक
 शः स्मृतः । क्षे० मदास्सप्तसमाख्यातावातपित्तकफैस्त्रयः ।

जो अन्न कमी पचै कभी न पचै यह विपमग्नि है व भोजनपर भोजनकरै उसे
 तीक्ष्णग्नि कहते हे व थोडा भोजन करने से भी न पचै उते मंदाग्नि कहते हैं
 जो दारुण भोजनकरै अन्नपचै और देहमें न लगै उसे भस्मग्नि कहते हैं ॥
 २५ ॥ अरुचिके पाचभेदहे वातसे, पित्तमे, कफसे, सन्निपातमे, संतापसे (लक्षण)
 दातखट्टे, गुँदफोका, हृदयपीडा यह वातरोचक है गुँदकडुवा, स्वादहीन ये पित्त
 अरुचिहे हुँद फोका व चिटका यह कफ अरुचि है तीनों लक्षणहों तो सन्निपात
 अरुचि है मन सतापहो तिसमें जो दोष अधिकहो वही लक्षण जानो छर्दिहो
 वमन सो सातमकारका है ॥ २६ ॥ या छर्दि कहे धार २ उनांत वातछर्दि, पित्त
 छर्दि, कफछर्दि, सन्निपातछर्दि, कृमिछर्दि व वृषाछर्दि तथा स्त्रीके गर्भधारण समय
 सातवीं छर्दि होतीहै (अथ लक्षण) हृदय मस्तक पीडा मुसमुराँ नाभि शूल
 उवाकी फेनयुक्त उरार देह पीस ये वातछर्दि, उवकाई पीत हरित दाहयुक्त ये
 पित्तछर्दि, कफ संयुक्त उवकाईहो तो कफछर्दि जो उवकाई खट्टी नीली लाल
 दाहयुक्तहो तो सन्निपातछर्दि, जो निरंतर जीमिचलाय विशेष धूँकै तो कृमिछर्दि जो
 कुङ्कुमे उवाकै कुङ्कु धंभिरहै तो वृषाछर्दि कहै अन्य ग्रंथकारका मतहै कि स्त्रीकी
 जैनी पित्त महुतिहो उत्तनी छर्दिहो ॥ २७ ॥ स्वरभेद छः प्रकारका है वानस्वर
 पित्तपर कफपर गलेमे विशेष भेदसे सन्निसे व धातुस्यसे ॥ २८ ॥ वृषा छः
 प्रकारकी है वातज, पित्तज, कफा, त्रिदोषज धातुस्यसे, धातुस्यसे ॥ २९ ॥
 मूर्च्छा चार प्रकारकी है दातमूर्च्छा पित्तमूर्च्छा कफमूर्च्छा सन्निपातमूर्च्छा (तदु-

त्रिदोषैरसृजोमद्याद्विषांदांपिचसप्तमः ३० मदात्ययश्च
तुर्धास्याद्वातात्पित्तात्कफादपि । त्रिदोषैरपिविज्ञेयएकः
परमदस्तथा ३१ पानाजीर्णतथैकैकतथैकःपानविभ्रमः ।
पानात्ययस्तथाचैकोदाहांस्सप्तमतास्तथा ३२ रक्तपित्ता
त्तथारक्तात्तृष्णायाःपित्ततस्तथा । धातुक्षयान्मर्मघाता
द्रक्त्वपूर्णोदरादपि ३३ उन्मादाःपट्समाख्यातास्त्रिभिर्दो
षैश्चायश्चते । सन्निपाताद्विषाञ्ज्ञेयः पष्टोदुःखेनचेतसः
३४ भूतोन्मादाविंशतिःस्युस्तेदेवादानवादपि । गन्धर्वा
त्किञ्चाराद्यक्षात्पितृभ्योगुरुशापतः ३५ प्रेताच्चगुह्यकाद्वृ
क्ष्णं) संज्ञा कहे चेष्टाकी वहानेगली जो नाड़ी सो वातादिक से रुधिरको
अरुस्मात् तमोगुणको भासहो तमोगुण कहे दुःख सुखका तिरस्कार करनेवाला
काष्ठवत् भूमिपर गिरादेताहै उसे मूर्च्छा कहतेहैं और भ्रम एक प्रकारका (तिसका
लक्षण) संदेह सहित घुमेर आना निद्रा एक प्रकारकी है तन्द्रा एक प्रकारकी है
(लक्षण) कुञ्ज जगै कुञ्ज सोवै संन्यास एक प्रकार का (लक्षण) हाथ पाँव
चलै नहीं मृतक समान पढ़ारहै उसे संन्यास कहतेहैं संन्यासरोगमें बहुत जल्दी
प्रयत्न करै तो मनुष्य तुरत मरजाइ इससे हाथ पाँवकी कलाई में सूचीवेद रुधिर
निकालै मस्तकमें फस्तदे रुधिर निकालै तो जियै ग्लानि एक प्रकारकी है (से०)
मदरोग सात प्रकारका है वातमद, पित्तमद, कफमद, सन्निपातमद, रक्तके कोपसे
अधिक मद्य सेवनेसे, त्रिपयानेसे, कधी सुपारी खानेसे, मोदवखानेसे, धनूराखाने
से जैसे मद होताहै ऐसाही वातादिक कुण्ठितहो मनको विभ्रम करते हैं उसे मदकहते
हैं ॥ ३० ॥ मदात्ययरोग कहतेहैं अतिमद से चार विधिके रोगहैं पानमे, पित्तसे,
कफसे, त्रिदोषसे एक परममद कहतेहैं मनुष्यकी बुद्धिअंशहो अनेक भ्रान्ति चिह्न
करै प्राण विकलरहै उसे मदात्यय कहते हैं ॥ ३१ ॥ पानाजीर्ण एक प्रकार एक
पानविभ्रम एक प्रकार पानात्यय दाह तातप्रकारका है ॥ ३२ ॥ रक्तपित्ते, व्याससे,
पित्तसे, धातुक्षयसे, मर्मगतसे, माररानेसे, हृदयमें रुधिर संचिन्न होनेसे ॥ ३३ ॥
उन्माद रोग, दुःख, भ्रम, रक्त है वातोन्माद, पित्तोन्माद, कफोन्माद, विषसेवन से,
शोकसे (लक्षण) गर्भवातादि दोष अतिके स्वर्ग जोहो नाड़ीनागमें जाके चित्त
को भ्रमकरै उसे उन्माद कहतेहैं तब हैसै रोवै नाचै कालःशोनाइ अजीर्ण बल
त्याग बुद्धिसृष्टि मांस भोजनमें अरुचि ॥ ३४ ॥ भूतोन्मादरोग बीसतरहके हैं

द्वातिसद्वाद्भूतात्पिशाचतः । जलाधिदेवतायाश्चनागाश्चत्र
 ह्यराक्षसात्पाराक्षसादपिकूष्माण्डात्कृत्यवैतालयोरपि ३६
 अपस्मारश्चतुर्धास्यात्समीरात्पित्ततस्तथा । श्लेष्मणोपि
 तृतीयः स्याच्चतुर्थः सन्निपाततः ३७ चत्वारश्चामवाताः
 स्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा । चतुर्थः सन्निपातेन शूलान्यष्टौ
 धाजगुः ३८ पृथग्दोषैस्त्रिधा द्वन्द्वभेदेन त्रिविधान्यपि ।

देवसे, दानव से, गंधर्व से, किन्नर से, यत्तसे, पितर से, गुरुशापसे ॥ ३५ ॥ प्रेत
 से, गुह्यक से, वृद्ध और सिद्ध शापसे, भूतसे, पिशाच से, जलदेवता से, सर्पसे,
 ब्रह्मराक्षस से, राक्षस से, कूष्माण्ड से, कर्त्तव्य से (लक्षण) संतुष्ट, विजता,
 सुगंध माला धारण, संस्कृत भाषा ये देवोन्माद-ब्राह्मण, गुरु, देवताकी निंदा,
 निर्भय ये गंधर्वोन्माद-किन्नर, गंधर्व, आपको जानै, लाल औरि, मलिन, रक्त
 बल्लमिय, दंभ, पितृक्रियारहित, मांस, तिल, गुह्यपर विशेष इच्छा करै ये पितृ
 उन्माद गुह्यराप से गुह्यरापोन्माद वृद्ध सिद्ध गुरुवत् मृत प्रेत गुह्यक बुद्धि अनुमानं
 से जानो उर्ध्व प्रायु होय चङ्गवद्भाय अमंगल भाषै दुर्गंधयुक्त रहै तो पिशाचो-
 न्मादी जानो जलधि, देवता, रमशान देववत् जो श्रोत्र भोजनमें गाइ क्षीभसे
 चाटै तो सर्पोन्माद है देव, गुरु, वेद, शास्त्र व ब्राह्मण को निन्दै तो ब्रह्मराक्षसो-
 न्माद जानो मद मांस विषयाहुर निर्लज्जा यह राक्षसोन्माद है धरु अनुमान
 से जानना ॥ ३६ ॥ अपस्मार कहे (मृगी) के चार भेद हैं वातज, पित्तज, कफज,
 त्रिदोषज (लक्षण) तनकंप, दांतकड़कड़ाना, श्वासधरचराना यह वातापस्मार
 है जो मुखसे फेन पीला उगलै तो पित्तापस्मार है हाथ पांश धरधराना देह सफेद
 और ठंडी हो तो कफापस्मार है तीनों दोषलक्षण मिलै, तो सन्निपातापस्मार है
 असाध्य जानना ॥ ३७ ॥ आमवात चार प्रकार का है वातज, पित्तज, कफज,
 त्रिदोषज वातादि दोष कोय करके जठराग्नि को मंदकरै तो भोजन अपकरै
 सो आंत्र होनाय तिससे देहमें पीर उवर अरुचि गात्र अकट्टै सूत सामान्य लक्षण
 हैं जिस में देह पीड़ा विशेष हो तो वातज है दाह हो तो पित्तसे पित्तज कफसे
 आमवात है देह अकट्ट जाय गुजली हो तो कफ आमवात है तीनों लक्षणों
 तो सन्निपातामवात है शूलके आठ भेद हैं ॥ ३८ ॥ वातसे, पित्तसे, कफसे, वात
 पित्तसे, पित्तकफसे, कफवात से, आंत्रसे, सन्निपात से इसका मुख्य कारण वायु है
 तो सूती सूती द्रव्य से इनसे कुपित होय हृदय पसुरी संधिनमें पौठे शूल उपजाती

आमेनसप्तमं प्रोक्तं सन्निपातेन चाष्टमम् ३९ परिणामभवं
 शूलमष्टधापरिकीर्तितम् । मलैर्यैः शूलसङ्ख्यास्यात्तैरेवंप
 रिणामजम् । अन्नद्रवभवं शूलं जरत्पित्तभवं तथा ४० एकैकङ्ग
 णितं सुज्ञैरुदावर्तास्त्रयोदश । एकः क्षुन्निग्रहात्प्रोक्तस्तृष्णा
 रोधाद्धितीयकः ४१ निद्राघातात्तृतीयः स्याच्चतुर्थः श्वास
 निग्रहात् । मूत्ररोधात्पञ्चमः स्यात्षष्ठः क्षवधुनिग्रहात् ४२
 ज्वभारोधात्सप्तमः स्यादुद्गारग्रहतोष्टमः । नवमः स्यादश्रु
 रोधाद्दशमः शुक्रधारणात् ४३ मूत्ररोधान्मलस्यापिरोधा

द्वातविनिग्रहात् । उदावर्ताख्यश्चेते घोरोपद्रवकारकाः ४४
 आनाहोद्विविधोज्ञेयस्कः पक्षाशयोद्भवः । आमाशयोद्भ
 वश्चान्यः प्रत्यानाहस्सकथ्यते ४५ उरोग्रहस्तथाचैको
 हृद्गोगाः पञ्चकीर्त्तिताः । वातादयस्तयः प्रोक्ताश्चतुर्थः स
 क्षिपाततः ४६ पञ्चमः कृमिसञ्जातस्तथाष्टावुदराणि च ।
 वातात्पित्तात् कफात्त्रीणि त्रिदोषेभ्योजलादपि । स्त्रीह्मः क्षता
 द्वद्गुदादष्टमं परिकीर्त्तितम् ४७ गुल्मास्त्वष्टौसमा
 निरोध से टकार विशेष मोर होना पेटफूटना १२ वायुनिरोध से नानाप्रकार
 के उदर रोग १३ ॥ ४४ ॥ आनाह रोग दो तरह का होता है एक जो पक्षाशय
 का होके पेटफुनाता है उसे आनाह कहते हैं एक आमाशय से होता है उसे मत्या-
 नाह कहते हैं (तस्यलक्षणम्) कटिमें पीड़ा, मलस्तंभ, आलस्य, पेट फूटना ये
 आनाहके लक्षण हैं आमाशय में शूल, मुत्र से रार, टकार यह मत्यानाह है ॥
 ४५ ॥ उरोग्रह एवप्रकारका है रक्त, मास, शीरा और यकृत इन सबों के बढ़ने से
 उरोग्रह होता है हृद्गो पाचनकारके हैं वातज, पित्तज, कफज, सक्षिरावज, कृ-
 मिज ५ हृदयमें मुईसी चुभना, हृदयसे बुचना, फुल्लहाडीसे फारना, आरीसे चीरना
 ऐसा दर्दहो तो वातज है हृदय में प्लानि, मूर्च्छा, पुश्चासी, टकार ये पित्तज हैं देह
 भारी, खासी, अरुचि ये कफज हैं जो तीनों दोषने लक्षण हैं तो हृदय में विशेष
 पीड़ाहो तो त्रिदोषज है ॥ ४६ ॥ उपकार, शूल, मुत्रमें तार, धुकधुकी ये कृमिज
 लक्षण हैं उदररोग आठ भातिके हैं वातोदर, पिचोदर, कफोदर, त्रिदोषोदर, जलो-
 दर, प्लीहोदर, जलोदर, शूलगुदोदर (अस्पलक्षणम्) हाय, पाच, नाभि व कोखमें
 शोथ संधिपीडा, पेटशूल, पेट गुडगुहाना ये वातोदर हैं ज्वर, मूर्च्छा, दाह, लुजली,
 अतीसार, शरीर पीत वा ताव्र ये पिचोदर हैं शरीर ग्नानि, निद्रा, देहगुण, खासी
 अरुचि, रवास यह कफोदर हैं विषेत्तन्म्व, दुर्बुद्धि, नख, केश, मूत्र, मल खी लोभत्र
 श्यदेतुपुरुषको खिल्लाटेती तिससे नमरोप कुपित होता है मूर्च्छा, मोठ, पाहुवर्ण
 शरीर दुर्बल, तृपातुर यह त्रिदोष हैं पेट चिचना, फली नर्स दीसै, प्यास अधिक,
 देह रुश यह जलोदर है पेटगडा, मोख नृश, मंज्वर, पेट पत्थर लक्ष पाहुवर्ण ये
 प्लीहोदर हैं पेट और नाभिके मध्यमें पीडा, अतिदेहहृश, मन्त पीवता पानीसा मिला
 गिरै वा रार दिशगजाय यह जलोदर है जो मल गूलाहुत्रा अतिकष्ट रे थोडा थोडा
 कालके गिरै यह उदगुदोदर लक्षण है ॥ ४७ ॥ गुल्म आठ प्रकारका है चात

ख्यातावातपित्तकफैल्यः । ह्रन्द्भेदात्त्रयः प्रोक्ताः सप्तमः
 सन्निपाततः ४८ रक्तादृष्टमकः ख्यातोमूत्रघाताल्योदश ।
 वातकुण्डलिकापूर्ववाताष्टीलाततः परम् ४९ वातवस्ति
 स्तृतीयः स्यान्मूत्रातीतश्चतुर्थकः । पञ्चममूत्रजठरं षष्ठो
 मूत्रक्षयः स्मृतः ५० मूत्रोत्सर्गः रातमरस्यान्मूत्रग्रन्थिस्त
 थाष्टमः । मूत्रशुक्रञ्चनवमं विड्घातो दशमः स्मृतः ५१ मू
 त्रासादश्चोष्णवातोवस्तिकुण्डलिका तथा । त्रयोप्येते मू
 त्रघाताः पृथग्घोराः प्रकीर्त्तिताः ५२ मूत्रकृच्छ्राणि चाष्टौ
 रघुर्वातात्पित्तात्कफात्त्रिधा ५३ रास्त्रिपाताच्चतुर्थः स्यान्मू

गुल्म, पित्तगुल्म, कफगुल्म, वातपित्तगुल्म, कफवातगुल्म, त्रिदोषगुल्म, रक्तगुल्म,
 वातादि कोष करि पेट में गाठि सा गुल्म पाच तरहके उत्पन्न करता है दो दोनों
 पार्श्व में एक नाभिमें एक हृदय में एक, पेड़में होता है वभी चलक और ठौर पीड़ा
 करै कभी कभी कहीं श्रद्धकै पीडाकरै मूत्रगत तेरह प्रकार का होता है वातकुण्डलि-
 का, वाताष्टीला ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ वातवस्ति, मूत्रातीत, मूत्रजठर, मूत्रक्षय ॥ ५० ॥
 मूत्रोत्सर्ग, मूत्रग्रन्थि, मूत्रशुक्र, मूत्रघात ॥ ५१ ॥ मूत्रासाद, उष्णवात, वस्तिकुण्ड-
 लिका इस में से तीन मूत्रघात, उष्णवात, वस्तिकुण्डलिका ये प्राणसकट उपद्रव
 करतेहैं (लक्षणं) चिनगहोके थोडा ० मूत्रसाव हो गो वातकुण्डलिका है अति
 पीडाहो मलमूत्र रुन्द रहै तौ वाताष्टीला जानो पेड़, कठमें प्रतिक पीडाहो और
 मल मूत्र रुन्द रहै तौ वातवस्तिहै जो मूत्र श्वावनी रहै उतरै नहीं तौ मूत्रातीत
 है पेड़ फूलै पीडाकरै मूत्र न द्रवै तौ मूत्रजठरहै शूलदाह हो मूत्र न गिरे तौ मूत्रक्षय
 है चिनगहो काखनेसे रक्त समै थोडा २ मूत्रद्रावहो नौ मूत्रोत्सर्ग है मूत्राशयके मुँह
 पर गाठिपर पीडाकरै तौ मूत्रग्रन्थिहै जो मूत्रत्यागके आदि वा अन्त मूत्र रातधोवन
 सागिरै तौ मूत्रशुक्र जानो मूत्रमें मलकी गंधहो तौ मूत्रघात जानो जो दाइयुक्त
 गोरोचन शंखचूर्ण के रंग मूत्रहोके सूखनेपर जित दोषकी रगत होजाय तौ उसी
 दोषको मूत्रसाद जानो जो मूत्र पीलाया शुद्ध या रक्त या सारकष्टसे थोडागिरै तौ
 उष्ण वात जानो जो मूत्रकी रैली के मुखपर सूजनहो धीरे २ पीला या लालमूत्र
 गिरै ये वस्तिकुण्डलिका के लक्षणह ॥ ५२ ॥ मूत्रकृच्छ्रे के आठभेद हे रातमूत्रकृच्छ्र
 पित्तकृच्छ्र कफकृच्छ्र ॥ ५३ ॥ सनिह्रन्द् शुक्रह्रन्द् विशृच्छ्र अन्मरीहृच्छ्र ये आठ

त्रकृच्छ्रञ्चपञ्चमम् । विट्कृच्छ्रंषष्ठमाख्यातंघातकृच्छ्रं च
 सप्तमम् ५४ अष्टमं चाश्मरीकृच्छ्रं चतुर्धा चाश्मरीमता ।
 चातात्पित्तात्कफाच्छुक्रात्तथामेहाश्चविंशतिः ५५ इ
 क्षुमेहस्तुरामेहः पिष्टमेहश्चसान्द्रकः ५६ शुक्रमेहोदका
 ख्यौचलालमेहश्चशीतकः । सिकताख्यः शनिर्मेहोदशैते
 कफसम्भवाः ५७ मञ्जिष्ठाख्योद्दरिद्राख्योनीलमेहश्चर
 क्तकः । कृष्णमेहः क्षारमेहः पडेतेपित्तसम्भवाः ॥ इस्तिमे
 होवसामेहो मज्जामेहोमधुप्रभः । चत्वारोवातजामेहाइ
 तिमेहाश्चविंशतिः ५८ सोमरोगस्तथाचैकः प्रमेहपिट

है (अथैषांलक्षणम्) पेड़ नाभि पीड़ा अधिक कांठ शंफोड़ा मूत्रहो ता वातकृच्छ्र
 है दाह चिनगहो लाल मूत्र द्रवै तौ पित्तकृच्छ्रहै पेड़ भारी मूत्रस्वेद चिकना हो तो
 कफकृच्छ्र है तीनों के लक्षण हैं तो सन्निपातकृच्छ्र है सो असाध्य जानो मूत्र
 धातु मिश्रित क्रेशसे उतरै तो शुक्रकृच्छ्र है जो कांठने से मूत्रद्रवै तो विट्कृच्छ्र
 है घान्की तरह अंत निरचय हो और दरदरापके मूत्रद्रावकै मूत्रद्रावहोय तौ घान-
 कृच्छ्रहै पेड़ या डंडीमें पीड़ा और गूलहो तौ अश्मरी कहिये ॥ ५४ ॥ अश्मरी कहे
 पथरीके चारभेदहैं आताश्मरी, पित्ताश्मरी, कफाश्मरी शुक्राश्मरी (अथास्थाल-
 क्षणम्) वात पित्त कोपकरि मूत्रकी थंली के मुँहपर रसको सुखाय पथरीसी स्थिर
 करते हैं वही पथरी है पेड़ और डंडीको फाडने लगती है मूत्र नहीं उतरता जब
 कांठने से पथरी कुछ हटती है तब दश बीस इंद्र मूत्रगिरता है तौ वातपथरी है जो
 उष्णमलसा रा गले दाइके कनके से वा काली पथरीहो तो पित्ताश्मरी है पेड़
 भारी मूत्र स्वेत ठंडा कष्टसे हो तौ कफाश्मरी जानौ जब धातु मूत्रके पथरी परती
 है तब पेड़में पीर अंडकोश में मूत्रन ये शुक्राश्मरी के लक्षण हैं प्रमेहरोग बीस
 प्रकारका है ॥ ५५ ॥ इन्नुमेह, सुरामेह, पिष्टमेह, सांद्रमेह ॥ ५६ ॥ वा शुक्रमेह,
 उदकमेह, लालमेह, सिकतामेह, शनिमेह ये दश भेद कफसंभव हैं ॥ ५७ ॥
 मंजिष्ठांमेह हरिद्रा० नील० रक्त० कृष्ण० क्षारमेह ये च्चः पित्तसंभव हैं इस्तिमेह,
 वसामेह, मज्जामेह, मधुमेह ये चारि वातसंभवहैं सब मिलि के बीस प्रकार के
 हैं (अथास्थालक्षणम्) जो मूत्रमार्ग से ऊसरससा शुक्रगिरे तौ इन्नुमेह जानौ
 जिसमें मद गंध भावै वह सुरामेह जानौ पीठीसा गिरे तौ पिष्टमेह जानौ जो

कादशः । शराविकाकच्छपिका पुत्रिणीविनतालजी ५६
 मसूरिकासर्षपिकाजालिनीचविदारिका । विद्रधिश्चदशै
 ताःस्युःपिटकामेहसम्भवाः ६० मेदोदोषस्तथाचैकः शो
 थरोगानवस्मृताः । दोषैः पृथग्द्रवैस्सर्वैरभिघाताद्विषाद

पि ६१ वृद्धयस्सप्तगद्वितात्रातात्पित्तात्कफेनच । रक्तेन
मेदसासूत्रादन्त्रवृद्धिञ्चसप्तमः ६२ अण्डवृद्धिस्तथाचै
कात्तथैकागण्डमालिका । गण्डापचीतिचैकास्याद्ग्रंथ
हो अन्त्रिभ्रमिन्त्र रतिभे विराय ये कफशोथ हे दातपित्त लक्षण होय तो वात
पित्त पित्तकफ लक्षण हो तो पित्त कफ जो कफवातलक्षण हो तो कफवातशोथ
जो त्रिदोष लक्षण हो तो सन्निगत शोथ किसीभाति क्षतलगे सूजनहो तो
अभिगत शोथ जानौ विषधर जीनके दांत, डंक, पूंछ, पंजा, नख व दंष्ट्रा से
क्षतहो सूत्रै तो विषशोथ जानौ ॥ ६१ ॥ अंडवृद्धि वृषणफूलना उसे वृद्धकहते
हे तिसके सात भेद हे वातवृद्ध, पित्तवृद्ध, कफवृद्ध, रक्तवृद्ध, मूत्रवृद्ध, आंतवृद्ध ये
सातप्रकार हे (अस्थान्क्षणम्) जब वायु अंडकोशमें भरिके पीड़ा उत्पन्न
करतीहै और रुवाई द्वायलेवी है तो वातवृद्धहे जो पके गूलरके रंग दाहयुक्त
पके फोड़े की नाई उष्ण हो तो पित्तवृद्ध जानौ ठरदा भारी चिरुना कठोर
गुजलाय कुछ पीडाहो तो कफ अंडवृद्धि जानौ जो कालेरंगकी फुडिया सहित
पित्त लक्षण हों तो रक्तांडवृद्ध जानौ जो तालफल मे नीलगोल हों तो मेदवृद्ध
हे और एक सम्पोक अंडवृद्ध को मांसवृद्ध कहते हैं उसका निदान यह है कि
मूत्रभेग के रोके से दोनों थोरकी गोली फूलजाती है जब मूत्र रुकजाता है
तब धीरे २ दोनों कौड़ीन में हलाइ २ पचता फिर वायुकोप से उतरिके पीड़ा
करताहै फूलताहै उसे मूत्रवृद्धि कहते हैं जो वायुके कोपसे नस अंडकोश में
लटक आती है जब वह नस फिर वायुकोप पाइके फूलती है उसमें आंत उतर
आती है उसे अंत्रवृद्धि कहते हैं वह दवाने से फिर ऊपर चढ़िजाती है ॥ ६२ ॥
अंडवृद्धि को गलांड गलेकी सन्निभ में अंडेसी गांठें फूलके काठी होरहें पीड़
से अंडवृद्ध एक प्रकारके हे गंडमा वा एकही प्रकारकी हे गले में माला की नाई
फोड़े होके पके फूटें उसे गण्डमाला कहते है गण्डमाला एक प्रकार का है जिसे
येत्रा कहते हैं अथवा एक प्रकारकी है गण्डमाला की नाई गांठें पके फूटें वहे
एक अन्त्रा होने न पावे दूसरा और हो उसे अथवा कहते हैं और चरक में
गलेके द्वाचोस तरङ्ग के रोग और कहे हे ग्रन्थि कहे गांठिकी तरह नरभांति की
होती है जिसे बनोरी कहते हैं वातग्रन्थि, पित्तग्रन्थि, रक्तग्रन्थि, शिरग्रन्थि, यूगग्रन्थि,
अस्थिग्रन्थि, मांसग्रन्थि ये नव प्रकार के अंत्रिरोग हैं (अथास्थ्य लक्षणम्) जो
गांठि ज्वा के आकारहो चित्तके चित्तके उठे छूने से कठोर विराय और
मरन हो सरल के अन्तिर हो रक्त वहे तो वातग्रन्थि जानौ जो ग्रन्थि दाह

योनवधामताः ६३ त्रिभिर्दोषैस्त्रयो रक्ताच्छिराभिर्मेदसोत्र
 णात् । अस्थनामासेननवमः षड्विधं स्यात्तथा बुद्धम् ६४ वा
 तात्पित्तात्कफाद्रक्तान्मांसादपि च मेदसः । श्लीपदं च त्रि
 धाप्रोक्त्वा तात्पित्तात्कफादपि ६५ विद्वधिषड्विधः स्यात्
 तो वा तात्पित्तकफैस्त्रयः । रक्तात्क्षतात्त्रिदोषैश्च त्रणाः पञ्चद

करे फफोलेकीनाई भङ्गाय और पकै नहीं कालातहू उहै तौ पित्तग्रथिजानै जो
 गाठि ठंडीहो कुद्ध पीडाकरै खुजली होय कठोर बहुत होय दिन में वदै पकेसे पीरदेइ
 तौ कफग्रथिजानौ जिसमें पित्तग्रथि के लक्षणहों रक्तवर्धु दिशेपदोय रक्तग्रन्थिजानौ
 वृटियासीहो-तो शिराजग्रन्थि जानौ दाने से इवर उवर दौरे उंचीहो और मर्म
 स्थानमें हो तौ असाध्य मेदग्रन्थिजानौ जो हाड वदके हाडमें सट आय और ग्रन्थि
 निकलआयै व पत्तरसी पीडाहो तौ हाडग्रथिजानौ सो भी असाध्य है जो गड
 का तो अच्छी हो जो मास से होती है उसे मासग्रथि कहते है जो घात्रपरिवै उपर
 मासवदिके गाठिउभरै उसे प्रणग्रन्थि कहते हैं वो ई मासवृद्ध कहते है ॥ ६२ ॥ प्रबुद्ध
 रोग ब्रम्भकारकाहै वातार्बुद, पित्तार्बुद, कफार्बुद, मासार्बुद, मेदार्बुद, रक्तार्बुद जो
 प्रथमग्रथिके लक्षण लिखआये हैं वैसेही हैं रक्तार्बुद और मासार्बुद ये कठिन हैं इन
 के लक्षण भिन्न कहताहू जो मास पिंडसाहो लालरगपत्फूटकी अतिदुःखदेताहै
 उसे रक्तार्बुद कहते हैं मास दुष्टहोके मास पीडुआर रादकी नाईहो अकना लाल
 अतिकठिनता से पकै फूटके हमेशहू बहाकरै जन्दी अच्छा न हो जो मर्मस्थानमें हो
 तौ असाध्यहै और जगह साध्यहै यह मासार्बुदहै ॥ ६४ ॥ श्लीपद कइ फीलपात्र
 सो तीनि भातिके ई वातसे पित्तसे कफसे (अस्य लक्षणम्) जात्र के जोडनी
 सन्धिमें प्रथम छोटी गिलटी उभरके पीडा करती है फिर कुछ दिना में सब जोड
 की नसे तनजातीहैं चलनेसे समझ पडताहै फिर धीरे धीरे कधिर सहित पीडा
 उतरिके पैरसे गाठितकफूलता है उसे फीलपात्र कहते हैं और हाथमें तथा थंग में
 भी होताहै तराईकी भूमिमें अधिक होताहै वातजमें पीडा पित्तज में दाह कफजम
 चिकनी शोथ मद धीर ॥ ६५ ॥ विद्रवी ब्रम्भकारकी है वातज, पित्तज, कफज,
 रक्तज, क्षतज, त्रिदोषज ये ब्रः विद्रवा है (अथारस्य लक्षणम्) जो लाल वा
 पीली व नुकीली अतिपिडका गुक्तहो तौ वातविद्रवी है ज्वा दाहयुक्त लालहो
 तौ पित्तविद्रवी जो दीपकसी पाडुवर्ण पकै काली परजाय तौ कफविद्रवी रक्त
 विद्रवी के पित्तमम लक्षणहैं जो किसी भाति प्राव संघीहो तौ पित्तविद्रवी है

शोदिताः ६६ तेषांचतुर्द्धाभेदस्स्यादागन्तुर्देहजस्तथा ।
 शुद्धोदुष्टश्चविज्ञेयस्तत्सङ्ख्याकथ्यतेपृथक् । वातत्रणः
 पित्तजश्चकफजोरक्तजोत्रणः ६७ वातपित्तभवश्चान्योवा
 तश्लेष्मभवस्तथा । तथापित्तकफाभ्यांचसन्निपातेनचाष्ट
 मः । नवमोवातरक्तेनदशमोरक्तपित्ततः ६८ श्लेष्मरक्त
 भवश्चान्योवातपित्तासृगुद्भवः । वातश्लेष्मासृगुत्पन्नःपि
 त्तश्लेष्मास्रसम्भवः । सन्निपातासृगुद्भूतइतिपञ्चदशत्र
 णाः ६९ सद्योत्रणस्त्वष्ट्यास्यादवक्लृप्तविलम्बिनौ । छिन्न
 भिन्नप्रचलिताघृष्टविद्धनिपातितः ७० कोष्ठमेदोद्विधाप्रो
 क्तश्छिन्नान्त्रोनिःसृतान्त्रिकः । अस्थिभङ्गोष्ट्याप्रोक्तोभग्न

जिसमें टाढ़, ज्वर, खुजली और विविध उपद्रवहों तौ त्रिदोषविद्वधी जानौ ब्रूण
 कहे पिटका फोडा सो पंद्रह प्रकारके हैं ॥ ६६ ॥ तिनमें भी चारभेदहैं आगंतुक,
 देहज, शुद्ध, दुष्ट तिसकी संख्या वातज, पित्तज, कफज, रक्तज ॥ ६७ ॥ वातज
 पित्तज, वातकफज, पित्तकफज, सन्निपातज, वातरक्तज, रक्तपित्तज ॥ ६८ ॥ कफ
 रक्तज, वातपित्तरक्तज, वातकफरक्तज, पित्तकफरक्तज, सन्निपातरक्तज (अथास्य
 लक्षणम्) जो चोट चपेट लगनेसे पकै फूटै उसे आगंतुक ब्रूण कहते हैं वाता
 दिकके कोपसे हो उसे देहज कहते हैं जो जीभके रंगहो छोटा या बड़ा चिकना
 पीड़ान करै न पकै फूटै न कड़ाहो वह शुद्धब्रूणहै जो दुर्गंध युक्त हमेशाह ऊपर
 कठोर भीतर पुनपुला उसे दुष्टब्रूण कहते हैं ॥ ६९ ॥ सद्योत्रण कहे आगंतुकब्रूण
 सो आठ प्रकारकाहै अक्लृप्त, विलम्बिन, छिन्न, भिन्न, प्रचलित, घृष्ट, विद्ध, निपातित
 (अथास्य सामान्यलक्षणम्) नानामकारके जो अस्त्रहैं तिनकी धारसे कटे
 या मुद्गरादिकी चोटसे घायहो या जुटहल रक्त जमके पकै फूटै उसे आगंतुकब्रूण
 कहते हैं ॥ ७० ॥ कोष्ठमेद कहे उदररक्त लगना दो भांतिका है एक छिन्नांत्रक
 दूसरा निःशृतांत्रकपेटमें द्रव लगनेसे आंत कटियोवाहज निकरै सो छिन्नांत्रक
 है और जो बाहर निकारिपरै वा बिना दूटे बाहर निकरै तिसे निःशृतांत्रक कहते
 हैं अस्थिमंग कहे हाड़ टूटना सो आठ भांतिका है भग्नपृष्ठ, विदारित, विचर्तित,
 चिदिलष्ट, विर्यशू, अयोगत, ऊर्ध्वगत, संधिमंग (अथास्य लक्षणम्) जो
 हाड़ से हाड़ रगड़ खाय संधि पर सूजनहो पीड़ा करै तो भग्नपृष्ठ है जो संधि

पृष्ठविदारिते । विवर्तिश्चविश्लिष्टश्चतिर्यक्क्षिप्तस्त्व
 धोगतः । ऊर्ध्वगश्सन्धिभङ्गश्चवह्निदग्धश्चतुर्विधः ७१ पु
 ष्ठीतिदग्धोदुर्दग्धःसम्यग्दग्धःप्रकीर्तितः ७२ नाड्यःप
 ञ्चसमाख्यातावातपित्तकफोस्त्रिधा । त्रिदोषैरपिशल्येनत
 थाष्टौस्युर्भगन्दराः ७३ शतपोनरत्तुपवनादुष्टूग्रीवश्चपि
 त्ततः । परिस्त्रावीकफाग्नेयऋजुर्वातकफोद्भवः ७४ परि
 क्षेपीमरुत्पित्तादर्शोऽजःकफपित्ततः । आगन्तुजातश्चोन्मा
 र्गीशङ्खावर्त्तस्त्रिदोषतः ७५ मेढ्रेपञ्चोपदंशास्स्युर्वातपित्त
 चर्म फटिके हाड निकरै तो विदारित है जो हाड बैठने में यथा स्थान न बैठे
 ऊपर नीचे होजाय उसे विवर्तित कहते हैं जो हाड हटनेसे सन्धि धीली पै सूजन
 परिके पीड़ाकरै तौ विश्लिष्ट जानौ हाड सरकना कहे हाडकी ठौर पलट जाना
 उसे तिर्यक् कहते हैं जो हाड अपने ठौरसे नीचेको सरक जाय तौ अधोगत कहि-
 ये जो ऊपर को सरकै तो ऊर्ध्वगत कहते हैं जो हाड टूटजाय उसे संधिभंग क-
 हते हैं ॥ ७१ ॥ अतिदग्ध चार प्रकार का है पुष्ट, अतिदग्ध, दुर्दग्ध, सम्यग्दग्ध
 ४ (अस्थलक्षणम्) जो अग्नि स्पर्श से त्वचा का रंग पलट जाय उसे
 प्लुष्ट कहते हैं जो चर्मजरिके मांस, नस व हाड टेरिपरै तो अतिदग्ध है जो
 देह जरि राल उलट जाय दाह युक्त पीडाकरै तो दुर्दग्ध है जो सब देह
 जरि लुथाठ समान होजाइ उसे सम्यग्दग्ध कहते हैं ॥ ७२ ॥ नाडीत्रय, पांच
 प्रकारका है वातनाडी, पित्तनाडी, कफनाडी, त्रिदोषनाडी, सन्निपातनाडी,
 (अथास्य लक्षणम्) क्षतसंवन्धी सूजन पकी वा कधी को थोड़े और
 शुद्ध न होइ वा क्षतके अंततक घाती न जाइ तौ बहुत पीडा करै और, विल
 समान चमड़ेपर दीसै और भीतर नाडी कहे पुंगली सा सीया या टेढ़ा न
 लंबा हो और पीन देतारहै उसे नाडीत्रय नासूर कहते हैं शल्य एक प्रकार का है
 शल्य कटे शाल जो कील कांटा कांच लुभिके रहिजाय तौ मांस पकाता मडक है
 उसे शल्य नाडीत्रय कहते हैं ॥ ७३ ॥ भगंदर आठ प्रकारका है ऋजु मे श्लेष्मेन
 पित्तसे उद्भूयै व कफसे परिस्त्रावी वातकफ से अजु ॥ ७४ ॥ त्रिदोषसे परि-
 क्षेपी कफपित्त से अर्शोत्र आगंतु से उन्मार्गी त्रिदोषमे शङ्खवर्त्त (अथास्य ल-
 क्षणम्) गुदाके चारोंओर दौ अंगुलतक जो फोडा दहा मडक है फटि फूटि
 के भीतर ताई छिद्र पर जाइ उसे भगंदर कहते हैं एक तरहका मडक है उच्चरुड म

कफैस्त्रिधा । सन्निपातेनरक्ताच्चमेदुशूकामयास्तथा ७६ च
 तुर्विंशतिराख्यातालिङ्गार्शोऽग्रथितंतथा । निवृत्तमवमन्थ
 इचमृदितंशतपोनकः ७६ अष्टौलिकासर्पपिकात्वक्पाक
 श्चावपाटिका । मांसपाकःस्पर्शहानिर्निरुद्धमणिरुद्धतः
 ७८ मांसार्वुदंपुष्करिकासम्मूढैःपिटकालजी । रक्तार्वुदंवि
 द्राधिश्चकुम्भिकातिलकालकः । निरुद्धःप्रकशःप्रोक्तस्तथै
 वपरिवर्तिका ७९ कुष्ठान्यष्टदशोक्तानि चांतात्कापालिकंभ
 वेत् । पित्तेनौदुम्वरंप्रोक्तं कफान्मण्डलचर्चिके ८० मरुत्पि
 मलमावाहै भगंदर एक मातिहो अनेरुभाति पकिफुटिके उहाकरताहै ॥ ७५ ॥
 इन्द्रिय में पंच प्रकार का उपदंश होता है जिसे गरमी कहते हैं वातसे, पित्तसे,
 कफसे, त्रिदोषसे, रक्त से (अथास्य लक्षणम्) डंडी में क्षतलगे या बड़ेहाथ
 से या रोम टूटने से 'व रजस्वला प्रसंगसे होता है यह निदानका मतहै बुद्धि से
 यह समझपड़ता है कि यह रोग दुष्टयोति के संयोगसे प्रथम डंडीमें वाव परिके
 धीरे २ सत्र शरीर में घार परजाते हैं ॥ ७६ ॥ इन्द्रियमें शूकजरोग चौबीस
 भातिरु भी होता है यह अतिविषयाकांक्षी पुरुष स्थूलकरने को विपादि तीव्र
 औषध लगाते हैं तौ बालसमान सूक्ष्म समान सफेद किरानासा होता है उसे
 शूक कहते हैं इसीके ये चौबीस भेद हैं लिगार्श १ ग्रथित २ निवृत्त ३ अचमय ४
 मृदित ५ शतपोनक ६ ॥ ७७ ॥ अष्टौलिका ७ सर्पपिका ८ त्वक्पाक ९ अच-
 पाटिका १० मांसपाक ११ स्पर्शहानि १२ निरुद्धमणि १३ ॥ ७८ ॥ मांसार्वुद
 १४ पुष्करिका १५ संपूढपिटका १६ अलजी १७ रक्तार्वुद १८ विद्रि १९ कुम्भिका
 २० तिलकालक २१ निरुद्ध २२ प्रकश २३ परिवर्तिका २४ (अथास्यलक्षण-
 णम्) ये सयरोग इन्द्रिय पर होते हैं सो क्षुद्ररोग गिनेजाते हैं और और नि-
 दानमें कहते हैं कि ये रोग इन्द्रिय के मुखपर होते हैं मांसधादिके कुंदरुकी तरह हो
 जाता है उस में फुंसी होती है और और भी अनेकरूपकारके उपद्रव संयुक्त होते
 हैं ॥ ७९ ॥ कुष्ठरोग अठारह प्रकारकाहै प्रथम वातजन्य कापालिक (लक्षणम्)
 कृष्णरंग वा रक्तरंग माटी के खपरेकीनई रूचा खर्चरां चमडा पतला हो तौ का-
 पालिक कहते हैं दूसरा औदुम्बर शूलतरुत्प दाहपीडा खुजलीयुक्तहो वह औदुम्बर
 कुष्ठ कहाताहै जो कुष्ठ सफेद चिकना चक्रुचासाहो वह तीसरा कफजन्य भंडल-
 कुष्ठहै जो पाडु में काली कालीसी पिटकाहोके फटफटकी वह खुजली करे वह चौथी

सादृक्षजिह्वंश्लेष्मवाताद्विपादिका । तथासिध्मेककुष्ठचकि
 टिभंचालसंतथा ८१ कफपित्तात्पुनर्दद्रुःपामाविस्फोटकंत्
 था । महाकुष्ठचर्चर्मदलंपुण्डरीकंशतारुकम् ८२ त्रिदोषैः
 काकणंज्ञेयंतथान्यच्छ्वत्रसंज्ञकम् । तत्रवातेनपित्तेनश्ले
 ष्मणाचत्रिधाभवेत् ८३ क्षुद्ररोगाःषष्टिसंख्यास्तेष्वामौश
 कंरार्बुदम् । इन्द्रवृद्धापनसिकाविष्टतान्ध्यालजीतथा ८४

विचर्चिका है ॥ ८० ॥ जो लालहो वीचमें काला पीड़ायुक्त व रीछकीसी जीभ
 सो वातपित्तजन्य ऋज्जिह्वकुष्ठ पांचवां है जो गोड़के चन्द्र में पकिके घाव परै या
 हाथकी हथेली में हो वह विपादिका छठवां कुष्ठ है जो सफेद ललाई लिये हो
 चमड़ा पतलाहो और उसमें कूटा भरै वह सातवां सिध्मकुष्ठ है या छाती में
 होता है उसे सिध्मवां कहते हैं कफ पित्त से उत्पन्न है जो घाव होके काला परजाय
 वह कफवात जन्य है आठवां त्रिदोषकुष्ठ है और जो लाल लाल पिटका होके
 खुजलाय वह अलसकुष्ठ नववां है ॥ ८१ ॥ जो श्याम चमड़ा होके चिकना और
 नहीं पिटका संयुक्तहो और खुजलाय वह दशवां दृक्कुष्ठ है उसे दाद भी कहते
 हैं जो देह में छोटी बड़ी पिटका पकिके फूटै सजुआय एक अच्छी न हो और
 निकलै वह ग्यारहवां पामाकुष्ठ है और खुजली भी कहते हैं टेंटमें हो टेंटी कहते
 है कफ पित्तके जोर से सब देह लाल होके छोटी छोटी पिटका सब देह फोरिके
 छालेकी नाई निकलै उसे विस्फोटक बारहवां कुष्ठ कहते हैं उसीको शीतला भी
 कहते हैं जो कुष्ठ शरीरकी त्वचा को हाथीकी खाल समान करदे और पसीना
 न निकरै वह तेरहवां महाकुष्ठ है उसे चर्मकुष्ठ और गजचर्म भी कहते हैं जो कुष्ठ
 लाल होके पिराय सजुआयके पिटकासा होजाय उसे चौदहवां कुष्ठ चर्मदल कहते
 हैं जो कुष्ठ कमलत्र सम ऊंचा शरीरपर देख परै वह पुण्डरीक पन्द्रहवां कुष्ठ है
 जो कुष्ठ छोटा फोडा होके बहुत छेद परजाय वह शताशुक सोलहवां कुष्ठ है ॥
 ८२ ॥ जो पकिके घाव काला होजाय अतिपीड़ा करे उसे कर्चर्मकुष्ठ कहते हैं
 यह सत्रहवां त्रिदोषजनित असांध्य है अठारहवां शिवत्रकुष्ठ सो कुष्ठ न फूटै सो
 त्रिदोष से तीनिमरारका शिवत्रकुष्ठ होता है जिसके हो उमे छोटी बहते हैं वायु
 से रुता और लाल चर्चुसा होता है पित्तमे ताम्रवर्ण दृढसहित चिकना
 होता है कफसे सफेद चकत्ता सघन कठोर होताहै यह श्वेत कुष्ठ है ॥ ८३ ॥
 वा इन्द्ररोग साठि प्रकारके हैं शर्कराहृत् ? इन्द्रवृद्धा २ पनसिका ३ विष्टता ४

वाराहदंष्ट्रोवलमीककच्छपीतिलकालकः । गर्दभीरकस-
 चैवयवप्रख्याविदारिका ८५ कन्दरोमसकश्चैवनीलिका
 जालगर्दभः । ईरिवेल्लीजन्तुमणिर्गुदभ्रंशोग्निरोहिणी
 ८६ सन्निरुद्धगुदःकोठःकुनखोनुशयीतथा । पद्मिनी
 कण्टकाश्रप्यमलसोमुखदूषिका ८७ कक्षावृषणकच्छुश्च
 गन्धाःपाषाणगर्दभः । राजिकाचतथाव्यङ्गश्चतुर्धापरि-
 कीर्तितः ८८ वातात्पित्तात्कफाद्रक्तादित्युक्तं व्यङ्गलक्षण-
 म् । विस्फोटाःक्षुद्ररोगेषुनेष्टधापरिकीर्तिताः ८९ पृथग्दो-
 षैस्त्रयोद्वन्द्वैस्त्रिविधस्तप्तमोसृजः । अष्टमःसन्निपातेनक्षु-
 द्ररुक्षुमसूरिका ९० चतुर्दशप्रकारेणत्रिभिर्दोषैस्त्रिधाच-
 सा । द्वन्द्वजात्रिविधाप्रोक्तासन्निपातेनप्तमो ९१ अष्ट-
 मीत्वग्गताज्ञेयानवमीरक्तजामता । दशमीमांसजाख्या

अंजालजी ५ ॥ ८४ ॥ वाराहदंष्ट्र ६ वलमीक ७ कच्छपी ८ तिलकालक ९
 गर्दभी १० रकसा ११ यवप्रख्या १२ विदारिका १३ ॥ ८५ ॥ कन्दर १४
 मसक १५ नीलिका १६ जालगर्दभ १७ ईरिवेल्ली १८ जन्तुमणि १९ गुदभ्रंश २०
 अग्निरोहिणी २१ ॥ ८६ ॥ सन्निरुद्धगुद २२ कोठ २३ कुनख २४ अनुशयी २५
 पद्मिनीकंटक २६ चिप्य २७ अलम २८ मुखदूषिका २९ ॥ ८७ ॥ कक्षा ३०
 वृषणकच्छु ३१ गंध ३२ पाषाणगर्दभ ३३ राजिका ३४ व्यंग कहे आगके चारि-
 भेद हैं ॥ ८८ ॥ वातज पित्तज कफज रक्तज ३५ विस्फोटक आठप्रकारका है परन्तु क्षुद्र
 रेत्याकी गिनती में है वातविस्फोटक, पित्तविस्फोटक, कफविस्फोटक, वातपित्त
 विस्फोटक, कफपित्तविस्फोटक, वातकफविस्फोटक, रक्तविस्फोटक, सन्निपात
 विस्फोटक ॥ ८९ ॥ मसूरिकारोगी क्षुद्रमंशुरु है तिसके चौदहभेद हैं ॥ ९० ॥ वातम-
 सूरिका, पित्तमसूरिका, कफमसूरिका, वातपित्तमसूरिका, कफपित्तमसूरिका, वातक-
 फमसूरिका, निटोपमसूरिका ॥ ९१ ॥ त्वचामसूरिका, मांसमसूरिका इस से परे
 चार अतिकठिन हैं भेदमसूरिका, मन्त्रामसूरिका, अस्थिमसूरिका, धातुमसूरिका
 (अथास्य लक्षणम्) जो पिटका पकिके गाढ़ा या पतला पानीसी वधै फिरि मूत्रि-
 के न्यचा कठोरहो फटिके सधिर वधै उसे शर्करार्चुद कहते हैं जो एक फुसी उठै उस

ताचतस्त्रोन्याश्चतुस्तराः। भेदोस्थिमज्जाशुक्रस्थाःशुद्धरो
गाइतीरिताः ९२ विसर्परोगानवधावातपित्तकफैस्त्रिधा ।

के नीचे और छोटी २ बहुत फुंसी हैं वह इन्द्रजड़ जो पिटका कान के भीतर हो
उसे पनसिका कहते हैं जो गूलरसदृश हो घेरा अधिक बढ़ावै दाह विशेष करै
उसे विट्ठा कहते हैं जिस फोड़ेका मुँह न देख परै अति ऊँचा अधिक घेर जायै
वह शंघालजी है जो शरीर में गांठि सी कठिन उभरै बूढ़े दांतके रंगपीरहो ख-
जुआय वह वराहदंष्ट्रा है जो पिटका गुलासी होके बीच में खाली हो किनारे
मुँह करिके बड़े वह बरमीक है जो पिटका बहुत कड़ी कटोरी की पेंदी समानहो
उस पिटकाको कच्छपिका कहते हैं जो देह में तिल समान हो देह से ऊँचा न हो
पीड़ा न करै उसे तिलकालरु कहते हैं जो बटिया सम ऊँचीहो लालरंग उसमें और
पिटका निकलै पीड़ा करै वह गर्दभिका है जो फूल के पकै फूटै नहीं खजुरी हो
वह रकसाहै जो यत्र समान हो तौ यवप्रख्या है जो कांख या छाती या ग्रंथ-
सन्धि में पताल में कोटा सी हो वह विदारिका है जो हाथ पाय में कांटा लगिके
उसी ठौर गांठि परिरहिजाय उसे कदर कहते हैं गुडरुद्धै जो देहमें वरद सदृश नि-
कलिके रहिजाय पीड़ा न करै उसे मसक कहिये मस्साहै जो देहमें अनायास खाल
काली पड़जाय उभरै नहीं और कांई प्रकार न करै उसे नालिका कहते हैं लह-
सुनहै जो देह में सूजन होइके देदी मैदी लम्बी सर्पकार फूलिके नसजाल परि
जाइ और साजहो अज्ञाय उसे जालगर्दभ कहते हैं जो बटियासी होतही अति
पीड़ा उत्पन्नकरै उसे बल्लिका कहते हैं जो देहमें देहके रंग ऊँचाहो पीड़ा न करै और
जन्मतेहो उसे जन्तुमणि कहते हैं और आचार्य चिह्न कहते हैं जिसके मलत्याग स-
मय कांच निकल आवै उसे गुदभ्रंश कहते हैं कांख कहे वगल में मांस में जाला
समान होके फोड़ा होताहै अन्तर्दाह होके ज्वर आताहै सो दश पांच दिनमें म-
नुष्यको मारहालताहै वह अग्निरोहिणी है जिस रोग में मलमार्ग की धाँस
रक्तको कोपकरिके मोटी परिके मलमार्गको संकीर्ण करै तो मल गादा और मोटा
बहुत क्रेश में गिरै यह सन्निरुद्ध गुद है कफ पित्त और रक्त के कोपकरिके लाल
लाल चकत्ता शरीर में पड़ते हैं बहुत खजुरी करते हैं क्षण में होइ क्षण में मिटै
इसे रक्तपिच्छी कहते हैं नख लगिके देहमें नकोटोजाइ उसे कुनख कहते हैं जो पांय
में छोटी पिटका होके पकै फूटै सूजन हो सो अदुशयी है जो पीली बटियां हो
खजुआइ उसमें कांटा समान हो वह पद्मिनीकण्टकहै जो अगिवांयके फलको
परै अथवा न क्षतपकै फूटै उसके चेपलगे से उत्पन्न होया आम्नादिक की चेप

त्रिधाचहन्द्रभेदेन सन्निपातेनसप्तमः । अष्टमोवह्निदाहेन
नवमश्चाभिघातजः ९३ तथैकःश्लेष्मपित्ताभ्यामुदहःप
रिकीर्तितः । वातपित्तेनचैकस्तुशीतपित्तामयःस्मृतः ९४
अम्लपित्तंत्रिधाप्रोक्तं वातेनश्लेष्मणातथा । तृतीयंश्ले

लगे पकजाय उसे चिप्प कहते हैं जो पैर या हाथके गावाते पानी या खराब की-
चढ़ या कोई विप या कोई विपमिश्रित माटी या विपपर कीट जन्तुके स्थानकी
माटी या भल्लातादि दृत्ततरेकी माटी सड़िके स्पर्श से सड़िजाय और बहुत खजुरी
करे उसे अलस कहते हैं खरवाहें और जो जगानीमें मुसपर काटे काटेसे बहुत
होजाते हैं टोवने से खरखराते हैं और गड़ते हैं वह मुखदूषिकाहै लोग उसे गु
दासा कहते हैं जो बगल में छोटी २ फुन्सिया परजाती है उसे कक्षा कहतेह जो
गण्डकोराकी जड़पर छोटी २ पिदका हों वह गर्दभ है जो शरीर में राईके समान
फुन्सियां परजायें उसे राजिका कहते हैं कुंदया कहते हैं वायु पित्त कुपितहो मुँह
परजाइ चमड़ा कालाकरे थोरपतलाकरे उसे व्यग कहे भाई है और भाठ पिस्को-
टक शीतला के भेदमें हैं सो जुद्रोग की गनती में हैं और चौदह मसूरिजाये भी
शीतला के भेद हैं जुद्रगनी हैं ॥ ९३ ॥ विसर्परोगके नवभेद हैं वातविसर्प, पित्त
विसर्प, कफविसर्प, वातपित्तवि०, कफवातवि०, कफपित्तवि०, सन्निपातवि०, अ-
ग्निदग्धवि०, ताड़नावि० (अथास्थ लक्षणम्) जिसमें वातज्वरके लक्षण कंप
विषम वेगादिक होके सृजनहो और चमकशूल कोचनहो फूँद सो वातविसर्प है
जिसमें कफज्वरके लक्षणहों और सृजन दाहयुक्त लाल रंगहो वह पित्त विसर्प है
जिसमें कफज्वरके लक्षणहों और चिकनीहो सजुआय सो कफविसर्प है और दृंद्रजमें
जिन दो दोषोंके लक्षण मिलैं सोई दृंद्रजाविसर्प जातौ जिसमें तीनों दोषके लक्षण
हों वह सन्निपातविसर्प है जो विसर्प आगिले जलनेसे हो उसके पित्तविसर्प के
लक्षण होते हैं वह वहिदाहविसर्प है जो घाबलगे से हो वह आभिघात विसर्प
है ॥ ९३ ॥ श्लेष्मत्रायु करिके उदररोग होताहै और वातपित्त करिके शीतपित्त
रोग होताहै कफत्रायुके कोपकरिके शरीरमें लाल ० छोटे घड़े चकते पड़ते हैं और
बहुत खजुआतेह उसे उदरु कहतेहैं जो वातपित्तके कोपकरिके होता तो पीड़ा अधिक
राज कम करता है उसे शीतपित्त कहते हैं और ज्वर उबकाई और दाहलक्षणआदि
युक्तहोते हैं यह दोनों एकही भेदमें हैं ॥ ९४ ॥ अम्लपित्तरोगके तीन भेदहैं
पित्तम कफम अम्ल पित्त और कफवातज अम्लपित्त ये विकृद्भोजन २१९३

ष्मवाताभ्यांवातरक्तं तथाष्टधा ६५ वाताधिक्येनपित्ताच्च
 कफादोषत्रयेणचारक्ताधिक्येनदोषाणां द्वन्द्वेनत्रिविधः स्मृ-
 तः ६६ अशीतिर्वातंजारोगाः कथ्यन्ते मुनिभाषिताः । आक्षे-
 पकोहनुस्तम्भजुरुस्तम्भश्शरोग्रहः ९७ वाह्यायामोन्तरा-
 यामः पार्श्वशूलङ्कटिग्रहः । दण्डापतानकः खल्लीजिह्वा-
 स्तम्भस्तथादितः ९८ पक्षाघातः क्रोष्टुशीर्षामन्यास्तम्भ-
 श्चपङ्गुता । कलायखञ्जतातूनीप्रतितूनीचखञ्जता ६६
 पादहर्षो गृध्रशीच विश्वाचीचापवाहुकः । अपतानोत्रयां-
 यामो वातकण्ठोपतन्त्रकः १०० अङ्गभेदोङ्गशोषश्च
 मिन्मिनत्वञ्चगद्गदः । प्रत्यष्टीलाऽष्टीलिकाचवामनत्व-
 ञ्चकुञ्जता १ अङ्गपीडाङ्गशूलञ्च सङ्कोचस्तम्भरु-
 क्षताः । अङ्गभङ्गोङ्गविभ्रंशो विद्ग्रहोवद्धविट्कता २
 मुक्तत्वमतिजृम्भास्यादत्युद्गारोन्त्रकूजनम् । वातप्रवृ-
 त्तभोजन करने से होते हैं या चासी और जल अन्नके भोजन करनेसे पित्तकुपित-
 होके खट्टीढकार लाता है और आहारका परिपाक अच्छीतरह नहीं होता उसे
 अम्लपित्त कहते हैं ॥ ६५ ॥ और वात पित्त आठ प्रकारका है जिस वात रक्तमें
 वायु निशेष है वह वातज वातरक्त है जिसमें पित्त अधिक है वह पित्तज वातरक्त है
 और जिसमें कफ अधिक है वह कफज वातरक्त है जो तीनों दोषके लक्षणहीं तौ
 निदोषज वातरक्त है जिसमें रक्त अधिक हो वह रक्तज वातरक्त है और तीनों द्वंद्व
 में जो दोष मिश्रितहो सो जानिये वातपित्तज वातकफज कफपित्तज ये आठप्र-
 कारके वातरक्त हैं ॥ ६६ ॥ वातरोग अस्सीप्रकारके ऋषिलोग कहिये हैं आक्षे-
 पक, हनुस्तंभ, शिरोग्रह ॥ ६७ ॥ वायायाम, अन्तरायाम, पार्श्वशूल, कटिग्रह-
 दण्डापतानक, खल्ली, जिह्वास्तंभ, अदित ॥ ६८ ॥ पक्षाघात, क्रोष्टुशिरस, मन्या-
 स्तंभ, पंगुता, कलायखञ्जता, तूनी, प्रतितूनी, खञ्जता ॥ ६६ ॥ पादहर्ष, गृध्रशी,
 विश्वाची, अपवाहुक, अपतान, वणायाम, वातकण्ठ, अपतंत्र ॥ १०० ॥ अंग-
 भेद, अंगशोष, मिन्मिन, कृष्णता, प्रत्यष्टीला, अष्टीलिका, वामनत्व, कूषड ॥ १ ॥
 अंगपीडा, अंगशूल, सकोच, स्तंभ, रुक्षता, अङ्गभङ्ग, अङ्गविभ्रंश, विद्ग्रह, वद्ध-

त्तिःस्फुरणं शिराणाम्पूरणन्तथा ३ कम्पःकार्श्यंश्यावता
 च प्रलापःक्षिप्रमूत्रता । निद्रानाशः स्वेदनागो दुर्बलत्वं
 वलक्षयः ४ अतिप्रवृत्तिःशुक्रस्य कार्श्यंनाशश्चरेतसः ।
 अनवस्थितचित्तत्वं काठिन्यंविरसास्यता । कषायवक्तृ
 ताध्मानं प्रत्याध्मानंचशीतता ५ रोमहर्षश्चभीरुत्वं
 तोदकण्डूरसाज्ञता । शब्दाज्ञताप्रसुप्तिश्चगन्धाज्ञत्वं
 दृशःक्षयः ६ ॥ इति वातजरोगगणना ॥ अथ पित्तभ
 वारोगाश्चत्वारिंशदिहोदिताः । धूमोद्गारोविदाहःस्या
 दुष्णाङ्गत्वंमतिभ्रमम् ७ कान्तिहानिःकण्ठशोषोमुख

विद्रकता ॥ २ ॥ सूक्त्य, अतिजृम्भा, अत्युद्गार, धनकूजन, वातप्रवृत्तिस्फुरण,
 शिरापूरण ॥ ३ ॥ कम्प, कार्श्य, श्यावता, मलाप, क्षिप्रमूत्र, निद्रानाश, स्वेदनाश, दुर्ब-
 लत्व, वलक्षय ॥ ४ ॥ शुक्रातिप्रवृत्ति शुक्रकार्श्य, शुक्रनाश, अनवस्थित, चित्तकाठिन्य,
 विरसास्यता, कषायवक्तृत, आध्मान, प्रत्याध्मान, शीतता ॥ ५ ॥ रोमहर्ष, भीरु-
 त्व, तोद, कंडू, रसाज्ञता, शब्दाज्ञता, प्रसुप्ति, गंधाज्ञत्व, दृशःक्षय ॥ ६ ॥ (अस्म्य
 लक्षणम्) जिस वायुमें हाथीके सवारकीनाई वारदार भूमै वह आक्षेपकहै १
 जिसमें घोड़ीअकडके मुख खुलारहै वह हनुस्तंभ है २ जिसमें कूलेकी नसैं जकड
 के निर्धलहैं चल न सकैं वह ऊरुस्तंभ है ३ जो माथेकी शिराकहे नसैं निस्तेज
 होके मस्तक में पीढ़ारहै वह शिरोग्रह है असाध्य है ४ पीठ उभरके जो मनुष्य
 घन्वाकार होजाय वह बाह्यायाम है ५ जो छाती ऊंची होके घन्वाकार होजाय
 वह अन्तरायाम है ६ जो पसुरीमें पीढ़ाकरै वह पारर्वशूल है ७ जो कमर जकड
 जाय वह कटिग्रहहै ८ जो देह दंढाकार होजाय वह दंढापतानकहै ९ जिस वायु
 में पाव या गाय घुटना नितम्ब से और कमर में अधिक पीढ़ाहो वह खली है
 १० जो वायु जीभकी नस्ता न ले भोजन मुँह में कठिनता से लियाजावे वह
 मिहास्तंभ है ११ जो वायु आधा मुँहको फेरदे माया कम्पै जीभ से बोला न
 जाय दृष्टि तिरखी होजाय वह अर्दित है १२ जो आधाअन्न निर्बल होजाय उसे
 पक्षायत (अर्धांग) कहते हैं १३ जो गोड वी टिहुनी सूजजाय स्यार वैसा
 मूडहो उसे क्रोमुशीर्ष तियार मुँड कहते हैं १४ जिसमें घींच तन जाइ मस्तकइत
 उस न हुलै यह ग्न्यास्तंभ है १५ जो वायुकूलेकी मोटीनसोंको मानिले पाव को

फैलने सिकुड़ने न दे वह पंगु है १६ जो वायु मनुष्य के शरीर की चाल खंजरीट
 की नाई करदे चलने में काँ पांव इधर उधर पर वह कलयाखंज है १७ जो वायु
 गुद और इन्द्रि में विलक उत्पन्न करे वह हूनी है १८ जो गुद लिंग में विलक उत्पन्न
 करिके मूत्र मला शयताई सुभे सो प्रतिहूनी है १९ जिसमें पंगुवायुके लक्षण हों पर
 एकपांव लंगड़ा करे वह खंज है २० जो पैर में भुंभनी करे वह पादहर्ष है २१
 जिसमें पीठ, कमर, कूला, नूतर, जांघ, पैर इन में बठने बैठनेमें क्रूरहो तो घृध्रसी है
 जो वायु हाथ और कानकी नसे तानके हाथ ऊपर न चठने दे वह धिरवाधी है २२
 जिसमें बांह तनिजाइ वह बाहुक है २३ जो वायु हृदय में प्रवेशकरि ज्ञानको नष्ट
 करे दृष्टिरोके कण्ठ शब्द विलक्षण करे कभी सावधान कभी अचेतर है स्थिरचित्त
 न रहै वह अपतानक है २४ जो वायु चोट लागिके धाव और पीड़ा करे वह वृणा-
 याम है २५ जिसमें चलने के अम से या ऊंचे नीचे पैर परे या टेढ़ापरने से वायु
 गुदनों में उतरिके सूजन और पीड़ा उत्पन्न करे वह पातकंठक है २६ जो वायु ऊर्ध्व
 गतिहोके हृदय, मस्तक, कन्य वा देह में पीड़ा करे और धनुषके आकार करिके दृष्टिको
 रोकै क्वतर की नाई बोली मोह में पड़े वह अपतन्त्र है २७ जो सब शरीर में पीड़ा
 करे तो अंगभेद है २८ सब शरीर को शोषे सो अंगशोष है २९ जो विनिमिनायके बोली
 वह विनिमनत्व है ३० जिसमें कण्ठ से स्पष्टशब्द न कइे वह कृष्णता है ३१ जो
 नाभिके नीचे ऊंचा पत्थरसा करदे और मल मूत्र निरोध करि पेट में गांठि गांठिसी
 परिके भेद २ पीड़ा करे वह अप्ठीलिका है ३२ जो अप्ठीलिका की नाई गांठि
 टेढ़ी सूधी लंबीहो अधिक पीड़ादे उसे प्रत्यप्ठीलिका जानो जो पेटमें गांठि गांठिसी
 सरिके भेद २ पीड़ाकरे वह अप्ठीलिका है ३३ जो वायु गर्भाशय में प्रवेशकरि गर्भ
 को संकुचित करे तो बालक छोटा उत्पन्नहो वह वादन है ३४ जो वायु दुष्टो
 छाती पीठको संकुचित करे वह कुब्ज है ३५ जिसमें सब अंग में पीड़ाहो वह अंग-
 पीड़ा है ३६ जिसमें शरीर विपे सूजासा गइे वह अंगशूल है ३७ जो सर्वांग को
 संकुचित करे वह संकोच है ३८ जो देहको तीणकरे वह स्तब्ध है ३९ जो देह
 में सखाई करे वह रुक्त है ४० जिसे कभी कोई अंग शिथिलहो कभी कोई वह
 अंगभंग है ४१ जो देह को काष्ठवत् अचेतकरे वह अंगविभ्रंश है ४२ जो मल निरोध
 करि अच्छी तरह न गिरनेदे है विद्रवह है ४३ जो पकाशयमें मलसिद्ध और भिन्न
 भिन्न पिंडिसेकरे वह घनविद्रकता है ४४ जो वायु शब्द निरोधकरे वह मूक कहे गुंग
 है ४५ जो अतिजंघुभाई लावै वह अतिहृम्भहै ४६ जिसमें अधिक डकारें अइे
 वह अत्युद्गार है ४७ जो वायु थांतमें प्रवेशकरि बोली वह अंत्रकृजहै ४८ जो
 अतिवृत्सर्गकरे अर्थात् गुदासे अधिक निकरै वह वातप्रवृत्तिहै ४९ जो शरीर नहां २

शोषोलपशुक्रता = तित्तास्यताम्लवक्तत्वंस्वेदस्त्रावो
 झपाकता । ह्रमोहरितवर्णत्वमृत्तिः पीतकायता ९
 रक्तस्त्रावोद्गदरपंलोहगन्धास्यतातथा । दौर्गन्ध्यंपीतमूत्र
 त्वमरतिःपीतविट्कता १० पीतावज्जोकनंपीतनेत्रता
 पीतदन्तता । शीतेच्छापीतनखता तेजोद्वेषोलपनिद्रता
 ११ कोपश्चगात्रसादश्चभिन्नविट्कत्वमन्धता । उष्णो
 फुरकै वह स्फुरणहै ५१ जो जरा तथा नसोंको फुलानै वह शिरापूरण है ५२
 जो सब देह कैंपावै वह कंपवायुहै ५३ जो शरीरको दुर्बल करै वह कार्श्य है ५४
 जो शरीरको कृष्णकरै वह श्यावताहै ५५ जिसे मानुष असंभवसौलै वह मत्तापहै
 ५६ जो मूत्र धारवार आतुरतासे हो तौ क्षिप्रमूत्रहै ५७ जिसमें नाँद न आवै वह नि-
 द्रानाशहै ५८ जो पसीना निकरै वह स्वेदनाश ५९ जो शरीरको दुबलाकरै वह
 दुर्बलत्वहै ६० जो वायु शुक्र में प्रवेशकरि फारिकै उहावै वह शुक्रातिप्रवृत्ति है
 ६१ जो बलको घटावै वह बलक्षय है ६२ जो घातुको किंचित्क्षीणकरै वह शुक्र-
 क्षार्य है जो चित्तको स्वस्थ न रखतै वह अनस्थितचित्तत्व है ६३ जो घातुको
 अतिक्षीण करै तौ शुक्रनाशहै ६४ जो देहको कठोरकरै वह काठिन्यहै ६५ जि-
 समें जीमका स्वाद न मिलै वह विरसास्यहै ६६ जो जीम ऐंठजाय वचन न कहि
 सकै वह वायुकपाय वक्रताहै ६७ जो वायु पकाशयमें जाय पेटफुलाय गुहगुडकरै
 वह व्याभ्रान है ६८ जो वायु आशय में जाइ कफ से मिलि पेटफुलाय पीड़ाकरै
 वह मृत्पाभ्रान है ६९ जो शरीरको ठंडारामै वह शीतताहै ७० जिसमें बारबार
 रोमाचहो वह रोमहर्षणहै ७१ जो भय उत्पत्ति करै वह भीहत्तहै ७२ जो देह में
 सुईसी चुभै वह तोदहै ७३ जो राज उत्पन्नकरै वह क्रौडहै ७४ जिससे पशुरादिक
 रसका स्वाद न मिलै वह रसाज्ञता है ७५ जिससे वान से सुन न परै वह शब्दा-
 ज्ञता है ७६ जिसमें त्वचार हाथपरे समुभरै तौ प्रसुति है ७७ जिसमें गन्ध
 ज्ञान न हो वह गन्धाज्ञता है ७८ जिसमें दृष्टि से सूक्ष्म नहीं वह दृश क्षय है
 ७९ और पिच्छजनित चालीसरोग हैं धूमोद्गार, विदाह, उष्णाग, यतिभ्रम ॥
 ७ ॥ कातिहानि, कंठशोष, मुखशोष, अल्पशुक्रत्व ॥ = ॥ तित्तास्यता, अम्लवक्र,
 स्वेदस्त्राय, अंशपाकत्व, श्म, हरितवर्णत्व, अमृत्ति, पीतकाय ॥ ९ ॥ रक्तस्त्राव, धंग-
 दरण, लोहगंधास्य, दौर्गन्ध्य, पीतमूत्रता, अरति, पीतविट्कता ॥ १० ॥ पीतावज्जो-
 कन, पीतनेत्रता, पीतदन्तता, शीतेच्छा, पीतनखता, तेजोद्वेष, अल्पनिद्रता ॥ ११ ॥

च्छ्वासत्वमुष्णत्वमूत्रस्यचमलस्यच १२ तमसोदर्श
 नपीतमण्डलानांचदर्शनम् । निःसंरत्वेञ्चपित्तस्यच
 त्वारिशद्भुजःरमृताः १३ ॥ इति पित्तजरोरगणना ॥ क
 फस्यविंशतिःप्रोक्ता रोगास्तन्द्रातिनिद्रता । गौरवमु
 कोप, गात्रसाद, भिन्ननिद्रकृता, अंधता, उष्णोच्छ्वासत्व, उष्णमूत्रता, उष्णम-
 लता ॥ १२ ॥ तमोदर्शन, पीतमण्डलदर्शन, निःसंरत्यर्थे चालीसरोग पित्तसंभवहै ॥
 १३ ॥ (अस्य लक्षणम्) जिसे पित्तकोपसे धुआँसी डकारथावे वह धूमोद्गारहै
 १ जो अतिद्राह करे यह द्वादह २ जो देह गरम रहैवह उष्णाम है ३ जो बुद्धि
 स्थिर न रहै कभी कुञ्ज समझै कभी कुञ्ज न समझै वह मतिभ्रम है, ४ जो खेप्टा
 मलिन करै वह कान्तिहानि है ५ जो कण्ठ व मुख सुखावै वह कण्ठशोष व मुख-
 शोष है ६ जो शुक्रनीय करै स्त्रीप्रसंग में बिना शुक्रांत शिथिल होजाय वह
 अल्पशुक्र है ७ जो मुख कडुवारहै वह तित्तास्त है ८ जो मुख खटारहै तो अम्ल-
 वक्र है ९ जो पसीना अधिक थावै वह स्नेहसाव है १० जो पित्तसे अंग पकाता
 है वह अंगपाक है ११ जो ग्लानिसे अनेकपदार्थ ग्रहणकरते भ्रमकै वह क्रमहै १२
 जिसमें देह हरितहो वह हरितवर्णत्व है १३ देह पीली परजाय वह पीतकायता
 है १४ जिसे पित्त के कोपसे भोजन करनेसे तृप्ति न होइ वह अवृत्ति है १५ जिस
 में गुखादि मार्ग से रक्त गिरै वह रक्तसाव है १६ जो शरीर में त्वचा घटकजाय
 वह अंगदरण है १७ जो लोहा तिसने से वा लोहा सहाय कसीस वने तिन
 कसीस वास थावै वह लोहांधास्य है १८ जो देह में दुर्गंधि आवै वह दौर्गंधी
 है १९ जिसमें मूत्र पीला आवै सो मूत्रहै २० जिस से सर्व पदार्थ में चित्त न
 चले वह अरति है २१ जिसके मल पीला आवै वह पीतविद्रक्तत्वहै २२ जिसमें
 सत्र पदार्थ पीले देय पड़ें वह पीताप्रलोक है २३ जिससे आंख पीली भड़नाय
 वह पीतनेत्रहै २४ जो दांत पीले होजायें वह पीतदन्त है २५ जो ठंडी चीजपर
 इच्छा चले यह शीतेच्छा है २६ जो पीले नखहोजायें तो पीतनख २७ जो ते-
 जोमय चीज देखि अच्छी न लगे वह तेमोद्रेप है २८ जो निद्रा कम आवै वह
 अरनिद्रा है २९ जो क्रोध अधिकहो वह कोप है ३० जो देह पीडित करै वह
 गात्रसाद है ३१ जो मल फटक फुटकीसा हो वह भिन्नविस्क है ३२ जो दृष्टि-
 नारकरै वह अन्धता है ३३ जो उष्णश्वास आवै सो उष्णोच्छ्वास है ३४ जो
 मूत्र अत्युष्ण हो वह उष्णमूत्र है ३५ जो मल अत्युष्ण गिरै तो उष्णमल

खमाधुर्य्यं मुखलेपःप्रसेकता १४ श्वेतावलोकनंश्वेत
विट्कत्वंश्वेतमूत्रता । श्वेताङ्गवर्णताशैत्यमुष्णेच्छाति
क्लकामिता १५ मलाधिक्यञ्चशुक्रस्य बाहुल्यं बहुमूत्रता ।
आलस्यंमन्दबुद्धित्वं तृप्तिर्धुरवाक्यता । अचैतन्यञ्च
गदिताविशतिःश्लेष्मजागदाः १६ ॥ इति कफजरोगगण
ना ॥ रक्तस्य च दश प्रोक्ता व्याधयस्तस्य गौरवम् । रक्तमण्ड
लतारक्तनेत्रत्वं रक्तमूत्रता १७ रक्तनिष्ठीवनारक्तपिट
कानाञ्च दर्शनम् । औष्ण्यञ्च पूतिगन्धित्वं पीडापा
कञ्च जायते १८ चतुस्सप्ततिसङ्ख्याता मुखरोगास्तथो
दितः । तेष्वोष्ठरोगा गणिता एकादशमिता बुधैः । वात
त्व है १६ जो उजरे में शंघेरा जानपरे वह तमोदर्शन है १७ जो देहमें पीलेरद्र
और और देख परे वह पीतमण्डल है १८ जो देखनेमें पृथ्वीपर कहीं कहीं पीले
धूपे से-देखपरै वह पीतमण्डलदर्शन है १९ जो पित्त मुख से वा मलमार्ग से
गिरै वह निस्सरत्त्व है ४० और शीसरोग कफमंभव हैं तन्द्रा, अतिनिद्रा, गौरव,
मुखमाधुर्य्य, मुखलेप, प्रसेक ॥ १४ ॥ श्वेतावलोकन, श्वेतविट्कत्व, श्वेतांगव-
र्णता, उष्णेच्छा, तिक्लकामिता ॥ १५ ॥ मलाधिक्य, शुक्रबाहुल्य, बहुमूत्रता,
आलस्य, मंदबुद्धित्व, तृप्ति, धुरवाक्यता, अचैतन्य ये बीस प्रकार के कफरोग हैं
(अष्टपलक्षणम्) जिसमें धाखें भभीरहें निद्रा न परै वह तन्द्रा है जो निद्रा
विशेषहो तो अतिनिद्रा है जो शरीर भारीरहै वह गौरवहै जो मुख में गुड़कास्वाद
घनारहै वह मुखमाधुर्य्य जो मुखमें लसलसाहटहो तो मुखलेप जो लार गिराकरै
तो प्रसेक है जो सर्वत्र श्वेत देखपरै तो श्वेतावलोकनहै जो श्वेत मलागिरै तो श्वेत-
विट्कत्व है जो पून श्वेतहो तो श्वेतमूत्र है जो शरीर श्वेतहो तो श्वेत मार्गवर्णत्व
है जो देह ठंडी बनीरहै तो शैत्यताहै जो उष्णपदार्थपर इच्छारहै तो उष्णेच्छा है
जो कटुपदार्थपर विचचलै तो आलस्य है मंदबुद्धि होजाय तो मन्दबुद्धिहै मूत्रमाहार
से तृप्तिहो तो तृप्तिहै जो बोलने में गला बरसाय तो धुरवाक्यहै मंद चेतनाहो तो
अचैतन्यहै ॥ १६ ॥ रक्तविकारसे दशभंति के रोगहैं गौरव, रक्तमंडल, रक्तनेत्र,
रक्तमूत्रता ॥ १७ ॥ रक्तनिष्ठीवन, रक्तपिटकादर्शन, उष्णत्व, पूतिगन्धित्व, पीडा,
पाक ये दशरोग रक्तजन्य हैं इनके नामही सदृश लक्षण हैं ॥ १८ ॥ अब मुखके जो

पित्तकफैस्त्रेधात्रिदोषैरसृजस्तथा १६ क्षतं मांसार्वुदञ्चै
 व खण्डौष्ठश्च गलार्बुदम् । मेदोर्बुदञ्चार्बुदञ्च रोगाण
 कादशोष्ठजाः २० दन्तरोगादशाख्याता दालनः कृमिद
 न्तकः । दन्तहर्षः करालश्च दन्तचालश्च शर्करा २१ अ
 धिदन्तः श्यावदन्तो दन्तभेदः कपालिका । तथा त्रयोद
 शमितादन्तमूलामयाः स्मृताः २२ शीतादोपकुशौद्धौ तु
 दन्तविद्रधिपुष्पुटौ । अधिमांसो विदर्भश्च महासौषिर
 चौहत्तर रोग हैं सो कहता हूँ तिसमें ग्यारह ओष्ठरोग पण्डित करते हैं वात से,
 पित्तसे, कफसे, त्रिदोषसे, रक्तसे ॥ १६ ॥ क्षतज मांसार्वुद, खण्डौष्ठ, जला-
 र्बुद, मेदोर्बुद, अर्बुद ये ग्यारह ओष्ठरोग हैं जो ओष्ठ कठोर हो काला परजाइ
 गांठि परै पीड़ा करै तन फूटै फूटै वा चाल उसइ तौ वातज है जो छोटी फु-
 न्सियां परै पीड़ा दाहहो पीली परै पकजायँ तो पित्तज है जो ओष्ठ श्वेत कलुक
 गीढायुक्त पिटका हो ठण्डे रहें तौ कफज है जो आठ पिटका पीड़ा सहित हों
 कभी श्वेत कभी काला पीलाहो सो त्रिदोषज है जो ओष्ठ रज्जुर फलके रंग
 हों फुन्सीयुक्त रक्त वहै मासकी गुत्थी निकसै ओष्ठ में छुमि उत्पन्न हों यह
 क्तज ओष्ठ है जव ओष्ठ में क्षत लगे से रज्जुआय पकै घाय परै वह क्षत है
 मांस दुष्टहोके ओष्ठ मोटाहो व मांसपिडसा हो सो मांसार्वुद है जिस में ओष्ठ
 फटके वहै वह खण्डौष्ठ है जो मांसपिण्ड सा मोटाहो पानीसा वहै सो जला-
 र्बुद है जो ओष्ठ श्वेतरहै श्वेत पानी वहै सो मेदोर्बुद है ओष्ठ में फकत गांठि
 परिजाय वह अर्बुद है ॥ २० ॥ अथ दश दन्तरोग कहते हैं दालन, कृमिदन्त,
 दन्तहर्ष, कराल, दन्तचाल, शर्करा ॥ २१ ॥ अधिदन्त, श्यावदन्त, दन्तभेद और
 कपालिका ये दश दन्तरोग हैं (अस्य लक्षणम्) जो दन्तटीसैं सो दालन है जो
 दांत कृमि परनेसे काले होजायँ पीड़ा करै सो कृमिदन्त है जो ठण्डा पानीदांत
 में लगे सो दन्तहर्ष है जो दात टेढ़े बसुरे होजायँ तो कराल है जो दांत हलैं सो
 दन्तचाल है जो दांत में मैल जमके खरसराहट हो सो शर्करा है जो दन्त के
 तरे दूसरा दांत जमके पीड़ा करे वह अधिदन्त है पित्तकोष से दांत काला
 नीला होजाय वह श्यावदन्त है जो दांत हलके पीड़ा करै और हटके बाहर
 बटिया सी पडजाय वह दांत भेद है जो दांतसे परत उराइँ वह कालिका है
 दंतमूलरोग दांतकी जड़में तेरह तरह का होता है ॥ २२ ॥ तिन तेरह के

खमाधुर्यं मुखलेपःप्रसेकता १४ श्वेतावलोकनंश्वेत
 विट्कत्वंश्वेतमूत्रता । श्वेताङ्गवर्णताशैत्यमुष्णोच्छ्रति
 क्लकामिता १५ मलाधिक्यञ्चशुक्रस्य बाहुल्यंबहुमूत्रता ।
 श्वालस्यमन्दबुद्धित्वंत्सिर्धुर्धरवाक्यता । अचैतन्यञ्च
 गदिताविशतिःश्लेष्मजागदाः १६ ॥ इति कफजरोगगण
 ना ॥ रक्तस्यचदशप्रोक्ताव्याधयस्तस्यगौरवम् । रक्तमण्ड
 लतारक्तेत्रत्वंरक्तमूत्रता १७ रक्तनिष्ठीवनारक्तपिठ
 कानाञ्चदर्शनम् । औष्ण्यञ्चपूतिगन्धित्वं पीडापा
 कश्चजायते १८ चतुस्सप्ततिसङ्ख्यातामुखरोगास्तथो
 दितः । तेष्वोष्ठरोगाणिता एकादशमित्ताबुधैः । वात
 त्व है ३६ जो उजरे में अंधेरा जानपरे वह तमादर्शन है ३७ जो देहमें पीलेरङ्ग
 और और देख परे वह पीतमण्डल है ३८ जो देखने में पृथ्वीपर कहीं कहीं पीले
 ध्वये से देखपरै वह पीतमण्डलदर्शन है ३९ जो पित्त मुख से वा मलमार्ग से
 गिरे वह निस्सरत्व है ४० और बीसरोग कफसंभव है तन्द्रा, अतिनिद्रा, गौरव,
 मुखमाधुर्य, मुखलेप, मसेक ॥ १४ ॥ श्वेतावलोकन, श्वेतविट्कत्व, श्वेतांगव-
 र्णता, उष्णोच्छ्रा, तिक्लकामिता ॥ १५ ॥ मलाधिक्य, शुक्रबाहुल्य, बहुमूत्रता,
 श्वालस्य, मंदबुद्धित्व, त्सि, मुर्धरवाक्यता, अचैतन्य ये बीस प्रकार के कफरोग हैं
 (अस्पलक्षणम्) जिसमें आँसू भरीरहै निद्रा न परै वहतन्द्रा है जो निद्रा
 विशेषहो तो अतिनिद्रा है जो शरीर भारीरहै वह गौरवहै जो मुख में गुडकास्वाद
 घनारहै वह मुखमाधुर्य जो मुखमें लसलसाहटहो तो मुखलेप जो लार गिराकरै
 तो प्रसेक है जो सर्वत्र श्वेत देखपरै तो श्वेतावलोकनहै जो श्वेत मलगिरे तो श्वेत-
 विट्कत्व है जो मूत्र श्वेतहो तो श्वेत मूत्र है जो शरीर श्वेतहो तो श्वेत मार्गवर्णत्व
 है जो देह उंठी बनीरहै तो शैत्यताहै जो उष्णपदार्थपर इच्छारहै तो उष्णोच्छ्रा है
 जो कटुपदार्थपर चिचचले तो श्वालस्य है मंदबुद्धि होजाय तो मंदबुद्धिहै मूत्रमाहार
 से त्सिहो तो त्सिहै जो बोलने में गला चर्धराय तो मुर्धरवाक्यहै मंद चेतनाहो तो
 अचैतन्यहै ॥ १६ ॥ रक्तविकारसे दशभक्ति के रोगहै गौरव, रक्तमण्डल, रक्तेत्रत्व,
 रक्तमूत्रता ॥ १७ ॥ रक्तनिष्ठीवन, रक्तपिठ सादर्शन, उष्णत्व, पूतिगन्धित्व, पीडा,
 पाक ये दशरोग रक्तजन्य हैं इनके नामही सदृश लक्षण हैं ॥ १८ ॥ अब मुखके जो

पित्तकफैल्लेधात्रिदोषैरसृजस्तथा १६ क्षतं मांसार्बुदञ्च
 व खण्डौष्ठश्च गलार्बुदम् । मेदोर्बुदञ्चार्बुदञ्च रोगाए
 कादशोष्ठजाः २० दन्तरोगादशाख्याता दालनः कृमिद
 न्तकः । दन्तहर्षः करालश्च दन्तचालश्च शर्करा २१ अ
 धिदन्तः श्यावदन्तो दन्तभेदः कपालिका । तथात्रयोद
 शमितादन्तमूलामयाः स्मृताः २२ शीतादोपकुशौद्रौ तु
 दन्तविद्रधिपुष्पुटौ । अधिमांसो विदर्भश्च महासौषिर
 चौहत्तर रोग हैं सो कहता हूं तिसमें ग्यारह ओष्ठरोग पण्डित करते हैं वात से,
 पित्तसे, कफसे, त्रिदोषसे, रक्तसे ॥ १६ ॥ क्षतज मांसार्बुद, खण्डौष्ठ, जला-
 र्बुद, मेदोर्बुद, अर्बुद ये ग्यारह ओष्ठरोग हैं जो ओष्ठ कठोर हो काला परजाइ
 गांठि परै पीड़ा करै सन फूटै फटै या साल उखड़े तो वातज है जो छोटी फु-
 न्सीयां परै पीड़ा दाहदो धीली परै पकजायें तो पित्तज है जो ओष्ठ श्वेत कलुक
 पीड़ा युक्त पिटका हो ठण्डे रहें तो कफज है जो आठ पिटका पीड़ा सहित हों
 कभी श्वेत कभी काला पीलाहो सो त्रिदोषज है जो ओष्ठ सजूर फलके रंग
 हों फुन्सीयुक्त रक्त वहै मांसकी गुत्थी निकसै ओष्ठ में कृमि उत्पन्न हों यह
 रक्तज ओष्ठ है जन आंठ में क्षत लगे से खजुआय पकै घात्र परै वह क्षत है
 मांस दुष्टशोके ओष्ठ मोटाहो व मांसपिडसा हो सो मांसार्बुद है जिस में ओष्ठ
 फटके वहे वह खण्डौष्ठ है जो मांसपिण्ड सा मोटाहो पानीसा वहै सो जला-
 र्बुद है जो ओष्ठ श्वेतरहै श्वेत पानी वहै सो मेदोर्बुद है ओष्ठ में फकत गांठि
 परिजाय वह अर्बुद है ॥ २० ॥ अथ दश दन्तरोग कहते हैं दालन, कृमिदन्त,
 दन्तहर्ष, कराल, दन्तचाल, शर्करा ॥ २१ ॥ अधिदन्त, श्यावदन्त, दन्तभेद और
 कपालिका ये दश दन्तरोग हैं (अस्य लक्षणम्) जो दन्तशीर्सें सो दालन है जो
 दांत कृमि परनेसे काले होजायें पीड़ा करै सो कृमिदन्त है जो ठण्डा पानीदांत
 में लगे सो दन्तहर्ष है जो दांत टेढ़े बकुरे होजायें तो कराल है जो दांत हल्लें तो
 दंतचाल है जो दांत में मैल जमके खरखराहट हो सो शर्करा है जो दन्त के
 तरे दूसरा दांत जमके पीड़ा करै वह अधिदन्त है पित्तकोप से दांत काला
 नीला होजाय वह श्यावदंत है जो दांत हलके पीड़ा करै और हटके बाहर
 बटिया सी पड़जाय वह दांत भेद है जो दांतसे परत उराड़ें वह कालिका है
 दंतमूलरोग दांतकी जड़में तेरह तरह का होता है ॥ २२ ॥ तिन तेरह के

सौषिरो २३ तथैवगतयःपञ्च वातापित्तात्कफाद्रपि ।
 सन्निपाताद्गतिश्चान्यारक्तनाडीचपञ्चमी २४ तथाजि
 ह्लामयाःषट्स्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा । अलसश्चचतुर्थःस्या
 दधिजिह्वश्चपञ्चमः । पष्ठश्चैवोपजिह्वःस्यात्तथाष्टौता
 लुजागदाः २५ अर्बुदन्तालुपिटकाकच्छपीतालुसंह
 तिः । गलशुण्डीतालुशोषस्तालुपाकश्चपुष्पुटः २६ गल
 नाम शीताद, उपकुश, दंतविद्रधि, पुष्पुट, अधिमांस, विदभे, महासौषिर, सौषिर ॥
 २३ ॥ इसमें वातादि दोपसे दंतनाडीरोग पांच प्रकारकाहै वात नाडी, पित्तनाडी,
 कफनाडी, सन्निपातनाडी, रक्तनाडी ये तेरह दंतमूल रोगहैं (अथास्यलक्षणम्)
 जो मसूदा फटि जाय रक्तदे ती शीतादहै जो मसूदा में दाहहोय पकै दांत हलै
 पीड़ा कमहो रक्त वहै फूलै मुखमें दुर्गन्ध आवै वह उपकुश है जो मसूदा बाहर
 वा भीतर सूजै पिराय रुधिर पीवदेइ सो दंतविद्रधि है जो दो तीनदांत का म-
 सूदा विशेष फूलै वह पुष्पुट है जो चौहटके मसूदा में पीड़ा अधिकहो वह अ-
 धिमांस है जो मसूदा दांत गिराने के लिये दांत रगड़ाकरै वा ग्रण उत्पन्नकरै
 वा सूजन विशेष उत्पन्न करै दांत हिलाने वह विदभेहै जिस मसूदा में दांत हिलै
 और तालु फटिजाय और मसूदा गलिजाय वह महासौषिर है जो मसूदा
 पिराय के सूजै लार बहावै वह सौषिर है जो मसूदा में फोड़ाहोके पकै फूटे
 और पोलापर दुर्गन्ध आवै लांबी नाडीसी दावने में समुभपरै वह नाडीहै इस
 नाडीमें जिसदोपका अधिकार जानिपड़े वह वही नाडी जानिये ॥ २४ ॥ अब
 जिह्वारोग कहते हैं जीभ में छः प्रकारके रोगहैं वातजन्य, पित्तज, कफज, अलस,
 अधिजिह्व, उपजिह्व ये छः नाम हैं (अथास्य लक्षणम्) जो जीभ फटिके मधुरादि
 पदरस का स्वादु परिज्ञान न होय जैसे मारवाड़देश में जिह्वा वृत्त स्वरस्तराय तो
 वातजहै जो जीभ लाल वा पीली परजाय दाहकरै फाटैपरै सो पित्तजहै जो जीभ
 में फारेकांटेसे उठै और मोटेहो और रवेतजीभहो तो कफजहै जो जीभ अपनीजह
 की श्वेतखिचिजाइ और सूजन अधिकहो और जड़पकिजाइतो अलसहै जो जीभकी
 नाकसम सूजन जीभ होइ पकिकै वहै तो अधिजिह्व असाध्यहै जो जीभकी नोकसी
 सूजन नरहो और लालहो खजुआय उसे उपजिह्व जानो ॥ २५ ॥ (अथाष्ट प्रकार
 तालुरोग) अर्बुद तालुपिटका, कच्छपी, तालुसंहति, गलशुण्डी, तालुशोष, तालु-
 पाक, पुष्पुट (अस्यलक्षणम्) तालुके मध्यमें कमलांकुरसमान उत्पन्नहो और

रोगास्तथाख्याताअष्टादशमिताबुधैः । वातरोहिणिका
 पूर्वद्वितीयापित्तरोहिणी २७ कफरोहिणिकाप्रोक्तात्रिदो
 वैरपिरोहिणी । मेदोरोहिणिकाचन्दोग्लौघोगलविद्रधिः ।
 स्वरहातुण्डिकेरीचशतघ्नीतालुकोर्बुदम् २८ गिलायुर्वल
 यश्चापि वाताङ्गण्डःकफात्तथा । मेदोगण्डस्तथैवस्यादि
 त्यष्टादशकण्ठजाः २९ मुखान्तःसम्भवारोगाह्यष्टौख्या
 तामहर्षिभिःमुखपाकोभवेद्वातात्पित्तात्तद्वत्कफादपि ३०
 रक्ताच्चसन्निपाताञ्चपूत्यास्योर्ध्वगुदावपि । अर्बुदं चेतिमुख
 जाश्चतुस्सप्ततिरामयाः ३१ कर्णरोगास्समाख्याताअष्टा
 कार्बुदके लक्षण मिलें सो तालुअर्बुदहै जो तनिके मूजै रक्कविकार सम पीडादाह
 हो सो पिटफहै जो कल्लुवा कीसी पीठ मूजआवै पीडा थोड़ीहो सो कच्छपिरा
 है जो तालुके बीचमें लंगी मूजनहो पीडाकरै सो तालुसंहतिहै जो तालुकी जड
 लम्बी मोटी मूजजाय वह गलशुंठी है सो तालु फूटै फटै सो तालु शोष है जो
 पकेजाइ सो तालुपाक है जो भरबेरी के समान ग्रंथे परिजाइ और मेदकेआश्रित
 हो सो पुष्पुटहै ॥ २६ ॥ (अधाष्टप्रकार कण्ठरोग) वातरोहिणी, पित्तरो-
 हिणी ॥ २७ ॥ कफरोहिणी, त्रिदोषरोहिणी, वृन्द, ग्लौघ, गलविद्रधी, स्वरहा,
 तुण्डिकेरी, शतश्री, तालुक, अर्बुद ॥ २८ ॥ गिलायु वलय, वातगण्ड, कफगण्ड
 और मेदोगण्ड ये अठारह प्रकारके कण्ठज रोगहैं (अधास्य लक्षणम्) जीभ
 की जड़के पास चनेके सम छोटीहो गलेके मार्गको रोषकरै इसमें त्रिदोष वा मेद
 जिसका विशेष लक्षण मिलै वही रोहिणी जानौ पांच रोहिणी तेरह औरहैं सो
 बहुतभाति गलेके भीतर त्त गाडि मूजन होकै कंठरोष करि पीडा करतेहैं जोद
 तीनि गण्ड ऊपर होतेहैं जिसे येया कहते हैं सो तीनों टोप मे होतेहैं जिनका
 लक्षण मिलै वही प्रधान जानौ ग्रंथगौरव होनेके कारण इस ग्रंथमें नहीं लिखत ॥
 २६ ॥ मुखके अन्त में आठ प्रकारके रोगहैं ये सब मिलिके मुखके भीतर चाँद-
 चर भांतिके रोगहैं वातमुखपाक, पित्तमुखपाक, कफमुखपाक, ॥ ३० ॥ रक्तमु-
 पाक, सन्निपातमुखपाक, दुर्गन्ध, उर्ध्वगुद और अर्बुद ये आठ मुखके रोगहैं ॥
 (अधास्य लक्षणम्) मुखके भीतर चारों ओर फुन्सी होयै पीडाकरै उन में
 जिस दोषके लक्षण पाये जायै वही मुखपाक जानौ मुखमें फोडा होके दुर्गन्ध
 आवै सो दुर्गन्धास्यहै मुखके भीतर फोडा होके दिपर जब तो उर्ध्वगुद मंम

दशमितावृधैः । वातात्पित्तात्कफाद्द्रक्तात्सन्निपाताच्चधि
 द्रधिः । शोथोर्वृद्धंपूतिकर्णः कर्णार्शःकर्णहल्लिका ३२ वा
 धिर्यतन्त्रिकाकण्डूःशङ्कुलीकृमिकर्णकः । कर्णनादःप्रती
 नाहृत्त्यष्टादशकर्णजाः ३३ कर्णपालीसमुद्भूतारोगाःस
 त्तद्द्विहोदिताः । उत्पातःपालिशोषश्चविदारीदुःखवर्द्धनः॥
 की गाठि उत्पन्न होके पीडाकरै वह अर्बुद है ॥ ३१ ॥ वा कर्णरोग भगारह
 प्रकारके हैं वातज, पित्तज, कफज, रक्तज, विद्रधि ॥ ३२ ॥ कर्णशोथ, अर्बुद, पूति
 कर्ण, कर्णार्श, कर्णहल्लिका, नाधिर्य, तंत्रिका, कण्डू, शङ्कुली, कृमिकर्णक, कर्ण-
 नाद, प्रतीत है ये अठारह नाम कानरोग के हैं (अथास्य लक्षणम्) कान में
 शब्द उठै पीडाहो और मल मूत्रिके पानी बहै तो वात है जो लाल सूजनहोके
 फटै दुर्गन्ध आवै और बहै वह पित्तजकर्णरोग है जो सूजनहो गुजाय और मद
 चिकनासा बहै कफमुने पीडाकरै सो कफज कर्णरोगहै जिसमें कुछ पित्तके लक्षण
 मिले वह रक्तज कर्णरोग है जो तीनों दोषके लक्षण पाये जाय वह सन्निपात
 कर्णरोगहै कानमें घाव या विद्रधि होके वा फोडा होके पीय वा रक्त बहै सो क-
 र्णविद्रधि है जो कानमें सूजनहो तो कर्णशोथ है जो कानमें गिलटी सी होके
 पिराय तो कर्णविद है जो दुर्गन्धित पीय बहै तो पूतिकर्ण है जो चनेकी घंटी
 सीहो खजुआइ दाह पीडाकरै तो कर्णार्श है जो कानमें कोई जंतु प्रवेशकरै उसके
 चलने से विकल होती है स्थिर रहनेसे स्वस्थ रहती है इसे कर्णहल्लिका कहते हैं
 जो सुनि न परै तो वाधिर्य है जो कानमें धीन शब्दसा भनभनाहटहो तो तन्त्रिक
 जो कान खजुआइ और कर्णमल सूषणाइ सो गुर्भी है पिटकाहो बहै सो श-
 ङ्कुली है ग्रंथान्तर में कर्णस्राव कहते हैं जो कानमें कीडा परजाइ सोकृमिकर्ण
 है जो भेरि मृदंगादि फासा शब्द पूरित रहै तो कर्णनाद है जो कर्णमल
 गलिके बहै तो प्रतिनाद है उसे अथाशीशी भी कहते हैं ॥ ३३ ॥ कर्णपाली रोग
 सानप्रकार का है उत्पातपाली, शोषपाली, विदारी, दुःखवर्द्धन, परिपोट, लेही,
 पिप्पली (अथास्य लक्षणम्) कर्णरोगके ऊपर जो शूर्पाकार परदा है उसे
 पाली कहते हैं उसे भारी आभूषण पहिरने से वा खजुआने से वा दग्गाने से
 कालपर पके दाह पीडाकरै फिर सूजके लाल होजाइ सो उत्पातहै जो पाली
 मूत्रिके छोटी परिजाइ तो शोषपाली है जो पाली फटिके खजुआइ सो विदारी
 है जो कान की नस छिदजाइ वा धिगरीत छेद हो तो विद चदनमें सूजे जलान
 हा पके सो दुःखवर्द्धन है जो गहना पहिरने छतारने से सूजे कालापर पके

परिपोटश्चलेहीचपिप्पलीचेतिसंस्मृताः ३४ कर्णमूला
मयाःपञ्चवातात्पित्तात्कफादपि।सन्निपाताच्चरक्ताच्चतथा
नासाभवागदाः ३५ अष्टादशैवसङ्ख्याताःप्रतिश्याया
स्तुतेष्वपिवातात्पित्तात्कफाद्भक्तात्सन्निपातेनपञ्चमः।आ
पीनसःपूतिनासोनासार्शोभ्रंशथुःक्षवः । नासानाहःपूतिर
क्तमर्बुदंद्दुष्टपीनसम् । नासाशोषोघ्राणपाकःपुटस्त्रावश्च
दीप्तकः ३६ तथादशशिरोरोगावातेनार्द्धावभेदकः॥ शिर
सो परिपोट है जो पाली में नन्हीं २ फुंसी हो खजुआय जलन हो सो लेही है
जो पाली में वेदनारहित सूजनहो स्तब्धहो सो विप्पली है ग्रंथांतर में उन्मथ
नाम है ॥ ३४ ॥ कर्णमूल पंचमकार के है वातज, पित्तज, कफज, त्रिदोषज,
रक्तज (अथास्य लक्षणम्) फानकी जड़के नीचे सूजनकी कर्णमूल कहते हैं
वातसेपीड़ा पित्तसेदाह कफसे स्नाज त्रिदोष से तीनों लक्षण रक्तसे लालदाह
संयुक्त ॥ ३५ ॥ नाकमें अठारह प्रकार के रोग हैं उनमें पांच प्रतिश्याय हैं
वातप्रतिश्याय, पित्तप्रतिश्याय, कफप्रतिश्याय, रक्तप्रतिश्याय, सन्निपातप्रति-
श्याय, पीनस, पूतिनास, नासार्श, भ्रंशथु क्षव नासानाह, पूतिरक्त, अर्बुद, दुष्ट
पीनस, नासाशोष, घ्राणपाक, पुणस्त्राव, दीप्तक ये अठारह प्रकार हैं (अथास्य
लक्षणम्) प्रतिश्याय कहे नाक बहना नाकनन्द होके फिर कुछ पानी वही कण्ठ
तालु ओठ सूखजाद कनपटी में पीड़ाहो सो वातप्रतिश्याय है जो काला पीला
पानी वही सो पित्तप्रतिश्यायहै जो कफसा श्वेतपानी वही मया जकड़ारहै सो कफ
प्रतिश्याय है जो रक्त वही नेत्रलाल हो तो वायुपद्री रक्तप्रतिश्यायहै जो तीनों
दोष मिले तो सन्निपातप्रतिश्यायहै जो नाक सूखिके चैली उखड़े सुगंध दुर्गंधजान
पर श्वासभूरिसी आवै तो पीनसहै जो नाक वा मुरासे दुर्गंध आवै तो पूतिनास
है जो मांसकी फुटकी उठआवै तो नासार्श है नाकड़ा भी कहते हैं जो प्रथम कफ
सूर्यास्त से अनापास गिरै तो भ्रंशथु है जो र्दोष अधिक आवै तो क्षव है जो
श्वासासरोध हो तो नासानाह है जो अभिवात से रक्त वा पीव वही तो पूतिरक्त
है जो नाकके भीतर खुटियासी परिजाय तो अर्बुदहै जो पीनस से अधिक कण्ठ
देह तो दुष्ट पीनस है इसे पीनस भी कहते हैं जो कण्ठ करि रींचने से श्वासआवै
जाय तो नासाश्वास है जो नाक फुटिके ऊपर से पीव वही तो घ्राणपाक है जो
नाक से पीव वा कनकी वही सो पुटस्त्रावहै जो नाक में दाहहोके देह संतप्तहै

स्तापश्चवातेनपित्तात्पीडात्तृतीयका ३७ चतुर्थीकफजा
पीडारक्तजासन्निपातजा । सूर्यावर्ताच्चिन्नरःपाकात्कृमिभिः
शङ्खकेनच ३८ तथाकपालरोगाःस्युर्नवतेषूपशीर्षकम् ।
अरुंधिकाविद्रधिश्चदारुणंपिटकार्बुदम् । इन्द्रलुप्तञ्च
खालित्यंपलितंचैतितेनव ३९ तथानेत्रभवाः ख्याता

तौ दीप्तकृद्वै ॥ ३६ ॥ माथेके दश प्रकारके रोगहैं अर्द्धावभेद, वातजशिरोभिताप,
पित्तजशिरोभिताप ॥ ३७ ॥ कफजशिरोभिताप, रक्तजशिरोभिताप, सन्निजशिरो-
भिताप, सूर्यावर्तशिरोभिताप, शिरःगक, कृमिजशिरोभिताप, शङ्खक ये दश रोग
हैं जो बायु निज कोप वा कफकी सहायतासे अर्द्धमस्तकमें निरोधकरै वचिलक
कुदारके प्रहार सम उत्पन्न होतीहो व उसी कनपटीमें कान नेत्र ललाटमें अधिक
पीडा करती है व आंख भी लाल होती है सो अर्द्धावभेदक है उसे आगशीशी
भी कहते हैं जो रातिको व्यथा बढ़ै वह वातजशिरोभिताप है जो मस्तक आरासा
धिरै नाकसे श्वास घुआंसीकद्वै रातिको ठंडकरहै सो पित्तजहै जो माथा भारी
हो रंध जाय मुँहपर भरभराहट हो सो कफजहै जो पित्तलक्षणयुक्त माथा अति
उष्ण रहै हाथ से छुआ न जाय सो रक्तजशिरोभिताप है जो तीनों दोष पाये
जायँ जो सन्निपात शिरोभिताप है जो सूर्योदय से भौह और आंख में पीडा
बढ़ती जाय और दुपहर से दिन उतरते उतरतीजाय सो सूर्यावर्त है जो माथे का
रुधिर वा चरबी क्षय होजाय व छोंक बहुत आवै पीडाकरै सो शिरपाक है जो
मस्तक में कृमिपरै व भालासा कोंचै व माथेकी मज्जा चरलेवे व कनपटी में अति
पीडा व सूजन हो तौ पित्तगयु रक्तकोप से शङ्खक होताहै सो विपसदश माथा
गलानिरोधकरि तीनदिनमें प्राण्य हरलेताहै इसमें वैद्य तीन दिन वीतजाने पर
धिक्रिता करते हैं ॥ ३८ ॥ (अथ कपालरोग) नवमकारहै उपशीर्षक, अरुंधिका,
विद्रुषी, दारुण, पिटका, अर्बुद, इन्द्रलुप्त, खालित्य, पलित ये नवरोग हैं (अ-
धास्यलक्षणम्) वातादि दोष कोपकरि कपालमें सूजन उत्पन्नकरै जो दोष अ-
धिकहो वही उपशीर्षकहै जो कृमि करिकै बहुत छिद्रहो वहे सो अरुंधिकाहै जो
मस्तक में ग्रन्थि परिकै पिराय सो विद्रुषीहै जो माथा रूताहो भूसी जर्म और खनु-
आय सो दारुणहै इसे खसी भी कहते हैं जो माथे में बटिया सदृश ऊंचीदोष वह
पिटकाहै जो पीडा संयुक्तहो व मस्तक में गांठिसी होकै पीडा करै तौ अर्बुदहै कफ
रक्त कापकरि रोकै छेदोंको खंधिकै गिराय देते हैं सोई इन्द्रलुप्तहै और वह भी होगहै

इचतुर्नवतिरामयाः । तेषुवर्त्मगदाः प्रोक्ताश्चतुर्विंशति
 सङ्ख्यकाः ४० कृच्छ्रोन्मीलः पक्ष्मशातः कफोत्क्लिष्टश्च
 लोहितः । अरुग्निमेषः कथितो रक्तोत्क्लिष्टः कुकूणकम्
 ४१ पक्ष्मार्शः पक्ष्मरोधश्च पित्तोत्क्लिष्टश्च पोथकी । शिल
 ष्टवर्त्मा च वहलः पक्ष्मोत्सङ्गस्तदावर्बुदम् ४२ कुम्भिकासि
 कतावर्त्मा लगणोज्जननामिका । कर्दमः श्याववर्त्मा च
 विषवर्त्मा तथा लजी ४३ उत्क्लिष्टवर्त्मेति गदाः प्रोक्ता
 वर्त्मसमुद्भवाः । नेत्रसन्धिसमुद्भूतानवरोगाः प्रकीर्ति
 ताः ४४ जलस्रावः कफस्रावो रक्तस्रावश्च पर्वणी । पूय
 स्रावः कृमिग्रन्थिरुपनाहस्तथा लजी ४५ पूयालस इति
 प्रोक्ता रोगानयनसन्धिजाः । तथा शुक्लगतारोगावुधैः
 प्रोक्तास्त्रयोदश ४६ शिरोत्पातः शिरार्हर्षः शिराजालश्च
 शुक्तिका । शुक्लार्मचाधिमांसार्म प्रस्तार्मचपिष्टकः
 ४७ शिराजापिटका चैव कफग्रथितकोर्जुनः । स्नाय्व
 र्मचाधिमांसः स्यादिति शुक्लगता गदाः । तथा कृष्णसमु
 द्भूताः पञ्चरोगाः प्रकीर्तिताः ४८ शुद्धशुक्रं शिराशुक्रं क्षत
 उसे वादसोरा भी कहते हैं जो माथेके वार गिरके चिकना होजाय सो खालित्य
 कहे चंदुवाहै जो काल वा अकालमें केश श्वेत होजाई सो पलितहै ॥ ३६ ॥ नेत्र
 मण्डल में ६४ रोगहैं उनमें वर्त्मगद २४ हैं ॥ ४० ॥ कृच्छ्रोन्मील, पक्ष्मशात, कफो-
 त्क्लिष्ट, लोहित, अरुग्निमेष, रक्तोत्क्लिष्ट, कुकूणक ॥ ४१ ॥ पक्ष्मार्श, पक्ष्मरोध,
 पित्तोत्क्लिष्ट, पोथकी, शिलष्टवर्त्मा, वहल, पक्ष्मोत्संग, अर्बुद ॥ ४२ ॥ कुम्भिका,
 सिकतावर्त्म, लगण, अज्जननामिका, कर्दम, श्याववर्त्मा, विषवर्त्मा, अलजी ॥ ४३ ॥
 उत्क्लिष्टवर्त्मा यह रोग वर्त्मसमुद्भूतहैं नेत्रकी संधिमें ६ रोगहैं ॥ ४४ ॥ जलस्राव,
 कफस्राव, रक्तस्राव, पर्वणी, पूयस्राव, कृमिग्रन्थि, उपनाह, अलजी ॥ ४५ ॥ पूया-
 लस ये जयनसंधिज रोगहैं तथा नेत्रके सफेद भागमें तेरह रोगहैं ॥ ४६ ॥ शिरो-
 त्पात, शिरार्हर्ष, शिराजाल, शुक्तिक, शुक्लार्म, अधिमांसार्म, प्रस्तार्म, पिष्टक ॥ ४७ ॥
 शिराजापिटका, कफग्रथितक, अर्जुन, स्नाय्वर्म, अधिमांस ये शुक्लगतारोगहैं नेत्रकी

शुक्रं तथाजकः । शिरासङ्गश्चसर्वेपिप्रोक्ताःकृष्णगता
 गदाः ४९ काञ्चतुषड्विधंज्ञेयं वातात्पित्तात्कफादपि । स
 त्रिपाताच्चरक्ताच्चपट्टंसंसर्गसम्भवम् ५० तिमिराणिपडे
 वस्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा । संसर्गेणचरक्तेन पट्टंस्यात्स
 त्रिपाततः ५१ लिङ्गनाशः सप्तधास्याद्वातात्पित्तात्क
 फेनच । त्रिदोषैरुपसर्गेणरक्तात्संसर्गजस्तथा ५२ अ
 प्टधादृष्टिरोगाः स्युस्तेषुपित्तविदग्धकम् । अम्लपित्तं वि
 दग्धञ्च तथैवोष्णविदग्धकम् ५३ नकुलान्ध्यंधूसरान्ध्यं
 रात्र्यान्ध्यंहृस्वदृष्टिरुः । गम्भीरदृष्टिरित्येते रोगादृष्टिग
 ता स्मृताः ५४ चत्वारश्चाधिमन्थाःस्युर्वातपित्तकफास्त
 तः । अभिष्यन्दाश्चचत्वारो रक्ताद्दोषैस्त्रिभिस्तथा ५५
 सर्वाक्षिरोगाश्चाष्टौस्युस्तेषुवातविपर्ययः । अम्लशोफो
 न्यतोवातस्तथापाकात्ययःस्मृतः ५६ शुष्काक्षिपाकश्च
 तथा शोफोध्युषितएवच । हताधिमन्थइत्येतेरोगाः
 सर्वाक्षिसम्भवाः ५७ पुंस्त्वदोषास्तुपञ्चैव प्रोक्तास्तत्रे
 ष्यकःस्मृतः । आसेक्यश्चैवकुम्भीकस्सुगन्धिःषण्डसञ्ज
 कः ५८ शुक्रदोषास्तथाष्टौस्युर्वातपित्तकफेनच । कुणपंश्ले
 काली जगह मे ५ रोग हैं ॥ ४८ ॥ शुद्धशुक्र, शिराशुक्र, क्षतशुक्र, अजक,
 शिरासंग ये काली पुतलीके रोग हैं ॥ ४९ ॥ कांच ६ तरहका है वात, पित्त,
 कफ, संसर्ग, रक्त, सन्निपात ॥ ५० ॥ तिमिर छः प्रकारका है वात, पित्त, कफ,
 संसर्ग, रक्त व सन्निपात से ॥ ५१ ॥ लिङ्गनाश ७ प्रकारका है वात, पित्त कफ,
 विदोष, उपसर्ग रक्त, संसर्ग से ॥ ५२ ॥ नेत्ररोग ८ प्रकारके हैं उसमें पित्त-
 विदग्धक, अम्लपित्त, विदग्ध, उष्णविदग्धक ॥ ५३ ॥ नकुलान्ध्य, धूसरान्ध्य,
 रात्र्यान्ध्य, ह्रस्वदृष्टिक, गम्भीरदृष्टि ये दृष्टिगत रोग हैं ॥ ५४ ॥ चार अधिमन्थ हैं
 वात, पित्त, कफ, अप्सन्न, अभिष्यन्द ४ रक्तसे दाह से ॥ ५५ ॥ सप्त नेत्ररोग ८
 हैं उसमें वातविपर्यय, अम्लशोफ वात, पाकात्यया ५६ ॥ शुष्काक्षिपाक, शोफ,
 अम्लोपित्त ये अधिमन्थरोग नेत्र में उत्पन्न होते हैं ॥ ५७ ॥ पुंस्त्वदोष पाचही

षमवाताभ्यां पूयाभंश्लेष्मपित्ततः ६१ क्षीणञ्चवात
 पित्ताभ्यां ग्रन्थिलंश्लेष्मरक्ततः ६० मलानांसन्निपाताच्च
 शुक्रदोषाद्वितीरिताः ६० अथस्त्रीरोगनामानि प्रोच्यन्तेपूर्व
 शास्त्रतः । अष्टावार्त्तवदोषास्स्युर्वातपित्तकफैस्त्रिधा । पूया
 भंक्षुण्णपंग्रन्थिक्षीणमलसमन्तथा ६१ तथाचरक्तप्रदरं
 चतुर्विधमुदाहृतम् । वातपित्तकफैस्त्रिधाचतुर्थसन्निपात
 तः ६२ विंशतिर्योनिरोगाः स्युर्वातात्पित्तात्कफादपि । स
 न्निपाताच्चरक्ताच्चलोहितक्षयतस्तथा ६३ शुष्काचवामि
 नीचैवषण्ठीचान्तर्मुखीतथा । सूचीमुखीविष्णुताचजात
 ध्नीचपरिष्णुता ६४ उपष्णुताप्राक्चरणामहायोनिश्चकणि
 का । स्यान्नन्दाचातिचरणायोनिरोगाद्वितीरिताः ६५ चतु
 र्विधंयोनिकन्दं वातपित्तकफैस्त्रिधा । चतुर्थसन्निपातेन
 तथाष्टौगर्भजागदाः ६६ उपविष्टकगर्भः स्यात्तथानागो
 दरःस्मृतः । मक्कल्लोमूढगर्भश्च विष्टम्भोमूढगर्भजः ।
 जरायुदोषोगर्भस्य पातश्चाष्टमकःस्मृतः ६७पञ्चैवस्त
 ६ ईर्ष्यक, आसेत्रय, कुम्भीक, सुगन्ध, पण्ड ॥ ५२ ॥ और शुक्रदोष = है
 वात पित्त कफसे कुण्ण श्लेष्म और वातसे पूयाभ, श्लेष्म और पित्तसे ॥ ५६ ॥
 क्षीणवात पित्तसे ग्रन्थिल, श्लेष्म और रक्तसे मलों के सन्निपात से ये शुक्रदोष
 कहे ॥ ६० ॥ अथ स्त्रियों के रोग कहते हैं = अतु से वात, पित्त, कफ से ३
 प्रकारके पूयाभ, क्षुण्ण, ग्रन्थि, क्षीण तथा मलसम ॥ ६१ ॥ रक्तप्रदर प्रकार
 का है वात, पित्त, कफ से तीन प्रकार का चौथा सन्निपात से ॥ ६२ ॥ बीस
 योनिरोग हैं वात, पित्त, कफ, सन्निपात, लोहित क्षय से ॥ ६३ ॥ शुष्का,
 वामिनी, पण्ठी, अंतर्मुखी, सूचीमुखी, विष्णुता, जातत्री, परिष्णुता ॥ ६४ ॥
 उपष्णुता, प्राक्चरणा, महायोनि, कणिका, नन्दा और अतिचरणा ये बीस योनि
 रोग हैं ॥ ६५ ॥ चार प्रकार का योनिकन्द है वात पित्त कफ से ३ प्रकारका
 चौथा सन्निपात से = आठ रोग गर्भज हैं ॥ ६६ ॥ उपविष्टक, नागोदर,
 मक्कल्ल, मूढगर्भ, निष्टम्भ, मूढगर्भज, जरायुदोष, पात ये आठ हैं ॥ ६७ ॥ अथ पाच

नरोगाःस्युर्वातात्पित्तात्कफादपि । सन्निपातात्क्षताञ्चैव
 तथास्तन्योद्भवाग्दाः६८ बालरोगेषुकथिताःस्त्रीदोषाश्च
 त्रयःस्मृताः । अदक्षपुरुषोत्पन्नःसपत्नीविहितस्तथा ६९
 दैवाज्जातस्तृतीयस्तु । तथायसूतिकाग्दाः । ज्वरादय
 शिचकित्स्यास्तेयथादोषयथावलम् ७० द्वाविंशतिर्बाल
 रोगास्तेषुक्षीरभवाश्चयः । वातात्पित्तात्कफाञ्चैवदन्तो
 द्भेदश्चतुर्थकः । दन्तघातोदन्तशब्दो कालदन्तोहिपूतन
 म् ७१ मुखपाकोमुखस्त्रावोगुदपाकोपशीर्षिकः । पाश्वारु
 णस्तालुकण्ठोविच्छिन्नपारिगमिकः ७२ दौर्बल्यगात्रशो

प्रकार स्तनरोग वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, क्षतज जैसे ये पांच स्तन
 रोग हैं ऐसे ही वातादि पांच रोग दूध उतरने में स्तनरोग बालरोग में करे हैं दूध
 पाली या बिना दूधवाली स्त्रीके स्तनमें वातादि दोष कोपकरि मांस जो रक्त दूषित
 करे तो पांच प्रकार के रोग हों वे रक्तज विद्रोष के सब लक्षण युक्त होते हैं
 वातजमें बांधुके ऐसे दोष प्रति जानना ॥ ६८ ॥ स्त्रीके दोष उत्पन्न करनेवाले तीन
 दोष हैं अदक्षपुरुष कहे स्त्रीके व्यवहारमें चतुरन होय उसके संताप करिके जो रोग
 उत्पन्न होय वह अदक्ष पुरुषोत्पन्न कहिये जो सवति की ईर्ष्या संताप कारण करके
 रोग होय वह पत्नी विहित है जो निजस्त्रीसे पुरुष प्रसन्नतासे मत न देय औरही
 स्त्रीसे स्नेह रखता होय इस चिन्तासे क्रुशहोय शरीरमें जो रोग उत्पन्न होताह वह
 दैहिक है ॥ ६९ ॥ अथ बालांत रोग जो बालक होने के अन्तमें रोग उत्पन्नहोय
 वह बालांत है उसीको प्रभृति भी कहते हैं इसमें ज्वरादिरु दोष देखिके औररोग
 का बलायल विचारिके चिकित्सा करना जिसमें देह मोड़े ज्वर, प्यास, सूजन,
 शूल, अतीसारहो सो असाध्य है जो केवल खाने पीनेसे हुआह वह ज्वरादिक
 विशेष भयङ्कर है जो मकड़रोग करिके शूल उत्पन्न करे और रक्त अवरोधनकरि
 सबदेहमें शूल उत्पन्न करे वह बहुत दुःखदायी है वह शूलनामसे मकड़है ॥ ७० ॥
 अथ बाईस प्रकारके बालरोग हैं तिनमें तीन रोग माताके स्तनसम्बन्धी हैं वातज,
 पित्तज, कफज ये दूधसम्बन्धी हैं चार रोग दातन के हैं दंतोद्भेद, दंतघात,
 दंतशब्द, अकालदंत ये ४ दंत रोग हैं एक पूतना ॥ ७१ ॥ मुखपाक, मुखस्त्राव,
 गुदपाक, उपशीर्षक, पाश्वारुण, तालुकण्ठ, विच्छिन्न, पारिगमिक ॥ ७२ ॥

विशतिःस्मृताः ७३ तथावालग्रहाःख्याताद्वादशैत्रमुनी
 श्वरैः । स्कन्दग्रहोविशाखःस्यात्खग्रहरचपितृग्रहः ७४ नै
 गमेयग्रहस्तद्वच्छकुनिःशीतपूतनामुखमण्डितिकातद्वत्पू
 पारिगर्भिकके लक्षणं है जो शरीर बहुत दृश होजाय सो गात्रशीप और मुख
 दीभी कहते है इसमें उबकाई और अतीसार भी होताहै जो बालक अज्ञानहके
 राति व दिनको विद्यौना में मूत सो शर्यामूत्र है दुग्धदोपसे बालक को आखि
 की पलकपर खाजहोके आखिले पानी बहतारहै और बालक आखि नाक म
 स्तक घसतारहै उजारमें आखि नहीं खोलि तो उसे कुकण्ठक कहतेहै जो बालक
 विशेषरौब उसका क्रम बढ़ रावना देखिके अनुमान करिके रोग जाननी वह
 रोदनहै कक कोपसे बालक के शरीर में भुगासी विडकी है शरीरके रंगमें मिल
 रहती है पीडा नहीं करती एकस एक मिलके रहती है वह अजगदी है सो वा
 लकके विशेषहै जवानके क्रम होताहै ॥ ७३ ॥ अर बारह प्रकारके बाल
 ग्रह रोगहै स्कन्दग्रह, विशाखाग्रह, खग्रह, पितृग्रह ॥ ७४ ॥ नैगमेय, शकुनि, शीत
 पूतना, मुखमण्डितिका, पूतना, अधपूतना, रेवती और शुक्ररयती ये बारह प्रकारहै
 (अस्थ सामान्यलक्षणम्) स्कन्दादि द्वादशग्रहग्रस्त बालक अनायास चौ
 फता है उठि न बैठता है ओठ दांत चबाता है मुगसे फन गिरता है सोता नहीं
 हाथ पांव सूज जातेहै मल पतला अच्छीतरह धोलाता नहीं देहमें मडलीके रक्त
 कीसी गंध आतीहै दूध नहीं पीता सब ग्रहोंके सामान्य लक्षण जो बालक कुछ
 कार्य आखि देहसे पानी वह वा एके अंग कार्य ऊपरको देखै दांत चबाय मुह टेढ़ा
 बनाये दूध न पिथे कुछ रोवे वह स्कन्दग्रह है जिस ग्रहमें बालकको एवर और
 ऊर्ध्वदृष्टिहो वह विशाखाग्रह है इसके विशेष लक्षण बालतत्र में है जिस ग्रहमें
 बालक वैशेश होजाय मुहसे पानगिर ज्वरादिक उपद्रवहो रोवे अधिक देहमें रक्त
 पीवकी गंध आवे उसे खग्रह कहते है ग्रयांतर में स्कन्दावस्मार कहतेहै अग्निष्वा
 चादि पितरो करि पीडित बालकको ज्वरादिक उपद्रव होत है वह पितृग्रहहै नैग
 मेयग्रह पीडित बालक तिस उबकाई, कुडकप, कंमुखरोप, पच्छी, देहमें दुग्ध, ऊ
 र्ध्वदृष्टि, दांत चबाना वह नैगमेयहै जो बालक अंगमालतहो व भयङ्कररूप लक्षण
 उचकताहो देहमें पत्तीकीसी गंध आवे और बिराय उबकाई व अतीसार देहमें दुग्ध
 यह शीतपूतना है जिस बालक का मुख भतजहो शरीरकी नस देखिपर अधिक
 खाय देहमें और भ्रममें दुग्ध आवे वह मुखमण्डितिका है जिस बालकको ज्वर अ
 तीसार, पियास, ऊर्ध्वदृष्टि, रोना, निद्राहीन, विह्वलता वह पूतनाहै जो बालक खाति

तनाचन्धिपूतना ७५ रेवती चैत्रसङ्ख्यातातिर्यास्याच्छु
 ष्करेवती । तथाचरणभेदास्तुवातरक्तादिकाश्चये । द्विच
 स्वारिशदुक्तास्ते रोगेष्वेवमुनीश्वरैः ७६ । द्विपट्टिदोषभे
 दास्स्युस्सन्निपातादिकाश्चये । तेषिरोगेषुगणिताः पृथ
 क्प्रोक्तान्तेकचित् ७७ । हीनमिध्यातियोगानां भेदैः प
 ञ्चदशोदिताः । पञ्चकर्मभवारोगास्तेषुरोगेषुसञ्ज्ञिताः
 ७८ स्नेहस्वेदोत्प्राधमोगप्रदूषोज्जनतर्पणे । अष्टादशैत
 ज्ञाः पीडास्ताश्चरोगेषुलजिताः ७९ शीतोपद्रवएकः स्या
 ज्वर पिपास देहमें मेदगन्धवृद्धन विशेष दूधन निये मल अधिकगिरै बह्मंधपूतना
 जो बालक की देहमें पिडकी घाव घावसे रुधिर बहै देहमें दुर्गन्ध मल पतला
 ज्वर वह रेवती है जो बालक को ज्वर शूल अजीर्ण माथमें पीड़ा मुखशोष सो
 शुष्करेवती है ॥ ७५ ॥ वातरक्त करिके पांचके रोग सुनिपाद, स्तम्भपाद, स्फुटन
 इत्यादिक पांचरोग सुनिलोग वयालीसे कहिये हैं सो ये रोग स्तम्भपादिक
 रोगन में प्रथम कहिये हैं सो जानना ॥ ७६ ॥ सन्निपातादिक दोष करिके
 वासठ ६२ प्रकार के रोग हैं सो वातादिक दोष में भिन्न भिन्न रोग कहियेके
 हैं परन्तु इन्हें भिन्न करि कोई नहीं कहता ऐसा समझना ॥ ७७ ॥ पंचकर्म
 चमन, विरेचन, निरुहणवस्ती, अनुवासनवस्ती, नस्य ये पांचों कर्म उत्तरर-
 षडमें कहेंगे और हीनयोग, मिध्यायोग, अतियोग इन तीनों प्रकारके भेद हैं सो
 भी उत्तर में कहेंगे चमन कहे औपधि देके उपकायना विरेचन कहे औपधि कं-
 रके मल गिराना निरुहणवस्ती अनुवासनवस्ती औपधि की पिचकारी सुंदा
 मार्गसे देनी नस्य कहे नाकमें औपधि देनेका यत्न इस भांति पांचों कर्म जा-
 नना हीनयोग, मिध्यायोग, अतियोग इन से नाना भांति के दुग्ध उत्पन्न होते
 हैं ॥ ७८ ॥ स्नेहादि संग्रह भी उत्तरषण्ड में हैं स्नेहपान, स्वेदन, धूमपान,
 गंडूप, अंजन, तर्पण इन छहों में हीनयोग, मिध्यायोग, अतियोग ये तीनों भेद
 करिके अठारह भेद हैं उससे उत्पन्न जो रोग सो उक्त रोगमें संग्रह करि आवे
 हैं ऐसे जानना स्नेहपान, स्वेद, धूमपान, गंडूपता, अंजन यह प्रथम परिभाषा में
 लिखिये हैं औपधादिक करिके धातुको वृद्ध करनेका प्रयोग उसे तर्पण कहते
 हैं अथवा नेत्रवृत्तकरने के प्रयोग उसे भी तर्पण कहते हैं ॥ ७९ ॥ शीतोदि चारि
 उपद्रव बहुत ठंढा योग करसे मनुष्यकी ठंढा उपद्रव उत्पन्न होता है बहुत उष्ण

देकश्चोष्णोप्रतापकः । शल्योपद्रवएकश्चक्षीरश्चैकः
 स्मृतस्तथाः ८० स्थावरंजङ्गमंचेव कृत्रिमंच त्रिधाविष
 म् । तेषांच कालकूटाद्यैर्नवधास्थावरंविषम् । जङ्गमंवह
 धाप्रोक्तत्रलूनभिर्जङ्गमाः ८१ वृद्धिचकारूपकाःकीटाः
 अत्येकंतेचतुर्विधाः । दंष्ट्राविषंनखविषंवीलशृङ्गास्थिभि
 स्तथा ८२ मूत्रात्पुरीषाच्छुक्राश्चदृष्टैर्निश्वासतस्तथा । ला
 लायाःस्पर्शतस्तद्वत्तथाशङ्काविषंमतम् ८३ कृत्रिमंद्विवि
 धं प्रोक्तं गरदूषीविभेदतः । सप्तधातुविषंज्ञेयंतथासप्तोपधा

उपद्रव उत्पन्न होताहै शल्य कहे नच, केश, कांटा, हाड़, सींग, नांडा इनके
 लगनेसे वा इनमें से कोई वस्तु पेटमें जाय उससे जो रोगहोय वह शल्योपद्रव
 है मूत्रवैद्य जो संभलपार बनातेहैं परन्तु कच्चा रहिजाताहै वह खिलाने से जो
 रोग उत्पन्न होतो विषःश्रुति; शय वा अन्न इन्होंकी तरहसे मरताहै ऐसे चार
 भेदहैं ॥ ८० ॥ (अथ विषरोग) स्थावर, जंगम, कृत्रिमये तीनप्रकारके विषहैं
 तिसमें स्थार विषके नव भेदहैं और जंगम विष बहुत प्रकारकाहै तिसमें लता,
 सांप ॥ ८१ ॥ विच्छू, मूमा, क्रीट इसमें वात विच कफ सन्निपात करिकै एक
 एकके चारचार भेद होजाते हैं किसीके दांत में विषहै किसीके नखमें किसीके
 धारमें किसीके सींगमें किसीके हाड़में ॥ ८२ ॥ मूत्रमें मलमें भातमें दृष्टिमें श्वास
 में लारमें स्पर्शमें ऐसे भिन्न भिन्न ज्ञाति प्रति विषहैं मन में विषकी शङ्का आने से
 वायु क्षुधितहो, ज्वरादि-उपद्रव शरीरमें प्रकट करे सो शङ्काविषहै ॥ ८३ ॥
 कृत्रिम विषके दो भेदहैं एक अच्यवनागादि एकदूषी संवत संपत्तिके निमित्त शत्रुता
 करिकै वा स्त्रीलोग नाना प्रकारकी चीज प्रसीना रज यिनाई मेल मूत्रइत्यादि
 अन्न के संग खिला देती है तो प्रांडुवर ज्वरादि उपद्रव होता है वा मधुमूत्रयुक्त
 भयेते विरहोपहै नांडू कपूर मिश्रित भयेते विष होय यह कृत्रिम विषहै और
 अच्यवनागादि कृत्रिम विष एकही बार देहवो जीर्णरि भाणलेताहै जिसमें कम
 पराक्रम है सो प्राण नहीं नाश करसक्ता परन्तु ज्वरादि उपद्रव करिकै देशकाल
 अन्न वा दिवादि निद्रा करिकै पीडित करता है और सतरसादि धातुनको दू-
 पित करता है इसी कारण दूषित विष कहते हैं ये दो प्रकारके कृत्रिम विष हैं
 विषको भेद सुवर्णादिक अगूढ सप्तधातुकी भस्म राने से वा हस्तालादि सप्त-

तुजम् ८४ तथैवोपविषेभ्यश्चजातंसप्तविधंविषम् ।
दुष्टनीरंविषं चैकंतथैकंदिग्धजंविषम् ८५ कपिकच्छुभ
चाकण्डूदुष्टनीरभवात्तथा । तथासूरणकण्डूश्चशोथोभल्ला
तजस्तथा ८६ मदश्चतुर्विधश्चान्यःपूगभङ्गाक्षकोद्र
वैः । चतुर्विधोन्योद्रव्याणांफलत्वहसूलपत्रजम् ८७ इ
तिप्रसिद्धागणिता एकिलोपद्रवाभुवि । असहख्याश्चाप
रेधातुमूलजीवादिसम्भवाः ८८ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरसंहि
तायारोगगणनायांसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

इति शार्ङ्गधरस्यप्रथमखण्डस्समाप्तः ॥

आतुकी भस्म खाने से सप्त मदादिक अशुद्ध उपविष खाने से त्रिपसमान पीड़ा हो
ती है उसकी विपसंज्ञा है (अथ दुष्टनीर) जिस पानी में कीचड़ से बाल पत्ता
दिक जन्तु वा मेढकके मल मूत्रसे पानी विगड़ जाता है उसे दुष्टनीर कहते हैं
उसके नहाने से पीने से त्रिपसमान पीड़ित होता है शस्त्रादिक में विष के पानी को
चढ़ाते हैं उस शस्त्रके घातका घाव नहीं अच्छा होता और विषसदृश उपद्रव होता
है सो दिग्धविष है ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ अथ चारिमकार आंगतुक उपद्रव वनकिमाच
दुष्ट पानी सूरन अङ्के छनेसे देह खनुयाय भिजावासे देह मूत्रआवे इसमकार
से चारिभेद है और यी चारि मकार हैं सुयारी भांग बहेड़ा का मींगी कोदव
धान्य इन चारों के खाने से चारि मकारके मद् होते हैं इसीमकार और भी जानना
८६ ॥ ८७ ॥ ओषधि वनस्पति फूल डार पात मूल इनके खाने से चारमकारके
मद् होते हैं इसमकार जो पृथ्वी में मसिद्ध रोगोपद्रव है तिनकी संख्या निश्चय
करिगये है इससे वा सुवर्णादि आतु हरतालादि उपधातु नानामकारकी वनस्पति
वा ओषधि वा जीवादिक करिके अनेक उपद्रव उत्पन्न होते हैं सो उपद्रव असंख्य
है अनुमान से जानना ॥ ८८ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरव्याख्यायानिमित्तशार्ङ्गधरमुपाकर
नामसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

इति शार्ङ्गधरस्यप्रथमखण्डस्समाप्तः ॥

श्रीगणाधिपतये नमः ॥

शार्ङ्गधरसंहिता ॥

मध्यखण्डवार्तिकतिलकसंहिता ॥

अर्थात्: स्वरसः १ कल्कः २ काथश्च ३ हिम ४
फाण्ट ५ को । ज्ञेयाः कषायाः पञ्चैते लघवः स्युर्यथोत्तर
म् १ आहतात्तक्ष्णोत्कृष्टाद्द्रव्याल्लुण्णात्समुद्रवः । वल्ल
निष्पीडतोयः स्यात्स्वरसोरसउच्यते २ कुडवंचूर्णितद्रव्यं
क्षिप्तंचद्विगुणेजले । श्रीहोरात्रातिस्थितं तस्माद्भवद्वा रसउ
त्तमः ३ आदायशुष्कद्रव्यञ्चस्वरसानामसम्भवे । जलेष्ट
गुणितेसाध्यपादशेषञ्चगृह्यते ४ स्वरसस्यगुरुत्वाच्चप
लमर्द्धप्रयोजयेत् । निश्शोधितंचाग्निसिद्धंपलमात्रंरसंपि
वेत्तंप्रमधुश्चेतागुडक्षाराञ्जीरकंलवणंतथा । घृतंतैलंचचूर्
णीदीन्कोलमात्रानूसेत्तिपेत् ६ अमृतायारसः क्षौद्रयुक्तः स

अथ मध्यखण्डः प्रारभ्यते ॥ अथ काथ गिले काडा कहते हैं सो पांच प्रकारका है
स्वरसकहे अद्भरस १ कल्क २ काथ ३ हिम ४ फाट ५ एक से एक गुणमें न्यून
है यथा स्वरससे लघु कल्क ॥ १ ॥ उत्तम भूमिसे तुरतकी उत्तरी ओपधि जल
धिया कूटिके बल्लमें डारि निचोरि लेय उस रसको स्वरस कहते हैं ॥ २ ॥ सोई
द्रव्य खुडव कहे सोलह तोल कूटिके दुगुने पानी में दिनरोति भिजोईराखै उसके
रसको भी स्वरस कहते हैं ॥ ३ ॥ जो द्रव्यहरी नमिलै तौ सूखीद्रव्य अठगुणे पानी
में ओटै जब चौथाई रहै तब लैलेइ ॥ ४ ॥ ओदी द्रव्यका रस गरुआहै इसकारण
कार्य में आधापल लेना और सूखी द्रव्य रातकी भोजीका रस हलकाहै इससे पल
भर लेना ॥ ५ ॥ स्वरस व काडा व यन्नका निकाला रस इनमें शहद, शकर, गुड,
खार, जीरा, लोन, घृत, तेल और चूर्ण ये सब आठमाशे युक्त करना ॥ ६ ॥

र्विप्रमेहजित् । हरिद्राचूर्णयुक्तो वारसो धात्र्याः समाक्षिकः ७
 लासंस्वरसः पेयो मधुनोरक्तपित्तजित् । ज्वरकासकग्रह
 रः कामलाश्लेष्मपित्तहा ८ त्रिफलाधारसः क्षौद्रयुक्तो दा
 र्दीरसो धवा । निम्बस्यत्रागुडूच्यानापीतो जग्यतिकामलास
 ९ पीतो मरिचचूर्णेन तुलसीपत्रजोरसः । द्रोणपुष्पीरसो
 प्येवं निहन्ति विषमज्वरान् १० जम्बवाद्यामलकीनाञ्च
 पल्लवोत्थोरसो जयेत् । मध्वाज्यक्षरिसंयुक्तोरक्तातीसारशु
 ल्यणाम् ११ स्थूलबन्धूलिकापत्ररसः पानाद् व्यपोहति ।
 सर्वातिसाराञ्जघोनाककुटजत्वग्रसो धवा १२ आर्द्रकरत्र
 रसः क्षौद्रयुक्तो वृषणवातनुत् । श्वामकामारुचीर्हन्ति प्रति
 श्यायं व्यपाहति १३ बीजपूररसः पानान्मधुक्षारयुतो ज
 गुर्ष का रस शब्द युक्त ताने से से प्रमेह नाश होय है आंवरे का रस हल्दी वा
 चूर्ण शब्द मिश्रित करि खिलाने से भी प्रमेह नाश होता है ॥ ७ ॥ (अथ चा-
 स्त्रास्वरस रक्तपित्तादि पर) रक्तेका स्वरस शब्द भिलायके पियेसे रक्तपित्त
 नाशहोय और ज्वर, खांसी, क्षय, कमल, कफ और पित्त इनरोगों को भी नाश
 करै ॥ ८ ॥ (अथ त्रिफलादिस्वरस कजलपर) त्रिफले का रस गूढ
 वा बड़ी हल्दी का रस शब्द व नींबूका रस शब्द वा गुर्ष वा रस शब्द युक्त
 पिये तो कमल रोगको नाश करै ॥ ९ ॥ (अथ तुलसी आदि रस विषम
 ज्वर पर) तुलसी का रस मरिचका चूर्ण वा गुमाका रस मरिच साथ दिये
 तो विषमज्वर नाशहोय ॥ १० ॥ (अथ जम्बवादि रस रक्तातीसार पर)
 जाष्टन, आंव, आंवरा इन तीनों की पत्ती का रस शब्द घृत व दूध सहित पिये
 तो दिनी रक्तातीसार दूरहोय ॥ ११ ॥ (अथ अनूरादिस्वरस अतीसार
 पर) वज्रकी आलका रस शब्द युक्त गिलाई तो सात मातिका अतीसार जाय वा
 कुरैया का रस वा केरीलका रस शब्द सङ्ग पिये तो अतीसार जाय ॥ १२ ॥
 (अथार्द्ररस अण्डकोश और श्यासपर) अदरक का रस शब्द
 संग पिये तो वाताह्वृद्धि पचै श्वास, खांसी, अरुचि, नाक रुना ये सबरोग
 मुक्त होय ॥ १३ ॥ (अथ बीजपूररस पाशर्वादि शूलपर) चिन्नी नींबू
 का रस शब्द और जमातार सातिल पिये तो पसुरी की शूल, हृदयकी शूल, पैडू

येत् । पार्श्वहृद्वस्तिशूलानिकोष्ठवायुञ्चदारुणम् १४
 शतावर्याश्चमधुना पित्तशूलहरोरसः । निशाचूर्णयुतः
 कन्यारसःश्रीहाऽपचीहरः १५ अलम्बुषायाःस्वरसःपीतो
 द्विपलमात्रया । अपचीगण्डमालानां कामलायाश्चनाश
 नः १६ रसोमुण्ड्याःसकोष्णोवा मरिचैरवधूलितः । जये
 त्सप्तदिनाभ्यासात्सूर्यावर्तार्द्धभेदकौ १७ ब्राह्मीकूष्माण्ड
 पङ्ग्रन्थाशङ्खिनीस्वरसःपृथक् । मधुकुष्ठयुतःपीतःसर्वो
 न्मादापहारकः १८ कूष्माण्डकस्यस्वरसोगुडेनसहयोजि
 तः । दुष्टकोद्रवसञ्जातं मदंपानाद्द्व्यपोहति १९ खड्गा
 दिच्छिन्नगात्रस्यतत्कालपूरितोत्रणः । गाङ्गेरुकीमूलरसे
 र्जायतेगतवेदनः २० पुटपाकस्यकल्कस्य स्वरसोगृह्य
 तेयतः । अतस्तुपुटपाकानां युक्तिरत्रोच्यतेमया २१ पु
 टपाकस्यमात्रेयं लेपस्याद्भारवर्णता । लेपञ्चद्वयङ्गुलं

शूल व कोष्ठबद्ध इन सब रोगनसे निर्मुक्तहोय ॥ १४ ॥ (अथ शतावरीरस
 पित्तशूलपर) शतावरि रस शब्द पिये तौ पित्तशूल हरै (अथ घीकुवार
 रस श्रीहा पर) घीकुवाररस हर्दी चूर्ण पिये तौ पित्त, अपची, पेटकी गाठि
 दूरहोय ॥ १५ ॥ (अथ मुण्डीरस गण्डमाला अपचीपर) मुंठीरस आठ
 तोले पिये तौ गंडमाला, अपची, कावररोग मिटै ॥ १६ ॥ (अथ मुंठीरस
 सूर्यावर्तादि पर) मुंठीस्वरस उष्णकारि मरिच चूर्णयुत सात दिन पिये तौ
 सूर्यावर्त आघाशीशी अच्छीहोय ॥ १७ ॥ (अथ ब्राह्मवगदिस्वरस उन्मा
 दपर) ब्राह्मी, श्वेत कुम्हड़ा, कचूर व धन कौब्याला इनका स्वरस भिन्न भिन्न
 शब्द और कूटके सङ्ग पिये तौ सब उन्मादजार्ये ॥ १८ ॥ (श्वेतकुम्हड़ाका रस
 उन्माद पर) सफेद कुम्हड़े का रस पुराने गुडसंयुत पिये तौ दुष्ट कोदरका
 उन्माद नाशहोय ॥ १९ ॥ (अथ चरियारारस घाव पर) शस्त्रके लगेके
 घाव में तुरन्त चरियारे का रस लगावै तौ घाव अच्छा होय ॥ २० ॥ (अथ
 पुटपाक के रसकी विधि) पुटपाक का रस लेते हैं इससे उसका यत्र करते
 हैं ॥ २१ ॥ कोई ओदी द्रव्यहो उसे पीसिके गोली धारै तिस पर रंड वा

स्थूलंकुर्याद्वाङ्गुष्ठमात्रकम् । काश्मरीवटजम्बवादिपत्रैर्वे
 ष्ठनमुत्तमम् । पलमात्ररसोग्राह्यः कर्षमात्रं मधुक्षिपेत् । क
 ल्कचूर्णाद्रवाद्यास्तु देयाः स्वरसवद्बुधैः २२ तत्कालाकृष्ट
 कुटजत्वचंतण्डुलघारिणा । पिष्टांचतुष्पलमितां जम्बूप
 ल्लववेष्टिताम् २३ सूत्रेण बद्धाङ्गाधूमपिष्टेन परिवेष्टिताम् ।
 लिप्तांचघनपङ्केन गोमयैर्वन्हिनादहेत् २४ अङ्गारवर्णा
 चमृदं दृष्ट्वा वन्हेः समुद्धरेत् । ततोरसंगृहीत्वा च शीतं
 क्षौद्रयुतं पिबेत् २५ जयेत्सर्वान्तीसारान्दुस्तरान्सुचि
 शोथिान् । कण्डितंतण्डुलपलं जलेष्टगुणितेक्षिपेत् । भा
 वयित्वाजलंग्राह्यं देयं सर्वत्रकर्मसु २६ अरलुत्वकृतश्चै
 वपुटपाकोग्निदीपनः । मधुमोचरसाभ्यांचयुक्तस्सर्वाति
 सारजित् २७ न्यग्रोधादेश्चकल्केन पूरयेद्गौरतित्तिरेः ।
 निरन्त्रमुदरं सम्यक्पुटपाकेन तत्पचेत् । तत्कल्कस्वरसः

बरगद वा जामुनका पत्ता लपेटै फिर कपरौटी करि दो अंगुल मोटी माटी
 लेसै तव अग्नि में धरै जब लालहो तव निकारिकै उसका रस निचोरि ले
 उसे पुटपाकरस कहते हैं तव चार रुपया भर रस रुपयाभर शहद संयुक्त पिये
 और जो कल्क चूर्ण पतली द्रव्य मिश्रित करनीहो तौ पुटरसको यथायोग्य देना ॥
 २२ ॥ (अथ कुरैयापुटपाक सर्वातीसारपर) चार तोले कुरैयाकी क्षाल
 ताजी चावल के धोवन में पीसिकै गोला बांध जामुन के पत्ते लपेटै ॥ २३ ॥ फिर
 सूत से बांधि मोठ के आटा सों लेपकरि माटी लगावै तव गौरा के गोदामें फूँकि
 कै अंगार होजाय तव आगिसे निकाल निचोरि उगढाकरि शहद डारि रियै वों
 बहुत दिनका कठिन अतीसार जाय २४ २५ ॥ (चावल धोवनकी क्रिया)
 चार रुपयाभर शुद्धचावल अठगुने पानी में धोवै वही धोवन सर्वत्र देव ॥ २६ ॥

धौद्रयुक्तः सर्वातिसारनुत् २८ पुटपाकेन विपचेत्सुपक्वंदा
 द्वितीयफलम् । तद्रसो मधुमं युक्तः सर्वातीसारनाशनः २९
 बीजपूगम्रजम्बूनां पल्लवानिजटाः पृथक् । विपचेत्पुटपा
 केन चोद्रयुक्तश्चतस्रसः ३० हृदिनिवारयेद्घोरांसर्वदोष
 ममुद्भवाम् ३० पिष्टानां वृषपत्राणां पुटपाकरसो हिमः ।
 मधुयुक्तो जयेद्रक्तपित्तकामज्वरक्षयान् ३१ पचेत्क्षुद्रांस
 पञ्चङ्गां पुटपाकेन तद्रसः । पिप्पलीचूर्णसंयुक्तः कासश्वास
 कफापहः ३२ विभीतकं फलं किञ्चिद्घृतेनाभ्यज्यलेपयेत् ।
 गोधूमपिष्टेनाङ्गारैर्विपचेत्पुटपाकं चत् ३३ ततः पक्वंसमुद्धू
 त्य त्वचंतस्य मुखेक्षिपेत् । कासश्वासप्रतिश्याद्यंस्वरभङ्गा
 ज्ञयेत्ततः ३४ चूर्णी किञ्चिद्घृताभ्यक्तं शुण्ठ्या एरण्डजैर्दलैः
 वेष्टितं पुटपाकेन विपचेन्मन्दबह्विना ३५ तत उद्धृत्य तच्चू
 र्णं ग्राह्यं प्रातःसितान्वितम् । तेन यान्तिशमं पीडा आमाती
 सारसंभवाः ३६ शुण्ठीकल्कं त्रिनिक्षिप्य रसेरेण्डमूलजैः ।

गोला निकाल रसनचोरने सा रस शब्द संयुक्तदेय तौ तत्र अती नारजाय ॥ २८ ॥
 पुनः चार पके अनारका पुटपाक बनाइ तिसका रस शब्द मिलाय कै देय तौ सत्र
 अतीसार नारा होय ॥ २९ ॥ (अथ विजौरा पुटपाक उवाची पर) वि-
 जौरा बीजू जामुन की पाती ना जडके पुटपाक का रस शब्द पुन देइ तौ सत्र दोष
 की छदि जाय ॥ ३० ॥ (अथ वासापुटपाक रक्तपित्त कासज्वर पर)
 रुमे क पुटपाक का रस अरु शब्द विषे से रक्तपित्त कास छदि व ज्वरजाय ॥
 ३१ ॥ (अथ भटकटैया का पुटपाक कासश्वास पर) भटक
 टैया के पंचाग का पुटपाक रस पीपरिका चूर्ण डारि कै दे तो कापरव स कफ
 जाय ॥ ३२ ॥ (अथ विभीतकपुटपाक कासश्वास पर) बरेरे पर पी
 लगाइ तिसान से लेप अंगार पर पुटपाक करे ॥ ३३ ॥ उमना द्रितका मुगमें
 सराने से कान्त, आस, पतिश्याय, स्वग्भा ये रोग जाय ॥ ३४ (अथ मोंडि
 पुराने आमातीसार पर) लेंड रूण विविपृतसे बदी बनाय एटास में
 लण्ड मन्नादि में पुटपाक करे ॥ ३५ ॥ उल चूर्णों से बरेरे रसा रस साप को

विपचेत्पुटपाकेनतेद्रसःकौद्रसंयुतः । आमवातसमुद्भूतां
पीडांजयतिदुरतराम् ३७ सौरणंकन्दमादायपुटपाकेनपा
चयेत् । सतैललवणस्तस्वरसश्चाशौविकारनुत् ३८ श
रावसन्पुटेदग्धंशृङ्गंहरिणजंपिवेत् । गव्येनसर्पिषापिष्टंह
च्छूलंनश्यतिध्रुवम् ३९ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डे
चिकित्सास्थाने स्वरसादिकल्पनाऽध्यायः ॥ १ ॥

पानीचंपोडशगुणक्षुण्णेद्रव्यपलेक्षिपेत् । मृत्पात्रेकाथ
येद्ग्राह्यमष्टमांशावशेषितम् १ तज्जलंपाययेद्धीमान्को
पणंसृष्ट्वग्निस्नाधितम् । शृतःकाथःकषायश्चनिर्यूहःसनि
गद्यतेरआहाररसपाकेचसञ्जातेद्विपलोन्मितम् । वृद्धैद्यो
पदेशेनपिवेत्काथंसुपाचितम् ३ काथेक्षिपेत्सितामंशैश्च
तुर्थाष्टमषोडशैः । वार्तपित्तकफातङ्केविपरीतंमधुस्मृतम् ४
जीरकंगुग्गुलुक्षारंलवणंचशिलाजतुम् । हिङ्गुत्रिकटुकंचै
वकाथेशाणोन्मितंक्षिपेत् ५ कीरंघृतंगुडंतैलमूत्रंचान्य
आमातीसारकी पीडा मिटे ॥ ३६ ॥ पुनः सौंठ चूर्णं परंडकी जड़ के रस में
साणि पुटपाक करि रस निकारि शहद रंग लाइ तौ आमवात की पीडा
जाय ॥ ३७ ॥ (अथ मूरन पुराना बचाभीर पर) पुटपाक करि पवा
जर्मीनंद, लोन, तेल साथ लाइ तौ अरिनाश होय ॥ ३८ ॥ (हरिण शृंग
पुराना हृदयशूल पर) हरिणसींग शराय संपुट में जराइ गौ के धीमें डारि
पिये तौ हृदय की शूल जाय ॥ ३९ ॥ इति शार्ङ्गधरेमध्यमोऽध्यायः ॥ १ ॥

(अथ काथ) चार रूपया भर द्रव्य चौत्तर रूपया भर पानी माटीके पानमें
भरि गंडाग्निमें औंठ ज्व औठ रूपये गरिरहै तत्र उतारि लेय ॥ १ ॥ कुड उष्ण
रहै तत्र पिये काथके चार नाम हैं शृत, काथ, कषाय, निर्यूह ॥ २ ॥ आहार का
रस पके पर छद्द अंध के उपदेश से दोपल काढा पिये ॥ ३ ॥ काथमें मधु मिथ्री
टारनेका प्रमाण प्रधान हो तौ मिथ्री थोड़ी देना पित्तमें अप्रमाण कफमें षोडशांश
शहद चागुमे षोडशांश पित्तमें अप्रमाण कफमें चौथा अंश देना ॥ ४ ॥ जीरकादि
अनेक यस्तु डालनेका प्रमाण जीरा, गुग्गुलु, क्षार, संघय, शिलाजीत, हिंग व त्रिकटु
काठे में चाग्निमें दे या बल्ल संभव देखि ॥ ५ ॥ दूध, घी, गुड़, तैल, गोमूत्र,

दूद्रवंतथा । कल्कंचूर्णादिकंकाथेनिक्षिपेत्कर्षसस्मितम् ६
 गुडूचीधान्यकारिष्टपद्मकरक्तचन्दनम्रागुडूच्यादिगणका
 थःसर्वज्वरहरःपरः । दीपनोदाहहृल्लासतृष्णाछर्द्यरुचीर्ज
 येत् ७ गुडूचीपिप्पलीमूलं नागरैःपाचनंस्मृतम् । दद्या
 द्वातज्वरेपूर्णेतिङ्गैसप्तमवासरे ८ शालपर्णीवलारास्नागु
 डूचीशारिवातथा । आसांकाथंपिवेत्कोष्णं तीव्रवातज्व
 रच्छिदम् ९ काश्मरीशारिवारस्नात्रायमाणामृताभवः ।
 कषायःसगुडःपीतो वातज्वरविनाशनः १० कटुफले
 न्द्रयवास्रवृष्ठात्तिकासुरैःशृतंजलम् । पाचनंदशमेऽह्नि
 स्यात्तीव्रपित्तज्वरेनृणाम् ११ पर्पटोवासकस्तिका किरा
 तोधन्वयासकः । प्रियङ्गुरचकृतःकाथएषांशर्करयायुतः ।
 पिपासादाहपित्तास्त्रयुक्तंपित्तज्वरंजयेत् १२ द्राक्षाहरीत
 कीमुस्तकटुकाकृतमालकः । पर्पटश्चकृतःकाथएषांपित्त
 और श्यासादि लुगदी चूर्णादि ये सब दश मासे घल समय देखिकै देना ॥ ६ ॥
 (गुर्चादिकादा सब ज्वरपर गुर्च, धनिया, नीवकी छाल, पद्मास, रक्त
 चन्दन इस गुर्चादि फापते सब ज्वर नारा होप है यह दीपनहै दाह, तृष्णा, लार,
 उमकाई ये रोग दूर होयें ॥ ७ ॥ (गुर्चादि पाचन चातज्वरपर) गुर्च, पी
 परामूल व सौठ इनका कादा वातज्वरमें सतयें दिन देय यह पाचन है ॥ ८ ॥
 (चातज्वर पर) शालपर्णी कहे वनवर्दी, बरिधारा, रासन, गुर्च, सरिवन
 इनका कादा जिये से तीव्र वातज्वर जाय ॥ ९ ॥ (दूसरा कादा चातज्वर
 पर) संभारी सरिवन, रामन, आयमाण, गुर्च इनका कादा गुड टारिकै पिये तौ
 वातज्वर जाय ॥ १० ॥ (कटुफलादि पाचनपित्तज्वरपर) कायफर, इन्द्र-
 यव, पादा, घुटकी और नागरमोथा इन पाचोका फादा तीव्र पित्तज्वरमें मनुष्यों
 को दशयें दिन देइ ॥ ११ ॥ (पित्तपापरादि काथ पित्तज्वरपर) पित्त
 पापरा, रस्ता कुटकी, चिरायता, जवासा, भिर्यगुदाना पीतसरसों सा होताहै यह
 कादा चीनी के संग जिये तौ तृषा दाह व रक्तपित्तज्वर ये मुक्त होयें ॥ १२ ॥
 (दूसरा) दास, हट, मोथा, घुटकी, अथनतास और पित्तपापडा इनका काथ
 पित्तज्वर नाश करै है और तृष्णा, मूर्च्छा, दाह व रक्तपित्त इन्हें शमन और

ज्वरापहः । तृणमूर्च्छादाहपित्तासृक्छमनोभेदनः स्मृतः १३
 वीजपूरशिवापथ्यानागरग्रन्थिकैः शृतम् । सक्षारपाचनं
 श्लेष्मज्वरेद्वादशवासरं १४ भूनिम्बनिम्बपिप्पल्यः शटी
 शुण्ठीशतावरी । गुडूचीवृहतीचेति काथोहन्यात्कफज्वर
 म् १५ पटोलत्रिफलातित्ताशटीवासांमृताभवः काथोमधु
 युतः पीतोहन्यात्कफकृतंज्वरम् १६ पर्पटाब्दांमृताविश्व
 किरातैः साधितंजलम् । पञ्चभद्रमिदंज्ञेयं वातपित्तज्वराप
 हम् १७ क्षुद्राशुण्ठीगुडूचीनांकषायः पौष्करस्यच । कफ
 वाताधिकेपयोज्वरेवापित्रिदोषजे । कासश्वासारुचिकरेपा
 र्श्वशूलविधायिनि १८ आरंभवधकणामूलंमुस्तातित्ताभ
 याकृतः । काथः शमयतिक्षिप्रंज्वरंवातकफोद्भवम् । आम
 शूलप्रशमनोभेदीदीपनपाचनः १९ अमृतारिष्टकटुकामु
 स्तेन्द्रयवनागरैः । पटोलचन्दनाभ्यांचपिप्पलीचूर्णयुक्
 छतम् । अमृताष्टकमेतच्च पित्तश्लेष्मज्वरापहम् । छद्य

भेदन करै ॥ १३ ॥ (विजौरा पाचक कफ ज्वर पर) विजौरा की जड़,
 इड़, सोंठ, पिपरामूल, जवाखार डारिकै कफ ज्वर के बारह दिन काढ़ा पिये
 तौ जल्दी पाचन करै ॥ १४ ॥ (पुनःकाथ) चिरायता नीमको झाल, पीपरि,
 कचूर, सोंठ, शनावरि, गुर्च व भटकटैया यह काढ़ा कफज्वरको विनाशनाहै ॥ १५ ॥
 (पुनःकाथ) पटोलपत्र, त्रिफला, कुटकी, कचूर, रुसा व गुर्च इनका काढ़ा
 मधुयुक्त पीने से कफज्वर का नाश होता है ॥ १६ ॥ (पित्तपापरा काथ
 चातंज्वर पर) पित्तपापरा, नागरमोथा, गुर्च, सोंठ व चिरायता इसपञ्चभद्र
 काढ़े से वातपित्तज्वर जाता है ॥ १७ ॥ (छोटी भटकटैया काथ कफ चात
 ज्वर पर) भटकटैया, सोंठ, गुर्च, पुष्करमूल यह काढ़ा कफ चातज्वर नाश
 करै और संनिपात ज्वर में पिये तौ कास, श्वास, श्रुचि और पसुडों की पीड़ा
 हरै ॥ १८ ॥ (अमलतासादि काथ चातकफज्वर पर) अमलतास का
 गूदा, पिपरामूल, मोथा, कुटकी और यड़ीइड़ इन हा काढ़ा वातकफज्वर वगही नाश
 करै आमशूल शमन करै और गोटा गिरावै व अग्निदीपन पाचन करै ॥ १९ ॥

शोचकहल्लासदाहृतृष्णानिवारणम् २० कण्टकारीद्वयंशु
 ष्ठीधान्यकंसुरदारुच । एभिःशृतंपाचनंस्यात्सर्वज्वरविना
 शनम् २१ शालपर्णीपृष्ठपर्णीवृहतीद्वयगोक्षुरैः । विल्या
 ग्निमन्थश्योनाककाश्मरीपाटलायुतैः २२ दशमूलमिति
 ख्यातंक्वथितंतज्जलंपिवेत् । पिप्पलीचूर्णसंयुक्तंवातश्ले
 ष्मज्वरापहम् २३ सन्निपातज्वरहरंसूतिकादोपनाशनम्
 शोषशैत्यभ्रमस्वेदकासश्वासविकारनुत् । हृत्कम्पग्रहपा
 शर्वातितन्द्रामस्तकूलानुत् २४ अभयामुस्तधान्यादरक्त
 चन्दनपद्मैः । वासकेन्द्रयवोशीरगुडूचीकृतमालकैः २५
 पाठानागरतिकाभिःपिप्पलीचूर्णयुक्छतम् । पिवेत्त्रि
 दोषज्वरजित्पिपासादाहकासनुत् २६ प्रलापश्वासतन्द्रा
 झंदीपनंपाचनंपरम् । विण्मूत्रानिलविष्टम्भत्रमीशोषारु
 चिञ्जयेत् २७ किरातकटुकीमुस्ताधान्येन्द्रयवनागरैः । दश

(अथ अनृताष्टक काथ) गुर्चि, नीमटीघाल, कुटकी मोथा, इन्द्रयव, सोंठ,
 पटोल और रक्तचन्दन इनका काथ पीपरिका चूर्णकारिकै पीने से पित्तकफज्वर
 नाशहोय तथा उपहाई, अरुचि, हृत्कास, दाह और रुपा इनको निवारै ॥ २० ॥
 (भटकटैयादि काथ सचज्वरन पर) दोनों भटकटैया, सोंठ, धनियाँ, टे-
 दारु यह पाचनकाथ सच ज्वर हरै ॥ २१ ॥ (दशमूलकाथ चातकफ पर)
 घनवर्दी वनस्पृग, दोनों भटकटैया, गुडुरु, जेलरी जठ, अग्निवंध, सोहनवचा,
 संभारी. पादा ॥ २२ ॥ इन दशोंकी जडका कादा पीपरि के चूर्ण के संग पिये
 तौ वातकफज्वर नाशहोय ॥ २३ ॥ सन्निपातज्वर, सूतिबादोप, घुस सुखना,
 शोतल अद्भ, भ्रम, पसिना वास, श्वास नाश करै हृदयशूल, पार्श्वशीङ्गा, तंद्रा,
 मस्तकशूल ये सचयुक्त शोष ॥ २४ ॥ (हरीनकीकाथ नक्षिपात ज्वर पर)
 बड़ीहड, नागरमोथा, धनियाँ, रक्तचन्दन पद्मास, रस्ता, इन्द्रयव, खल, गुर्चि,
 अमलवास ॥ २५ ॥ पादे की जड़, सोंठ, कुटकी, पीपरिका चूर्ण समेत कादा पिये
 तौ सन्निपातज्वर, लृष्णा, दाह, कास हरै ॥ २६ ॥ भ्रम, श्वास, तन्द्राहरै टीपन
 पाचन करै वायु से म्लमूत्रागोध, यमन, कंठशोष, अरुचि इन उपद्रवों को नाश

मूलमहादारुगजपिप्पलिकायुतैः २८ कृतः कषायः पाश्चा
 तिसन्निपातज्वरं जयेत् । कासश्वासवमीहिंकातन्द्राहृद्ग्रह
 नाशनः २९ कट्फलाम्बुदभार्गीभिर्धान्यरोहिषपंपटैः ।
 वचाहरीतकीशृङ्गादेवदारुमहौषधैः ३० काथः कासज्वरं ह
 न्तिश्वासश्लेष्मगलग्रहान् । काथोजीर्णज्वरं हरं गुडूच्यापि
 प्पलीयुतः । तथापर्पटजः काथः पित्तज्वरं हरः परः ३१
 निदिग्धिका मृताशुण्ठी कषायं पाययेद्भिषकं । पिप्पलीचूर्ण
 संयुक्तश्वासकासादितापहम् । पीनसारुचिवैस्वर्यशूलाजी
 र्णज्वरापहम् ३२ क्षुद्राधान्यकशुण्ठीभिर्गुडूचीमुस्तपद्म
 कैः । रक्तचन्दनभनिम्बपटोलवृषपौष्करैः ३३ कटुकेन्द्रयवा
 रिष्टाभार्गीपर्पटकैः समैः । काथंप्रातर्निषेवेत सर्वशीतज्वर
 च्छिद्रम् ३४ मुस्ताक्षुद्रामृताशुण्ठीधात्रीकाथः समाक्षिकः ।
 पिप्पलीचूर्णसंयुक्तो विषमज्वरनाशनः ३५ पटोलत्रिफला

करैः ॥२७॥ (पुनरेष्टांगदशमूलकाथ) चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, धनियां,
 इन्द्रयव, सोंठ, दशमूल, देवदारु, गजपीपरि समेत काथपिये तौ पसुरीपीडा, सन्नि-
 पातज्वर, कास, श्वास, वमन, हिचकी, तन्द्रा, हृदय रोगये नाशहोयं ॥ २८ ॥ २६ ॥
 (कायकर कासज्वर पर) कायकर, नागरमोथा, भारंगी, धनियां, सस, पिच-
 पापडा, बच, इड, काकडासींगी, देवदारु, सोंठ इस काथे से कासज्वर नाशहोय
 श्वास कफ कंठरोग मिटै गुर्चका काडा पीपरि युक्त पीनेसे जीर्णज्वर छूटै पित्तपा-
 पडेका काथ पीपरियुक्त पीनेसे पित्तज्वर जाइ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ पुनः भटकटैया में
 गिलोय, सोंठ व पीपरि डारि पिये तौ श्वास, कास, अर्दितवायु, पीनस, अरुचि,
 गला वैठव, शूल, जीर्णज्वर ये रोग दूरहोयं ॥ ३२ ॥ (सर्व शीतज्वर पर
 भटकटैया काथ) भटकटैया, धनियां, सोंठ, गुर्च, नागरमोथा, पद्माल, रक्तचन्दन,
 चिरायता, पटोल, रुसा, मोचरस, कटुकी, इन्द्रयव, नींब, भारंगी
 और पित्तपापडा इनका काथ प्रातःकाल पिये तौ सत्र शीतज्वर नाशहोयं ॥ ३३ ॥
 ३४ ॥ (विषमज्वर पर मोथाकाथ) नागरमोथा, भटकटैया, गुर्च, सोंठ,
 आवला इनका काडा शहद पीपरियुक्त पिये तौ विषमज्वर मुक्तहोय ॥ ३५ ॥

निम्बद्राक्षाशम्याकवासकैः । काथःसितामधुयुतोजयेदेका
 द्विकञ्ज्वरम् ३६ गुडूचीधान्यमुस्ताभिश्चन्दनोशीरनाग
 रैः कृतंकाथंपिवेत्क्षौद्रंसितायुक्तंज्वरातुरः ३७ तृतीयज्वर
 नाशायतृष्णादाहनिवारणम् । देवदारुशिवावासाशाल
 पर्णीमहौषधैः ३८ धात्रीयुक्तंशृतंशीतंदद्यान्मधुसितायुत
 म् । चातुर्थिकज्वरेश्वासेकासेमन्दानलेतथा ३९ गुडूची
 धान्यकोशीरगुण्ठीवालकपर्पटैः । विल्वप्रतिविषापाठारक्क
 चन्दनवत्सकैः ४० किरातमुस्तेन्द्रयवैः कथितंशिशिरंपिवे
 त् । सक्षौद्रंरक्कपित्तघ्नंज्वरातीसारनाशनम् ४१ नागरंकूट
 जोमुस्तममृतातिविषातथा । एभिः कृतंपिवेत्काथंज्वरा
 तीसारनाशनम् ४२ धान्यनागरविल्वाब्दवालकैः साधि
 तंजलम् । आमशूलहूरंग्राह्यंदीपनंपाचनंपरम् ४३ धान्य
 नागरजःकाथःपाचनोदीपनस्तथा । एरण्डमूलयुक्तश्चज

(नित्य आत्मे ज्वरपर पटोलकाथ) पटोल, त्रिफला, नींबकीडाल, दास,
 अमलतास और रुसाइनका काप शब्द व खाड़ युक्त पिये तो एकादिकज्वर
 छूटै ॥ ३६ ॥ (तृतीयक ज्वरपर गुडूचपादिकाथ) गुर्चे, धनियां, नागरमोया,
 रक्तजन्दन, खस और सोंठ इनका काढ़ा शकर शब्द युक्त पिये तो तृतीयक
 ज्वर, प्यास, दाह ये उपद्रव निम्मेकतहोयें ॥ ३७ ॥ (चातुर्थिकज्वरपर देवदारु
 काथ) देवदारु, नडी हड, रुसा, शालपर्णी सोंठ और आवना इनका काढ़ा
 शब्द व मिथीयुक्त पिये तो चातुर्थिक ज्वर जाय और श्वास, कास, मंदाग्नि
 ये सब दूरहोयें ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ (ज्वरातीसार पर गुडूचपादिकाथ)
 गुर्चे, धनिया, खस, सोंठ, मुर्गधवाला, पित्तपाषाण, बेल, अतीस, पादा, खत
 चन्दन, कुरैया, चिरायता, मोया, इन्द्रयव यह काढ़ा ठंडाकरि शब्द मिश्रतकर
 पिये तो ज्वरातीमार व रक्तपित्तका नाशहोय ॥ ४० ॥ ४१ ॥ (पुन-) सोंठ,
 कुरैया, मोया, गुर्चे, अतीस इस काढ़ेसे ज्वरातीसार जाय ॥ ४२ ॥ (आम-
 शूलपर धान्यपञ्चककाथ) धनियां, सोंठ, बेल, मोया, नेत्रवाला इनके
 काथ से आमशूलजाय व ग्राही, दीपन, पाचनहै ॥ ४३ ॥ सहित धनियां सोंठ

वेदामानिलव्यथाम् ४४ वृत्सकातिविषाविल्वमुस्तेवाल
 क्कमाशतम् । अतीसारंजयेत्सामंचिरंरक्तशूलजित् ४५
 कुटजातिविषापाठाघातकीलोध्रमुस्तकैः । हीवेरदाडिमं
 युतैःकृतःकाथःसमाक्षिकः ४६ पेयामोचरसेनवकुटजाष्ट
 कसञ्जकाः।अतीसारञ्जयेद्वातरक्कशूलामदुस्तरान् ४७
 हीवेरघातकीलोध्रपाठालञ्जालुवत्सकैः । धान्याकाति
 विषामुस्तागुडूचीविल्वनागरैः ४८ कृतःकषायःशमयेद्
 तीसारंविरोत्थितम् । अरोचकामशूलास्रज्वरघ्नःपाचनः
 स्मृतः ४९ घातकीविल्वलोधाणिवालकंगजपिप्पली । प्र
 भिःकृतंशृतंशीतंशिशुभ्यःक्षौद्रसंयुतम् । प्रदद्याद्वलेहंवा
 सर्वातीसारशान्तये ५० शालपर्णीवलाविल्वधान्यशुण्ठी
 कृतंशृतम् । आध्मानशूलसहितांवातजाग्रहणींजयेत् ५१
 गुडूच्यतिविषाशुण्ठीमुस्तैःकाथःकृतोजयेत् । आमामनुषकां

ग्रहणीग्राहीपाचनदीपनः ५२ यवधान्यपटोलानांकाथः
 सक्षौद्रशर्करः । योज्यस्सर्वातिसारेपुषिलवाघारिथभवस्त
 था ५३ त्रिफलादेवदारुश्चमुस्तामूपककर्णिका । शिशु
 रेतैःकृतःकाथःपिप्पलीचूर्णसंयुतः । विडङ्गचूर्णयुक्तश्च
 कृमिघ्नःकृमिरोगहा ५४ फलत्रिकामृतातिका निम्बकैरात
 वासकैः । जयेन्मधुयुतःकाथः कामलांपाण्डुतांतथा ५५
 पुनर्नवाभयानिम्बदावीनिक्तापटोलकैः । गुडूचीनागरयुतैः
 काथोगोमूत्रसंयुतः । पाण्डुकासोदरश्वासशूलसर्वाङ्गशो
 थहा ५६ वासाद्राक्षभयकाथःपीतः सक्षौद्रशर्करः । निह
 न्तिरक्तपित्तातिश्वासकासान्सुदारुणान् ५७ रक्तपित्तक्षयं
 कासं श्लेष्मपित्तज्वरंतथा । केवलोवासककाथःपीतःक्षौद्रे
 णनाशयेत् ५८ वासाक्षुद्रामृताकाथःक्षौद्रेणज्वरकासहा ।

ग्रहणी दूर करे व ग्राहीहो दीपन पाचन करै ॥ ५२ ॥ (सर्वातीसार पर)
 इन्द्रयव, धनिया और पटोल इनका काढ़ा साइ शब्द संग साइ तो छर्दि, अती-
 सार जाय व आमझी गुडली बेतुका काढ़ा शब्द मिश्रीयुक्त पिये से सब अती-
 सार जाय ॥ ५३ ॥ (कृमिघ्न त्रिफलाकाथ) त्रिफला, देवदारु, मोथा,
 मुसाकरणी, सहिजनेकीबाल, पीपरि, विडंगयुक्त पियेसे कृमि और कृमिज घपद्रव
 सब जाय ॥ ५४ ॥ (कामलापर त्रिफलादि काथ) त्रिफला, गुर्च, कडुकी
 नींब, चिरायता और रुसा इनमे काथको शब्द समेत पिये तो कामला व पाण्डु
 रोग नाशहोय ॥ ५५ ॥ (पाण्डुपर गदापुरैनाकाथ, शोथादिक कासपर)
 गदापुरैना, हट, नींबकी बाल, दारुश्लदी, कडुकी, पटोल, गुर्च और सोंठ इनका
 काढ़ा पिये तो पाण्डु, कास, उदररोग, रसास, उदरशूल और सर्वांग मूजन श्रच्छी
 हो ॥ ५६ ॥ (रक्तपित्तपर रुसाकाथ) रुसा, दाल, हट इसका काढ़ा शब्द
 वा मिश्री युक्त पिये तो रक्तपित्त पीडा दाहण कास रनास जाय ॥ ५७ ॥
 (पुनः) रुमे का काढ़ा शब्द भंगपियेसे रक्तपित्त, क्षयी, कास, कफ रिसज्वर
 नाश होय ॥ ५८ ॥ (कासज्वर पर वासाकाढ़ा) रुसा, भंडकटैया और
 गुर्च इनका काथ शब्दयुक्त पीनेसे ज्वर कास मिटै जो भटकटैया का काढ़ा पीपल

कासघ्नःपिप्पलीचूर्णयुक्तःक्षुद्राशृतस्तथा ५६ क्षुद्राकुलि
 त्यावासाभिर्नागरेणचसाधितः । काथःपौष्करचूर्णाढ्यः
 श्वासकासौनिवारयेत् ६० रेणुकापिप्पलीकाथोहिङ्गुक
 ल्केनसंयुतः । पानादेवहिपठचापि हिकान्नाशयतिक्षणार्त्
 ६१ बिल्वत्वचोगुडूच्यावाकाथःक्षौद्रेणसंयुतः । जयेत्रिदो
 षजांछर्दिर्पपटःपित्तजांतथा ६२ हिङ्गुपौष्करचूर्णाढ्य
 दशमूलशृतंजयेत् । गृद्धसीकेवलःकाथश्रीफालीपत्रज
 स्तथा ६३ रास्नामृतामहादारुनागरैरण्डजंशृतम् । सप्त
 धातुगतेवाते सामेसर्वाङ्गोपिबेत् ६४ रास्नागोक्षुरकै
 रण्डदेवदारुपुनर्नवाः।गुडूच्यारग्वधोभैवकाथएषाविपाच
 येत् ६५ शुण्ठीचूर्णेनसंयुक्तंपिबेज्जङ्घाकटीग्रहे।पार्श्वपृष्ठौ
 रुपीडायामामवातेसुदुस्तरे ६६ रास्नाद्विगुणभागास्यादे
 कभागास्तथापरे।धन्वयासबलैरण्डदेवदारुशटीवचाः६७

चूर्णं संयुक्तं दे तौ सांसी मिट्टै ॥ ५६ ॥ (कासश्वासपर क्षुद्रादिकाड़ा)
 भटकटैपा, कुलथी, खुसा व सोंठ इनका कादा इस्तरुल का चूर्णयुक्त पिये से
 कास, रवाप्त जाय ॥ ६० ॥ (हिचकीपर मेवड़ीकाड़ा) मेवड़ीकाधीन,
 पीपरि, हींगभुनी युक्त पिये से पाचो प्रकारकी हिचकी जाय ॥ ६१ ॥ (जय-
 काई पर बिल्वादि काड़ा) बेलकी छालवा गुर्च का काड़ा शहदयुक्त पिये
 तो त्रिदोषजन्य छर्दि मिट्टै जो पित्तपट्टा शहदयुक्त पियेसे पित्तछर्दि जाय ॥
 ६२ ॥ (गृद्धसी वायुपर दशमूलकाथ) हींग, पुष्करमून का चूर्ण प्रथम
 कहे दशमूल काथ में युक्तकरिपिये तो गृद्धसी वायुजाय जो मेवड़ीकाथमें हींग व
 रंडमूल चूर्णयुक्त पिये तो तुरंत गृद्धसीवायुमिट्टै ॥ ६३ ॥ (वायुपर रासनपं-
 चककाड़ा) रासन, गुर्च, देवदारु, सोंठ, रंडमून यह काड़ापिये से मत्तगतुगत
 चात सब अंगयायु दूरहो ॥ ६४ ॥ (वायुपर रास्ना सप्त) रासन, गुटुरु,
 रंड, देवदारु, गढापुंरैना, गुर्च और अमलतास इनका कादा सोंठ चूर्ण डारिकै
 पिये से छांघ, कटि, पसुरी, पीठ, छाती और भारी आमजात मिट्टै ॥ ६५ ॥ ६६ ॥
 (सम्पूर्ण वायुपर महारास्नादि काड़ा) दो भाग रासन और सत्र एक

वासकोनागसंपथ्याचव्यामुस्तापुनर्नवा । गुडूचीवृद्धदारु
 इचशतपुष्पाचगोक्षुरः ६८ अश्वगन्धाप्रतिविषाकृतमाल
 इशतावरी । कृष्णासहचरश्चैवधान्यकंवृहतीद्वयम् ६९ ए
 भिःकृतंपिवेत्कात्थंशुण्ठीचूर्णेनसंयुतम् । कृष्णाचूर्णेनवायो
 गराजगुग्गुलनाथवा ७० अजमोदादिनावापित्तैलेनैरण्ड
 जेनवा।सर्वाङ्गकम्पेकुब्जत्वेषक्षाघातेपवाहुके ७१ गृह्णस्या
 मामवातेचश्लीपदेचापतानके । अण्डवृद्धौतथाध्मानेजङ्घा
 जानुगतेर्दिते ७२ शुक्रामयेमेदरोगेवन्ध्यायोन्याशयेषुचा
 महारास्नादिराख्यातोब्रह्मणागर्भकारणम् ७३ एरण्डोवी
 जपूरश्चगोक्षुरोवृहतीद्वयम् । अश्मभेदस्तथाविल्वएतन्मू
 लैःकृतःशृतः ७४ एरण्डतैलहिङ्गवाढ्योयवक्षारःससैधवः
 स्तनस्कन्धकटीमेढ्रहृदयोत्थव्यथांजयेत् ७५ नागरैरण्ड
 योःकाथःकाथइन्द्रयवस्यवा।हिङ्गुसौवर्चलोपेतोवालशू
 लनिवारणः ७६ त्रिफलारग्वधकाथःशर्कराक्षौद्रसंयुतः ।

भागमें जरासा, बरियारा, रंढ, देवदार, कडूर, बच, खसा, सोंठ, इड़, चाम, मोथा
 गदापुरैनां, गुर्भ, धिधारा, सौंफ, गुग्गुळ, असगन्ध, अतीस, अमलतास, शतावरी
 पीपरि, इन्द्रयव, धनिया और दोनों भटकटैया इनका काढ़ा सोंठि चूर्ण डारि
 पाक वा पीपरिका चूर्ण वा योगराजगुग्गुलुसाथ अजमोदादि चूर्णकेसंग वा रेंडी
 के तैलके संग तौ सर्वांग कंप, फूरड़, पक्षाघात, अपवाहुक गृह्णी, आमवात,
 पीलपावै, अपतान, अन्नवृद्धि, पेट फूलना, जंघापीडा, धातुरोग, बंध्याकी योनि
 दुष्टता यह महारास्नादि काढ़ा प्रखाने कहाहै इसमें बहुत मनुष्य एक औपधिका
 दूना रासन लेते हैं सो अनुचितहै ॥६७। ७३ ॥ (छाती की वायुपर अरण्ड
 का ससक) रंढ, विजौरा की जड़, गुग्गुळ, दोनों भटकटैया, पाषाणभेद और
 वेलकीगिरी इन सब जइनका काढ़ा रेंडीका तैल, हींग, पंजार, सेंधर'युक्त पिये
 तौ स्तनपीडा, कण्ठ भेद व हृदय की सत्र पीडामिटै ॥७४। ७५ ॥ (वातशूल
 पर शूठीकाढ़ा) सोंठ, रंढमूल व इन्द्रयव का काढ़ा, सुनीहींग, कालानोन
 युक्त पिये से वातशूलजाय ॥ ७६ ॥ (पित्तशूल पर त्रिफलाकाढ़ा)

रक्तपित्तहरोदाहृपित्तशूलनिवारणः ७७ एरण्डमूलं द्विपलं
जलेष्टगुणितेपचेत् । तत्काथोयावशूकाढ्यः पार्श्वहृत्कफशू
लहा ७८ दशमूलकृतः काथोयवक्षारः ससैन्धवः । हृद्रोगगु
ल्मशूलार्त्तिकासंश्वासंचनाशयेत् ७९ हरीतकीदुरालम्भा
कृतमालकगोक्षुरैः । पाषाणभेदसहितैः काथोमाक्षिकसंयु
तः । विवन्धे मूत्रकृच्छ्रे च सदा हे सरुजे हितः ८० वीरतरुर्दक्षवं
दाकाशस्सहचरत्रयम् । कुशद्वयं नलोगुन्द्रावकपुष्पोग्नि
मन्थकः ८१ मूर्वापाषाणभेदश्च श्योनाको गोक्षुरस्तथा । अ
पामार्गश्च कमलं ब्राह्मीचेति गणो वरः ८२ वीरतर्वादिरित्यु
क्लः शर्कराश्मरि कृच्छ्रहा । मूत्राघातं वायुरोगान्नाशयेन्निखि
लानपि ८३ एलामधूकगोकण्टरेणुकैरेण्डवासकाः । कृष्णा
श्मभेदसहिताः काथेषांसुसाधितः । शिलाजतुयुतः प्रेयः
शर्कराश्मरि कृच्छ्रहा ८४ समूलगोक्षुरकाथः सितामाक्षिक

त्रिफला, अमलतास इस काढ़े में शकर शहद युक्त करि पिये से रक्तपित्त दाह
पित्त शूलजाय ॥ ७७ ॥ (कफ शूलपर रंडमूल काढा) रंडकी जड़ दोपल
सोलह पल पानी में काढ़ा करि जवात्तार डारि पियेसे कफजन्य पार्श्वपीडा
हृदयपीडाका नाश होय ॥ ७८ ॥ (हृदयरोगपर दशमूलकाढ़ा) दशमूल
का काढ़ा जवात्तार सैधव युक्त पिये से हृद्रोग, वायुगोला, कास और श्वासका
नाशहोय ॥ ७९ ॥ (मूत्रकृच्छ्रपर हरीतकी काढ़ा) इड, जवासा, अमलतास,
पाषाणभेद और गुगुलु इनका काढ़ा शहदसंयुक्त पिये से मलमूत्रारोध दाहसहित
सब रोग कृच्छ्रेहोय (मूत्रकृच्छ्रपर अर्जुनकाथ) आकाशवरि काशमूल तीनों
कटसरैया मूल दोनों कुश, नरकटमूल, गोंदी, शिवलिंजी, अरणीकीजड़, मूर्वा,
पाषाणभेद वा करील, गुगुलु, चिचिरा, कमलपत्र यह वीरतरु श्रेष्ठ गण हैं इस
काढ़ाके पियेसे शर्करा, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात और सम्पूर्ण वायुरोग नाशहो-
यें ॥ ८० ॥ ८१ ॥ (अश्मरीशर्करादिपर एलाकाढ़ा) इलायची, मुलहठी,
गुगुलु, मेरहीबीज, रंड, रुसा, पीपरि और पाषाणभेद इनका काढ़ा शिलाजीत
संयुक्त पिये से शर्करा, प्रगह, मूत्रकृच्छ्र ये रोग नाश होयें ॥ ८४ ॥ (मूत्र

संयुतः । नाशयेन्मूत्रकृच्छ्राणि तथा चोष्णसमीरणम् ८५
 वरादाव्यब्ददारुणां काथः चौद्रेणमेहहा । वत्सकस्त्रिफला
 दार्वी मुस्तकोवीजकस्तथा ८६ फलत्रिकाब्ददार्वीणा वि
 शालायाः शृतं पिवेत् । निशाकल्कयुतं सर्वप्रमेहं विनिवर्त्त
 येत् ८७ दार्वीरसाञ्जनं मुस्तं भल्लातः श्रीफलं वृषः । कैरा
 तश्च पिवेद्देपां काथं शीतं समाक्षिकम् ८८ जयेत्स शूलं प्रद
 रं पीतश्वेतासितारुणम् । न्यग्रोधप्लक्षकोशाश्वेतसौवद
 रीतुणिः ८९ मधुचण्डिः प्रियालुश्च लोध्रद्वयमुदुम्बरः । पि
 प्लयश्च मधूकश्च तथापालाशपिप्लवः ९० सल्लकीर्ति
 न्दुकीजम्बूद्वयमासतरुः शिवा । कदम्बककुभौ चैव भल्लात
 कफलानि च ९१ न्यग्रोधादिगणकाथं यथा लाभं च कार
 येत् । अयं काथो महाग्राही व्रणभग्नं च साधयेत् । योनि

कृच्छ्र पर मोखुरुकादा) मोखुरु के पंचांगका कादा, मिथ्री, शहद संयुक्त
 पिलावे तो मूत्रकृच्छ्र, उष्णवायु अच्छी होय ॥ ८५ ॥ (मूत्रकृच्छ्र पर त्रिफला
 कादा) त्रिफला, दारुहल्दी, नागरमोथा और देवदाह इनका कादा शहद
 संयुक्त पिये तो प्रमेह नाश होय (पुनः) तैसेही कुरैया, त्रिफला, दारुहल्दी, नागर
 मोथा और ककड़ी इनका कादा शहद सहित पिये तो प्रमेह नाश होय ॥ ८६ ॥

✓ (प्रमेह पर त्रिफलाकादा) त्रिफला, नागरमोथा, दारुहल्दी, इन्द्रायण की
 जड़ इनका कादा हल्दी खूणयुक्त पिये तो सकल प्रमेह नाश होय ॥ ८७ ॥
 (प्रदर पर दारुहल्दीकादा) दारुहल्दी, रसतल, नागरमोथा, भिल्लायां, जैल-
 गिरी, रूसा और चिरायता इनका कादा टण्डा करि शहद संयुक्त पिये तो पीत
 श्वेत कृष्ण म्लाल सहित शूल स्त्री का प्रदररोग अच्छा होय ॥ ८८ ॥ (क्षतत्र
 णादि पर चटादिककादा) घड़, पाकर, श्रम्बाड़, वेतस, नेर और तूतटर्की
 छाल, मधुमेठी, चिरौंजी, लोथं, गुलरी, पीपरि, मधूक, जगन्नाथीपीपरि, पलाश,
 तिनदुक, दोनों, जामुन, आम, छोटी हड़, कदम्ब, अर्जुनतरु, भिलावेका फल जो
 द्रव्य इनमें न मिले उसे त्यागि दे यह न्यग्रोधादिगण कादा बहुतग्राही है जो
 याव खराब दोगयाहो सो अच्छाहो योनिदोष, दाह, भेद, प्रमेह, विष ये सब नाश

दोपहरोदाहमेदोमेहविपापहम् ९२ त्रिवोग्निमन्थश्यो
नाकःकाशमरीपाटलातथा । काथमेषांजयेन्मेदोदोषक्षौद्रे
णसंयुतः ९३ क्षौद्रेणत्रिफलाकाथःपीतोमेदोहरःस्मृतः ।
शीतीभूतंतथोष्णाम्बुभेदोहृत्क्षौद्रसंयुतः ९४ चर्च्यचित्र
कविश्वानां साधितोदेवदारुणा । काथस्त्रिवृच्चूर्णयुतो
गोमूत्रेणोदराञ्जयेत् ९५ पुनर्नवामृतादारुपथ्यानागर
साधितः । गोमूत्रगुग्गुलुयुतःकाथःशोथोदरापहः ९६ प
थ्यारोहितककाथंयवक्षारकणायुतम् । पिबेत्प्रातर्यकृत्स्नी
हगुल्मोदरनिवृत्तये ९७ पुनर्नवादारुनिशानिशाशुण्ठी
हरीतकी । गुडूचीचित्रकोभार्गीदेवदारुकृतःशृतः ९८
पाणिपादोदरमुरःप्राप्तशोफंनिवारयेत् । फलत्रिकोद्भवंका
थंगोमूत्रेणैवपाययेत् ९९ वातश्लेष्मकृतंहन्तिशोथं वृषण

होयें वेतसको कहीं जगन्नाथी पीपरि कहते हैं ॥ ८६ । ९२ ॥ (मेदरोगपर
चेलकाड़ा) चेल, अरसी, सोहनपात, खंभारी और पादल इनका काड़ा शहद
संग पिये तो मेददोष मिटै ॥ ९३ ॥ (पुनः त्रिफलादिकाथ) त्रिफले का
काड़ा शहद संग पिये तो मेददोष जाय उष्ण जल ठण्डाकरि शहदसंयुक्तपिये
तो मेददोष जाय ॥ ९४ ॥ (उदररोगपर चावकाड़ा) चाव, चीता, सोंठ
और देवदारु इनका काड़ा निशोतचूर्ण गोमूत्र के साथ पिये तो उदररोग दूर
होय ॥ ९५ ॥ (पेटफूलने पर गदापुरैनाकाड़ा) गदापुरैना, गुर्च, देवदारु
और सोंठ इनका काड़ा गोमूत्र गुग्गुलुयुक्त पिये से पेटकी सूजन मिटै ॥ ९६ ॥
(पिलही पर हरीतकीकाड़ा) जंगीहड, अगियाखर इनका काड़ा जग-
सार व पीपरियुक्त प्रातःकाल पिये से झीहा, चायगोला, यकृत अच्छी हो
रोहित नाम करिके खर लेना ॥ ९७ ॥ (शोथपर गदापूर्णकाड़ा) गदा-
पुरैना, दाखहदी, सोंठ, बड़ीहड, गुर्च, चीता, भार्गी, देवदारु इनके काड़ा से
हाथ पाद उदर छाती मुसकी सूजन जाय ॥ ९८ ॥ (अंडवृद्धि सूजनपर
त्रिफलाकाड़ा) त्रिफला के काड़ेमें गोमूत्र संयुक्त करि पिये से वात कफ जन्य

ठाखदिरचन्दनैः। त्रिवृद्धरुणकैरातवाकचीकृतमालकैः १६
 शाखोटकमहानिम्बकरञ्जातिविपाजलैः। इन्द्रवारुणिकान
 न्ताशारिवापर्पटैःसमैः १७ एभिः कृतंपिवेत्काथंकणागुग्गु
 लुसंयुतम्। अष्टादशेषुकुप्रेषवातरक्तादितेतथा १८ उपदं
 शरलीपदेचप्रसुप्तपक्षघातके। मेदोदोषेनेत्ररोगमञ्जिष्ठा
 दिःप्रशस्यते १९ पथ्याक्षधात्रीभूनिम्बैर्निशानिम्बामृतायु
 तैः। काथःकृतःषडङ्गोयंसगुणःशोर्षिशूलहा २० भ्रूशङ्खक
 र्णशूलानितथाचाद्धेशिरोरुजम्। सूर्यावर्तेशङ्खकञ्चदन्त
 पातंचदद्भुजम्। नक्तान्ध्यंपटलंशुकं चक्षुःपीडां व्यपोहति
 २१ वासाविश्वामृतादावीरक्तचन्दनचित्रकैः। भूनिम्बनि
 म्बकट्टुकापटोलत्रिफलास्त्रुदैः २२ यवकालिङ्गकुटजैःकाथः
 सर्वाक्षिरोगहा। वैस्वर्यपीनसंश्वासनाशयेदुरसःक्षतम् २३
 अमृतात्रिफलाकाथः पिप्पलिचूर्णसंयुतः। सक्रौद्रःशीत

अमलतास का गूदा, सहोरा, बकायन, करंग, अतीस, नेत्रवाला, इंद्रायनकी
 जड़, जवासा, शारिवा और पित्तपापड़ा ये सब द्रव्य समान लेके काढ़ा करि
 पीपरि व गुग्गुलु मिश्रित करि पिये से अठारहों कोड़ और वातरक्तपीडा, उप
 दंश, फीलपाव, प्रसुप्त कहे शून्यवायु, पक्षाघात, मेदोदोष और नेत्ररोग इन
 रोगन के दूर करने को यह छद्भिर्भंजिष्ठादि काढ़ा इतहै (शिरश्शूल नेत्रपर
 हरीतरुकाकाड़ा) हड़, षडेडा, आबरा, चिरायता, हल्दी, नीपकीझाल और
 गुर्च इन सात औषधों के पड्ड काढ़े में गुडमिश्रित करि पिये से शिरश्शूल,
 भौंह व कानकौशूल, आघाशीशी, सूर्यावर्त, शूलशूल, टंतपात, दंतरोग, रत्तां-
 धी, पटल, फूली, नेत्ररोग और नेत्रपीडा ये सब दूर होयें ॥ १५ । २१ ॥
 (नेत्ररोग पर वासादिकाकाड़ा) रुसा, सोंठ, गुर्च, हल्दी, रक्तचन्दन, चीता,
 चिरायता, नीप, कुटकी, परंवल, त्रिफला, मोथा, यव, इन्द्रयव और बुरैया इस
 काढ़ेसे सब नेत्ररोग नाशहोयें स्वरभङ्गसे कण्ठ खुलगाय पीनस श्वास कलेजे
 का घाव जातारहै ॥ २२ । २२ ॥ (दूसरा काढ़ा पूर्व यथा) गुर्च, त्रिफले
 का काढ़ा, शहद पीपरि संयुक्त टण्डाकरि सदैव पीने से सर्व नेत्ररोग विनाश

लोहित्यंसर्वत्रैत्रव्यथांजयेत् २४ अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षवट
 वेतसजं शृतम् २५ व्रणःशोथोपदंशानानाशनःक्षालना
 त्स्मृतम् । प्रमथ्याप्रोच्यतेद्रव्यक्षुण्णात्कल्कीकृताच्छ्रुतात् ।
 तोयेष्टगुणितेतस्याःपानमाहुःपलद्वयम् २६ मुस्तकेन्द्रय
 वैःसिद्धा प्रमथ्याद्विपलोन्मिता । सुशीतामधुसंयुक्तारक्ता
 तीसारनाशिनी २७ साध्यंचतुष्पलंद्रव्यं चतुष्पष्टिपले
 म्बुनिातक्वाथेनार्द्धशिष्टेनयवागूंसाधयेद्बुधः २८ आद्या
 घातकजम्बूत्वक्कषायेविपचेद्बुधः । यवागूंशालिभिर्युक्तां
 तांभुक्त्वाग्रहणींजयेत् २९ कल्कद्रव्यंपलंशुण्ठीपिप्पली
 चार्द्धिकार्धिकी । वारिप्रस्थेनविपचेत्सद्रव्योयूषउच्यते ३०
 कुलित्थयत्रकोलैश्चमुद्गैर्मूलकशुष्ककैः । शुण्ठीधान्यकयुक्तै
 श्चयूषःश्लेष्मानिलापहः ३१ सप्तमुष्टिकइत्येपसन्निपात
 होषं ॥ २४ ॥ (क्षतपर पिप्पल्यादिकाढा) पीपरि, गूलर, पकरिया, बड़
 और वेतस इनकी छालका काढाकरि घाव घोरै तौ उपदंशकहे गर्मी और घाव
 सूजन ये सप्त अच्छे होषं ॥ २५ ॥ (काढ़े की दूसरी विधि) थोपधी
 पीसके गोली बनारै तत्र अठगुणा पानी में डारि काढा करै जब चौथाई पानी
 रहै तत्र उतारिले उसे प्रमथ्या कहते हैं इसके पानकी मात्रा दोपल है ॥ २६ ॥
 (रक्तातीसार पर मोथादि प्रमथ्या) नागरमोथा और इंद्रयवकी प्रमथ्या
 दोपल ढंढाकरि शहद मिश्रीयुक्त पिये से रक्तातीसार नाशहोय ॥२७॥ (यवा
 गूविधान) षोडश तोले द्रव्य में उसका सोलहगुणा पानी २५६ तोले
 भरदेय आधा जरिजाय तब द्रव्य धानिकी फेंकदेइ जो पानी रहजाय उसे
 यत्रगू कहते हैं व आम, अंबाढा और जामुन इन तीनों वृक्षां की चारपल छाल
 को कूटकर चौंसठगुने पानी में डाल के आठवे जत्र आधा पानी रहजावे
 तब उतारके इस जलको ध्यानले उसमें चारपल चावल डाल आठके उतारे
 इसे आम्रादि यवागू कहते हैं इसको साकर संग्रहणीको नीतताहै ॥ २८॥ २९ ॥
 (यूपविधान) सौंठका कल्क औषध एकपल तिस में पीपरि पात्र भांशि मू
 स्यभर पानी में पचाइ तिसमें अन्न खून गलाइके देइ उसे यूप कहते हैं ॥ ३० ॥
 (सन्निपात पर सप्तमुष्टियूप) कुलथी, यव, वेर, भूग, मूरीको पेंदी जो

ज्वरस्रयेत् । आमवातहरः कण्ठहृदक्लाणां विशोधनः ३२ क्षु
 ष्णोद्रव्यपलेसाध्यं चतुष्पष्टिपलेजले । अर्द्धशिष्टं चतुर्द्वयं
 पानिभक्तादिसंधिधौ ३३ उशीरपर्पटो दीच्यमुरतनागरचंद
 नैः । जलं शृतं हिमं देयं पिपासाज्वरनाशनम् ३४ अष्टमेनांश
 शेषेण चतुर्थेनार्द्धकेन वा । अथवा कृधनेनैव सिद्धमुष्णोदकं व
 देत् ३५ श्लेष्मामवातभेदोऽत्रं वस्तिशोधनदीपनम् । कासं
 श्वासज्वरं हन्ति पीतमुष्णोदकं निशि ३६ क्षीरमष्टगुणं द्र
 व्यात्क्षीराक्षीरं चतुर्गुणम् । क्षीरावशेषं तत्पीतं शूलमामोह
 वंजयेत् ३७ अथान्नप्रक्रियाचैव प्रोच्यते नातिविस्तरात् ।
 यवागूः षड्गुणजले सिद्धा स्यात्कृसरघना ३८ तपडुलैर्मुह
 माषैश्च तिलैर्वासाधिताहिता । यवागूर्त्राहिणीवल्यात्तर्प्य
 पत्ताके पास होती है ये सब सूखी द्रव्य इन सबका घूप सोंठ, धनियायुक्त प्यारै
 तो कफनाश नाशहोय इस सप्तमुष्टिक घूप से सन्निपात ज्वर जाय आमवात
 जाय कण्ठ हृदय व मुख शुद्ध रहै ॥ ३१ । ३२ ॥ (पानादि कल्पना)
 कुटी द्रव्य पलभर ले चौंसठि पल पानी में आठै जन आधा रहिजाय उस
 पानी को भक्त कहते हैं इसे भोजन समय थोडा थोडा कस्दिना, चाहिये ॥ ३३ ॥
 (ज्वर तृपापर उशीरादिपान) खस, पित्तपापडा, सुगन्धयाता, नागर
 मोथा, सोंठ और रक्ताचन्दन इन्हें पकाय पानी ठण्डा करदेय तो पियास व
 ज्वर नाशहोय ॥ ३४ ॥ (उष्णोदक) त्रिक आठरा अश व चौंघा अंश
 अर्द्ध शेष अथवा अतिवत्तकरे उसे उष्णोदक कहते हैं “ अथ सुश्रुतोक्तलोक
 सार्द्धद्वयम् ” तत्पादहीनत्वात्तन्मर्द्धहीनतु पित्तमित् । यस्मिन्पादशेषव्यवधानिर्भेदीप
 नंश्चतुर्म् ॥ शारङ्गचार्द्धपादवन्नं पादहीननुहेमनम् । शिशिरचन्मन्तेचनीम्पेपादाव
 शेषिणम् ॥ विपरीतशृतं दृष्ट्वा दापिक्रमागिर्कम्भृतमिति ॥ ३५ ॥ कफ, आमवात,
 मेदा, वस्तिशोधन, दीपन, श्वास, वात, ज्वर ये रोग रातिको उष्णोदक पीने
 से जाते हैं ॥ ३६ ॥ (क्षीरपाकाविधि) द्रव्यका आठगुणा दूध दूधका चौं
 धागुणा पानी एकप्रकर आठै जन पानी जरजाय तर दूध पिये तो आमशूल दूर
 होय ॥ ३७ ॥ (अन्नप्रकार) अन्न संचोप से अन्नविधि कहते हैं अन्न यवागूः
 री व गुना जल देके प्याने उसे कृसरा और बना कहते हैं ॥ ३८ ॥ चावल, गुण,

षीव्रातनाशिनी ३९ विलेपीपद्यनासिक्थ्यासिद्धानीरेचतु
 गुणे। वृंहणीतर्पणीहृद्य। मधुरापित्तनाशिनी ४० द्रवाधिका
 स्वल्पसिक्थ्याचतुर्दशगुणेजले। सिद्धोपयावुर्धेर्जेयायूषःकि
 डिचद्घनःरसृतः। पेयालघुतराज्ञेयाग्राहिणीधातुपुष्टिदा।
 यूपीवलकरःकण्ठ्योलघुपाकःकफापहः। जलेचतुर्दशगुणे
 तण्डुलानांचतुष्पलम् ४१ विपचेत्स्वाग्नेन्मण्डसमक्लोमधु
 रोलघुः। नीरेचतुर्दशगुणेसिद्धोमण्डस्त्वसिदथकः ४२ शु
 ष्ठीसैन्धवसंयुक्तःपाचनोदीपनःरसृतः ४३ धान्यत्रिकटुसि
 न्धूत्थनुद्गतण्डुलयोजितः। मृष्टश्चहिङ्गुतैलाभ्यांसमण्डो
 ष्टगुणःस्मृतः। दीपनःप्राणदोवस्तिशोधनोरक्तवर्द्धनः ४४
 ज्वरजित्सर्वदोषघ्नोमण्डोष्टगुणउच्यते। सुकण्डितैरतथाशु
 ष्ठीर्वाद्यमण्डोयवैर्भवेत् ४५ कफपित्तहरः कण्ठ्योरक्तपित्त
 माप और तिल इनकी यमागुकरै यह ग्रहणीको बल देनी है तृप्तिको करतीहई
 य'तको नाशती है ॥ ३६ ॥ (विलेपीप्रकार) अन्नमें चाँगुना जलदे पकावै
 सो विलेपी है सो धातुओं को पोत्रै तृप्तकरै मन प्रसन्न करै म्रिय व मधुर होकर
 पिचनाशक है ॥ ४० ॥ (अथ पेया) अन्नको चाँदह गुणे पानी में सिद्धकरै
 पतला माडा न हो जो पियाजाय उसे पेया कहते हैं उससे कुद्धी गाढ़ेको यूप
 कहते हैं वह पेया अतीव हलकी होकर मलादिकों को स्तम्भन करती व धातु
 पुष्ट करती है और यूप हलका है ग्रहणी को शुद्धकरताहै धातुपुष्ट करै बल
 करै कण्ठ शुद्धकरै लघुपाक है कफहारक है (भातविधि) चावलसे चाँ-
 दहगुणा पानी लेके चुरावे उसका मांड निचोरै सो मीठाहै हलकाहै उसे भक्त-
 मण्ड कहतेहै (शुद्धमण्ड) उसी मांडमें सोठ व सेंधव डारिकै पिये तो दीपन
 पाचन करै ॥ ४१ ४३ ॥ (अष्टगुण मण्ड) धनियां, त्रिदुश, सेंधव, हिंग,
 चावल, हींग तेलही भूती पययुक्त माँडका अष्टगुणा मांड दीपनहै प्राणदाताहै
 वस्तिशोधन रक्तवर्द्धन ज्वरघ्न सद्योपहरणहै ॥ ४४ ॥ (यवमण्ड पित्तादि
 पर) यव दूँट भूतिकै चुरावै सो गाढ्यमण्डहै कफ पित्त हरै कंठ शुद्धकरै रक्त-
 पित्तहरै ॥ ४५ ॥ (लाजमंड) धानका लाजा कुटी द्रव्य वा भूने धानका
 वनावै सो लाजमंडहै यह कफपित्तहारी व आही होकरै तृप्ता ७ ज्वर को

प्रसादनः । लाजैर्वातण्डुलैर्मृष्टैर्लाजमण्डः प्रकीर्तितः । श्लेष्मपित्तहरो ग्राहीपिपासाज्वरजिन्मतः १४६ इति श्री शार्ङ्गधरे मध्यखण्डे काथकल्पनाद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

क्षुण्णेद्रव्यपले सम्यग्जलमुष्णं विनिक्षिपेत् । मृत्पात्रे कुडवोन्मानंततस्तुखावयेत्पटात् १ तरयचूर्णद्रवः फाण्टस्तन्मानं द्विपलोन्मितम् । सितामधुगुडादींस्तुकाथवत्तत्र निक्षिपेत् २ मधूकपुष्पं मधुकंचन्दनं सपरुषकम् । मृणालं कमलं लोध्रं खम्भारीनागकेशरम् ३ त्रिफलांशारिवांद्राक्षां लाजांकोष्णे जले क्षिपेत् । सितामधुचुतेपेयः फाण्टो वासोहि मोथवा ४ वातपित्तज्वरं दाहं तृष्णामूर्च्छारतिभ्रमान् । रक्तपित्तमदं हन्यान्नात्र कार्या विचारणा ५ आद्यजम्बूकि सलयैर्वटशुद्धप्ररोहकैः । उशीरेण कृतः फाण्टः सक्षौद्रोज्वरनाशनः ६ पिपासाच्छर्द्यतीसारान्मूर्च्छां जयति दुर्जयाम् । म

विनाशताहै ॥ १४६ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरे मध्यखण्डे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

फाट कल्क वा कुटीद्रव्य पलभर एक कुडव पानी माटीके पात्रमें अच्छीभांति तप्तकरि उतारिले उस कुटीहुई द्रव्यको उष्णोदक में डारि ढकदे जन ठंढाहो तब छानिलेय इसे फाट कहते हैं आठ रुपये भर फांटकी मात्राहै मिश्री शहद पुराना गुड़ जिसभाति कादे में डारना कहाहै उसी भाति फांट में पड़ताहै ॥ १ । २ ॥ (पित्तज्वर पै मधूकफांट) महुआके फूल, मूलइदी, लालचंदन, फाल्गु, कमल, लोध्र, खंभारी, नागकेशर, त्रिफला, सरिजन, दास और लावा के तप्तसारि में डारि मिश्री शहद संयुक्त पिलावै इस फांट वा हिमसे चात, पित्त, ज्वर, दाह, प्यास, मूर्च्छा, मतिभ्रम, रक्तपित्त और मूद ये सत्र दूरहोयें इस में कुछ विचार नहीं करना चाहिये ॥ ३ । ५ ॥ (पियासपर आम्नादि फांट) आम व जामुन की काँपल बड़की कली भोतरी पत्ते और जटा खस इनका फांट करि पिये ने ज्वर, प्यास, छर्दि, श्वतीसार और मूर्च्छा ये सत्र दूरहोये ॥ ६ ॥ (पित्ततृष्णापर मधूकफांट) महुआके फूल, खंभारी, चन्दन, खस, धनियां, नेत्रमाला वा दास इनका फाट शकरयुक्त पिये तो तृष्णा, पित्त, दाह,

ध्रुवष्टीचकाकोटुम्बरपल्लवैः । नीलोत्पलं हिमस्तेषां तृष्णा
 छर्दिनिवारणः ३ नीलोत्पलं वलाद्राक्षामधूकं मधुकंतथा ।
 उशीरं पद्मकंचैव काशमरीचपरुषकम् ४ एतच्छीतकषाय
 श्च वातपित्तज्वरं जयेत् । सप्रलापभ्रमच्छर्दिमोहत्ृष्णानि
 वारणः ५ अमृतायो हिमः पेयो जीर्णज्वरहरस्मृतः । वासा
 याश्च हिमः कासरक्तपित्तज्वराञ्जयेत् ६ प्रातः सशर्करः पे
 यो हिमो धान्याकसम्भवः । अन्तर्दाहं तथा तृष्णां जयेत्त्वोतो
 विशोधनः ७ धान्याकधात्रिवासानां द्राक्षापर्पटयोर्हिमः ।
 रक्तपित्तज्वरं दाहं तृष्णाशोषञ्चनाञ्जयेत् ८ ॥ इति श्रीशा
 र्ङ्गधरे मध्यखण्डे हिमकल्पनाचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

द्रव्यमार्द्रं शिलापिष्टं शुष्कं वासजलं भवेत् । प्रक्षेपाएव
 कल्कास्ते तन्मानं कर्षसम्मितम् १ कल्के मधुघृतं तेलं देयं हि
 गुणसात्रया । सितागुडौ समौ दद्याद्द्रवादेयाश्चतुर्गुणः २

हिम) मरिच, गुलहठी, कठगुलरकी कौपल नील कमल के हिमसे तृष्णा व
 छर्दि का नाशहोय ॥ ३ ॥ (पित्तज्वर पर नील कमलादि हिम) नील
 कमल, धरियारा, दास, महुआ, गुलहठी, नेनवाला, पयाल, खंभारी और फा
 लसा इनका शीतकषाय वातपित्तज्वर, प्रलाप, भ्रम, छर्दि, मोह और तृष्णा
 को हरता है ॥ ४ । ५ ॥ (जीर्णज्वर पर गुहृच्छ्यादि हिम) गुर्ध के
 हिमसे जीर्णज्वर जाता है वासा कोहे रुसाके हिमसे कास और रक्तपित्तज्वर
 जाता है ॥ ६ ॥ धनियाका हिम शर्कर डारि मातकालापियेसे अन्तर्दाह, तृष्णा,
 भ्रम और दृष्टारोषये सब रोगनाशहोते है ॥ ७ ॥ (रक्तपित्तपर) धनिया, आवरा, रुसा,
 दास और पिताशपड़ा इनका हिम रक्त पित्तज्वर, दाह, तृष्णा और कंठशोषको
 विनाशता है ॥ ८ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरे मध्यखण्डे हिमकल्पनाचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

(अथ कल्काविधिः) गीली औपषवी शिलापै वारीक चटनी के स-
 भान पीसे यदि सूखीहोय तो उसमें जलडालके पीसे तिसे कल्क और मक्षेप
 करते है इसकी मात्रा दशमाशे कही है ॥ १ ॥ कल्क में मधु, घृत, तेलमात्रा
 से द्वा देना मिथी गुड़ सभान मात्रा व अति थोदी पतली चर्वागुनी देना

त्रिवृद्धापिच्यवृद्ध्यावासप्तवृद्ध्याथंवाकणाः । पिवेत्पि
 द्वादशदिनंतास्तथैवापकर्षयेत् ३ एवंविंशदिनैः सिद्धंपि
 प्पंलीवर्द्धमानकम् । अनेनपाण्डुवातास्रकासश्वासारुचि
 ज्वराः । उदरार्शःक्षयश्लेष्मवातानश्यन्त्युरोग्रहाः ४ लेपा
 निम्बदलैःकल्कोत्रणशोधनरोषणः । भक्षणाच्चर्दिकुष्ठानि
 पित्तश्लेष्मकृमीञ्जयेत् ५ महानिम्बजटाकल्कोगृध्रसीना
 शनःस्मृतः ॥ शुद्धकल्कोरसोनस्यतिलतैलेनमिश्रितः वात
 रोगाञ्जयेत्तीव्रान्प्रिषमज्वरनाशनः ६ पक्केरुन्दरसोनस्य
 गुटिकानिस्तुषीकृताः । पाटयित्वाचतन्मध्यं दूरीकुष्ठ्यात्त
 दद्दुरम् ७ तदुग्रगन्धनाशायरात्रौतक्रेविनिक्षिपेत् । अपनी
 यचतन्मध्याच्छिलायांपिषयेत्ततः । तन्मध्येपञ्चमांशेनचू
 र्णमेपांविनिक्षिपेत् ८ सौवर्चलयवानीचभर्जितंहिडुसैन्धव

चाहिये ॥ २ ॥ (पाण्डुपर वर्द्धमान पीपरि) पीपरि तीन व पांच व
 सात बदायै और जै पीपरि से आरम्भकरै तै प्रतिदिन बदायै दशदिन ताई
 फिर उत्तनी प्रतिदिन घटावै बीसवैदिन श्यम दिनही मात्रा पूरी करै यो वर्द्ध-
 मानपीपरि सिद्ध करनेसे पाण्डुरोग, वातरक्त, कास, श्वास, अरुचि, ज्वर, उदरवि-
 कार, क्षयी, कफ, वात, छाती जकड़ना ये सब दूरहो और जो पानी व दूध
 संग पिया चाहै तो तीन दिनतक दो व तीन तोले दूधले फिर कल्क से चो-
 गुनाले ॥ ३ । ४ ॥ (घावपर निम्बकल्क) नीवपत्र की लुगदी चाकर

पहः । नवनीततिलैःकल्कोजेतारक्काशीसांस्मृतः २५ न
वनीतसितानागकेसरैश्चापितद्विधः । पीतोमसूरयूषेण
कल्कशुण्ठीशलाटुजः । जयेत्सङ्ग्रहणीतद्वत्तकेणवृहतीभ
वः २६ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेपञ्चमोऽध्यायः ॥५॥

अत्यन्तशुष्कंयद्द्रव्यंसुपिष्टंवल्लगालितम् । तत्स्याच्चू
र्णरजःक्षोदस्तन्मात्राकर्षसम्भिता १ चूर्णेगुडस्समोदेयः
शर्कराद्विगुणाभवेत् । चूर्णेषुभर्जितंहिङ्गुदेयंनोत्केदकृद्भवे
त् २ लिहेशूर्णद्रवै सर्वधृताद्यैद्विगुणोन्मितैः । पिबेच्चतुर्गुणै
रेवंचूर्णमालोडितंद्रवै ३ चूर्णावलेहगुटिकाकल्कानाम
नुपानकम् । वातपित्तकफातंकेत्रिद्वयेकपलमाहरेत् ४
यथातैलंजलंप्राप्यक्षणेनैवप्रसर्पति । अनुपानवलादङ्गेत
थासर्पतिभेषजम् ५ द्रवेणयावतासम्यक्चूर्णसर्वध्लुतं
भवेत् । भावनायाःप्रमाणन्तुचूर्णेप्रोक्तंभिषग्वरैः ६ आ
मलंश्चित्रकःपथ्यापिप्पलीसैन्धवस्तथा । चूर्णितोयंगणोज्ञे

पीनेसे ग्रहणी नाशहोय भटकटैया के फलवा कल्क मट्टाके साथ पीनेसे संग्रहणी
रोगको जीतताहै ॥ २५ । २६ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेपञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

(अथ चूर्णविधि) अतीर सूतीद्रव्य कूटिकै कपड़े में छानिले उसे चूर्ण
रज और क्षोद कहते हैं इसके राने बी मात्रा कर्षभर कही है ॥ १ ॥ चूर्ण में
गुड समान लेना चाह भूनी हींग भूनी हुई देना ॥ २ ॥ घृत शहद आदि
तथा द्रववस्तु दूनी दे चाँट और पीनेकी द्रव्य चूर्ण के साथ चौगुनी देना ॥ ३ ॥
चूर्ण, अवलेह, गुटिका और कल्क इनका अनुपान वात में तीन पल पित्त में
दो पल कफमें एक पल देवै ॥ ४ ॥ अनुपान देनेका कारण यहहै कि जैसे तेल
पानी में डाले से फैल जाताहै ऐसेही अनुपान के बल से औषध भवेश करती
है ॥ ५ ॥ औषध में किसीकी पुट देनाहो तो चितने में चूर्ण पुटकी मुवाफिकहो
तितना देना भासना देनाहो तो चूर्णस्नान में भावप्रकाश में देख लेना ॥ ६ ॥
(सर्वज्वरपर आमलकादि चूर्ण) आवरा, धीना, हड़, पीपलि, सेंपय इन
पाचोंका चूर्ण सर्वज्वर नाशकरै व रेचक,रोचक,कफहर्ता होकर दीपन पाचनहै ॥

यः सर्वज्वरविनाशनः ७ भेदीरुचिकरःश्लेष्मजेतादीप
 नपाचनः । मधुनापिप्पलीचूर्णलिहेत्कासज्वरापहम् ८ हि
 क्काश्वासहरंकण्ठ्यंष्ट्रीहृद्ग्रन्थालकोचितम् । एकाहरीतकी
 योज्याद्वौतुयोज्यौविभीतकौ ९ चत्वार्यामलकान्येवत्रिफ
 लैषाप्रकीर्तिता । त्रिफलामेहशोथधनीनाशत्रेद्विपमज्वरा
 न् १० दीपनीश्लेष्मपित्तधनीकुष्ठहन्त्रीरसायनी । सर्पिर्मधु
 भ्यांसंयुक्तासैवनेत्रामयाञ्जयेत् ११ पिप्पलीमरिचशुण्ठी
 त्रिभिस्त्र्यूषणमुच्यते । दीपनंश्लेष्मदोषघ्नंकुष्ठपीनसना
 शनम् १२ जयेदरोचकंसामंभेहगुल्मगलामयान् । पिप्प
 लीचविकांविश्वापिप्पलीमूलचित्रकैः १३ पञ्चकोलमि
 तिख्यातरुच्यंपाचनदीपनम् । आनाहृष्टीहृगुल्मघ्नंशूल
 श्लेष्मोदरापहम् १४ त्रिगन्धमेलात्वक्पत्रैश्चातुर्जातिस
 केसरम् । त्रिगन्धंसचतुर्जातरुक्षोष्णंलघुपित्तकृत् १५ व

(ज्वरपर पीपरिचूर्ण) पीपरि, शहद युक्त चाटै तो ज्वर, कास, हिचकी,
 श्वास, कण्ठरुज, पिलही ये सकल रोग नाश होयें तथा बालकों के लिये यो-
 ग्यहै (प्रमेहपै त्रिफलाचूर्ण) दूढ़ एकभाग बहंडा दो भाग आंवरा चारभाग
 इसप्रकार त्रिफला है सो त्रिफला प्रमेह शोथ और विपमज्वर को नाशकरती
 है और दीपन कफ पित्त नाशन व कुष्ठहरण हारु रसायन है वही त्रिफला
 शहद व घृतयुक्त खाने से नेत्ररोग दूरकरै है ॥ ७ ।-११-॥ पीपरि, मरिच
 और सोंठ इसे त्र्यूषण और त्रिकुटा कहते हैं यह दीपन होकर कफ, कुष्ठ व
 पीनस को नाशकरताहै तथा आंव, अरुचि, मेह, गुल्म; कण्ठरोग ये सब दूरहोयें
 (कफादिपर पञ्चकोलचूर्ण) पीपरि, चाव, सोंठ, पीपरापूल और चीता
 इसे पञ्चकोल कहते हैं यह रोचन, पाचन और दीपन होकर आनाह, पिलही,
 गुल्म, शूल, कफ, उदररोग इनसबों को नाशताहै ॥ (त्रिगन्ध चूर्ण) इला-
 यची, दालचीनी और तन ये त्रिगन्धहै (चातुर्जात) इलायची, दालचीनी,
 पत्रज और केसर ये चातुर्जात हैं ये दोनों रूपे हैं उष्ण हैं कुष्ठ पित्तकारक हैं
 कांतिरुचि, कर्चा तीक्ष्णहैं और विष व कफको नाशते हैं ॥ (जीवनीयगण)

एयैरुचिकरंतीक्ष्णविषश्लेष्मामयाञ्जयेत् । काकोलीक्षी
 रकाकोलीजीवकर्पभकौतथा १६ मेदाचान्यामहामेदाजी
 वन्तीमधुकन्तथा । मुद्गपर्णीमामपर्णीजीवनीयोगणस्त्व
 यम् १७जीवनीयोगणःस्वादुर्गर्भसन्धानकृद्गुरुः । स्तन्यकृ
 द्दृहणोदृष्यःस्निग्धश्शीतस्तृषापहः । रक्तपित्तक्षयशोषं
 ज्वरदाहानिलाञ्जयेत् १८ द्वेमेदेद्वेचकाकोल्यौजीवकर्पभ
 कौतथा । ऋद्धिवृद्धीचनैःसर्वैरष्टवर्गउदाहृतः । अष्टवर्गो
 बुधैःप्रोक्तोजीवनीयसमोगुणैः १९ सिन्धुसौवर्चलंचैववि
 ङ्गसामुद्रिकंगडमाएकद्वित्रिचतुष्पञ्चलवणानिक्रमाद्धिदुः
 २० तेषुमुख्यसैन्धवंस्यादनुक्तैतत्प्रयोजयेत् । सैन्धवाद्यं
 रोमकान्तंज्ञेयंलवणपञ्चकम् २१मधुरंमृष्टविण्मूत्रंस्निग्धं
 सूक्ष्मंवल्लापहम् । वीर्योष्णंदीपनंतीक्ष्णकफपित्तविवर्द्ध
 नम् २२ स्वर्जिकायावशूकश्चक्षारयुग्ममुदाहृतम् । ज्ञे

काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, अष्टपभक, पेदा, महामेदा, जीवन्ती " दूधिया
 लताकी क्षीनीकी क्षीमीक्षीसी तरकारी होतीहै" गुलदही, मूंगफली और उर्दफली
 इनकी जीवनीयगण संज्ञाहै सो स्वादिष्ठ, गर्भस्थितिकारक, भारी, दुग्धवर्द्धिनी,
 धातुपोषक, धातुशोधक, स्निग्ध व ठण्डी होकर तृष्णा, रक्तपित्त, क्षयी, शोष,
 क्वर, दाह और वायुको हरताहै ॥ १२ ॥ १८ ॥ मेदा, दोनों काकोली, जीवक,
 अष्टपभक, अर्द्धि और वृद्धि यह अष्टवर्ग है परन्तु आठमें कोई मिलती है अष्टवर्ग
 को वैद्यलोग जीवनीयगणके तुल्य कहते हैं ॥ १९ ॥ (विण्मूत्र पर लवण
 पंचकचूर्ण) सेंधा, सोंचर, चिटवोन, खारी और सांभर इन पांचों में पहिला
 एक लवण, पहिले व दूसरे को द्विलवण, पहिले, दूसरे व तीसरेको त्रिलवण,
 पहिले, दूसरे, तीसरे व चौथे को चतुर्लवण और पहिले, दूसरे, तीसरे, चौथे
 व पांचवें को पञ्चलवण कहते हैं ॥ २० ॥ इनमें सेंधा मुख्य है जहां नाम न
 लिखें तहां सेंधा लेना सेंधे से सांभरि तक पांच लोन जानो ॥ २१ ॥ पाक
 मधुर है मल मूत्र पकायके गिराता है चिकना भवेश करता बलहरता धातु को
 गरम करताहुआ दीपन व तीक्ष्णहो कफ व पित्तको बढ़ाता है ॥ २२ ॥ (गुल्मा-

यौवङ्गिममौक्षारौस्वर्जिकायावशूकजौ २३ क्षाराश्चान्त्रेऽपि
 गुल्मार्शो ग्रहणीरुक्छिदःभराः । प्राञ्जनाः कृमिपुंस्त्वघ्नाः
 शर्कराश्मरिनाशनाः २४ त्रिफलारजनीयुग्मं कण्टकारीयु
 गेशठी । त्रिकटुग्रन्थिकंमूर्वागुडूचीघ्नन्वयासकाः २५ क
 टुकापर्वटोमुस्तंत्रायमाणा चवालकाः । तिग्मः पुष्करगूलंच
 मधुयष्टीचवत्कम् २६ यवानीन्द्रयवोभार्गीशिथुवीर्जसु
 राष्ट्रजा । वचात्वक्पद्मकोशीरंचन्दनातिविषावलाः २७
 शालपर्णीपृष्ठपर्णीविडङ्गंतगरंतथा । त्रिन्नरोदेवकाष्ठञ्च
 चव्यंपत्रंपटोलजम् २८ जीवर्कषभकौ चैवलवङ्गवंशलो
 चनम् । पुण्डरीकंचकाकोलीपत्रजंजातिपत्रकम् २९ ता
 लीसपत्रंचतथासमभागानिचूर्णयेत् । सर्वचूर्णस्यसार्द्धं
 शर्करातंप्रक्षिपेत्सुर्धाः ३० एतत्सुदर्शनं नामचूर्णदोषत्रया
 पहम् । ज्वरांश्चनिखिलान्हृत्प्राज्ञात्रकार्याविचारणा ३१

दिपर खार) सञ्जीवार और जवाखार ये दो खार कहे हैं सो दोनों अग्नि
 समान देदीप्यमान हैं ॥ २३ ॥ और क्षार सहिजनक्षार ३। गदापूर्णक्षार भी-
 गुल्म, अर्श, ग्रहणी इन रोगों को नाश करता है तथा पाचन कृमिनाशक पुं-
 स्त्वहन्ताहो शर्करा व पयरी को हरता है ॥ २४ ॥ (सर्वज्वरपर सुदर्शन
 चूर्ण) त्रिफला, दोनों हल्दी, दोनों भटकटैया, कचूर, त्रिहुटा, पीपरा मूत्र
 मूर्वा, गुर्च, धमासा ॥ २५ ॥ कडुकी, पितापापदा, नागरमोधा, तार्यमाण्डा नेत्र-
 चाला, नीपकी ब्याल, पुष्करमूल, मुलशठी, कुरैया ॥ २६ ॥ अजवाइन, इन्द्रो
 यत्र, भार्गी, सहिजन के त्रिया, भुजी फटकारी, वच, तज, पशाख, रसस, श्वेत
 चन्दन, अतीस, त्रियारा ॥ २७ ॥ वनउर्दी, वनपूंग, वायनिडंग, तगर, चीता,
 देवदारु, चाव, पटोल ॥ २८ ॥ “ जीवर्क, ष्यभक इन दोनोंके अभावे विदारी
 कन्द लेना” लीग, वंशलोचन क्रमलपत्र, काकोली के अभाव में गुलहड़ी लेना
 दुइ में दूना तेजपात, जायित्री ॥ २९ ॥ तालीसपत्र ये सब समाजने चूर्णकरे
 सब चूर्णका आधा चिरायता डारै ॥ ३० ॥ यह सुदर्शन चूर्ण मिटोपनाशकहो
 निश्चय सर्वज्वर को हरता है इसमें विचार नहीं करना चाहिये ॥ ३१ ॥

पृथग्द्वन्द्वागन्तुजाश्चघातुस्थान्विषमज्वरान् । मन्निर्पा
 तोद्गवांश्चापिमानसानपिनाशयेत् ३२ शीतज्वरैका
 हिकादीन्मोहंतन्द्रांभ्रमंतृषाम् । श्वासंकासंचपाण्डुत्वंह
 द्रोगंहन्तिकामलाम् ३३ त्रिकपृष्कटीजानुपार्श्वशूलनि
 वारणम् । शीतान्बुनापिवेद्धीमान्सर्वज्वरनिवृत्तये ३४ सु-
 दर्शनंयथाचक्रंदानवानांविनाशनम् । तद्वज्वराणांसर्वे
 धामेतच्चूर्णनिवारणम् ३५ कासश्वासज्वरहरात्रिफला
 पिप्पलीयुता । चूर्णितामधुनालीढाभेदिनीचाग्निवोधिनी
 ३६ कट्फलंमुस्तकंतिकाशुण्ठीशृङ्गीचपौष्करम् । चूर्णमेपां
 चमधुनाशुद्धवेरसेनच ३७ लिहेज्वरहंरंकण्ठ्यंकासश्वा
 सारुचीर्जयेत् । वातशूलंतथाछर्दिक्षयंचैवव्यपोहति ३८
 शृङ्गीप्रतिविषाकृष्णाचूर्णितामधुनालिहेत् । शिशोःका-
 सज्वरच्छर्दिशान्त्यैवाकेवलाविषाम् ३९ शुण्ठीप्रतिविषा

य एकाहिक,द्वन्द्वज,सन्निपातज और मानस ऐसे सत्र ज्वरों को त्रिनाशताहै ॥३२॥
 शीतज्वर, झूठी, अंतरिया, तृतीयक, चातुथिक, मोह, तंद्रा, भ्रम, तृषा, श्वास,
 कास, पाण्डु और हृदयरोग को हरे ॥ ३३ ॥ रीड़, पीठ, करिहावें, जाय, पसुरी
 इन अंगों की पीड़ा नाश होइ जो शीत जल केसंग पिये तो सर्वज्वर हरेना ३४॥
 जैसे सुदर्शनचक्र सय दानवों को नाशनाहै वैसेही सुदर्शन चूर्ण सब ज्वरों को
 नाश करता है ॥ ३५ ॥ (त्रिफलादि चूर्ण कास श्वास ज्वर पर)
 त्रिफला पीपरिचूर्ण शहद संग चाटे तो कास, श्वास, ज्वर हरे तथा जेदी हो
 अग्निको प्रबल करताहै ॥ ३६ ॥ (कफज्वरपर कायफलादिचूर्ण) काय-
 फल, नागरमोधा, कुटकी, सोंठ, काकडासिंगी और पुष्करमूल इन द्रव्यन का
 चूर्ण शहद अदरक रससंग चाटे तो ज्वरहरे कंठशुद्ध होय कास, श्वास, अरुचि,
 वातशूल, छर्दि और ज्ञयी ये सब जाय ॥ ३७ । ३८ ॥ (बालककी सांसी
 ज्वरपर काकडासिंगी आदि चूर्ण) काकडासिंगी, अतीस और पीपरि
 का चूर्ण मधुयुक्त चटावै तो बालककी सांसी, ज्वर, छर्दि ये दूरहोवें वैसेही
 वेचन अतीस से भी उक्तरोग जाय ॥ ३९ ॥ (आमातीसार पर शुंठ्यादि-

हिङ्गुमुस्ताकुटजचित्रकैः । चूर्णमुष्णाभ्युनापीतंवाताती
सारनाशनम् ४० हरीतकीप्रतिविपासिन्धुसौवर्चलंवचा ।
हिङ्गुचेतिकृतंचूर्णपिवेदुष्णेनवारिणा ४१ आमातीसार
शमनंघ्राहिचाग्निप्रबोधनम् । मुस्तमिन्द्रयवंविल्वलोध्रमो
चरसंतथा ४२ धातकींचूर्णयेत्तक्रगुंडाभ्यांपाययेत्सुधीः ।
सर्वातीसारशमनंनिरुणाद्विप्रवाहिकाम् ४३ लघुगङ्गाधरं
नामचूर्णसङ्घ्राहकंपरम् । मुस्तारलूकशुण्ठीभिर्धातकीलो
ध्रवांलकैः ४४ विल्वमोचरसाभ्यांचपाठेन्द्रयववत्सकैः । आ
म्रवीजंप्रतिविपालंजालुरितिचूर्णितम् ४५ क्षौद्रतण्डुल
पानीयपीतैर्यातिप्रवाहिका । सर्वातीसारग्रहणीप्रशमंया
तिवेगतः । वृद्धगङ्गाधरं नामसरिद्वेगविवन्धकम् ४६ तक्रेण
यःपिवेन्नित्यंचूर्णमरिचसम्भवम् । चित्रसौवर्चलोपेतंग्रह
णीतस्यनश्याति । उदरह्नीहमन्दाग्निगुल्मार्शोनाशनम्भवे
चूर्ण) सोंठ, अतीस, हींग, नागरमोथा, कुरैया और चीता इनका चूर्ण उष्णपानी
के साथ पियेसे आत्र च अतीसार दूरहोये ॥ ४० ॥ (आमवात पर हरीत-
क्यादि चूर्ण) बड़ी हड, अतीस, सेंथालोन, कालालोन, वच और भुनी हींग
इनका चूर्ण उष्णोदक सों पिये तो आमवातातीसार जाय तथा ग्राही हो अग्नि
जगाता है (सर्वातीसार पर लघुगंगाधर चूर्ण) नागरमोथा, इन्द्रय,

त् ४७ अष्टौभागाः कपित्थस्य षड्भागं शर्करामता । दाडि
 मंतिन्ति डीकंच श्रीफलं धातकी तथा ४८ अजमोदा च पिप्प
 ल्यः प्रत्येकं स्युस्त्रिभागाः । मरिचं जीरकं धान्यं ग्रन्थिकं चो
 लकंतथा ४९ सौत्रं चैतं घृत्नी चर्चा तुर्जा तं सचित्रकम् । ना
 गरं चैकभागाः स्युः प्रत्येकं सूक्ष्मं चूर्णितम् ५० कपित्थाष्टक
 सञ्ज्ञं स्याच्चूर्णमितद्गलामयान् । अतीसारं क्षयंगुल्मं ग्रहणीं
 चैव्यपोहति ५१ दाडिमी द्विपला ग्राह्या खण्डा चाष्टपलानि
 च । त्रिगन्धस्य पलं चैकं त्रिकटुस्य पलत्रयम् ५२ एतदेकी
 कृतं सर्वचूर्णं स्याद्दाडिमाष्टकमसिचिद्द्वीपनं कण्ठ्यं ग्राहिका
 मज्वरापटम् ५३ दाडिमस्य पलान्यष्टौ शर्करायाः पलाष्टकं
 पिप्पली पिप्पली मूलं यधानी मरिचं तथा ५४ धान्यकं जीरकं
 शुण्ठी प्रत्येकं पलसंमितम् । कर्षमात्रा तु गाचीरी त्वक्पत्रैला
 इचकेसरम् ५५ प्रत्येकं कोलमात्राः स्युरतन्नूर्णं दाडिमाष्टकं
 अतीसारं क्षयंगुल्मं ग्रहणीं च गलग्रहम् । मन्द्राग्निपीनमं
 धर्ये ये सब अच्छेदोर्थे ॥ ४७ ॥ (संग्रहणी पर कपित्थाष्टक चूर्ण) आठ
 भाग पक्षा कैया छःभाग सर्वाह, अनार, अमली, बेलगिरी, धनफूल, अजमोद
 और शीपरि ये सब तीन तीन भाग मरिच, जीरा, इत्रा धनिया, पीपरामूल,
 शुग्मगुला, अजगान, तज, मज इलायची, नागकेसर, चीता और सोंठ
 ये सब एक एक भाग इन सबको महीन चूर्ण करे यह कपित्थाष्टक नाम चूर्ण गले
 कि रोग, अतीसार, क्षयी, गुग्म, ग्रहणी इन सबको अच्छा करता है । ४८ ॥ १॥
 (घृत्नीपर दाडिमाष्टक) अनारदाना आठ रपगभर, शर्करा बीसभर तज,
 पत्रज, इल यनी तीनों मिला के चार भर त्रिमुटा घरह भा इन्हें एककरि चूर्ण
 करे यह दाडिमाष्टक नाम चूर्ण रोचक, द्वीपन व द्राहीहोकर बंध शुद्ध करताहुआ
 व । सप्रसकी नारता है ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ (अतीसार पर शुद्ध दाडिमाष्टक)
 अनारदाना आठगल, शीपरि पीपरामूल, अजगान, मिर्च धनियां श्वेत जीरा,
 सोंठ ये सब पल पाभर वंशतोषा दशमांशे तज, मजज, एला, नागकेसर ये
 पाच पाचमार यह दूसरा दाडिमाष्टक क्षयी, अतीसार, शुग्म, ग्रहणी, मलग्रह,

कासंचूर्णमेतद्वयपोहति ५६ लवङ्गं शुद्धकर्पूरमेलीत्वङ्ना
 गकेसरम् । जातीफलमुशीरं चनागरं कृष्णजीरकम् ५७ कृ
 ष्णागुरुरतुगाक्षीरीमांसीनीलोत्पलं कणाचन्दनं तगरं बालं
 कङ्कोलं त्रैविचूर्णयेत् ५८ समभागानिसर्वाणिसर्वाङ्घ्राचसि
 ताभवेत् । लिङ्गेन्द्रमिदंचूर्णं राजार्हं वह्निदीपनम् ५९ रो
 चसंतर्पणं शृङ्गं त्रिदोषघ्नं बलप्रदम् । हृद्रोगं कण्ठरोगं च का
 संहिकां च पीनसम् ६० यक्ष्माणं तमकं श्वासमतीसारमुरः
 क्षतम् । प्रमेहारुचिगुल्मादीन् ग्रहणीमपि नाशयेत् ६१ जा
 तीफलं लवङ्गं लापत्रैस्त्वङ्नागकेसरैः । कर्पूरं चन्दनं तिलै
 स्त्ववक्षीहीतगरामलैः ६२ तालीसपिप्पलीपथ्याचित्रक
 रथूलजीरकैः शुठीविडङ्गमरिचानूसमभागान् विचूर्णयेत् ।
 ६३ यावत्स्थेतानिसर्वाणिकुर्याद्गङ्गां च तावतीम् । सर्वचूर्णस
 मादेयाश्कर्षाचभिषग्वरैः ६४ कर्षमात्रं तथा खादेन्मधुना
 ज्ञावितं सुधीः । अस्य प्रभावाद्ग्रहणीकासश्वासा रुचिक्षयाः ।
 वातश्लेष्मप्रतिशयायाः प्रशमयान्ति वेगतः ६५ मरिचं ना

मंटाग्नि, पीनस और कास इन रोगों को नाश करे ॥ ५४ ॥ ५६ ॥ (क्षयी पर
 लवंगादि चूर्ण) लवंग, शुद्ध कपूर, इलायची दालचीनी, नागकेसर जायफल,
 खस सोंठ, कृष्णजीरा, कृष्णअगर, बंशलोचन जटामोती, नीलकमल पीपरि, चन्दन
 तगर, सुगंधबाला आर कंकोल इनका चूर्ण करि चूर्णकी आँधी मिश्री मिलावै
 यह लवंगादिचूर्णराज, दीपन, रोचक, तृप्तिकारक होकर धातुपुष्ट करे त्रिदोषहरे
 बलप्रद, कंठ हृदयरोग, कास, हिचकी, पीनस, क्षयी, तमक, श्वास अतीसार, उरः-
 क्षत, प्रमेह, अरुचि, गुल्म और ग्रहणी इन सबको दूरकरे ॥ ५७ ॥ ६१ ॥ (जाती-
 फलादि चूर्ण) जायफल, लांग, इलायची, तजो पत्रंज, नागकेसर, कपूर,
 चंदन, तिल, बंशलोचन, तगर, आंशरी, तालीसपत्र पीपरि, हड़, चीता, काला
 जीरा, सोंठ, क्षयत्रिदंश और मरिच इन सबके समान भाग लेना तिसका चूर्ण
 करि चूर्ण के धरावर खाइ दे कर्ष भर शब्द मिलायके खाय इसके प्रभाव से
 ग्रहणी, कास, श्वास, अरुचि, क्षयी, वात, कफ और नोक टपकना ये रोग बेगही

शपुष्पाणितालीसंलवणानिच । प्रत्येकमेकभागाःस्युःपि
 प्पलीमूलत्रिचक्रैः ६६ त्वक्कणातिन्तिडीकंचजीरकंचद्वि
 भागिकाः । धान्याम्लवेतसौविश्वंभद्रेलावदराणिच ६७
 अजमोदाजलधरःप्रत्येकंस्युस्त्रिभागिकाः । सर्वोषधत्तु
 र्थीशंदाडिमस्यफलंभवेत् ६८ द्रव्येभ्योनिखिलेभ्यश्चसि
 तादेयांर्द्धमात्रयांमहाखाण्डवसंज्ञंस्याच्चूर्णमेतत्सुरोचन
 म् ६९ अग्निदीप्तिकरंहृद्यंकासातीसारनाशनंमूहद्रोगकं
 ठजठरमुखरोगप्रणाशनम् ७० त्रिसूचिकांतथाध्मानमर्शो
 गुल्मकृमीनपि । हृदिपञ्चविधांश्वासंचूर्णमेतद्व्यपोहति
 ७१ चित्रकस्त्रिफलाव्योषंजीरकंहवुषावचा । यवानीपिप्प
 लीमूलंशतपुष्पाजगन्धिका ७२ अजमोदाशटीधान्यंवि
 डङ्गस्थूलजीरकम् । हेमाह्लापौष्करंमूलंक्षारौलवणपञ्च
 कम् ७३ कुष्ठंवेतिसमांशानिविशालास्याद्विभागिका ।
 तृचक्रिभागात्रिज्ञेयादन्त्याभागत्रयंभवेत् ७४ चतुर्भागा
 शातंलास्यात्सर्वाण्येकत्रचूर्णयेत् । पाचनंस्नेहनाद्यैश्च
 दूरहोयं ॥ ६२ । ६५ ॥ (अरुचि पर महाखाण्डवचूर्ण) परिच, नागकेसर,
 तालीसपत्र, पांचौ लौन ये सब समान भाग लेना पीपरापूल, चित्रक, तज, पीपरि,
 अमलीकीदाल और जीरा ये सब दो २ भाग लेना धनियां, अम्लवेतस, सोंठ
 वही इलायची, येर, अजमोद और मोथा ये तीन तीन भाग सब द्रव्यकी चौथाई
 अनार, सबकी आधी-मिश्रीटे यह महाखाण्डव संज्ञक चूर्ण रोचक दीपन हो हृदय
 को बलदायकहै, तथा अतीसार हृदयरोग, कंठ जलना, मुसरोग, हैजा, पेट फूलना
 यवातीर, गुल्म, दृमिरीग, पंचविधद्वि और रवास इन्हाको नाशकरै ॥ ६६ ॥
 ७१ ॥ (खदररोगपर नारायण चूर्ण) चीता, त्रिफला, सोंठ, पीपरि,
 गरिच, जीरा, द्वाज्वेर, वच, अजवाइन, पीपरापूल, सौंफ, अजमोद, कडूर, धनि
 या, चापभिंडग, कालीजीरी, चोक, पुष्करमूल, दोनोला, पांचौलौन और फूट
 ये सब समान ले इन्द्रायणकीजइ दो भाग, निशोध तीन भाग, जमालगोटा तीन
 भाग, पीतपुष्पी, सेहुण्डमूल, चारि भाग इन् सभोंको एकत्रकरि चूर्णकरै कठिन

स्निग्धकौष्ठस्यरोगिणः ७५ दद्याच्चूर्णात्रिरिकायैसर्वरोगप्र
 णाशनम् । हृद्रोगेपाण्डुरोगेचकासेश्वासेभगन्दरे ७६ मन्दे
 र्ग्नौचज्वरेकुष्ठेग्रहण्यांचगलग्रहे । दद्याद्युक्तानुपानेन तथा
 ध्मानेसुरादिभिः ७७ गुल्मेवदरंनारेणघिड्भेदेदधिमस्तु
 ना । उष्णाम्बुभिरजीर्णेच वृक्षाम्लैःपरिकर्तुषु ७८ उष्णीदु
 र्धेनोदरेपुतथातक्रेणवागवाम् । प्रसन्नयावातरोगेदाडिमै
 र्शशांतथा ७९ द्विविधेचविषेदद्याद्घृतेनत्रिप्रनाशनम् ।
 चूर्णानारायणंनामदुष्टरोगगणापहम् ८० हवुषात्रिफलाचै
 वत्रायमाणौचपिप्पली । हेमक्षीरस्तृचैव शातलाक
 टुकावचा ८१ नीलनीसैन्धवंकृष्णालवणंचेतिचूर्णयेत् ।
 उष्णोदकेनमूत्रेणदाडिमास्त्रिफलारसैः ८२ तथासांसर
 सेनापियथाशौग्यंपिवेशरः । अजीर्णेष्ठीहगुल्मेषुशोफा
 शौविषमाग्निषु ८३ हलीमकामलापाण्डुकुष्ठाध्मानो
 दरेष्वपि । शुण्ठीहरीतकीकृष्णातृवृत्सौवर्चलंतथा ।

कम् । शण्ठीहरीतकीचेतिक्रमं वृद्ध्याविचूर्णयेत् । वडवानलनामैतच्चूर्णं स्यादग्निदीपनम् १ अजमोदाविडङ्गानिसेन्धवंदेवदारुव ॥ चित्रकः पिप्पली मूलं शतपुष्पाचपिप्पली २ मरिचं चेतिकर्षाशंप्रत्येकं कारयेद्बुधः । कर्षास्तुपञ्चपथ्यायाः दशस्युर्द्वद्वदारुकात् ३ नागराच्चदशैवस्युः सर्वाण्येकत्रचूर्णयेत् । पिबेत्कोष्णजलेनैवचूर्णं च गुडसम्मितम् ४ भक्षयेदथवासम्यक्परश्वयथुनाशनम् । आमवातरुजंहन्ति सन्धिपीडांचगृध्रसीम् ५ कटिपृष्ठगुदास्थनाञ्चजङ्घयोश्चरुजंजयेत् । तूर्णीप्रतूर्णीं विश्वाचीकफवातामयाञ्जयेत् ६ हिङ्गुपाठाभयाधान्यं दाडिमं चित्रकःशटी १ अजमोदात्रिकटुकं हवुषाचाम्लवेतसम् ७ अजगन्धातिन्तिडीकं जीरं कर्षौष्करं वचा । चव्यं क्षारं द्वयंपञ्चचलं वणानि विचूर्णयेत् ८ प्राग्भोजनस्य मध्ये वा चूर्णमेतत्प्रयो

अग्निदीपनं व रुचिको उपजाताद्बुध्ना कफको नाशताहै ॥ १०० ॥ (मन्दाग्निपर वडवानलचूर्ण) सेंधा पीपरामूल, पीपरि, चाव, चीता, सोंठ और वडी इह क्रमसे वदाय चूर्ण करै जैसे सेंधा १ माशा तौ पीपरामूल २ माशा पीपरि ३ माशाभर लेना यह वडवानल नाम अग्नि हो जगाताहै ॥ १ ॥ (चातादि पर अजमोदादिचूर्ण) अजमोद, वायविडंग, सेंधव, देवदारु, चीता, पीपरामूल, सोंफ, पीपरि ॥ २ ॥ और मिर्च ये द्रव्य कर्ष कर्ष भर इह पांच कर्ष विधारा दशकर्ष ॥ ३ ॥ सोंठ दशकर्ष इन सबको चूर्ण कर गुडमिश्रित करि खेत्पणोदक से पिये ॥ ४ ॥ अञ्जीतरह खाय तौ सूजन दूरहोय और आमवात, गाठि पीडा, श्वससी वायु ॥ ५ ॥ कटिपीडा, पीठ, गुदा, जायपीठ, सूनीवायु, मत्तनी व यु, विश्वाची, कफरोग और वायुके रोग ये सत्र नाशहोयें ॥ ६ ॥ (शूलादिपर हिङ्गवादिचूर्ण) भुनी होंग, पाडा, वडी, इह, धनियाँ, अनारदाना, चीता, कचूर, अजमोद, त्रिकुटा, हाठवेर अम्लवेतस ॥ ७ ॥ वनतुलसी, इमली की झाल, जीरा, पुष्करभूल, वच, चाव, दोनोंपार और पांचोत्तोन इन सबको चर्षकरै ॥ ८ ॥ भोजनादिक के प्रथम अथवा पुराने मद्यके संग या गरम

जयेत् । पित्तेद्वाजीर्णमद्येनतक्रेणोष्णोदकेनवा ९ गुल्मे
 वातकफोद्भूतेविडम्ब्रहेऽष्टीलिकासुच । हृद्वस्तिपार्श्वशूलेषु
 शूलेचगुदयोनिजे १० मूत्रकृच्छ्रेतथानाहेपाण्डुरोगेऽरुचौ
 तथा । हिक्कायांयकृतिष्ठीह्निश्वासेकासेगलग्रहे ११ ग्रह
 पथशोविकारेषुचूर्णमेतत्प्रशस्यते । भावितंमातुलुङ्गस्यव
 हुशःस्वरसेनवा । कुर्याच्चगुटिकाःपथ्यावातश्लेष्मामया
 पहाः १२ यवानीदाडिमंशुण्ठी तिनित्तीकाम्लवेतसौ ।
 बदराम्लं चकुर्वीतचतुःशाणमितानिच १३ सार्द्धद्विशा
 णमरिचं पिप्पली दशशाणिका । त्वक्सौवर्चलधान्याकं
 जीरकं द्विद्विशाणिकम् १४ चतुःषष्टिमितैःशाणैःशर्करा
 मत्रयोजयेत् । चूर्णितं सर्वमेकत्रयवानीखाण्डवाभिधम् ।
 १५ नाशयेत्पाण्डुरोगं च हृद्रोगं ग्रहणीज्वरम् । छद्दिशोषा
 तिसारांश्चप्रीहानाहविवन्धता । अरुचिंशूलमन्दाग्नीचा
 शो जिह्वाग्लामघान् १६ तालीमंमरिचंशुण्ठीपिप्पलीवं
 शलोचना । एकद्वित्रिचतुष्पञ्चकषैर्भागान्प्रकल्पयेत् १७

जलके साय खाय ॥ ९ ॥ वात कफ का गुल्म, कोष्ठवन्ध, अष्टीलिका, हृदय,
 पेह, पसुरा, गुदा और योनिके सब शूल ॥ १० ॥ मूत्रकृच्छ्र, पेट फूलना, पाण्डु,
 अरुचि, हिचकी, यकृत, प्लीहा, रवास, कास, गलरोग ॥ ११ ॥ ग्रहणी और
 अर्शे इमपर यह चूर्ण है बिजौरा के रस में सात भागना दे गोली बांध ले
 इस से वात कफ रोग नाशहोय ॥ १२ ॥ (अरुचिपर यवानीखाण्डव
 चूर्ण) अजवाइन, अनारदाना, सोंठ, इमली की दाल, अम्लवेतस और
 भरवेर ये सब चार चार शाण ॥ १३ ॥ मरिच दाई शाण, पीपरि दशशा
 ण, तेज, कालानोन, धनियां, जीरा ये दो दो शाण ॥ १४ ॥ शर्करा चौंसठि
 शाण "शाण चारिमाशे का होताहै" इन सबों का चूर्ण कर इसे यवानी
 खाण्डव कहते हैं ॥ १५ ॥ यह पाण्डु, हृद्रोग, ग्रहणी, छर्दि, शोष, अतीसार,
 प्लीहा, पेट फूलना, कोष्ठवद्ध, अरुचि, शूल, मन्दाग्नि, अर्शे, जीमरोग और
 ग्लामरोग इन सबोंको विनाशताहै ॥ १६ ॥ (अरुचिपर तालीसादिचूर्ण)

हभस्महरीतक्यौचक्रमर्दकचित्रको । भृङ्गातकविडङ्गानि-
 शर्करामलकंनिशा ३४ पिप्पलीमरिचशुण्ठीवाकुचीकृत
 मालकः । गोक्षुरश्चपलोन्मानमेकैकंकारयेद्वुधः-३५ सर्व
 मेकीकृतं चूर्णं भृङ्गराजेन भावयेत् । अष्टभागावशिष्टेन खदि-
 रासनवारिणा ३६ भावयित्वा च संशुष्कं कर्षमात्रं ततः पिबे-
 त् । खदिरासनतोयेन सर्पिषापयसाथवा ३७ मासेन सर्वकु-
 ष्ठा निविनिहन्ति रसायनम् । पञ्चनिम्बमिदं चूर्णं सर्वरोगप्र-
 णाशनम् ३८ - शतावरीगोक्षुरकंबीजंचकपिकच्छजम् ।
 गाङ्गेरुकीचातिबलाबीजमिक्षुरकोद्भवम् ३९ चूर्णितं सर्व-
 मेकत्रगोदुग्धेन पिबेन्नृशि । नृत्सियातिनारीभिर्नरश्चूर्णं
 प्रभावतः ४० अश्वगन्धादशपलातन्मात्रोत्प्लवदारुकः ।
 चूर्णीकृत्योभयं विद्वान् घृतभाण्डे निधापयेत् ४१ कर्षेकंप-
 यसापीत्वानारीभिर्नैव तृप्यति- । अगत्वा प्रमदांभूयोवली-
 पलितवर्जितः ४२ चित्रकं त्रिफलामुस्ताविडङ्गं च्युषणा-
 निच । समभागानिकार्याणि नवभागाहतायसः ४३ एतदे-
 कीकृतं चूर्णं मधुसर्पिर्युतं लिहेत् । गोमूत्रमथवा तक्रमनुपा-
 नं प्रशस्यते ४४ पाण्डुरोगं जयत्यग्रं हृद्रोगं च भगन्दरम् ।

निच चूर्णं करते हैं जोकि सत्र रोगों को नाश करता है ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ (शता-
 चरिचूर्ण पुष्टिपर) शतावरी, गुडरु, कर्षेवायके बीज, गुलसफरी बरियारा,
 तालमखाना ॥ ३६ ॥ इनका चूर्ण गोदुग्ध में पिये इस के प्रभाव से स्त्री से वृत्त
 न होय और जो स्त्रीसंग न करे तो बली होय वार श्नेत न होय ॥ ४० ॥
 (पुष्टि पर अश्वगन्धादि चूर्ण) नागौरी असगंध चालीस तोले भर,
 दिपारा चालीसभर इन दोनों को महीन चूर्ण कर घृतके भाजनमें धरे ॥ ४१ ॥
 दशमारेदूध में पिये तो स्त्रीसे वृत्तन होय (धालुवृद्धिपर नवाचसादि चूर्ण)
 चीता, निफला, नागरमोय, धायविडग और त्रिकुटा ये सब समान नव अंश पोलाद्
 ४२ ॥ ४१ ॥ इनका चूर्ण शहद और घृतके संगचाटैया गोमूत्र व महा

शोथकुष्ठोदराशांमिमन्द।ग्निमरुचिकृमीन् ४५ अकार
 करमःशुण्ठीकङ्कोलंकुङ्कुमंकणा । जातीफलंलवङ्गंचचन्द
 नंचेतिकार्षिकान् ४६ चूर्णानिमांस्ततःकुर्यादहिफेनंपलो
 न्मितम् । सर्वमेकीकृतंचूर्णसूक्ष्मंतद्वस्त्रगालितम् ४७ सि
 तासर्वसमादेयामाषैकंमधुनालिहेत् । शुक्रस्तम्भंकरंचूर्णं
 पुंसामानन्दकारकम् । नारीणांप्रीतिजननंसेवेतनिशिकामु
 कः ४८ त्रकुलत्वग्भवंचूर्णघर्षयेदन्तपंक्लिषु । वज्रादपिट्ठी
 भूतादन्तास्स्यश्चपलाध्रुवम् ४९ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्य
 खण्डेचूर्णकल्पनापष्टोऽध्यायः ॥ ६ ॥

वटिकाश्चाथकध्यन्तेतन्नामगुटिकावटी । मोदकोवटि
 कापिण्डीगुण्डीवर्तिस्तथोच्यते १ लेहवत्साध्यतेवह्लौगुडो
 वाशर्करायथा । गुग्गुलुंवाक्षिपेत्त्रचूर्णतन्निर्मितावटी २
 कुर्याद्बुध्निसिद्धेनकाचिद्गुग्गुलुनावटी । द्रव्येणमधुना
 चापिगुटिकांकारयेत्सुधीः ३ सिताचतुर्गुणादेयावटीषु
 द्विगुणोगुडः । - चूर्णाञ्चूर्णसमःकार्योगुग्गुलुमधुतत्सम

केसाय ॥ ४४ ॥ तौ पांडु, हृद्रोग, भगंदर, सूजन, कोढ़, उदररोग अर्श मन्दाग्नि,
 अरुचि और तृमि नाशदायक ॥ ४५ (स्तंभन पर अकरकरादि चूर्ण) अ-
 करकरहा, सौंठ, कंकाल, केंसर मीपरि, जायफल, लौंग और श्वेतचन्दन इन्हें
 कर्षकर्ष भरले ॥ ४६ ॥ चूर्ण करि पलभर थफीमदे पीसिं कपडबानले ॥ ४७ ॥
 और सब के समान खांड देय माशाभर शहदमें चाटे यह चूर्ण शीथस्तंभन कर स्त्री
 पुरुषों को सुख देता है इसलिये कामी पुरुष इसे रातिभो सेवन करे ॥ ४८ ॥
 (मंजन) मौलसिरीकी छालके चूर्ण को दांतों में घिसाकरै तो हिलते हुये भी दांत
 वज्र समान होजाते हैं ॥ ४९ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेमधुनापष्टोऽध्यायः ६ ॥

(अथ वटी कल्पना) वटिका गुटिका वटी मोदक पिण्डी गुण्डी और वृत्ति
 ये गोली के नाम हैं ॥ १ ॥ गुड़ और खांड दे आगि में पकावै जैसे अबलेह तत्र गु-
 गुलु व चूर्ण उसी पाक में डारि गोली बाधै ॥ २ ॥ विना आगि के योग गुग्गुलु
 से भी गोली बंधती है और गीली बधु तथा शहद से भी बंधती है ॥ ३ ॥ मिथी

५४ द्रवंचद्विगुणं देयं मोदकैः पुंभिः पत्रैः । कर्पूप्रमाणं त
 न्मानं बलं दृष्ट्वा प्रयुज्यताम् ॥ इन्द्रवारुणिकामुस्तात्रुण्ठीद
 न्तीहरीतकी । त्वृच्छटीविडङ्गानि गोक्षुरश्चित्रकस्तथा ६
 तेजोह्लाचद्विकर्षाणि पृथग्द्रव्याणिकारयेत् । शूरणस्य पला
 न्यष्टौ वृद्धदारुचतुष्पलम् ७ चतुष्पलं रयाद्रह्लातः काथये
 त्सर्वमेकतः । जलद्रोणे चतुर्थांशं गृह्णीयात्काथमुत्तमम् ८
 काथ्यद्रव्यात्रिगुणितं गुडं क्षिप्त्वा पुनः पचेत् । सम्यक्पक्व
 ज्ञात्वा वैचूर्णमेतत्प्रदापयेत् ९ चित्रकस्त्रिवृतादन्तीति
 जोह्लापलिकाः पृथक् । पृथक्त्रिपलिकाभागाव्योषैलाम
 रिचत्वचम् १० । निक्षिप्तेन्मधुर्गोते च तस्मिन् प्रस्थप्रमाण
 क्रम् । एवं सिद्धो भवेच्छ्रीमान् बाहुशालगुडाभिधः ११ जये
 दशासिसर्वाणि गुल्मं वातोदरं तथा । आमवातं प्रतिश्यायं
 ग्रहणीक्षयपीनसान् । हलीमकंप्रांडुरोगं प्रमेहंच विनाश
 येत् १२ मरिचं कर्षमात्रं स्यात्त्रिपल्ली कर्षसम्भिता । अर्द्ध

। चौगुनी गुडं दूना चूर्णं लिखे प्रमाणं देना गुण्डुलु शहद करार देना ॥ ४० ॥ द्रव
 वस्तु दूनी देना सद्रव्यं यही रीति करे, कर्पूर गोली खाने का प्रमाण है व देह
 पल दोष देखि सिलायै ॥ ५ ॥ (इन्द्रारुकी शुट्टिका अर्शपर) इन्द्रायण
 की, जड़, नागरमोषा, सोंठ, जमालगोटा के जड़की छाल, हड़, निशोध, कचूर,
 चायविहंग, गुडुरु, चीता ॥ ६ ॥ और, वच ये सत्र दो दो कर्ष, जमीरन्ट आठ
 पल, विधारा चारपल ॥ ७ ॥ भिलायां चारपल द्रोण भर, पानीमें, औंठै, जव
 । चौपाईरहै तत्र उत्तरालेय ॥ ८ ॥ छान के प्रसवा त्रिगुना, गुडदे प्रककरै जव प-
 कनितार उठै तत्र ग्रह चूर्णडालै ॥ ९ ॥ चीता, निशोध, जमालगोटाकी जड़ और
 । वच ये पल पल भर त्रिकुटा, इलायची, परिच और नत्र तीन तीनपल इनकोपीस
 । छानके मस्थभर शहद में प्रयोक्त यद् चूर्णयुक्त चैयने सुवाफिकहो मिलावै तत्र बाहु-
 शाल गुड सिद्धहोता है ॥ १० ॥ ११ ॥ यह सब अर्श, गुरुम, वातोदर, आमवात,
 नाकटपकना, सप्रदहणी, क्षयी, पीनस, हलीमक, पांडु और प्रमेह इन सबको जीतता
 है ॥ १२ ॥ (कासपर मरिचादि शुट्टिका) मरिच, पीपरि, कर्प कर्ष भर ।

कर्षोयवक्षारः कर्षयुग्मं च द्वादशिमम् १३ एतच्चूर्णीकृतं यु-
 ज्य्यादष्टकर्षगुडेन हिशाणप्रमाणं वटिकां कृत्वा वक्त्रे विधा-
 स्येत् । अस्याः प्रभावात्सर्वेपिकासायान्त्येव संक्षयम् १४ गु-
 डगुण्ठीशिवामुस्तेर्धारयेद्गुटिकां मुखे । श्वासकासेषु सर्वे-
 षु केवलं वा विभीतकम् १५ आमलकमलंकुष्ठं लाजाश्च वट-
 रोहकम् । एतच्चूर्णस्य मधुना गुटिकां धारयेन्मुखे । तृष्णां
 वृद्धां हरत्येषामुखशोषं द्वादशरुणम् १६ विडङ्गनागरक-
 षणापथ्यासलविभीतकौ । वज्रागुडूचीमल्लान्तं सविषं चा-
 त्रयोजयेत् १७ एतानि समभागानि गोमूत्रेणैव पेषयेत् ।
 गुल्फाभा गुटिकाकार्या दद्याद्दार्द्रकजैरसैः १८ एकामजीर्ण-
 गुल्मे पुद्गे विसूच्यां प्रदापयेत् । तिस्रस्तु सर्पदष्टे तु चतस्र-
 सन्निपातके । वटीसञ्जीवनीनाम्ना संजीवयति मानवम्
 १९ व्योषाम्लवेतसंचवप्यं तालीसंचित्रकंतथा । जीरकं
 तिनित्डीकंच प्रत्येकं कर्षभागिकम् २० त्रिसुगन्धं त्रिशाणं

जवाहार ५ माशे, अनारदाना दो कर्ष ॥ १३ ॥ गुड आठकर्ष में चारि चारि माशे
 की गोली बांधे सो मुख में धरे राखे इस के प्रभावसे सब खांसी जाय ॥ १४ ॥
 (श्वासपर गुडादि गुटिका) गुड, सोंठ, हड, नागरमोषा इन की गोली
 जितने गुड से बंधे गाशे भरकी मुहमें राखे वो सब श्वास कास हर बसे केवल व-
 डेरा रखने से ॥ १५ ॥ (श्वासपर आंवरादिवटी) आंवला, कमल, कूट,
 लाजा, चटजटा इन्हें पीसि शब्द में गोली बांधि गुलमें राख तो महारुपा व मुख
 सुखना दररो ॥ १६ ॥ (सन्निपातपर संजीवनीगुटिका) वायविडंग,
 सोंठ, पीपरि, हड, आंवरा, बहेरा, बच, गुर्घ, भिलावां शुद्धकियाहुआ बृद्धताग ॥
 १७ ॥ इन सबको समान ले गोमूत्र में सरल करे धुंधी समान गोली बांधे व
 अदरसके रसमें थिलावे ॥ १८ ॥ अजीर्ण में गोली एक विमूत्रिका (हज्जा) में
 दो सांप के दसे की तीत सन्निपात में चार इसका संजीवनी वटी नाम है मनुष्य को
 जिज्ञाती है ॥ १९ ॥ (पीनसादि पर त्रिकुटादिवटी) त्रिकुटा, अम्ल-

रघाद्गुडः स्यात्कर्षविंशतिः । व्योपादिगुटिकासामपी
 नसंश्वासकामजित् । रुचिस्वरकराख्याताप्रतिश्यायप्र
 णाशिनी २१ आभेपुसगुडांशुण्ठीमर्जाणैर्गुडपिप्पलीम्ना
 कृच्छ्रेजीरगुडंदद्यादर्शस्सु सगुडाभयाम् २२ वृद्धदारुक
 भङ्गांतशुण्ठीचूर्णेनयोजितः । मोदकःसगुडोहन्यात्ष
 ड्द्विधाशःकृतांरुजम् २३ शुष्कशूरणचूर्णस्यभागान्द्वात्रिं
 शदाहरेत् । भागान्पोडशचित्रस्यशुण्ठ्याभागचतुष्टयम्
 २४ द्वौभागौमरिचस्यापिसर्वमेकत्रचूर्णयेत् । गुडेनपि
 ण्डिकांकुर्यादर्शसांनाशिनीपराम् २५ शूरणोद्वेद्धदारुश्च
 भागैःपोडशभिःपृथक्मुसलीचित्रकौज्ञेयावष्टभागमितौ
 पृथक् २६ शिवाविभीतकौधात्रीविडङ्गनागरंकणा । भ
 ल्लात्पिप्पलीमूलं तालीसंचपृथक्पृथक् २७ चतुर्भाग
 प्रमाणानित्वगेलामरिचंतथा । द्विभागमात्रापिपृथक्स
 र्वास्त्वेकत्रचूर्णयेत् २८ द्विगुणेनगुडेनाथवटिकांकारये

वेतस, चाय,तालीसदल,चीता, जीरा और इमली की छाल ये सब कर्ष कर्षभर ॥
 २० ॥ और तज,पत्रज व इलायची चारि चारि माशे गुड बीस कर्ष यह व्योपादिनाम
 गुटिका पीनस, रवास व फासको नाशकरै रुचिकरै कंठस्वर शुद्धकरै व नाकका
 टपकना बंद करती है ॥ २१ ॥ अंबदोषमें गुड सोंठकी गोली देना, अजीर्ण में
 गुड पीपरि, कृच्छ में गुड जीरा, ववासीर में गुड हड़की गोली देना ॥ २२ ॥
 (अर्शपर पृद्धदारुमोदक) विषास, भिलावां और सोंठ पीसि गुडमें
 गोली बांधिदेइतौ अर्शभातिके अर्शदूरकरै ॥ २३ ॥ (अर्शपर खरनवटिका)
 सूखे सरनका चूर्ण घत्तीसभाग, चीता सोलहभाग, सोंठ चारभाग ॥ २४ ॥
 मरिच दोभाग सब चूर्णकरि गुडमें गोली बाधिखिलावै तौ सब अर्श नाशहोयै ॥
 २५ ॥ (पुनः) सरन निघारा सोलह सोलह भाग लेय मुसली आठभाग और
 चीता भी आठभाग लेय ॥ २६ ॥ त्रिफला, विटंग, सोंठ,पीपरि, भिलावां,पिपरा-
 खल और ताजीम भिन्नभिन्ना २७ ॥ चार चार भाग, तन,इलायची व मरिच दो २

दूबुधः । प्रवलाग्निचक्रुतेतथार्शोनाशनापरा २९ ग्रह
 णीवातकफजांश्वासंकासंक्षयामयम् । स्त्रीहानंश्लीपदंशो
 थंप्रमेहंचभगदरम् । निहन्तिपलितं वृष्यातथामेध्या
 रसायनी ३० त्रिफलात्र्यूषणंचव्यंपिप्पलीमूलचित्रक
 म् । दारुमाक्षिकधातुश्चदार्धीमुस्तंविडङ्गकम् ३१ प्र
 त्येकं कर्षमात्राणिसर्वद्विगुणितंतथा । मण्डूरंचूर्णयेच्छुद्धं
 गोमूत्रेष्टगुणेक्षिपेत् ३२ पक्काचवटकान्कृत्वादद्यात्
 क्रानुपानतः । कामलापाण्डुमेहार्शःशोथकुष्ठकफामयान् ।
 ऊरुस्तम्भमर्जीर्णचस्त्रीहानंशयेदपि ३३ चन्द्रप्रभाव
 चामुस्तंभनिम्बामरदारुच । हरिद्रातिविषादार्धीपिप्पली
 मूलचित्रकान् ३४ धान्यकं त्रिफलाचव्यंविडङ्गजपिप्प
 ली । व्योषंमाक्षिकधातुश्चद्वीक्षारौलवणत्रयम् ३५ ए
 तानिशाणमात्राणिप्रत्येकंकारयेद्बुधः । त्वृद्धन्तीपत्र
 कंचत्वगेलावंशरोचना ३६ प्रत्येकं कर्षमात्राणिकुर्यादेता

भाग इनसबोंका चूर्णकरि ॥ २८ ॥ दूने गुडमें गोलीकाधिखिलावै तौ अग्निप्रमल
 होय और अर्श जाय ॥ २९ ॥ तथा वातकफरुग्ण ग्रहणी, श्वास, कास, क्षयी, स्त्रीहा,
 फीलपाय, शोथ, भमेह, भगदर, वार रचेत होना ये सबमिदें धातुआदि प्रमलकरै यह
 रसायनीहै ॥ ३० ॥ (कामलादि पर मंडूरचटक) त्रिफला, त्रिकुटा, चाव,
 पिपरापूल, चीता, टेवदारु, सोनाभास्वी, हल्दी, नागरमोथा, विडंग ॥ ३१ ॥ ये कर्ष
 कर्ष भर मंडूर शोषकै सबसे दूनाले फिर अष्टगुने गोमूत्रमें ॥ ३२ ॥ पक्काय गोलीवां-
 धि मट्टेके साथ साथ तौ कामला, पाण्डु, भमेह, अर्श, शोथ, कुष्ठ, कफरोग, गटिया,
 अजीर्ण और स्त्रीहा इनको नाशकरै ॥ ३३ ॥ कपर्, वच, नागरमोथा, चिरायता,
 टेवदारु, हल्दी, अतीस, दारुहल्दी, पिपलामूल, चीता ॥ ३४ ॥ घनिकां, त्रिफला,
 चाव, वापविडंग, गजपीपरि, त्रिकुटा, सोनाभास्वी की भूम, सज्जीसार, जवात्वार
 तीनोंलोनि संधा, काला, पांगा ॥ ३५ ॥ ये सत्रव्य चारचार मासे निशोच, जमाल-
 गोटा, पत्रग, तम, इलायची और बंशलोचन ॥ ३६ ॥ इनको कर्ष कर्षभर बुद्धिमान्

निवृद्धिमान् । द्विकर्षहतलोहस्यचतुष्कर्षासितामवेत् ३७
 शिलाजत्वष्टकर्षाः स्युरष्टौकर्षाश्चगुग्गुलोः । एभिरेकत्र
 संक्षरणैः कर्त्तव्यागुटिकाशुभा ३८ चन्द्रप्रभेतिविख्याता
 सर्वरोगप्रणाशिनी । प्रमेहान्विशतिकृच्छ्रस्मत्राघातंत
 थाश्मरीम् ३९ विवन्धानाहशूलानिमेहनंत्रन्धिमर्षुदम् ।
 अण्डवृद्धिकटीशूलंश्वासकासंविचंचिकाम् ४० अन्त्रवृ
 द्धितथापाण्डुकामलाचहलीमकम् । कुष्ठान्यशांसिकण्डुच
 ष्ठीहोदरमगन्दरम् ४१ दन्तरोगनेत्ररोगंस्त्रीणामात्तवजारु
 जम् । पुसांशुक्रगतानोगान्मन्दाग्निमरुचितथा ४२ वा
 तपित्तकफह्न्याद्बल्यावृष्यारसायनी । चन्द्रप्रभायाः
 कर्षस्तुचतुःशाणोविधीयते ४३ यवानीजीरकंधान्यमरि
 च्चिगिरिकणिका । अजमोदोपकुञ्चीचचतुःशाणाः पृथक्
 पृथक् ४४ हिङ्गुषट्शाणिककार्यचारौलवणपञ्चकम् । त
 वृच्चष्टमितैःशाणैः प्रत्येकङ्कल्पयेत्सुधीः ४५ दन्तीशटीपौ
 ष्करंचविडङ्गदाडिमंशिवा । चित्रोम्लवेतसःशुण्ठीशाणैः

लेय लोहभस्म दो कर्ष इन् सबका चूर्णकरि मिश्री चारिकर्ष ॥ ३७ ॥ शुद्धशिला-
 जीत आठकर्ष गुग्गुल आठकर्ष ये सब एकत्रकरि कूटिके गुटिका सुंदर बनाव ॥ ३८ ॥
 यह चन्द्रप्रभेतिगुटिका सर्वरोगनाशकरे नाम प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेहप्रत, पथरी, ॥ ३९ ॥
 विदंब, पेटफूलना, शूल, इद्रिय फूलना, शोथ, अर्बुद, अण्डवृद्धि, कटिशूल, श्वास,
 कास, कुष्ठभेद ॥ ४० ॥ अत्रवृद्धि, पाण्डु, कामला, हलीमक, सबकुष्ठ, सर्वांशु, सन्तुरी,
 प्लीहा, उदररोग, भगदर ॥ ४१ ॥ दन्तरोग, नेत्ररोग, स्त्री का अन्तरोग, पुरुषका धा-
 तुरोग, मन्दाग्नि, यरुचि ॥ ४२ ॥ वात, पित्त, कफ सब नाशकरे बलकरे धातुबनावे
 यह रसायन है दशमांशु वा सोलहमांशु वा दोपवेल विचारिके साथ ॥ ४३ ॥
 (शुल्नपर अजवायमगुटिका) अजवायन, जीरा, यनियां, मिर्च, विष्णु-
 फाता, अजमोद, मनरेला भिन्नभिन्न चारशाण ॥ ४४ ॥ अंजीहनि धह शाण, दूनी
 धार, पांचो लौन और मिशोथ ये पाठ आठशाण ॥ ४५ ॥ जमालगोटा, कचूर

षोडशभिः पृथक् ४६ वीजपरसेनैव गुटिकांकारयेद्बुधः ।
घृतेनपयसामथैरम्लैरुष्णोदकेनवा ४७ पिवेत्काङ्कायन
प्रोक्तांगुटिकांगुल्मनाशिनीम् । मध्येनवातकेगुल्मेगोक्षी
रेणचपैतिके ४८ सूत्रेणकफगुल्मंचदशमूलैस्त्रिदोषजम् ।
उष्नीदुग्धेननारीणारंक्त्वागुल्मंविनाशयेत् ४९ हृद्रोगग्रह
णीशूलकृमीनशांशिनशयेत् । नागरंपिप्पलीचव्यंपिप्प
लीमूलचित्रकौ । भृष्टहिङ्गवज्रमोदाचसर्षपाजीरकहयम्
५० रेणुकेन्द्रयवापाठाविडङ्गजपिप्पली । कटुकातिवि
षाभागीवचामवेतिभागतः ५१ प्रत्येकंशाणिकानिस्युर्द्र
व्याणीमानिविशतिः । द्रव्येभ्यस्सकलेभ्यश्चत्रिफला
द्विगुणांभवेत् । एभिश्चूर्णीकृतैः सर्वैः समोदेयश्चगुग्गु
लुः ५२ वङ्गरौप्यंचनागंचलोहसारंतथाभ्रकम् । मण्डूरं
रससिन्दूरंप्रत्येकंपलसंमितम् ५३ गुडपाकसमंकृत्वाचेमं
दद्याद्यथाचितम् । एकपिण्डंततःकृत्वाधारयेद्घृतभाज

गुग्गुलुमूल, वायविडंग, अनारदाना, बड़ीहड, चीता, अम्लवेतस और सोंठ इन सबको सोलह शाखले चूर्ण करे ॥ ४६ ॥ फिर मिर्चौरफेरसमें बटी चांधै घृत, दूध मध, नींबूरस और उष्णोदक ॥ ४७ ॥ इनके संग काकायनकी कढ़ीहुई गोली बंध खिलाने यह गोली गुल्मको व वातगुल्मको नाशकरे तथा मधमें पित्तगुल्मको गोदुग्ध के संग ॥ ४८ ॥ कफगुल्मको गोमूत्र संग त्रिदोषज गुल्मको दशमूलके कथसाथ स्त्री के रक्तगुल्मको उष्नीदुग्ध संगदेय तो ॥ ४९ ॥ हृद्रोग, ग्रहणी, शूल, हृमिरोग और बवासीरों को नाशकरे (वातादिरोगपर योगराजगुग्गुलु) सोंठ, पीपरि, चाव, पिपलामूल, चीता, मुनीर्डींग, अजमोद, सरसों, दोनों जीरे ॥ ५० ॥ मेव-डीबीज, इद्रयव, पादा, वायविडंग, गंजपीपरि, कुटकी, अतीस, भारंगी, चव, सुर्वा और गुग्गुलु ॥ ५१ ॥ ये सब शारंगशाखभर साका दूना त्रिफलेका चूर्ण सब चूर्ण के समान शुद्ध गुग्गुलु ॥ ५२ ॥ वंग, लपरस, नागेश्वर, लोहा, अभ्रक, मं-दूर और रससिंदूर इनको पल पल भरदे ॥ ५३ ॥ गुडपाक करि रस और सब

मृजीर्णं च व्यवायं श्रममातपम् । मद्यरोषं त्यजेत्सम्यग्गु
णार्थी पुरसेवकः ॥ ७३ ॥ त्रिपलं त्रिफला चूर्णं कृष्णा चूर्णं पला
न्मितम् । गुग्गुलुः पञ्चपलिकः क्षौद्रयेत्सर्वमेकतः ॥ ७४ ॥
ततस्तु वटिकां कृत्वा प्रयुञ्ज्याद्ब्रह्मपेक्षया । भगन्दरं गुल्म
शोथावशीसि च विनाशयेत् ॥ ७५ ॥ अष्टाविंशतिसङ्ख्या
न्निपलान्यानीयगोक्षुरात् । विपचेत्पङ्गुणे नीरे क्रायोप्रा
ह्योऽर्द्धशेषतः ॥ ७६ ॥ ततः पुनः प्रचेत्तत्र पुरं सप्तपलं क्षिपे
त् । गुडपाकसमाकारं ज्ञात्वा तत्र विनिक्षिपेत् ॥ ७७ ॥ त्रिक
टुत्रिफलांस्तु चूर्णितं पलसप्तकम् । ततः प्रिण्डीकृतस्यां
स्य गुटिकां मुपयो जयेत् ॥ ७८ ॥ हन्यात्प्रमेहं कृच्छ्रं च प्रद
रं मूत्रघातकम् । वातास्रं वातरोगांश्च शुक्रदोषं तथा श्म
शीम् ॥ ७९ ॥ त्रिकला त्रिपलाकार्या भिन्ना तानां चतुष्पलम् । वा
कुची पञ्चपलिका विडङ्गानां चतुष्पलम् ॥ ८० ॥ हतलोहं तट्ट
चैव गुग्गुलुश्च शिलाजतु । एकैकं पलमात्रं स्यात्पलाद्वै

कायसंग गुल्म दूरकरे ॥ ७२ ॥ वसुधिरादिकाय संग वण च कुष्ठ दूरकरे व खट्वी,
नीक्षिण, मैथुन, श्रम, घाम, मद्य और क्रोध इन सबोंको त्यागकर जो गुण्य त्राहै तो
संयम से रहै ॥ ७३ ॥ भगन्दर पर त्रिफला गुग्गुलु (त्रिफला चूर्ण तीन पल,
विपपली चूर्ण) पलभर और शुद्धगुग्गुलु पांचपल इनको पीसिके एकत्रकरे ॥ ७४ ॥
गोली घांघि रोगीकी अग्नि विचारिके देय तो भगन्दर, गुल्म, शोथ और खट्वी अर्ध
दूरहोयै ॥ ७५ ॥ (प्रमेह गोक्षुरादिगुग्गुलु) गोक्षुर अर्द्धाईसपल, क्षुः गुणे पानी
में कादाकरि अर्द्ध शेषले ॥ ७६ ॥ फिर सातपल गुग्गुलुदे पकायै जब गुड पाकसाहो
तब जो अर्ध्य कहताहूँ सो पीसकरे ॥ ७७ ॥ त्रिकुटा, त्रिफला और नागरमोथाये
सातों पलपलभरमिलाय पीधीकरि गोलीघांघि तो ॥ ७८ ॥ प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, मदर, मू
त्राघात, वातरक्त, वातरोग, शुक्रदोष और मयरी ये सब नस्यहोयै ॥ ७९ ॥ (कुष्ठ
पर त्रिफला मोदक) त्रिफला तीनपल, भिलायांचार, बकुची पांच, विडंग
चार ॥ ८० ॥ लोहप्रस, निशोध, गुग्गुलु और शिलाजीत इन सबोंको एक एकपल,

पौष्करं भवेत् ८१ चित्रकंस्यपलाद्धस्यात्रिशणं मरिचं भवेत् । नागरं पिप्पलीमुस्तात्वगेलापत्रकुङ्कुमम् ८२ शाणोन्मितस्यादेकैकचूर्णयेत्सर्वमेकतः । ततस्तत्प्रक्षिपेच्चूर्णम्पक्वखण्डे च तत्समे ८३ मोदकान्पलिकान्कृत्वा प्रयुञ्जीत यथोचितान् । हन्युः सर्वाणिकुष्ठानि त्रिदोषप्रभवा मयान् ८४ भगन्दरं ह्रीं गुल्माग्निज्ज्ञोतालुगलामयान् । शिरोक्षिभ्रूगतानो गानन्यान्पृष्ठगतानपि ८५ प्राग्भोजनस्य देयस्यादधः कायस्थिते गदे । भेषजं भुक्तमध्ये च रोगे जठरसंस्थिते । भोजनस्योपरि ग्राह्यमध्वजन्तुगदेषु च ८६ काञ्चनारत्वचोग्राह्यपलानां दशकचूर्णैः । त्रिफलापट्टपलाग्राह्यात्रिकटुः स्यात्पलत्रयम् ८७ पलैकं वरुणं कुर्यादलात्वकपत्रजंतथा । एकैकं कर्षमात्रं स्यात्सर्वाण्येकत्र चूर्णयेत् ८८ यावच्चूर्णमिदं सर्वं तावन्मात्रस्तु गुग्गुलुः । सङ्कुट्य सर्वमेकत्र पिण्डं कृत्वा चंधारयेत् ८९ गुटिकाः शायमात्रेण प्रातर्ग्राह्या यथोचिताः । राण्डमालां जयत्युग्राम

पुष्करमूल अर्द्धमूल ॥ ८१ ॥ चीता अर्द्धमूल, मिर्चे दो शाण, सोंठि, पीपरि, मोथा, तज, इलायची, पत्रज, केशर ॥ ८२ ॥ इनसबों को शाण शाण भर ले चूर्णकरि सबचूर्ण समान सांडले पाककरि चूर्णकरि गोली बनावे ॥ ८३ ॥ पलपलमित मोदकवनाय रोग बलदेसि रोगीको खिलावे तो सबकुष्ठ नाशहोयै व-त्रिदोष जन्य रोग ॥ ८४ ॥ भगन्दर, प्लीहा, गुल्म, जिद्धा, तालुरोग, शीब, शिर, नेत्र, भौंह और पीठ इन सबोंके रोग नाशहोयै ॥ ८५ ॥ शरीरके नीचेके रोगनमें भोजनादि औपधि देना भंडाग्निजमित में भोजन के मध्यदेय शिरःसंबन्धी रोगन में भोजनांत समयमें देना ॥ ८६ ॥ (गंडमालापर कचनार गुग्गुलु) कचनारखाल दशमल त्रिफला छःपल, त्रिकुट्टा तीनपल ॥ ८७ ॥ वरुण एकपल, इलायची तज, पत्रज, कर्ष कर्षपर इनसबों को एकत्रकरि चूर्णकरै ॥ ८८ ॥ सर्व चूर्णके समान गुग्गुलु पीसि चूर्णमें मिलाय पिंड बनावे ॥ ८९ ॥ चारिमाशेकी गोली बनाय

पचीमधुदानिच । ग्रन्थीनत्रणांश्चगुल्मांश्चकुष्ठानिचम-
 गन्दरम् ९० प्रदेयश्चानुमानार्थकाश्रोमुण्डितिकाभवः ।
 काथःखदिरसारस्यपथ्याक्रोथोदकोष्णकम् ६१ निस्तुपं-
 मापचूर्णस्यात्तथागोधूमसम्भवम् । निस्तुष्यवचूर्णचशा-
 लितण्डुलजंतथा ६२ सूक्ष्मंचपिप्पलीचूर्णपलकान्युपक-
 ल्पयेत् । एतदेकीकृतं सर्वभर्जयेद्गोधूतेनच ९३ अर्द्धमात्रे-
 णसर्वेभ्यस्ततःखण्डसमाक्षिपेत् । जलंचद्विगुणंदत्त्वापाच-
 येत्तंशनैःशनैः ६४ ततःपक्वंसमुद्धृत्यमोदकंचपलोन्मित-
 म् । कुर्यात्सायंचतंभुक्त्वापिवेक्षीरंचतुर्गुणम् ६५ वर्जनी-
 योविशेषेणक्षाराम्लौद्धौरसावपि । कृत्वैवंरमयेन्नारीवह्नीर्न-
 क्षीयतेनरः ९६ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेवटककल्पना-
 सप्तमोऽध्यायः ७ ॥

काथादीनांपुनःप्राकादघनत्वंसारसक्रिया । सोवलेह-
 श्चलेहःस्यात्तन्मात्रास्यात्पलोन्मिता १ सितांचतुर्गुणाः

रोगपल व ओपधिवल देलि रोगीको भातस्तमय देय तो गढमाला, अपची, अ-
 र्धुद, ग्रंथि, घाव, कुष्ठ, भगंदर ये नाशहोयें ॥ ९० ॥ (अस्यानुमानं) गुण्डीका
 काथ वा खैरसारका काथ वा हड़का काथ उष्णोदक में देय ॥ ६१ ॥ (घालु
 मुष्टिपर बापादि मोदकं) माप कहे उरददालि घोय चूर्णकरिलेय गेहूंचूर्ण,
 यबकी गूदीकाचूर्ण, साठी चाउरका चूर्ण ॥ ६२ ॥ और पीपरि चूर्ण इनसबों को
 पलपल भरले सब चूर्णों का आधा गोघृत दे भूजें ॥ ६३ ॥ चूर्णोंके समान खांड
 लें तब सबका दूना जलद्वारि मन्द मन्द आंचदे घोटें ॥ ६४ ॥ जब सिद्धहोजाय
 तब पलपलभरके लड्डू खांघि सांभको खाय उसपर चारिपल दूधपिये ॥ ६५ ॥ फिर
 सार और खटाई दो रस न खाय स्त्री असंग करै तो वीर्य न द्रव देह पुष्टरहे ६६ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरमुखाकरसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

(अथाचलेह कल्पना) द्रव्यको काथसदृश औटावे फिर विशेष आंच देय
 जब गाढ़ाहोय तब अचलेह कहे लेहभी कहते हैं, मात्रा चारिमुद्रा भर ॥ १ ॥ चूर्ण से

कार्याचूर्णाच्चद्विगुणोगुडः ॥ १ ॥ द्रवंचतुर्गुणंदद्यादितिसर्वत्र
 निश्चयः ॥ २ ॥ सुपकेतुमत्वंस्योदवलेहोप्सुमञ्जति । ख
 रत्वंपीडितेमुद्रांगन्धवर्णरसोद्भवम् ॥ ३ ॥ दुग्धमिक्षुरसंयुषं
 पञ्चमूलकषाघ्नम् ॥ ४ ॥ वासाक्काथंयथायोग्यमनुपानंप्रश-
 स्यते ॥ ५ ॥ कण्टकारीतुलानीरंद्रोणपक्त्वाकषायकम् । पाद
 शेषंगृहीत्वाचतस्मिश्चूर्णानिदापयेत् ६ ॥ पृथक्पलानिचै-
 तानि गुडूचीत्वयचित्रकाः ॥ ७ ॥ मुस्ताकर्कटशृङ्गीचत्रयूषणं
 धन्वयासकः ६ ॥ भार्गीरास्नाशटीचैवशर्करापलविंशतिः ।
 प्रत्येकंचपलान्यष्टौ प्रदद्याद्घृततैलयोः ७ ॥ पक्त्वालेहत्व
 मानीयशीतेमधुपलाण्टकम् । चतुष्पलंतुंगाक्षीर्याःपिप्प
 लीनांचतुष्पलम् ८ ॥ क्षिप्रानिदध्यात्तुद्वेष्टेष्टमयेभाजनेशु-
 भे । लेहोयंहन्तिहिकात्तिश्वासकासानशेषतः ९ ॥ पाटलार
 णिकाश्मर्यत्रिल्वारलुकंगोक्षुराः । पाण्यौबृहत्थौपिप्पल्यः
 शृङ्गीद्राक्षामृताभयाः १० ॥ वलाभूम्यामलीवासा ऋद्धि

मिथी चौगुनीदेना गुडूदना द्रव्यादि चौगुने सह सर्वा रीतिहै ॥ २ ॥ जब आंचदेने
 पर तारबधे आ पानीमें पाककी बूंद न बूड़े न गुले तत्र सिद्ध जानै और अंगुरीके
 दधाने स मुद्गदधै तव मुग्ध रसादि डारै ॥ ३ ॥ और दूध से ऊखले उत्पदि दस्तु
 यूषत पंचमूल कायसे रसा कायसे इन अनोपानसे देना अथवा और जो रोगोचित
 अनोपानसे सो देना ॥ ४ ॥ (हिचकी और कास श्वासपर भटकटैया-
 चलेह) भटकटैया चारिसरले द्रोणभरनेलमें औटै जप चौथाईरहै तप उसमें चूर्ण
 डारै ॥ ५ ॥ गुर्च, चार, चीता, नागरमोथां, काकड़ासिंगी, त्रिकुटा, जवासा ॥ ६ ॥ भार्गी
 रास्ना और कचूर ये सब पलपल भरले शृङ्गीरै शकर धीसपल घृत आठपल गेल
 आठपल ॥ ७ ॥ ये सब कादे में औटै अबलेह सिद्ध हो वंदाकरि आठपल शहद,
 बंशलोचन चारिपल, पिप्पली चूर्ण चारिपल मिलाय ॥ ८ ॥ उत्प पानमें राखै
 इसे अबनेह तो हिचकी, रसास, वे कास, को अशेषतासे नाशकरै ॥ ९ ॥ (क्ष-
 यादि पर च्यवन प्राशाचलेह) तिरस, अग्निमय, लगारी, पाटल, गेल, रयो-

प्योऽवृंहणोऽवलकृन्मतः २८ युक्त्याकूपमाण्डखण्डवशूर
 णंविपचेत्सुधीः । अर्शिसामूढवातानामन्दाग्नीनांचयुज्यते
 २९ हरीतकीशतंभद्रयंत्रानीमाढकंतथा । प्लानिदशमू
 लस्यधिशतिश्चनियोजयेत् ३० चित्रकःपिप्पलीमूलम
 पामार्गःशटीतथाः । कपिकेच्छूःशङ्खपुष्पीभाङ्गीचगजपि
 प्पली ३१ बलापुष्करमूलंचपथग्निप्लमात्रया । पचेत्
 त्पञ्चाढकेनरिथवैःस्विन्नैःशृतंनयेत् ३२ तच्चाभयाशतंद्र
 यात्काथेनास्मिन्विचक्षणः । सपिस्तेलाष्टपलकंधिपेद्गु
 डतुलांतथा ३३ पक्त्वालेहत्वमानीतेसिद्धशीतेपृथक्पृथक्
 क्षौद्रञ्चपिप्पलीचूर्णदद्यात्कुडवमात्रया ३४ हरीतकीद्वयं
 खादेत्तेनलेहेतनित्यशः । चयंत्रकासंज्वरश्वासंहिकाशौरु
 चिपीनसान् ३५ ग्रहणीनाशयेदपवलीपलितनाशनः ।
 वलवर्णकरःपुंसामवलेहोरसायनः । विहितोऽगस्त्यमुनि
 नासर्वरोगप्रणाशनः ३६ कुटजत्वक्तुलाद्रोणेजलस्यवि

कूपमाण्ड अवलेह बाल एढको देना छाती पुष्कर बीर्य बढ़ावे व बलको करे ॥
 २८ ॥ (अर्शपर खंड कूपमाण्डावलेह) जैसे कुम्हड़ा की विधिहै सोई शूरन
 की भी है पेदा अर्श जर्मिकुन्दकी छोटी कर्च करि दोनोंको एकत्र करि उसी रीतिसे
 अवलेह बनाय गिलावे तो अर्श, मूढवात और मन्दाग्नि ये सब अच्छेहोयें ॥२९॥
 (क्षयीपर अगस्त्य हरीतकी) बढ़ीहईं सौ, अत्रघायन एकआढक, दशमूल
 बीसपल ॥३०॥ चीता, पीपरामूल, चिंदिरा, कचूर, केचोच, कौड़ला, भारंडी, गजन
 पीपरि ॥३१॥ घरिपारा और पुष्करमूल सब दूई पल पांच आढक जलमें पचाय
 गलाय उतारि छानलेय ॥३२॥ तिसमें सौ, हड़, तेल, घी, आठ पल, गुड़तुलाभटे
 देकर ॥३३॥ पकावे ठंडाकरि शहद चभीपरिका नूर्ण ये सब एकएक कुडवदार ॥
 ३४॥ इस अवलेह के संग दो हड़ नित्यखाये तो क्षयी का रोग, कास, ज्वर, रसास
 हिचकी, अर्श, अरुचि, पीनस ॥ ३५ ॥ और ग्रहणी ये रोग नाशहोयें बलवन्त हो
 रवेतबालकूपणहैं रुग्णहो पुरुषको यह अवलेहरसायनहै यह अगस्त्यमुनिकी बही
 हरीतकी सब रोगोंको नाश करती है ॥ ३६ ॥ (अर्शपर कुरैया अवलेह)

पत्रैस्सुधीः । कषायपादशेषंचगृह्णीयाद्वह्नागालितम् ॥ ३७ ॥
 त्रिंशत्पलंगुडस्यात्रदत्त्वाचविपचेत्पुनः ॥ सान्द्रत्वमाग
 तं दृष्ट्वाचूर्णानीमानिदापयेत् ॥ ३८ ॥ रसाञ्जनमोचरसंत्रि-
 कटुत्रिफलांतथा । लज्जालुचित्रकंपाठां विल्वमिन्द्रयवंव
 चाम् ॥ ३९ ॥ भल्लातकंप्रतिविषाविडङ्गानि च्वालकम् । प्र
 त्येकंपलसंगानघृतस्यकुडवंतथा ॥ ४० ॥ सिद्धशीतेततोद्
 र्यान्मधुनःकुडवंतथा । जयेदेषोवलेहरतुसर्वाण्यशीसि
 वेगतः ॥ ४१ ॥ दुर्नामप्रभावानोगानतीसारमरोचकम् । ग्रह
 णीपाण्डुरोगं चरक्तपित्तंचकामलाम् । अम्लपित्तंतथाशोथं
 कासंचैवप्रवाहिकाम् ॥ ४२ ॥ अनुपानेप्रयोक्तव्यमाजंतक्रंप
 योदधि । घृतंजलंवाजीर्णंचपथ्यभोजीभवेन्नरः ॥ ४३ ॥ कुट
 जत्वक्तुलामाद्रीद्रोणनीरेविपाचयेत् । पादशेषंशृतंनीत्वा
 चूर्णान्येतानिदापयेत् ॥ ४४ ॥ लज्जालुर्धातकीविल्वंपाठामो
 चरसस्तथा । मुस्तंप्रतिविषाचैवप्रत्येकंस्यात्पलंपलम् ॥ ४५ ॥
 ततस्तुविपचेद्ग्नौयावहार्वांप्रलेपनम् । जलेनच्छागदु

कुरैयाकी छाल तुलाभर एकद्रोण पानीमें पचावै जब चौपाई शेष रहै तब दत्तारि
 वल्लसै दानलोप ॥ ३७ ॥ फिर तीसपल गुडदे मवायै गाढाभयै यह चूर्ण दारै ॥
 ३८ ॥ रसाव, मोचरस, त्रिकुटा, त्रिफला, लज्जालु, धीता, पादा, वेन, इन्द्रजर,
 लवच ॥ ३९ ॥ भिलावां, अनीस, विडङ्ग, और सुगन्धमाला ये पलपल भर घी
 कुडभर ॥ ४० ॥ दंडापरे कुडवभर; शहद-दे, यह अवलेह सर्वाशफो वेगधी दूर-
 कारताहै ॥ ४१ ॥ दुर्गमरोग, अतीसार, अरधि, अदृणी, पाहु, रक्त पित्त, कामला,
 अम्लपित्त, शोथ, रसांभी और प्रवाहिका ये सब दूरहोयें ॥ ४२ ॥ (तस्यानु-
 पानम्) जगरीका दूध नामदडा दही घी खसीका या पानी भोजन के पारन
 समय ओपधिलाय ॥ ४३ ॥ (सर्वातीसारपर कुरैयाष्टरु) गीलीणकुतुलाकुरैया
 की छाल द्रोण भर पानीमें पचावै जब चौपाई शेष रहै तब यह चूर्ण दारै ॥ ४४ ॥
 लज्जालु, धवकूनु, वेन, पादा, मोचरस, नागरमोथा और अनीस ये पलपल भर

पयोवृंहणोवैलकृन्मतः २८ युक्त्यांकूष्माण्डखण्डजशर-
 णंविपचेत्सुधीः । अर्शसांमूढवातानामन्दाग्नीनांचयुज्यते
 २९ हरीतकीशतंमद्रयवानीमाढकंतथा । पलातिदशमू-
 लस्यधिशतिश्चनियोजयेत् ३० चित्रकःपिप्पलीमूलम-
 पामार्गःशटीतथाः । कपिकेचूःशङ्खपुष्पीभाङ्गीचगजपि-
 प्पली ३१ बलापुष्करमूलत्रयपृथग्द्विपलमात्रया । पचे-
 त्पञ्चाढकेनीरेयवैःस्विन्नैःशतंनयेत् ३२ तन्नाभयाशतंद-
 द्यात्काथेनास्मिन्विचक्षणः । सर्पिस्तैलोष्टपलकक्षिपेद्गु-
 डतुलांतथा ३३ पक्त्वालेहत्वमानीतेसिद्धशीतेपृथक्पृथक्
 क्षौद्रञ्चपिप्पलीत्रूणंदद्यात्कुडवमात्रया ३४ हरीतकीद्वयं
 खादेत्सेनलेहेनित्यशः । क्षयंकासंज्वरंश्वासंहिक्काशौरु-
 चिपीनसान् ३५ ग्रहणीनिशयेदपवलीपलितनाशनः ।
 बलवर्णकरःपुंसामवलेहोरसाग्रनः । विहितोगस्त्यमुनि-
 नासर्वरोगप्रणाशनः ३६ कुटजत्वक्तुलांद्रोणेजलस्यवि-

कूष्माण्ड अबलेह बाल छद्मको देना खाती पुष्करै रीधे बहावे व पलको करे ॥
 २८ ॥ (अर्श पर खंड कूष्माण्डाचलेह) जैसे कुम्हड़ा की विधि है सोई गुरन
 की भी है पेडा थार जमीतन्दकी छोटी कचें करि दोनोंको एकत्र करि उती रीतिसे
 अबलेह बनाय सिलावे तो अर्श, मूढवात और मन्दाग्नि ये सब अच्छेहोयें ॥२९॥
 (क्षयीपर अगस्त्य हरीतकी) बड़ीहईं सौ, अजवायन एकआइकः दशमूल
 बीसपल ॥३०॥ चीता, पीपरामूल, सिंदिरा, कचूर, केवांचाकौड़ाला, भारद्वा, गज-
 पीपरि ॥३१॥ घरियारा और पुष्करमूल सब दूँदैं पल पांच आढक जलमें पचाय
 गलाय उतारि छानलेप ॥३२॥ तिसमें सौ हड़, तेल, ग्री, आठ पल, गुड़कुलाभर
 देकर ॥३३॥ पकावै ठंडाकरि शहद चमीपरिदा चूर्ण ये सब एकएक कुड़वहारें ॥
 ३४॥ इस अबलेह के संग दो हड़ नित्यरिावे तो क्षयी का रोग, कास, ज्वर, र्वास,
 हिचकी, अर्श, अरुचि, पीनस ॥ ३५ ॥ और ग्रहणी ये रोग नाशहोयें बलपन्त हो
 र्बेन बालकूष्णहो र्बानहो पुंरुपको यह अबलेहरसायनहै यह अगस्त्यमुनिकी बह
 हरीतकी सब रोगोंको नाश करती है ॥ ३६ ॥ (अर्शापर कुरैया अबलेह)

पचेत्सुधीः । कपायंपादशेषंचगृहीयाद्द्वलगोलितम् ॥ ७
 त्रिंशत्पलंगडस्यात्रदत्त्वाचविपचेत्पुनः ॥ ८ ॥ सान्द्रत्वमाग
 तं दद्याच्चूर्णानीमानिदापयेत् ॥ ९ ॥ रसाञ्जनमोचरसंत्रि-
 कटत्रिफलांतथा । लज्जालुडिचत्रकंपाठांविश्वामिन्द्रयवंच
 चाम् ॥ १० ॥ भल्लातकंप्रतिविषांविडङ्गानिचवालकम् । प्र
 त्येकंपलसंमानंघृतस्यकुडवंतथा ॥ ११ ॥ सिद्धशीतेततोद्
 व्यान्मधुनःकुडवंतथा ॥ १२ ॥ जघेदेषोवलेहस्तुसर्वाण्यशांसि
 वेगतः ॥ १३ ॥ दुर्नामप्रभावानोगानतीसारमरोचकम् । ग्रह
 णीपाण्डुरोगंचरक्तपित्तंचकामलाम् । अम्लपित्तंतथाशोथं
 कासंचैवप्रवाहिकाम् ॥ १४ ॥ अनुपानेप्रयोक्त्वयमाजंतक्रंप
 योदधि । घृतंजलंवाजीर्णंचपथ्यभोजीभवेत्तरः ॥ १५ ॥ कुट
 जत्वक्तुलामाद्रीद्वोणनीरेविपाचयेत् । पादशेषंशुतनीत्वा
 चूर्णान्येतानिदापयेत् ॥ १६ ॥ लज्जालुर्घातकीविश्वपाठाभो
 चरसस्तथा । मुस्तंप्रतिविषाचैवप्रत्येकस्यात्पलंपलम् ॥ १७ ॥
 ततस्तुविपचेद्गन्धौषावहार्वांप्रलेपनम् । जलेनच्छागदु

गधेनपीतोमण्डेनवाजयेत्-४६-घोरान्सर्वानतीसारान्ना
नावर्णान्सवेदनान् । असृग्दरंसमस्तंचसर्वांशीसिप्रवाहि
काम् ४७ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेऽवलेहकल्पना
ष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

कल्काच्चतुर्गुणीकृत्यघृतंवातैलमेवच । चतुर्गुणेद्रवे
साध्यंतस्यमात्रापलोन्मिता ऽ निक्षिप्यक्वाथयेत्तोयंक्वाथ्य
द्रव्याच्चतुर्गुणम् । पादशिष्टं गृहीत्वाचरनेहस्तेनैवसाध
येत् २ चतुर्गुणंमृदुद्रव्येकाठिन्येष्टगुणंजलम् । अत्यन्त
कठिनेद्रव्येनीरंषोडशिकंमतम् ३ तथा च मध्यमेद्रव्ये
दद्यादष्टगुणंपयः । कर्षादितःपलंयावद्दद्यात्षोडशिकंज
लं ४ ततस्तुकुडवंयावत्तोयंचाष्टगुणंभवेत् । प्रस्थादि
तःक्षिपेन्नीरेखारीयावच्चतुर्गुणम् ५ अम्बुकाथरसैर्यत्रपृथ
क्स्नेहस्यसोधनम् । कल्कस्यांशंतत्रदद्याच्चतुर्थपष्ठम

ले ॥ ४५ ॥ फिर उसी राखे को थोड़ा जललग करती में लिपटने लगे तब सिद्ध
जानो सो इकरी पय या पानी वा भाटके संग पिथे ॥४६॥ तो सर्व अतीसारकी घोर
वेदना निटतहो व सचभाति रक्तवाह, सर्वांश और मवाटिकाको दूरकरताहै ४७ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरमुभाकरेणविरचितेवलेहकल्पनाष्टमोऽध्यायभा ८ ॥

(अथ घृत तेल साधना) कल्कसो चौगुना घृत या तेल और क्वाथदि
द्रव्यभी चौगुनी देना तिसकी मात्रा एकपल भरहै ॥१॥ इस द्रव्यका क्वाथदेनाहो तो
चौगुने जल में थोड़ा जप चौथाईरहै तब खतारिधानिले उसमें धी तेल सिद्ध करै ॥
२ ॥ कोमलद्रव्य में चतुर्गुणा जल कठोर में आठगुणा और अत्यन्त कठोर में
सोलहगुणा जल दे ॥ ३ ॥ मध्यमें अष्टगुणा जलदेवै (युक्तविधि) उपयाभरै
से चाररुगया भरताई में सोलहगुणापानीदे क्वाथकरे पलसे कुड़वाई अष्टगुना
अस्य से सारीपर्यंत चौगुनादे ॥४५॥ और जो केवल कल्क पानी धी व तेलमें
सिद्ध करै तो चतुर्थांश कल्कदे सेरभर तेल पाससेर पल्क और जो वल्क पादेके
संग धी तेल पकावे तो घृत तेलका पष्टाश कल्क देना तीनराव में आठपाव
और जब कल्कसेके संग धी वा तेल में पकावे तो तेलका अष्टमांश कल्क देना

घृतम् ॥ ६ ॥ दुग्धेदधिरसेतके कल्केदेयोष्टमांशकः । क
 ल्कस्यमम्यकपाकार्थतोयमत्रचतुर्गुणम् ७ द्रव्याणियत्र
 स्नेहेषुपञ्चादीनिभवन्तिहि । तत्रस्नेहसमान्याहुर्वथा
 पूर्वचतुर्गुणम् ८ द्रव्येणकेवलेनैवस्नेहपाकोभवेद्यदि ।
 तत्राम्बुपिष्टः कल्कः स्याज्जलंचात्रचतुर्गुणम् ९ काथेन
 केवलेनैवपाकोयत्ररितःकचित् । काथ्यद्रव्यस्यकल्कोपि
 तत्रस्नेहेप्रयुज्यते १० कल्कहानस्तुयः स्नेहःससाध्यःके
 वलेद्रवे । पुष्पकल्कस्तुयत्स्नेहस्तत्रतोयंचतुर्गुणम् । स्ने
 हात्स्नेहोष्टमांशश्चपुष्पकल्कःप्रयुज्यते ११ वर्त्तिवत्स्ने
 हकल्कःस्याद्यदाङ्गुल्याविमर्दितः । शब्दहीनोऽग्निनिः
 श्लिप्तःस्नेहसिद्धोभवेत्तदा १२ यदाफेनोद्गमस्तैलेफेनशा
 न्तिश्चसर्पिष्णिगन्धवर्णरसोत्पत्तिःस्नेहसिद्धिस्तथाभवेत्
 १३ स्नेहपाकस्त्रिधाप्रोक्तोमृदुर्मध्यःखरस्तथा । ईषत्सरस

सेर में आधपात्र घृत तेल का प्रमाण यही है ॥ ६ ॥ दूध, दही, रस और मद्य
 इनमें आधपात्र कल्क देय और कल्क भलीभाँति पकाने के कारण चौगुना जल
 देना चाहिये ॥ ७ ॥ और जहाँ कल्क घी तेन काय पाय पांचों होयें तहाँ स्ने-
 हादिक समान देना पानी चौगुना देइ ॥ ८ ॥ जब एकही द्रव्य घृत व तेलमें
 पकानी होय तौ जलमें द्रव्य पीसि गला वा कल्ककरि चौगुने पानी में पचावै ॥
 ९ ॥ जो केवल काठे में रुहाहो तहा उसी काथकी द्रव्यका कल्ककरि घृत वा
 तेलयुक्त वह काढा और चौगुना पानीदे पकाना ॥ १० ॥ जहाँ कल्क रहित है
 तो केवल द्रववस्तु में दूध पानी देके पकालेना जब फूलके कल्क में स्नेह सिद्ध
 कहेंगे तब चौगुना पानी देंगे जब स्नेह से स्नेह सिद्ध कहेंगे तब स्नेहका अष्ट-
 मांश दूसरा स्नेहले पुष्प कल्कयुक्त पकालेना ॥ ११ ॥ जब वह स्नेह पाक अं-
 गुरीमें लेके गलसे गोलो बनजाय उसे आगपर डारै और जलसे शब्द चिंचिरा-
 हट न करे तब सिद्धभया जानो ॥ १२ ॥ तेल फेनउठने से सिद्धजानिये घृत फेन
 शान्तिसे सिद्ध जानिये जब गंध आवै और निर्मल होजाय औरसे उत्पत्तिकरै तब
 घृत वा तेल सिद्धभया जानिये ॥ १३ ॥ स्नेहपाक तान प्रकारकाहै—मृदु मध्य और

कल्कस्तुस्नेहपाकोमृदुर्भवेत् १४ मध्यपाकश्चसिद्धिश्च
 कल्केनीरसकोमले । ईपत्कठिनकल्कश्चस्नेहपाकोभवे
 त्खरः १५ तदूर्ध्वद्वयपाक, रयादाहकृद्विष्प्रयोजनम् ।
 आमपाकश्चनिर्वीर्योवह्निमान्द्रुकरोगुरु, १६ नस्यार्थस्या
 मृदुपाकोमध्यमःसर्वकर्मम् । अथ्यङ्गार्थस्वर, प्रोक्तोयु
 ज्ञ्यादेव्यथोचितम् १७ घृततेलगुडादोश्चसाधयेन्नकना
 म्भरे । प्रकुर्वन्त्युषिताद्येतेविशेषाद्गुणसञ्चयम् १८ पिप्प
 लीपिप्पलीमूलंचव्यचित्रकनागरै । ससैन्धवैश्चपलिकैर्घृ
 तप्रस्थविपाचयेत् १९ क्षीरंचतुर्गुणंदत्त्वात्तत्सिद्धंलहनाश
 नम् । विषमज्जरमन्दाग्निहरंरुचिकरंपरम् २० पिप्पलीपि
 प्पलीमूलंचित्रकोहरितपिप्पली । श्वदंष्ट्रानागरंधान्यंपाठा
 धिल्वंयवानिकी २१ द्रव्यैश्चपलिकैरैतैश्चतुःषष्टिपलं,
 घृतम् । घृताच्चतुर्गुणंदेयंचाङ्गेरीरसंसंबुध्नोः २२ तथाच
 तुर्गुणंदत्त्वादधिसर्पिर्विपाचयेत् । शनैःशनैर्विपक्तव्यंचा
 ङ्गेरीघृतमुत्तमम् २३ तद्घृतंकफवातघ्नंशुष्यशोधिकार
 २४ जो कल्क मोमवत् रहे तो मृदु जानिये ॥ १४ ॥ जो कल्क निरसहो कुछ को
 मल रहै तो मध्य जानिये जो कल्क निरस और कठोर होजाय तो सरा जानिये ॥
 १५ ॥ जो इस प्रमाणसे अधिक सो रेतो जानो स्नेह विगड गया अकार्य गया
 जो च्छा रहै ता सेवनकरते से मन्दाग्निकरै और भारीहो ॥ १६ ॥ नास लेने को
 नरम दितहै मध्यम सर्वे कार्यसापक है सरा मर्दनही है जहा जैमा चाहै तहा तैसा
 बनावै ॥ १७ ॥ घृत, तेल और गुड एकदिन न सावै दिनाठरदे चरे तो अधिक
 गुणकरे ॥ १८ ॥ (पिप्पलीपर क्षीर पट्टपल) पीपरि, पीपरामूल, चाय, चीता,
 मॉति और मेषौ के सब पल पलभरल प्रस्थभर ही में पचावै ॥ १९ ॥ दूध चांगुना
 जन् मिदहो न्य यह पी प्लीहाको नाश करता हुआ विषमजर प मर्दाग्निको दूरकर
 रपिकोकर (सग्रहणी अतोसारपर चा गरीवृत्त ॥२०॥ पीपरि, पीपरामूल,
 चीता, राजपीपरी, गुडुह स डि, धानिया, पीदा बेल और अजवयन ॥ २१ ॥ ये
 पलप न भर औरैची चासठिपल क्षेत्री लुनिपाका रत २४६ पलदे ॥ २२ ॥ अर्थात् २५६

नुत् । इत्यानाहं गुदभ्रंशमूत्रकृच्छ्रप्रवाहिकाम् २४ मसू
 राणांपलशतं नीरद्रोणे विपाचयेत् । पादशेषशतं नीत्वा
 दत्त्वा विल्वंपलाण्डकम् २५ घृतपस्थंपचेत्तेन सर्वातीसार
 नाशनम् । ग्रहणीभिन्नविट्कांचनाशयेच्च प्रवाहिकाम् २६
 अश्वगन्धापलशतंतदद्वैगोक्षुरं मतम् । शतावरीविदागी
 चशालिपर्णीवलीमृता २७ अश्वत्थस्य च शुङ्गानिपद्मवी
 जंपुनर्नवा । काशमर्याश्च फलं वैयमांषवीजंतथैव च २८
 पृथग्दशपलान् भागाश्चतुर्द्रोणैश्च सः पचेत् । द्रोणशेषरसे
 तस्मिन्पचेच्चैत्रलाढकम् २९ मृद्धीकापेद्मककुष्ठपिप्पली
 रक्तचन्दनम् । पत्रकं नागपुष्पं च आत्मगुप्ताफलंतथा ३०
 नीलोत्पलंसारिवेहे जीवनीयगणस्तथा । पृथक्कषसमाभा
 गाः शर्करायाः पलद्वयम् ३१ रसस्य पौण्ड्रं वै क्षणामाढकैकं
 समाहरेत् । रक्तपित्तक्षतक्षीणं कामलां वा तशोणितम् ३२

पले दहीके दे मंद मंद आंच से पचावे इसका नाम चैविरि घृत है ॥ २३ ॥ इस
 से वात, कफ, ग्रहणी, अर्श, दूरही, पेट फूलना, कांचनिस्सरण, मूत्रकृच्छ्र और
 प्रवाहिका ये सब नाशहोयें ॥ २४ ॥ (अतीसारपर मसूरघृत) सौपल, मसू-
 रीको द्रोणभरं जलमें कायकरै चौथाई रई तब उस कादे में आठपल चैलकी
 गूदे ॥ २५ ॥ और मसूरभरं घृतदे पचावे उससे सय अतीसार ग्रहणी और
 विषरा मल गिरना तथा प्रवाहिका ये सब दूरहो ॥ २६ ॥ (रक्तपित्तपर
 कामदेव घृत) असगंध सौपल गुठुरु पचासपल शतावरी तिलादिकंद वनउर्दी
 चरियारां भुंक्ति ॥ २७ ॥ पीपरकां टिगुसा, रक्तकमलगद्दा, गदापुरना, खंभारी
 पुष्प, काले उर्दे ॥ २८ ॥ ये दशदश पल चार द्रोण पानी में पचाय चतुर्दश रोप
 रई तब आठकभरं धी देकर पचावे ॥ २९ ॥ फिर दास, प्यास, पीर, रक्त
 चन्दन, पत्रज, नागेशरी, किवांचके धीजकी मींगी ॥ ३० ॥ नीलकमल का
 फूल, पिना कमलगद्दा, सरिवेन, पिडवन, जीवनीयगण पुत्रकं जो न मिले तो
 केवल चरियारा देना ये सब द्रव्य कर्ष कर्ष भरले शर्करा दो पल युक्त करेता ॥
 ३१ ॥ आठकभरं पौंड्रक रस सब इच्छा उसमें पचावे जब दी रोपरई कर्षना

हलीमकंपाण्डुरोगवर्णभेदस्वरक्षयम् । मूत्रकृच्छ्रमुरोदाहं
 पार्श्वशूलंचनाशयेत् ३३ एतत्सर्पिःप्रयोक्तव्यवहन्तःपुर
 चारिणाम् । स्त्रीणांचैवाप्रजातानांदुर्बलानांचदेहिनाम्
 ३४ श्रेष्ठं बलकरं वप्यै हृद्यं पुष्टिरसायनम् । ओजस्तेजस्क
 रंहृद्यमायुष्यंप्राणवर्द्धनम् ३५ संवर्द्धयतिशुकस्यपुरुषं
 दुर्बलेन्द्रियम् । सर्वरोगविनिर्मुक्तोपयस्सिक्तोयथाद्रुमः ।
 कामदेवइतिख्यातंसर्पिरुक्तमहागुणम् ३६ त्रिफलाद्वेनि
 शेकौन्तीसारिवेद्वेप्रियङ्गुका । शालिपर्णीपृष्ठपर्णीदेवदा
 व्यैलवालुकम् ३७ नतं विशालादन्तीचदाडिमं नागकेशर
 म्नानीलोत्पलैलामञ्जिष्ठाविडङ्गपद्मकृष्णकम् ३८ जातीपु
 ष्पंचन्दनंचतालीसंवृहतीतथा । एतैः कर्षसमैः कल्कैर्जले
 दत्त्वाचतुर्गुणम् ३९ घृतप्रस्थंपचेद्धीमानपस्मारिज्वरेक्ष
 ये । उन्मादिवातरक्तेचक्रासेमन्दानलेतथा ४० प्रतिश्या

तव ह्यानिले रक्तपिच, जतत्तण, कमल, वातरक्त ॥ ३२ ॥ हलीमक, पांडुरो
 वर्णभेद, स्वरक्षय, मूत्रकृच्छ्र, उरदाह और पसुरी पीड़ाको दूरकरे ॥ ३३ ॥ यह
 घृत बहु रमणीयको देय, बांभू, पुत्रवती हो दुर्बलको दे तो, मोदाहो ॥ ३४ ॥
 श्रेष्ठहै बल करताहै शरीरकी रंगत अच्छीहो हृदयको मिय, व पुष्टता करताहुआ
 रसायन होकर बल, तेज, आयु और प्राणोंको बढ़ाताहै ॥ ३५ ॥ वीर्य बढ़ता है
 दुर्बलेन्द्रिय पुरुषकी बलीहो सब रोगनाशहो जैसे सर्पिने से तृप्त तरुण होजाता
 ऐसेही मनुष्यका शरीर होताहै यह फाफदेव घृत घडा गुणदायी कहाताहै ॥ ३६ ॥
 (कल्याण घृत अपस्मारपर) त्रिफला, दोनी, हल्दी, रेणुका, सरिचन,
 पिठवन, मकरा, वनउदी, वनमंग, देवदारु, एलवाल, न मिले तो सुगन्धवाला
 देय ॥ ३७ ॥ तगर, इन्द्रारुण, जमालगोटे का बीज, श्वनार, नागकेशर, नीलक-
 मल, इलायची, मैत्रीठ, विदेग, पचाय, फूट ॥ ३८ ॥ मालतीपुष्प, श्वेतचन्दन,
 तालीसपत्र और हृद्य भटकटया ये सब कर्ष भर पानी में पीसि कल्क करि चौ-
 गुना पानी दे ॥ ३९ ॥ उप्त पानी में मस्यभर और वह कल्क देके पकाय चंद्रदेवे
 इस घी से मिरगी, ज्वर, क्षयी, चित्तभ्रम, वातरक्त, कास, मन्दाग्नि ॥ ४० ॥

येकटीशूलैतृतीयकचतुर्थके । सूत्रकृच्छ्रैविसर्पेत्तकपिडूपा
 ण्डामयेतथा ४१ विषद्वयेप्रमेहेषु सर्वधैवप्रयुञ्जते । त्रि
 न्ध्यानांपुत्रदंभूतयक्षरक्षोहरंस्मृनम् ४२ । अमृताकोथ
 कल्काभ्यांसक्षीरंविषचेद्घृतम् । वातरक्तंजयत्याशकुण्ठं
 जयति हुस्तरम् ४३ । सप्तच्छदैःप्रतिविषाशस्याकैःकटु
 रोहिणी । पाठासुस्तंमुशीरं च । त्रिफलांप्रप्रैस्तथा ४४
 पटोलनिम्बमञ्जिष्ठाःपिप्पलीपद्मकंशटी । चन्दनंधन्वयां
 सहचविशालाद्वेनिशेतथा ४५ । गुडूचीसारिवेहेचमूर्चावा
 साशतावरी । त्रायन्तीन्द्रयवायष्टीभूनिम्बार्चाक्षभागिकाः
 ४६ घृतंचतुर्गुणंद्रव्याद्घृतादामलकीरसः । द्विगुणंसर्पि
 षश्चात्रजलमष्टगुणंभवेत् ४७ तस्मिद्धंपाययेत्सर्पिर्वातर
 क्तेषुसर्वसु । कुष्ठानिरक्तपित्तंचरक्ताग्नीसिचपाण्डुताम् ४८
 हृद्रोगगुल्मवीसर्पप्रदरान्गण्डमालिकाम् । क्षुद्ररोगंज्वरं
 चैवमहात्किमिदंजयेत् ४९ कासीसंघेनिशेमुस्तंहरितालं

नाकटपकना, कटिगीडा, तिजारी, चातुर्भिक सूत्रकृच्छ्र, त्रिसर्पिका, खडुली
 पाण्डु ॥ ४१ ॥ दोनों विषमें प्रमेह में और रोग सब अच्छेहों, सर्प पुत्र जने
 और भूत व रान्तसों की आधा ये सब दूरहोयें इसका नाम कल्याणघृतहै ॥ ४२ ॥
 (वातरक्त, अशुनादिवृत्त सुर्वका कल्क सुर्वका कार्य दूधके साथ घृत
 पचवै इससे वातरक्त और कोढ़ दूरहोताहै ॥ ४३ ॥ (त्वातकुष्ठादिपर महा
 त्तिकादि घृत, जिह्वीनी, अमलतास, अतीम, कडुवी, पादा, नागरमोथा,
 खस, त्रिफला, पित्तपाण्डा ॥ ४४ ॥ पटोल, नीम, मंत्रोद, पिपरी, पञ्जोर, क-
 शूर, चन्दन, जवासा, इन्दालन, दोनों हल्दी ॥ ४५ ॥ गुर्च, सरिजन, पिठवन,
 सुरी, रूसा, शतावरी, त्रायमाण प्रविद्ध, द्वै इन्द्रध्व, मुलेठी और चिगयता ये सब
 कर्प कर्प भरले ॥ ४६ ॥ घी चौगुनदे व घीका दूना आंबरेका उसदेकर अठगुणा
 जलदे ॥ ४७ ॥ यह सिद्ध श्री सचु वातरक्तके विकारों में व अठारहों कुष्ठों में
 व रक्तपित्त में व रक्तार्शेयण्डुमें देना ॥ ४८ ॥ और हृद्रोग, गुल्म, विसर्प, प्रदर,
 गण्डमाला, क्षुद्ररोग और ज्वरको दूरिकरै रसका महात्कि नामहै पहिलोकहे रोग

मनःशिलाम् । कम्पिल्लकंगन्धकंचत्रिडङ्गुगुलुंतथा ५०
 सिन्नर्थकंमरिचंशुण्ठीतुर्थकंगौरसर्पपमारसाञ्जनंचसिन्दूरं
 रंश्रीवासंरक्तचन्दनम् ५१ इरिमेदंनिम्बपत्रंकरञ्जंसारिवां
 वंचाम् । मञ्जिष्ठांमधुकंमांसींशिरीषंलोध्रंद्वयम् ५२ हरी
 तर्कीप्रपुन्नागंचूर्णयेत्कार्षिकान्पृथक् । ततस्तच्चूर्णमालो
 ड्यत्रिंशत्पलमितेघृते ५३ स्थापयेत्ताम्रपात्रेचघर्मेसप्त
 दिनानिवै । अस्याभ्यङ्गेनकुष्ठानिदद्रूपामाविचर्चिकाः ५४
 शूकदोषाविसर्पार्चविस्फोटावातरक्तजाः । शिरःस्फोटो
 पदंशाश्चनाडीदुष्टव्रणानिच ५५ शोथोभगन्दरश्चैत्रलू
 ताःशाम्यन्तिदेहिनाभिः । शोधनरोषणंचैवंसुवर्णकरुणंघृतं
 म् ५६ जातीनिम्बपटोलंचद्वेनिशेकटुरोहिणी । मञ्जिष्ठांमं
 धुकंसिक्थंकरञ्जोशीरसारिवाः ५७ तुर्थचत्रिपंचेतसम्यक्
 कल्कैरेभिर्घृतंबुधः । अस्यलेप्रात्प्ररोहन्तिसूक्ष्मेनाडीव्रणा
 अपि । मर्माश्रिताःक्षेदिनश्चगम्भीराःसरुजोत्रणाः ५८
 चित्रकःशङ्खिनीपथ्याकम्पिल्लस्तृप्त्यायुगम् । वृद्धदारुश्च
 सब अख्ये होयें ॥ ४६ ॥ (कुष्ठ, दाह, खाजपर, कसीसादि घृत) कसीस
 दोनो इल्दी, नागरमीषा, हरवाल, पैनशिल, कनीला, गन्धक, विडंग, गुग्गुलु ॥
 ५० ॥ मोम, मिर्च, सींदि, तृतीय, पीत सरसो, रसोत, सिन्दूर, राल, जाल चन्दन ॥
 ५१ ॥ ऐर, नीपकापचा, करंज, सरिखन, वच, भंजीठ, बहुयादाल, जटामासीं,
 सिरस, लोध, पद्माल ॥ ५२ ॥ हड, गदापुरैना इन सबका एक एक कपे चूर्णकरै
 तिसे तीसपल घृतमें सानि ॥ ५३ ॥ ताम्रपात्रमें भरि सातदिन घोममें घरै इस घी
 के लगाने से दुष्ट, दाद, श्लेष्म, विचर्चिका ॥ ५४ ॥ शूकदोष, विसर्प, अतिरक्तजमित
 शीतला, मस्तकशाव, गर्मी, नासूर ॥ ५५ ॥ शोथ, भगन्दर, लूता (झरुड़ी) ये दूरहो
 घाव अतिशुद्धहो पुरावै घाव चिद्रन रहै ॥ ५६ ॥ (घावपर जातीघृत) चमे
 ली, नीच, परवल, तीनों पची, दोनो इल्दी, कटुकी, भंजीठ मुलेठी मोम, करंज, खस,
 सरिखन ॥ ५७ ॥ शीर तृतीय इन सबको समानभागले खुमदी करि घृतमें पकावै
 इस घीके लगाने से घाव, नासूर, मर्मस्थानका दुःखदायी गम्भीर घाव और पीड़ा

शस्याकोदन्तीचत्रिफलातथा ५९ कोशातकीदेवदालीनी
लनीगिरिकर्णिका । शातलापिप्पलीमूलविडङ्गकटुकीत
था ६० हेमक्षीरीचविपचैत्कलकैरेभिः पिचून्मितैः । घृतप्र
स्थंस्तुपीक्षीरंषट्पलेतुपलद्वये ६१ अर्कक्षीरस्यमतिमांस्त
रिसद्गुल्मकुण्ठनुत् । हन्तिगुल्ममुदावर्तेशोत्थाधमानभग
न्दरम् ६२ शमयत्युदराण्यष्टौनिपीतंविन्दुसङ्ख्यया । गो
दुग्धेनोष्टदुग्धेनकौलत्थेनशृतेनवा ६३ उष्णोदकेनवापी
त्वाविन्दुवैर्गविरिच्यते । एतद्विन्दुघृतनामनाभिलेपाद्विरे
चयेत् ६४ त्रिफलायारसप्रस्थंप्रस्थवासारसोद्भवम् ।
भृङ्गराजसप्रस्थंप्रस्थमांजपयस्तथा ६५ दत्त्वातत्रघृतं
प्रस्थंकलकैः कर्षमितैः पृथक् । त्रिफलापिप्पलीद्राक्षाच
न्दनसैन्धवंवला ६६ काकोलीक्षीरकाकोलीमेदामरिचना
गरम् । शर्करापुण्डरीकञ्जकमलचपुनर्नवा ६७ निशायुग्मं
चमधुकंसवैरेभिर्विपाचयेत् । नक्तान्ध्यंनकुलान्ध्यंचकण्डू

ये सव दूरहोय ॥ ५८ ॥ (उदररोगपर विन्दु घृत) चीते कीदाल, शंखाहली,
हड, कवीला, दोनां निशोय, विधारा. अमलतासका मूदाजमालंगोटा त्रिफला ॥
५९ ॥ कटुवीतोरई, देवदाली कहे (घंदाळ) नीलकी पत्ती, कोयल, सेंहुडकी
झीमी, पीरामूल, विडंग, कटुकी ॥ ६० ॥ और चूक ये सव कर्ष कर्षमरले कलक
करि मस्थभर पीमें पचायै छः पल सेंहुडका दूधडारै ॥ ६१ ॥ और दो पल
मदारिका दूधडारै चह सिद्ध श्रीदेवे तो गुल्म, कुण्ठ अन्धाहो भून्, उदावर्त, शोथ,
पेटफूलना, भंगंदर ॥ ६२ ॥ और आठो उदररोग ये दूरहो आठवंद पानी से वा
दूधसे वा ऊटके दूधसे कुलथी छाथसे ॥ ६३ ॥ गरम पानीसे जो धूट विपेसे दस्तहो
यह विन्दुघृत नाभिमें लेप करनेसे दस्तआतेहै ॥ ६४ ॥ (नेत्र रोगपर त्रिफला
घृत) त्रिफले का रस एकप्रस्थ, रुसेका एक मस्थ, भंगरेका एक मस्थ, बकरीका
दूध एकप्रस्थ ॥ ६५ ॥ एक मस्थ श्री कर्ष कर्ष और द्रव्य त्रिफला, पीपारि, दाख,
चन्दन, सैन्धव, बरियांरा ॥ ६६ ॥ दोनां काकोली, विना असगन्ध, मदा, विना
मुलेठी, मिर्च, सोंठि, खांड, श्वेतकमला, रक्तकमल, मदापुरना ॥ ६७ ॥ दोनां

पिल्लंतथैव च ६८ त्रैत्रस्रावंचपटलंतिमिरंजाजकंजयेत् ।
 अन्येषुप्रशमंयान्तिनेत्ररोगा सुदारुणाः । त्रैफलंघृतमेत
 द्विपानेनस्यादिसूत्रितम् ६९ द्वेहरिद्रेस्थिरामूर्वाभारिवा
 च्चंदनद्वयम् । मधुपर्णीचमधुकंपद्मकेसरपद्मकम् ७० उत्प
 लोशीरमेदोभिस्त्रिफलापञ्चवल्कलैः । कल्कैः कर्पमितैरेतै
 र्घृतप्रस्थंविपाचयेत् ७१ विंसर्पलूताविस्फोटत्रणकुण्ठवि
 ष्णापहम् । गौर्यादिक्रमितिस्थानं सर्वत्रणहरंस्मृतम् ७२
 चलोमधुकलास्नाभिर्दशमूलफलत्रिकैः । पृथग्द्विद्विपलैरे
 भिर्द्रौणनीरेणप्राचयेत् ७३ मयूरपक्षपित्तान्त्रयकृत्पादास्य
 वर्जितम् । पादशेषंघृतं नीत्वाक्षरिंदरवाचतत्समम् ७४ घृ
 तंप्रस्थंपचेत्सम्यग्जीवनीयैः पित्तनिमित्तैः । तस्मिच्छंशिर
 सःपीडांमन्यांपृष्ठग्रहंतथा ७५ अर्दितंकर्णनासाक्षिजिह्वा
 गलरुजोजयेत् । पानेनस्येतथाभ्यङ्गे कर्णपूरेषुयुज्यते । हे
 मन्तकालेशिशिरे वसन्तेषुचशस्यते ७६ त्रिफलामधुकं

हल्दी और गुलेठी, इनका कल्क करि घी में पकावै तो नक्तान्ध, बहुलान्ध, ग्राज,
 पित्ररोग ॥ ६८ ॥ नेमसा, पटल, तिमिर और नीलविन्दु ये सब अच्छेहोपै इस
 त्रिफलादि घृतको साथ वा नास लेकर यथोचित अनोपान करै ॥ ६९ ॥ (घाघपर
 गौर्यादि घृत), दोनों हल्दी, शालिपर्णी, मुरा सरिपत्त चन्दन, दोनों गुलेठी,
 कमल, केसर, कमल ॥ ७० ॥ नीलकमल, तस, मेदा, जिना गुलेठी त्रिफला, आम,
 वट, पीपर, पाकर और मूलर इनकी छाल सब कर्प कर्पले कल्करि प्रस्थपर घी
 में पचावै ॥ ७१ ॥ यह गौर्यादि घृत विसर्पिका, अगियासन, शीतला त्रव, कुण्ठ
 और विष इन सबको अच्छेकरै ॥ ७२ ॥ (शिरोरोगपर मयूरघृत) चरियारा,
 मुनेठी, रासन, दशमूल और त्रिफलाये दो दो पल देद्रोणपर जलमें पकावै ॥ ७३ ॥
 मयूरमास विना थात घोभरी पिता पाय पानीमें गलावै चौधवाई रहै उतारि ले
 यह रूप त्रिनाहो तिवना दृष्टे ॥ ७४ ॥ प्रस्थपर घीमें कर्प कर्पपर जीवनीयगण
 और कादा सब पचाने शिररोग, मन्याव्यथा, पृष्ठग्रह ॥ ७५ ॥ लकवा, कर्ण, नाक,
 नेत्र, जीभ, गुला, जत्रके रोगनाशै साथ सूँघै मल्लै कानमें डरै हेमन्त शिशिर वसन्त

ष्टमम् ६ दुग्धेदधिरसेतके कल्केदेयोष्टमांशकः । क
 लकस्यसम्यक्पाकार्थतोयमत्रचतुर्गुणम् ७ द्रव्याणियत्र
 स्नेहेषुपञ्चादीनि भवन्ति हि । तत्रस्नेहसमान्याहुर्ग्रथा
 पूर्वचतुर्गुणम् = द्रव्येणकेवलेनैवस्नेहपाकोभवेद्यदि ।
 तत्राम्बुपिष्टः कल्कः स्याज्जलंचात्रचतुर्गुणम् ९ काथेन
 केवलेनैवपाकोयत्रेरितः क्वचित् । काथ्यद्रव्यस्यकल्कोपि
 तत्रस्नेहेप्रयुज्यते १० कल्कहानस्तुयः स्नेहः ससाध्यः के
 वलेद्रवे । पुष्पकल्कस्तुयस्नेहस्तत्रतोयंचतुर्गुणम् । स्ने
 हात्स्नेहाष्टमांशश्चपुष्पकल्कः प्रयुज्यते ११ वर्तिवत्स्ने
 हकल्कः स्याद्यदाङ्गुल्याविमर्दितः । शब्दहीनोऽग्निनिः
 क्षितः स्नेहसिद्धो भवेत्तदा १२ यदाफेनोद्गमस्तैलेफेनशा
 न्तिश्चसर्पिषि।गन्धवर्णरसोत्पत्तिः स्नेहसिद्धिस्तथा भवेत्
 १३ स्नेहपाकलिधाप्रोक्तोमृदुर्मध्यः खरस्तथा । ईषत्सरस

सेर में आधपात्र घृत तेलका प्रमाण यही है ॥ ६ ॥ दूध, दही, रस और मद्य
 इनमें अष्टमांश कल्क देय और कल्क भलीभांति पकाने के कारण चौगुना जल
 देना चाहिये ॥ ७ ॥ और जहाँ कल्क या तेज काथ पाथ पाचों होयें तहाँ स्ने-
 हादिक समान देना पानी चौगुना देइ ॥ ८ ॥ जय एरुही द्रव्य घृत व तेलमें
 पकानी होय तौ जलमें द्रव्य पीसि गला या कल्ककरि चौगुने पानी में पचावै ॥
 ९ ॥ जो केरज काष्ठ में कहाहो तदा उसी काथकी द्रव्यका कल्ककरि घृत वा
 तेलयुक्त वह काड़ा और चौगुना पानीदे पकाना ॥ १० ॥ जहा कल्क रहित है
 तो केवल द्रववस्तु में दूध पानी देके पकालेना जय फलके कल्क में स्नेह सिद्ध
 कहेंगे तब चौगुना पानी देंगे जय स्नेह से स्नेह सिद्ध कहेंगे तय स्नेहका अष्ट-
 मांश दूसरा स्नेहले पुष्प कल्कयुक्त पकालेना ॥ ११ ॥ जय वह स्नेह पाक अं-
 गुरीमें लेके मलसे गोलों वनजाय उसे आगपर डारि और जलसे शब्द चिंचि-
 हट न करे तब सिद्धमया जानो ॥ १२ ॥ तेल फेनउठने से । सिद्धजानिये घृत फेन
 शांतिसे सिद्ध जानिये जब गंध आवै और निर्मल होजाय औरसे उत्पत्तिकरै तब
 घृत वा तेल सिद्धमया जानिये ॥ १३ ॥ स्नेहपाक तान मकारकाहै—मृदु मध्य और

हलीमेकपाण्डुरोगवर्णभेदस्वरक्षयम् । मूत्रकृच्छ्रमुरोदाहं
 पार्श्वशूलंचेनागयेत् ३३ एतत्सर्पिःप्रयोक्तव्यं बह्वन्तःपुर
 चारिणाम् । स्त्रीणांचैवाप्रजातानां दुर्बलानांच देहिनाम्
 ३४ श्रेष्ठं बलकरं वर्ष्यहृद्यं पुष्टिरसायनम् । ओजस्तेजस्के
 रंहृद्यमायुष्यंप्राणवर्द्धनम् ३५ संवर्द्धयतिशुक्रस्यपुरुषं
 दुर्बलेन्द्रियम् । सर्वरोगविनिर्मुक्तोपयस्सिक्तो यथाद्रुमः ।
 कामदेवइतिख्यातं सर्पिरुक्कं महागुणम् ३६ त्रिफलाद्वेनि
 शेकौन्तीसारिवेद्वेप्रियङ्गुका । शालिपर्णीपृष्ठपर्णीदेवदा
 व्येलवालुकम् ३७ नतं विशालादन्तीचदाडिमं नागकेशर
 म् । नीलोत्पलैलामञ्जिष्ठाविडङ्गपद्मकुष्ठकम् ३८ ज्ञातीपु
 ष्पंचन्दनंचतालीसंवृहंती तथा । एतैः कर्पसमैः कल्कैर्जलं
 दत्त्वा चतुर्गुणम् ३९ घृतप्रस्थंपचेद्धीमानपस्मारेज्वरेक्ष
 ये । उन्मादिवातरक्तेचकासेमन्दानले तथा ४० प्रतिश्या

तव ह्यार्नेले रक्तापिच, क्षतक्षीण, कमल, वातरक्त ॥ ३२ ॥ हलीमेक, पाण्डुरो
 वर्णभेद, स्वरक्षय, मूत्रकृच्छ्र, उरदाह और पेमुरी पीडाको दूरकरे ॥ ३३ ॥ यह
 घृत बहु रमणीयको देय वाफ पुत्रवती हो दुर्बलको दे तो मोटाहो ॥ ३४ ॥
 श्रेष्ठ है बल करता है शरीरकी रंगत अच्छीहो हृदयको मिय व पुष्टता करताहुआ
 रसायन होकर बल, तेज, आयु और प्राणोंको बढ़ाताहै ॥ ३५ ॥ वीर्य बढ़ाता है
 दुर्बलेन्द्रिय पुरुषकी बलीहो सब रोगनाशहो जैसे सींचने से वृक्ष तरुण होजाता
 तैसेही मनुष्यका शरीर होताहै यह कामदेव घृत घड़ा गुणदायी कहाताहै ॥ ३६ ॥
 (कसुपाण घृत अपस्मारपर) त्रिफला, दोनों 'हल्ली', रेणुका, सरिचन,
 पिठवन, मकरा, वनउदी, चर्ममूग, देवदारु, एलवालू न मिले तो सुगन्धबाला
 देय ॥ ३७ ॥ तगर, इन्द्रारण, जमालगोटे का बीज, अनार, नागकेशर, नीलक-
 मल, इलायची, मंजीठ, विटंग, पद्यास, फूट ॥ ३८ ॥ मालतीपुष्प, श्वेतचन्दन,
 तालीसपत्र और वृद्ध भटकटैया ये सब कर्प भर पानी में पीसि कल्क करि चौ-
 गुना पानी दे ॥ ३९ ॥ उस पानी में प्रत्यभर और वह कल्क देके पकाय चंघदेने
 इस यौ से पिरगी, ज्वर, क्षपी, विचित्रम, वातरक्त, कास, मन्दाग्नि ॥ ४० ॥

येकटीशूलेतृतीयकचतुर्थके । सूत्रकृच्छ्रेविसर्पेचकण्डूपा
 ण्डामयेतथा ४१ विषद्वयेप्रमेहेषु सर्वथैवप्रयुज्यते । वे
 न्ध्यानांपुत्रदंभूतयक्षरक्षोहरंस्मनम् ४२ अमृताकाथं
 कल्काभ्यांसक्षीरंविषचेद्घृणम् । वातरक्तजग्रत्यांशकुण्ठं
 जयतिदुस्तरम् ४३ सप्तच्छदःप्रतिविषांशम्याकैःकटु
 रोहिणी । पाठामुस्तमुशीरंच त्रिफलापिपटस्तथा ४४
 पटोलनिम्बमज्जिष्ठाःपिप्पलीपद्मकंशटी । चन्दनंधन्वया
 सश्चविशालाह्नेनिशेतथा ४५ गुडूचीसारिवेद्वेचमूर्वावा
 साशतावरीत्रायन्तीन्द्रयवायष्टीभूनिम्बार्श्वाक्षभागिकाः
 ४६ घृतंचतुर्गुणंदद्याद्घृतादामलंकीरसः । द्विगुणंमर्षि
 षश्चात्रजलमष्टगुणंभवेत् ४७ तस्मिंश्चपाययेत्सर्पिर्नातिर
 क्तेषुसर्वसु । कुष्ठानिरक्तपित्तंचरक्ताशांसिचपाण्डुताम् ४८
 हृद्रोगगुल्मवीसर्पप्रदरान्गण्डमालिकाम् । क्षुद्ररोगंज्वरं
 चैवमहातित्तमिदंजयेत् ४९ क्रासीसंघेनिशेमुस्तंहरितालं

नाकट्यकना, कटिगीड़ा तिजारी, चातुर्भिक सूत्रकृच्छ्र, विसर्पिका सडुली
 पाण्डु ॥ ४१ ॥ दोनों विषमें प्रमेह में और रोग सत्र 'अच्छेहों' वाभ पुत्र गनै
 और भूत र सक्तसों भी वाधा ये सत्र दूरहोयें इसका नाम कल्याणघृतह ॥ ४२ ॥
 (चातरक्तपर अमृतादिवृत गुर्चेका कल्क गुर्चेका काथ दूधके साथ घृत
 पचायें इससे वातरक्त और काष्ठ दूरहोताह ॥ ४३ ॥ (घातेकुष्ठादिपर महा
 तित्तादि घृत छित्तीनी, अमलतासें, अलीम, कंडुकी पांशों, नागरप्रोधा,
 रस, त्रिफला, पित्तपाण्डा ॥ ४४ ॥ पटोल, नीम, मजीठ, पिपरी, पद्मास, क-
 जूर, चन्दन, जवासा, इन्दासन, टोनों हल्दी ॥ ४५ ॥ गुर्चे, सरिसेना, पिठवन,
 मुर्वा, रुसग, शतावरि, नापमाण्य मनिद्ध है इन्द्रयव, मुलेठी और चिगयिता ये सब
 कर्प कर्प भरले ॥ ४६ ॥ घी चीगुनादे र घीका दूना आचरेका रसदेकर अठगुणा
 जलदे ॥ ४७ ॥ यह सिद्ध घी सब चातरक्तके विकारों में व अठारहों कुष्ठों में
 व रक्तपित्त में व रक्ताशाण्डु में देइ ॥ ४८ ॥ और हृद्रोग, गुल्म, विसर्प, मटर,
 गण्डमाला, क्षुद्ररोग और ज्वरको दूरिकरै रसका महातित्त नामहै पहिले को रोग

मनःशिलां । कम्पिल्लकंगन्धकंचविडङ्गुगुलुंतथा ५०
 सिक्थकंमरिचंशुण्ठींतुत्थकंगौरसर्षपमारसाञ्जनंचसिन्दूरं
 श्रीवासंरक्तचन्दनम् ५१ इरिमेदंनिम्बपत्रंकरञ्जंसारिवां
 वचाम् । मञ्जिष्ठांमधुकंमांसींशिरीषंलोध्रंरघकम् ५२ हरी
 तकींप्रपुत्रागंचूर्णयेत्कार्पिकान्पृथक् । ततस्तच्चूर्णमालो
 ङ्यत्रिंशत्पलमितेघृते ५३ स्थापयेत्ताम्रपात्रेचघर्मसप्त
 दिनानिवै । अस्याभ्यङ्गेनकुष्ठानिदद्रूपामाविचर्चिकाः ५४
 शुकदोषाविसर्पाश्चविस्फोटावातरक्तजाः । शिरःस्फोटो
 पदेशाश्चनाडीदुष्टव्रणानिच ५५ शोथोभगन्दरश्चैत्रलू
 ताःशाम्यन्तिदेहिनाम् । शोधनरोपणंचैत्रसुवर्णकरणघृत
 म् ५६ जातीनिम्बपटोलंचद्वेनिशेकटुरोहिणी । मञ्जिष्ठांम
 धुकंसिक्थंकरञ्जोशीरसारिवाः ५७ तुत्थंचविपचेत्सम्यक्
 कल्कैरेभिघृतंबुधः । अस्यलेपात्प्ररोहन्तिसूक्ष्मनाडीव्रणा
 अपि । मर्माश्रिताःछेदिनश्चगम्भीराःसरुजोव्रणाः ५८
 चित्रकःशङ्खिनीपथ्याकम्पिल्लस्तृचृतायुगम् । वृद्धदारुश्च
 सब अच्चे होषं ॥ ४६ ॥ (कुष्ठ, दाह, स्वाजपर कसीसादिघृत) कसीस
 दोनीं हल्दी, नागरमोधा, हरताल, पैनशिल, कयीला, गन्धक, त्रिदंग, गुग्गुलुं ॥
 ५० ॥ मोम, मिर्च, सोंठि, त्रुतिया, पीत सरसौं, रसौत, सिन्दूर, रात, लाल चन्दन ॥
 ५१ ॥ खैर, नींबकापचा, करंज, सरियन, वच, भंजीठ, महृआदाल, जटामांती,
 सिरस, लोष, पद्माव ॥ ५२ ॥ हड, गदापुरैना इन सबका एक एक कर्ष चूर्णकरै
 तिसे तीसपल घृतमें सानि ॥ ५३ ॥ ताम्रपात्रमें भरि सातदिन घाममें धरै इस घी
 के लगानेसे कुष्ठ, दाह, स्वाज, विचर्चिका ॥ ५४ ॥ शुकदोष, विसर्प, वातरक्तजनित
 शीतला, मस्तकपात्र, गर्मी, नामूर ॥ ५५ ॥ शोथ, भगन्दर, लूता (मकड़ी) ये दूरहों
 घाव अतिशुद्ध हो पुरावै घाव चिह्न न रहे ॥ ५६ ॥ (घावपर जातीघृत) चमे
 ली, नींब, परवल, तीनी, पत्ती, दोनीं हल्दी, कटुकी, मंजीठ मुलेठी मोम, करंज, रस,
 सरियन ॥ ५७ ॥ और त्रुतिया इन सबको समान भागले लुगदी करि घृतमें प्रकावै
 इस घीके लगानेसे घाव, नामूर, पपेस्थानका दुःखदायी गम्भीर घाव और पीडा

शम्भ्याकोदन्ती च त्रिफला तथा ५९ कोशातकी देवदोली नी
लनी गिरिकर्णिका । शातला पिप्पली मूलं विडङ्गकटुकी त्
था ६० हेमक्षीरी च विपचेत्कलकैरेभिः पिचून्मितैः । घृतप्र
स्थं रत्नपीक्षीरं षट्पलेतुपलद्वये ६१ अर्कक्षीरस्य मतिमांस्त
त्सिद्धं गुल्मकुष्ठलुत् । हन्ति जलमुदावर्तं शोथं धमानं भग
न्दरम् ६२ शमयत्युदराप्यप्रौनिपीतं विन्दुसट्ख्यया गो
दुग्धेनोष्टदुग्धेन कालत्थेन गृतेन वा ६३ उष्णोदकेन वा पी
त्वा विन्दुवेगैर्धिरिच्यते । एतद्विन्दुघृतं नाम नाभिलेपाद्विरे
चेयेत् ६४ त्रिफलायारसप्रस्थं प्रस्थं वा सारसोद्भवम् ।
भृङ्गराजरसप्रस्थं प्रस्थमाजं पयंस्तथा ६५ दत्त्वा तत्र घृतं
प्रस्थं कलकैः कर्षमिते पृथक् । त्रिफला पिप्पली द्राक्षा च
न्दनं सैन्धवं तला ६६ काकोली क्षीरकाकोली मेदां मरिचना
गरम् । शर्करा पुण्डरीकञ्चकमलं च पुनर्नवा ६७ निशायुग्मं
च मधुकंसर्वैरेभिर्विपाचयेत् । नक्तान्ध्यं न कुलान्ध्यं च कण्डू

ये सत्र दूरहोषं ॥ १८ ॥ (उदररोगपर विन्दु घृत) चीते कीडाल, शंखाहली,
हड, कवीला, दोना निशेय, विधारा अमलतासका गूदा जमालगोटा त्रिफला ॥
५९ ॥ कटुवीतोरई देवदोली दहे (यदाल) नीलकी पत्ती, कोयल सेंहुडकी
छीर्षा, पीरामूल, विंग, कटुकी ॥ ६० ॥ और चूक ये सत्र कर्ष कर्षभरले कल्क
वरि प्रस्थं रत्न पीक्षीरे छ. पल सेंहुडका दूधडारे ॥ ६१ ॥ और दो पल
मगरासा दूधडारे यह सिद्ध ग्री देवे तो गुल्म, कुष्ठ अच्यदाहो शूल, उदावर्त, शोथ,
पेटफूलना, भगन्दर ॥ ६२ ॥ थार थार उदररोग ये दूरहो आठरूंद पानी से गो
दूधसे या ऊंटके दूधसे कुलथी हापसे ॥ ६३ ॥ गरम पानीमे जो दूद पियेसे दस्तहो
यह विन्दुघृत नाभिम लेप करनेसे दस्तआलेहे ६४ ॥ (नेत्र रोगपर त्रिफला
घृत) त्रिफले का रस एकप्रस्थ, रत्नेका एक प्रस्थ भंगरेका एक प्रस्थ, नवरीका
दूध एकप्रस्थ ॥ ६५ ॥ एक प्रस्थ ग्री कर्ष कर्ष और द्रव्य त्रिफला, पीपरि, दास
चन्दन, सैन्धव, बरियारा ॥ ६६ ॥ दोनों काकांती, विना असगन्ध, मेदा, विना
सुलेठी, मिर्च, सोंठि, साठ, श्वेतकमला, रक्तकमल, गटापुरना ॥ ६७ ॥ दोनों

पिल्लंतथैव च ६८ नेत्रस्त्रावंचपटलंतिमिरंचाजकंजयेत् ।
 अन्येपिप्रशमयान्तिनेत्ररोगाः सुदारुणाः । त्रैफलंघृतमेत
 द्विपानेनस्यादिमूचितम् ६९ द्वेहरिद्रेस्थिरामूर्वामारिवा
 खंदनद्वयम् । मधुपर्णी चमधु कंपद्मकेसरपद्मकम् ७० उत्प
 लोशीरमेदोभिस्त्रिफलापञ्चवल्कलैः । कल्कैः कर्पमितैरेतै
 घृतप्रस्थंविपाचयेत् ७१ विसर्पलूताविस्फोटत्रणकुष्ठवि
 पापहम् । गौर्यादिकर्मितिरुयानंसर्वत्रणहरंस्मृतम् ७२
 ब्रुलामधुकरास्नाभिर्दशमूलफलत्रिकैः । पृथग्द्विद्विपलेरे
 भिद्रोणनीरेणपाचयेत् ७३ मयूरपक्षपित्तान्त्रयकृत्पादास्य
 वर्जितम् । पादशेषंशृतंनीत्वाक्षीरंदत्त्वाचतस्रसम् ७४ घृ
 तंप्रस्थंपचेत्सम्यग् जीवनीयैः पिचून्मितैः । तत्सिद्धंशिर
 सःपीडांमन्यांपृष्ठग्रहंतथा ७५ अर्दितंकर्णनासाक्षिजिह्वा
 गलरुजोजयेन् । पानेनस्येतथाभ्यङ्गेकर्णपुरेपुयुज्यते । हे
 मन्तकालेऽशिशिरे वसन्तेषुचशस्यते ७६ त्रिफलामधुकं

हल्दी और मुलेठी इनका कन्ककरि धी में पत्रावै तौ नकाध्य, नटुलान् य, ग्राज,
 पित्ररोग ॥ ६८ ॥ नेत्रस्त्राव, पटन, तिमिर और नीलत्रिन्दु ये सब अच्छेहोषे इस
 त्रिफलादिघृतको खाय वा नासलेकर यथोचित अनोपान करे ॥ ६९ ॥ (घात्रपर
 गौर्यादि घृत) दोनो हल्दी, शोलीपर्णी, मुरा सरिवन चन्दन, दोनो मुलेठी,
 कमल केसर, कमला ॥ ७० ॥ नीलकमल, रस, मेदा, घिना मुलेठी त्रिफला, घात्र,
 वट, पीपर, पाकर और गुलर इनकी ब्याल सब कर्प कर्पले कल्ककरि मस्यभर धी
 में पचावे ॥ ७१ ॥ यह गौर्यादि घृत विसर्पिका, अगिन्नासन, शीतला गव, कुष्ठ
 और विष इन सबको अच्छेकरे ॥ ७२ ॥ (शिरारोगपर मयूरघृत) धरियारा,
 मुलेठी, रासन, शमूल और त्रिफलाये दो दो पल देद्रोणभर जलमें पचाये ॥ ७३ ॥
 मयूरयास विना अत ओधररी पित्ता पाच पानीमें गलावे चौध्याई रहे उतारि ले
 यह घृत जितनाहो तितना दूधदे ॥ ७४ ॥ मस्यभर धीमें कर्प कर्पभर जीवनीयगण
 और कादा रात्र पचावे शिररोग, मन्याव्यया, पृष्ठग्रह ॥ ७५ ॥ लंकरी, कर्षे, नाक,
 नेत्र, जीभ, गला सबके रोगनाशे खाय सूत्रे मन्त कानमें डारि हेमन्त शिशिर वसन्त

कुष्ठेनिशोकट्टुगोहिणी । विडङ्गपिप्पलीमुस्ताविशालाकट्टु
 फलं च ७७ द्वेमेदद्वेचकाकोल्यौ सारिवेद्वेप्रियङ्गुका । श
 तपुष्पाहिङ्गुरास्नात्तन्दनं रक्तचन्दनम् ७८ जातीपुष्पंतु
 गाक्षीरीकमलं शकरा तथा । अजमोदाचदन्तीचकलकरै
 श्चकार्षिकैः ७९ जीवद्वस्तैकवर्णाया घृतप्रस्थं च गोः क्षिपेत् ।
 चतुर्गुणेन पयसापचेदारण्यगोमयैः ८० सुतिथौ पुष्यनक्ष
 त्रे मृदापडेताम्रजे तथा । ततः पित्रेच्छुभदिने नारीवापुरुषो
 थवा ८१ एतत्सर्पिनरः पीत्वा स्त्रीषु नित्यं वृषायते । पुत्रान्
 सञ्जनयेद्दीमान् बन्ध्यापिलभूते सुतम् ८२ अनायुषं वा ज
 नयेद्यौ च सूतापुनः स्थिता । पुत्रमाप्नोति सानारी बुद्धिमन्तं
 शतायुषम् ८३ एतत्कलघृतं नाम भारद्वाजेन भाषितम् ।
 अनुक्तं लक्ष्मणामूलं क्षिपन्त्यत्रिचिकित्सकाः ८४ त्रिफलाद्वे
 सह चरे गुडर्चासपुनर्नवाम् । शुकनासां हरिद्रेद्वेरास्नां मेदा
 शतावरीम् ८५ कल्कीकृत्य घृतप्रस्थं पचेत्क्षीरे चतुर्गुणे ।

में सेवन करना अच्छा कहा है ॥७६॥ (पंच्याको फलघृत) त्रिफला, मुलेठी,
 फूद, दोनों, हल्दी, कुटकी, विडंगा, पीपरी, नागरमोथा, इंदारुण, कायफरी ॥ ७७ ॥
 मेदा, महामेदा, विना मुलेठी, दोनों काकोली, विना असगंध, सरिवन, पिठवन,
 शकरा, सौंफ, हींग, रासन, दोनों चन्दन ॥ ७८ ॥ चमेलीपुष्प, वंशलोचन, कमल,
 शकर, अजमोद, और जमाले गोटा ये कर्प कर्प भरले कलकरि ॥ ७९ ॥ एकरंगका
 गाय और बहराहो तिसका भी घी मस्यभर देकर चौगुना दूधदे विनुबां कण्डामें
 मन्दमन्द आंचदेकर पचाये ॥ ८० ॥ सुन्दर तिथि, पुष्य नक्षत्र में मही चा ताँबेके
 पात्रमें शुभदिन पिये स्त्री चा पुरुष ॥ ८१ ॥ पुरुष जो पिये सो छपमतुल्य काशी रहे
 कैसाभी असमर्थ हो परन्तु पुरुषत्वको उत्पन्न करे और शक्तिनके पुनर्वाप ॥ ८२ ॥
 इयहि स्त्रीके पुत्र मरजाताहो उसके घृतसेवनसे पुत्रहोकर सौत्रर्षिपै ॥ ८३ ॥
 यह फलघृत भारद्वाज भाषित है विनाकहे बंध इस घृत के संग लक्ष्मणा बूटी की
 जड़ देते हैं ॥ ८४ ॥ (योनिदोष पर त्रिफलादि घृत) त्रिफला, दोनों कट
 सरैया, गुर्ध, गदापुरैना, किरस, दोनों हल्दी, रासन, मेदा और शतावरी ॥ ८५ ॥

तत्सिद्धपायवेन्नारीयोनिरोगनिपीडिताम् ८६ पीडिताच-
 लिताग्रिचनिःसृतायिहृताचया । पित्तयोनिश्चविभ्रान्ता
 षण्डयोनिश्चयास्मृता ८७ प्रपद्यन्तेहिताःस्थानंगर्भगृह-
 न्तिचासकृत् । एतत्फलघृतं नाम योनिदोषहरं स्मृतम् ८८
 वृषनिम्बामृताव्याघ्रीपटोलानां शृतेन च । कल्केनपकसपि-
 स्तुनिहृन्याद्विषमज्वरान् । पाण्डुकुष्ठविसर्पचक्रीनांशांसि-
 नांशयेत् ८९ ॥ इति श्रीशाङ्गधरे मध्यखण्डे घृतकल्पना-
 ध्यायो नवमः ॥ ९ ॥

लाक्षाढककाथयित्वाजलेश्चचतुराढकैः । चतुर्थांश-
 शृतं नीत्वा तैलं प्रस्थमितं क्षिपेत् १ मस्त्वाढकं च गोदधनः
 सधतैले विनिक्षिपेत् । शतपुष्पामश्वगन्धां हरिद्रां देवदा-
 रुच २ कटुकारेणुकामूवीकुष्ठचमधुयष्टिकाम् । चन्दनं
 मुस्तकरास्नां पृथक् कर्षप्रमाणतः ३ चूर्णयेत्तत्र निक्षिप्य

इनका काय प्रस्थ भर घृत व चारिमस्य दधमे पकाने जबूधी सिद्ध हो तब खी
 विपयतौ सब योनिदोष दूरहो ॥ ८६ ॥ पीडित, चलित, निभृत, विकृत, पि-
 त्तयोनि, विभ्रान्त, षण्डयोनि ॥ ८७ ॥ ये, सब योनिरोग मिटे और गर्भाटक यह
 फलघृत नाम घृत योनिदोष पर रहत अच्छा कहा है ॥ ८८ ॥ (विषमज्वर
 पर पचसिक्तघृत) रूसा, नींबू, गुर्ब, भटकटैया और पटोल (परबर)
 इन्हीं के काढ़ा और कल्क में दो पकाय लाय ता विषमज्वर जाय पांडु कुष्ठ
 विसर्प कृमि और अर्श ये भी दूरहोयें ॥ ८९ ॥

इति श्रीशाङ्गधरसुधाकरेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अधेघृततैलसाधनप्रकारः ॥ (लाक्षादितैल) लाही एक आढक
 आढक तीन सेर वः रुपये भर होता है चारि आढक पानी में काय करि
 धीप्याई रहे उतारि ले प्रस्थ भर तैलदे (प्रस्थ ६४ रुपया भर कहाता
 है) ॥ १ ॥ दहीकात्रल एक आढक भरदे सौफ, असंगंध, हल्दी, देवदारु ॥ २ ॥
 कटुकी, मेघही बीज, मुराफूट, मुलेठी, चन्दन, नागरमोषा, रासन ये कर्ष
 भरले ॥ ३ ॥ चूर्ण करि तेलमें मध्यम आंचसे सिद्ध करे इस तेल के लगाने से

साधयेन्मृदुवह्निना । अस्याभ्यङ्गात्प्रशाम्यन्तिसर्वेपिविघ्न
 मज्वराः ४ कासश्वासप्रतिश्यायस्त्रिकृष्टपुत्रहस्तथा । वा
 तपित्तमपस्मारमुन्मादं चक्षराक्षसान् ५ कण्डूशूलचदौर्म
 न्ध्यगात्राणांस्फुटनंजयेत् । पुष्टगर्भाभवेदस्यागार्भिण्यभ्यं
 ङ्गतोभृशम् ६ अश्वगन्धावलाविल्वंपाटलावृहतीद्वयम् ।
 श्वदंष्ट्रातिबलेनिस्वद्र्योनाकंचपुनर्नवाम् ७ प्रसारणीस
 ग्निमन्थं कुर्याद्दशपलंपृथक् । चतुर्द्रोणिजलेपक्त्वापादशे
 षंशृतंनयेत् ८ तैलाढकरसंयोज्यंशतावर्यारसाढकम् । क्षि
 पेत्तत्रचगोक्षीरंतैलात्तस्माच्चतुर्गुणम् ९ शनैर्विपाचयेद्दे
 भिःकल्कैर्द्विपलिकैःपृथक् । कुष्ठेलाचन्दनंवालाभांसीशैले
 यसेन्द्रवैः १० अश्वगन्धावलासास्ना शतपुष्पेन्द्रदारुभिः ।
 पर्णीचतुष्टयेनैवतगरेणैवसाधयेत् ११ तत्तैलनावनेभ्यङ्गे
 प्रानेवस्तौचयोजयेत् । पक्षाघातंहनुस्तम्भमन्धारतम्भंग
 लग्रहम् १२ कुब्जत्वंबधिरत्वंचगतिभङ्गकटिग्रहम् । गा

विपमज्जर शयनहोताहै ॥ ४ ॥ कास, श्वास, नाकवहना, निककहे रीदपीडा,
 पीठजकड़ना, वातपित्तज भिरगी, यक्ष्म राक्षसी जन्माद ॥ ५ ॥ खाज, पेटपीर,
 दुर्गंध और देहफूटन ये मिटे व गर्भिणी मल्ले तो गर्भपुष्टिहोय ॥ ६ ॥ (नायुपर
 नारायण तेल) असगन्ध, गरियारा, वेत, प्रादा, भटकटैया, दोनो मुखरु, ककई,
 नींबू, सोहनपत्ती, गटापुरना ॥ ७ ॥ गंधप्रसारिणी और अरुणी ये दश दश पल
 सब द्रव्यले ज्ञाद्रोण पानी में पकावै जर एक द्रोण शेरहै, "द्रोण एकसेर एक
 छटाक का होताहै" ॥ ८ ॥ तत्र एक आढक तेलमें शतावरि का रस एक आढक
 देय जो गीली घोष तो रस निचोरिके देय सूखीहो तो कादाकारिके देय तेलका
 चौगुना दूध गऊका दे ॥ ९ ॥ तिसमें कल्क, डारि धीरे धीरे, पचावै कूट, इला-
 यची, चंदन, सुगन्धवाला, जटामासी, जपीला, सेंबलोन ॥ १० ॥ असागंध,
 गरियारा, रासन, सोफ, देवदारु, शालपर्णी, पृष्ठपगी, जन्तुवर्द्ध, चर्मरोग और स
 गर ये सब दो २ पललेकर कल्कारे और तेलमें साधिलेय ॥ ११ ॥ उस तेल
 का नासदेय और शरीर पै, मल्ले विचकारी आदि कर्ममें देय पत्ताघात, टोदी

श्वेदीमान्पादशेषं संनयेत् ३० तैलप्रस्थैततः सर्वाकाथा
 नेतान्विनिक्षिपेत् । कल्कैरेभिश्च विपचेदमृताकुष्ठनागरेः
 ३१ रास्नापुनर्नवैरण्डैः पिप्पल्याशतपुष्पया वलाप्रसारि
 णीभ्यां च मांस्याकटुकया तथा ३२ पृथग्द्वैपलैरेभिस्ताथ
 येन्मृदुवह्निना । हन्यात्तैलमिदं शीघ्रं ग्रीवास्तम्भापवाहु
 कौ ३३ अर्धाङ्गशोषमाक्षेपमुरुस्तम्भापतानकौ । शाखा
 कम्पंशिरः कम्पंविंश्वाचीमद्वितंतथा । साषादिकमिदं तैलं
 सर्ववातविकारनुत् ३४ शतावरीवलायुगमपण्यौ गन्धर्व
 हस्तकः । अश्वगन्धाश्वदंष्ट्राचिविल्वः कासः कुरण्टकः ३५
 एषां सार्द्धं पलान्भागान्कल्कयेच्च विपाचयेत् । चतुर्गुणेन
 नीरेण पादशेषं शृतं नयेत् ३६ विपाच्यप्रस्थतैलेन क्षीरप्र
 स्थं विनिक्षिपेत् । शतावरीरसप्रस्थं जलप्रस्थं च योजयेत्
 ३७ शतावरीदेवदारुमांसीतगरचन्दनम् । शतपुष्पाव
 लाकुष्ठमेलाशैलेयमुत्पलम् ३८ अद्विमेदां च मधुकंका
 कोलीजीवकस्तथा । एषां कृषसमैः कल्कैस्तैलंगोमयव
 त्तारि ले ॥ २९ ॥ अस्य भरद्वाज मांसचौसठपल जलमे पचाय उतारि द्यानि
 ले ॥ ३० ॥ तत्र अस्य भर तेलमे समं कथं और मास्यस्य देकर पचावै और
 यह कल्क भी पचावै गुर्च, कूट, साठि ॥ ३१ ॥ रासन, गदापर्ण, रूढ, पीपरि, सौफ,
 धरियारा, गन्धप्रसारिणी, जटामासी और कडुकी ॥ ३२ ॥ ये सब आधा आधा
 पल धीमी आंचदे उस तैलम पकावै इम तेलसे ग्रीवा जकडना, बाहुकपया ॥ ३३ ॥
 अर्द्धांग सखना अक्षेप, ऊरुस्तम्भ, अपतानक, सर्वांगकंप और शिरःकम्प ये रोग
 इस मापादितैल से दूरहोये सब वातविकार न रहे ॥ ३४ ॥ (शतावरि तेल)
 शतावरि दोनो धरियारा, दोनो पर्णा, रूढ, अश्वगंध, गुडुरु, वेल, कास और कुरैया ॥
 ३५ ॥ सत्र देद देद पल कल्ककरि चौगुने जलमे पचाय जर चौध्याई शेपरहै
 त्रव उतारिले ॥ ३६ ॥ फिरि मस्थभर तेल मस्थभर दूधमे पचावै एक मस्थभरि
 शतावरिरम मस्थभर प्राप्तीमे पचावै ॥ ३७ ॥ फिरि शतावरि, देवदारु, जटामासी,
 तगर, चन्दन, सौफ, धरियारा, कूट, उन्नायची, खरीला, कमल ॥ ३८ ॥ अद्वि सिद्धि

ह्लिना ३९ पचेत्तेनैवतैलेननरःस्त्रीषुवृषायते । नारीच
 लभतेपुत्रंयोनिशूलंचनश्यति ४० अङ्गशूलंशिरःशूलं
 कामलांपाण्डुतांतथा । गृध्रसींहीहशोपांश्चमेहान्दण्डाप
 तानकम् ४१ सदाहंवातरक्तंचत्रापित्तमदादितम् । असृ
 ग्दरंतथाध्मानंरक्तपित्तंनियच्छति ४२ शतावरीतेलमि
 दं कृष्णात्रेयेनमाषितम् (ॐ नारायणायस्वाहा उत्तराभि
 मुखोभूत्वाखनेत्त्रदिरशङ्कुना । ॐ सर्वव्याधिनाशनीये
 स्वाहा इत्युत्पाटनमन्त्रः । ॐ कुमारजीवनीयेस्वाहा इतिपा
 चकमन्त्रः) ४३ काशीशंलाङ्गलीकुष्ठंशुण्ठीकृष्णाचसैन्ध
 वम् । मनःशिलाश्चमारश्चविडङ्गंचित्रकौटुषः ४४ दन्ती
 कोशातकीवीजंहेमाह्लाहिरितालकः । कल्कैःकर्पमितैस्तैलं
 ततःप्रस्थंविपाचयेत् ४५ स्नुह्यर्कपयसाद्यात्पृथग्द्विप
 लसम्मितम् । चतुर्गुणगेवांमूत्रंदस्त्रासम्यक्प्रसाधयेत् ४६
 कथितंखरनादेनतैलमशोविनाशनम् । क्षारवत्पातयत्ये

विनाचराही कंद, मेदा, विनापुरेडी दुइगार कही है इससे दूनी लेना काकोली पिनी
 असंग्रं और जीवकविना चाराहीकंद ये सब कर्पभरले कल्ककरि गोंडवा की आंच
 में पचाये ॥ ३६ ॥ इसे माथमें लगानेसे पुरुष स्त्रियोंमें वृषभ तुल्य होकर रमता है
 व स्त्री पुत्रजननी है व योनिकार नाशहोताहै ॥ ४० ॥ और अङ्गशूल, शिरःशूल,
 कमल, पाण्डु, गृध्रसी, प्लीह, शोष प्रमेह, दण्डापतानक वायु ॥ ४१ ॥ दाहसहिते
 वातरक्त, त्रातपित्त, मदपाडित, रुधिर आध्मान रक्त पित्त ये सब दूरहोयें ॥ ४२ ॥
 यह शतावरी तेल कृष्णात्रेयेने कहा है प्रथम मन्त्रे नियंत्रण, दूसरा उत्पाटन,
 तीसरा पाचक मंत्र ये तीनों मंत्र मूलसे जानना चाहिये ॥ ४३ ॥ (अर्शपर
 कसीस तेल) कसीस, कलिहारी, कूट, सोंठि, पीपरि, सैधर, मैनाशिल, कनेर,
 दापविडंग, चीता, अहूसा ॥ ४४ ॥ जमालगोटा, वनतोरई धीम, सूक और ह-
 रताल ये सब कर्प कर्प भरले कल्ककरि, प्रस्थ भर तेलमें पकाय ॥ ४५ ॥ दोपल
 सेंडुइ दूध, दोपल मदारदूध व तेल का त्रैगुना गोपूत्र देकर भली भाति पका-
 ये ॥ ४६ ॥ यह खरनाद आचार्यने कहा है इसके लगाने से बुवासीर का मरसा

तदर्शास्यभ्यङ्गतोभृशम् ४७ बलीर्नदूषयंत्येतत्क्षारकर्म
करंस्मृतम् ४८ मण्डिजप्रासारिवासर्जयष्टीसिद्धयैःपलोन्मि
तैः । पिण्डारूयंसाधयेत्तैलमभ्यङ्गाद्वातरक्कनुत् ४९ अर्क
पत्ररसेपक्वंहरिद्राकल्कसंयुतम् । साधयेत्सार्धंपतैलंपा
मांकच्छूत्रिचर्चिनुत् ५० मरिचंहरितालंचतृष्टतरक्तच
न्दनम् । मुस्तामनःशिलामांसीद्वेनिशेदेवदारुच ५१ वि
शालाकरवीरंचकुण्ठमर्कपयस्तथा । तथैवगोमयरसंकुर्या
त्कर्षमितंपृथक् ५२ विषंचार्द्धपलंदेयंप्रस्थंचकटुतैलक
म् । गोमूत्रंद्विगुणंदद्याज्जलञ्चद्विगुणम्भवेत् ५३ मरि
चाख्यमिदंतैलंसिद्धंकुष्ठव्रणापहम् । जयेच्चित्राणिसर्वाणि
पुण्डरीकंविचर्चिकाम् । पामांसिधमंनिरक्तसांद्रुकच्छूत्रिना
शयेत् ५४ त्रिफलारिष्टभूनिम्बद्वेनिशेरक्तचन्दनम् । ए
तैःसिद्धंमनुष्याणांतैलमभ्यञ्जनेहितम् ५५ भावयेच्चिम्ब
वीजांनिम्बद्वराजरसेनहि । तथासनस्यतोयेनतत्तैलंहन्ति

गिम्पहता है और क्षारकर्म सा कष्ट नहीं होता है "क्षारकर्म सधिये करते हैं", तौ
मलमार्ग के चक्र में जोलिम जाती है इसमें नहीं आती ॥ ४७१२॥ (चातरक्त
पर पिण्डतेल) मन्नीठ, सरिदन, रक्त, मुलेठी और मोम ये पलपल भरले
तेन में पचाये इस पिण्डतेलके लगाने से वातरक्त दूरहोता है ॥ ४९ ॥ (कटुपर
मदार तेल) अर्कौराके पत्रका रस हल्दीका रक्त सरसौ के तेनमें पकाये तौ
खजुरी, दाद, विचर्ची दूरहों ॥ ५० ॥ (कुष्ठपर मरिच तेल) काली इरनाल
निरोग्य, रक्तचन्दन, मोथा, मैनशिल, जटामासी, दोनों हल्दी, देवदारु ॥ ५१ ॥
ईदरन, कनेर, कूट; मदारका दूध और गोमरका रस कर्ष कर्ष भरले ॥ ५२ ॥
आधापल सिद्धिया मस्थभर कछआ तेल दूना गोमूत्र व जना दूना दे ॥ ५३ ॥
इस मरिचादे तेलसे कुष्ठके पात्र अच्छे हों श्वेत, रक्त व कालेदाग मिट्टे पसरा,
सैद्धान्त, फटीलादाद और भैमहादाद ये सब दूर हों ॥ ५४ ॥ (चातर
त्रिफलातेल) त्रिफला, नींबू, चिगायता, दोनों हल्दी और रक्तचन्दन इसका बना
तेल लगाने से मनुष्योंको बहुत गुण देता है ॥ ५५ ॥ (पलितपर पिण्डतेल)

तस्यतः । अकालपलितंसद्यःपुंसांदुग्धान्नभोजिनाम् ५६
यष्ट्रीमधुकक्षीराभ्यांनवधात्रीफलैःशृतम् । तैलंनस्येकृतं
कुर्यात्केशांश्मश्रूणिसर्वशः ५७ करञ्जचित्रकौजातीकरवी
रश्चपाचितम् । तैलमेभिर्दुतंहन्याद्भ्यङ्गादिन्द्रलुप्तकम्
५८ नीलिकाकेतकीकन्दंमृङ्गराजःकुरंटकः । तथार्जुनस्य
पुष्पाणिवीजकःसुमनोपिच ५९ कृष्णास्तिलाश्चतगरं
समूलंकमलंतथा । अयोरजःप्रियङ्गुश्चदाडिमत्वग्गुड
चिका ६० त्रिफलापद्मपङ्कशचकल्कैरैतैःपृथक्पृथक् ।
कर्षमात्रंपचेत्तैलं त्रिफलाक्वाथसंयुतम् ६१ -मृङ्गराजर
सेनैव सिद्धकेशस्थिरीकृतम् । अकालपलितंहन्तिदा
रुणंचोपजिह्वकम् ६२ मृङ्गराजरसेनैव लोहकिंठफल
त्रिकम् । सारिवाञ्चपचेत्कल्कैस्तैलंदारुणनाशनम् ।
अकालपलितंकण्डूमिन्द्रलुप्तञ्चनाशयेत् ६३ इरिमेदत्व
चक्षुष्णां पचेत्पलशतोन्मिताम् । जलद्रोणेततःकाथंगृ

नीमबीजकी मींगी भेंगरा रस में भावना देकर आसन रसमें दे उसका तेल नि
फारि नास ले तो अकालके पके गाल कालेहों दूर भात पथ दे ॥ ५६ ॥
(पुनस्तैलम्) मुलेठी कधे आगरेका कत्व, चौगुना तेल दे पकावै फिर
चौगुना पानीदे पकावै केवल तेलरहै तय उतारिले इसके नाससे केश सघन
होवै ॥ ५७ ॥ (इन्द्रलुप्तपर करजतेल) कंजा, चीता, चमेली व कनेर में
तेलपकाय लगावैतो चादखोरा दुरुहोय ॥५८॥ (पलितपर नीलकादितेल)
नील, केतकीमूल, भेंगरा, कटसरैया, अर्जुन फूलनकाहार, चमेली ॥ ५९ ॥
काले विटा, लंगर, कमलका सर्वांग, लोहचून, मालकंगनी, अनारकी झाल, गुर्च ॥
६० ॥ त्रिफला और कमलकी जड़की माटी कर्ष कर्षभर सब द्रव्यलेवै उसमें
तेल पचावै त्रिफले का क्वाथसमेत ॥ ६१ ॥ भागरेकारस भी टारै सिद्धवरि तेल
लगावै, बाल स्थित होय अगलपलित अच्चाहो दाख्य उपजिह्वक शिररोग ये
सब अच्चेहों ॥ ६२ ॥ (पलितपर भृंगराजनेटा) भेंगरे के रसमें लोह
शून वा कीट त्रिफलासारिक इनके कल्कमें तेलपचावै दाखुणनाशहो अकालप-

ह्रीयात्पादशेषितम् ६४ तैलस्यार्द्धाढकंदत्वा । कल्कैः
 कर्षमितैः पचेत् । इरिमेदलवङ्गाभ्यां गौरिकागुरुपद्मकैः
 ६५ मञ्जिष्ठा लोध्रमधुकैर्लाक्षान्वेद्योधमुस्तकैः । त्वग्जा
 तीफलकर्पूरकंठोलखादिरैस्तथा ६६ पतङ्गधातकीपुष्प
 सूक्ष्मैलानागकेशरैः । कटुफलेन च संसिद्धतैलमुखरुजंज
 येन ६७ प्रदुष्टमांभंचलितं शोषेदन्तचर्शोपिस्म ॥ शीतो
 दं दन्तहर्षणं विद्रधिं कृमिदन्तकम् । दन्तस्फुटनदौर्ग
 न्ध्ये जिह्वातालवोष्ठजारुजम् ६८ हिङ्गुतुश्चुरुशुण्ठीभिः
 कटुतैलं विपाचयेत् । तस्यैव पूरणं मात्रेण कर्णशूलं प्रणश्यति
 ६९ बालविरागनिगोमत्रेपिष्टु तैलं विपाचयेत् । साजक्षीरं
 सनीरं च चाधिर्यहन्ति पूरणेन ७० बालमूलकेशुंठीनां चारः
 क्षारयुगंतथा । लवणानि च पञ्चैव हिं गुशिघ्नमहौषधम् ७१
 देवदारुवचाकुष्ठं शतपुष्पारसाञ्जनम् । ग्रन्थिकं भद्रमुस्तं च

लित, राज व इन्द्रजित मित्रे ॥६३॥ (मुखदं गुरोगपर इरिमेदादिनेल)
 औरदाल एकसाँ अस्सी गले फूटकर द्रोणभर जलमें पचाय जब चौथाई शेष रहे
 तब उतारिले ॥ ६४ ॥ आर्द्धाढकं तैलदे सैर, लौंग, मेरुं, अगोरं, पञ्जात ॥ ६५ ॥
 मजीठ, लोत्र, पुलेठी, लहौ, बटकी जड़, मोथा, तंज, जायफले, कपूर, कैकोल, सेदि-
 रसार ॥ ६६ ॥ पतंग, धवपुष्प, इलायची और नामकैरर ये सब कर्ष कर्ष भरली उस
 में तैल पचाय लगभग ती सुरोग दूर होय ॥ ६७ ॥ सुरेमांस वरना, दात
 हलना, दात फूटना, पुष्प कर्म का विकार, दांत ठंडाहना, दात मिट क्रियाना,
 गुणक निनाम, दंतकृमि, दंतफूटना, दुग्ध, जीभरोग, तानुरोग और थोटोरोग ये सब
 मिटें ॥ ६८ ॥ (कर्णशूलपर हिं गुनेल) शींग, धनियां और सौंठ इनतीनोंको कहुवातेल
 में पचाय इस कानमें डालनेसे पीड़ा दूर होय ॥ ६९ ॥ (अधिरत्वपर, पेल
 का तेल) छोटे बेल गोपूत्र में कल्क करि तेल पकरी का दूध पानी सहित
 पकाय कान में डालने से अधिरत्वको दूर करताहै ॥ ७० ॥ (कर्ण बहने पर
 प्यार तेल) लघुगुण्डा, एत, सन्की, जरागार, पांचों लोह, हिंग, संहिजना,
 सौंठ ॥ ७१ ॥ देवदारु, दप, कुंड, सौंठ, शमी, पीपलामूल और नागरमोथा

कल्कैः कर्पमितैः पृथक् ७२ तैलप्रस्थं च विपचेत्कदलीं च
 जपूरयोः । रसाभ्यां मधुसूक्तं चातुर्गुण्यमितेन च ७३ पूय
 चावेक्षणनादं शूलं च धिरतां कृमान् । अन्वांश्च कर्णजान्
 गान्मुखरीगांश्चान्नाशयेत् ७४ जम्बीराणां फलरसं प्रस्थैकं
 कुडवोन्मितम् । साचिकं तत्रैवातव्यं प्रलैकापिप्पलीस्मृता
 ७५ एतदेकीकृतं सर्वमृद्भाण्डे च निधापयेत् । वचाम्भीम
 धुसंयुक्तं गृह्ये रगुंडोन्वितम् । धान्यराशौ त्रिरात्रं स्थं मधुसू
 क्तमुदाहृतम् ७६ पाठाद्देचितिशे मूर्वापिप्पलीजातिप्रल
 वैः । दन्त्या च तैलं संसिद्धं तस्य स्यात्दृष्टपीनसे ७७ व्या
 ग्रीदन्तीव चाशिग्रुतुलसीव्योषसैन्धवैः । कल्कैश्च पाचितं
 तैलं पूतिनासांगदापहम् ७८ कुष्ठं त्रिवृत्तक्रणां शुण्ठीं च क
 ल्ककषायवत् । साधितं तैलमाज्यं दानस्यात्क्षवधुनाशनम्
 ७९ गृहधूमकणार्दिरुक्षारनक्ताहसैन्धवैः । सिद्धं शिखरिणी

ये कर्प-कर्प-भरिले कल्क करि ॥ ७२ ॥ मन्मथर तेल में केलेका रस विओटा
 रस सहित पकाये त्रिगुना मधुसूक्त दे ॥ ७३ ॥ ती पीय कानसे गिरना शब्द
 होना, पीडा, चदिरापन, कानकीड़ी और कानके सब रोग और मुखरोग दूरहोय ॥
 ७४ ॥ जम्बीरी नींबू का रस मन्मथर कुडुवभर गृहधूम पीपरि पलभर ॥ ७५ ॥ सन
 इकट्टे करि माटी के पात्र में वचका काड़ा अदरसका रस शब्द और गृहधुम
 मिश्रित करि पूर्वोक्त पात्रका गृहधुमि अनाज में गाढ़वे । तेहि मुख भूदे तीन दिन
 धान्य समार्थी ताहिकरें मधुसूक्त जतुर्वध वैद्य महाधी ॥ तीसरे दिन कादे से म
 धुसूक्त है ॥ ७६ ॥ (पीनस पर पाठादितेल) पादा, दोना हल्ली, मूर्वा,
 पीपरि, चुपेलीपत्र और जामालगोटा इनके तेलसे दृष्ट पीनस अरुदा होय ॥ ७७ ॥
 (नाकरोगपर अदकट्टेयातिल) अदकट्टेया, जमालगोटा, वत्स, सहिजन,
 तुलसी, सोंठ, मिरच, पीपरि और संभव इनके तेलसे नाक से पीय गिरना और
 नाकरोग दूरहोय ॥ ७८ ॥ (त्रिधापर कूदतेल) कूद, हेल, पीपरि, सोंठ
 और दाख इनका कड़ा और कल्क करि तेल या धीमें पचाय नास लेय वो लो
 करोग दूरहोय ॥ ७९ ॥ (जामाल पर गृहधूमदिनेल) मन्मथर के गान

जैश्चतैलनासांशसंहितम् ८० वज्रीक्षीररविक्षीरद्रवधतूर
 चित्रकम् । महिषीविड्भवद्रावसर्वाशंतिलतैलकम् ८१
 पचेतैलावशेषतद्गोमूत्रेथञ्चतुर्गुणे । तैलावशेषंपक्त्वाचत
 तैलंप्रस्थमात्रकम् ८२ गन्धकाग्निशिलातालंविडङ्गाति
 विषाविषम् । तिक्तकौशातकीकुष्ठेवचांमांसीकटुत्रयम् ८३
 पीतदारुचयपृथक्सर्जिकाक्षीरजीरकम् । देवदारुचक
 र्पाशंचूर्णतैलेविमिश्रयेत् । वज्रतैलमिदंरूपातमभ्यङ्गात्स
 र्वकुष्ठनुत् ८४ करवीरंशिफादन्तीतृष्टकोशातकीफल
 म् । रम्भाक्षारोदकेतैलंप्रशस्तंलोमशातनम् ८५ द्र
 वेषुचिरकालस्थंद्रव्यंयत्सन्धितंभवेत् । आसवारिष्टमे
 दैस्तुप्रोच्यतेभेषजोचितम् ८६ यदपकौषधाम्बुभ्यांसि
 द्वमद्यंसआसवः । अरिष्टःकाथसिद्धःस्यात्तयोर्मातृपलो
 निमतम् ८७ अनुक्तमानारिष्टेषुद्रवद्रोणेतुलांगुडम् । चौद्रं

का करहुआ, पीपरि, देवदारु, जवातर, करंड, सेंधवे और चिबड़ावीन इनका तेल
 नाकरोग हरनेमें हितहै ॥८०॥ (सब कोड़ पर) छमिया सेंहुड़ का दूध मंदार
 दूध धतूरे और चीतेकारस भैंसके गोबरका रस तिल तेलमें ॥८१॥ ये सब पचाय
 तेल रहे तब चीगुना गोमूत्र दे फिर पचाय तेल रहे तब अस्थभर तेलमें ॥८२॥ गन्धक,
 भिलावा, चीता, मैनशिल, हरताल, बिडंग, दोमो अतीस, कहुवीतोरई, कूट, बच,
 जटामांसी, त्रिकुट ॥८३॥ दारुहल्ली, मुलेठी, सज्जी, जीरा और देवदारु ये सब
 कर्षकर्ष भर पीस तेल सिद्धकरे इस वज्र तेलके लगानसे सर्कुष्ठनाशहोयै ॥८४॥
 (कनेरका तेल रोमशातन पर) कनेरपूल, जमालगोटा, निरोध, कहुवी
 तोरई, फेला, चार और केलेके पानी में तेल सिद्धकरे लंगोयें तो बाल गिरिपरै ॥
 ८५ ॥ (अथासव कल्पना) उदकादि द्रव्यं वस्तुमें औषध देके पाव में भरि
 सुहृमूदि मासभरि रखने से औषध उत्तम होतीहै उसे आसव या अरिष्ट कहतेहैं
 आसव अरिष्टमें दो भेदहैं ॥८६॥ उदकादि पदार्थमें जो औषध पूर्वक रीतिसे
 सिद्धकरे उसे आसव कहिये जो कोई द्रव्यके काथ में उसी रीतिसे सिद्धकरे उसे
 अरिष्ट कहिये इसके रानेकी मात्रा चार रूपये भरहै ॥८७॥ जहां अरिष्टमें द्रव्य

त्रिपेद्गुडादद्वैप्रक्षेपदशमांशकम् ८८ ज्ञेयः शीतरसः शी
 धुरपकमधुरद्रवैः । सिद्धः पकरसः शीधुः सम्पकैर्मधुरद्रवैः
 ८९ परिपक्वान्नसन्धानसमुत्पन्नासुरांजगुः । सुरामण्डः प्रस
 न्नास्यात्ततः कादम्बरीघना ९० तदधोजगलोज्ञयोभिदको
 जगलाघनः पुक्कसोहतसारः स्यात्सुरावीजंचकिपवकम् ९१
 यत्तालखर्जूररसैः सन्धितासाहिवारुणी ॥ कन्दमूलफला
 दीनिसस्नेहलवणानि च ९२ यत्रद्रवेषिष्यन्ते तत्सूक्तमभि
 धीयते । विनष्टमम्लतांयातं मद्यं वामधुरद्रवैः ९३ विनष्टः
 सन्धितोयस्तु तच्चूकमभिधीयते । गुडाम्बुनासतैलेन कन्द
 शाकफलेस्तथा ९४ सन्धितंचाम्लतांयातं गुडसूक्तं प्रचक्ष
 ते । एवमेवेक्षुसूक्तं स्यान्मृद्धीकासम्भवं तथा ९५ तुषा
 म्बुसन्धितं ज्ञेयमासौर्विदलितैर्धवैः ९६ यवैस्तु निस्तुषैः पकैः

की ताल न होय वो जलादि पदार्थ द्रोणभरदे गुड तुलाभर राहद अर्द्धतुला और
 द्रव्यका चूर्ण गुडका दशांशदे अग्नि करै ॥ ८८ ॥ शीधु मद्यभेद कहने है)
 जो कच्चे ऊख रसादि मधुर पदार्थ में सिद्ध करै उसे शीतरस शीधु कहिये जो पका
 यकैरसमें सिद्ध करै उसे पकरस शीधु कहिये ॥ ८९ ॥ सुराप्रसन्नादि भेद करि अग्नि
 मंथल यत्रसे उत्तरे उसे सुरा कहिये सुराके फेनको प्रमत्ता कहिये फेनरहित जो
 नीचे रहै उसे कादंबरी व घनभी कहिये ॥ ९० ॥ सुराके नीचे रहै उसे जगल कहिये
 जगल के प्रते भाग को भेदक कहिये भेदक पकानेसे जो सार निकरै उसे सुरावीज
 और किराव कहते हैं ॥ ९१ ॥ ताड़ वा खर्जूरका रस अग्निपत्र योगकरि वा
 कृत्वा लेप सिद्ध करै सो वारुणी है कन्द मूल फल घृत तैलादि स्नेह लवण ॥
 ९२ ॥ ये खवद्रवपदार्थमें अग्नि यत्र यत्र योगसे मथन करै उसे सूक्त कहिये ॥ ९३ ॥
 जो विनष्टकृते त्रिजितरस लोके स्वयीर सो स्वयीर उद्ये मद्य प्रा तुंरत मधुद्रव में
 द्रव्य चूर्ण करि संधित करी मांसभरकी उसे शुक्रकहिये वा गुड पानी तैल कंदमूल
 फल ॥ ९४ ॥ इन्हें पूर्वोक्त रीतिसे संधित कर मांसभरमें सिद्ध करै उसे गुडसूक्त
 कहिये इसी प्रकार ऊखरसका और दासका सूक्त दोता है ॥ ९५ ॥ यवानी पुक्त
 एकदिन संधित करै उसे तुषांबु कहिये और यवगूरी पानी वैरिभाय एकदिन संधि

मसःपक्त्वा काथेद्रोणावशेषिते । धातक्याविंशतिपलं
 गुडस्यचतुलांक्षिपेत् १३ मासमात्रंस्थितोभाण्डेकुटंजा
 रिष्टसंज्ञकः । ज्वरान्प्रशमयेत्सर्वान्कुर्यात्तीक्ष्णधनञ्जयम्
 १४ विडङ्गग्रन्थिकरंस्नाकुटजत्वक्फलानिच । पाठैला
 बालुकंधात्रीभागांश्चपलान्पृथक् १५ अपट्टोणेम्मसः
 पक्त्वाकुर्याद्द्रोणावशेषितम् । पूतेशीतेक्षिपेत्तत्रक्षौद्रं
 लशतत्रयम् १६ धातकींविंशतिपलांत्रिजातंद्विपलं
 था । प्रियङ्गुकाञ्चनाराणांसलोध्राणापलंपलम् १७ व्योषं
 स्यचपलान्यष्टौचूर्णीकृत्यप्रदापयेत् । घृतभाण्डेविनिःक्षि
 प्यमासमेकंनिधापयेत् १८ ततःपित्रेद्यथाहं चजयेद्विद्रधि
 मूर्च्छितम् । ऊरुस्तम्भाश्मरीमेहान्प्रत्यष्टीलाभगन्दरान् ॥
 गण्डमालां हनुस्तम्भंविडङ्गारिष्टसंज्ञितः १९ तुलाद्वैदेव
 दारुःस्नाह्नासाचपलविंशतिः । मञ्जिष्ठेन्द्रयवादन्तीतगरं
 रजनीद्वयम् २० रास्नाकृमिघ्नम्मुस्तंचशिरीषंखदिरार्जु

दश दश पल ॥ १२ ॥ चारिद्रोणं पानी में पचाय जब द्रोण भरि शेषरहे तब उ-
 तारि लें बीसपल धवकूल व तुलाभर गुडडारि ॥ १३ ॥ माटी के पात्र में मास
 भर राखै यह कुटजारिष्ट सब ज्वरोंको दूरिकरि अग्निको तीक्ष्ण करताहै ॥ १४ ॥
 (विद्रधीपर विडंगारिष्ट) विडंग, पिपरामूल, रासन, कुरैयाखाल एक एक
 पल पादा, एला, नालद्वड, आबरा ये पाच पाच पल ॥ १५ ॥ आठद्रोण जल
 में आठपाय द्रोण भरहे, उतारिलें ढंढाभये तीनसै पल शहद ॥ १६ ॥ बीसपल
 धवकूल, तम्र पत्रन, इलायची, द्रोणल गोंदी, कचनार लोध पल पल भर ॥ १७ ॥
 निकुटा आठपल चूर्ण करिके डारै घृत भानन में एक मास भर राखै ॥ १८ ॥
 जैसा अग्निजल देने तैसा पिलावै ताँ विद्रधी दूरहो ऊरुस्तंभ, पथरी, प्रमेह, मत्प-
 ष्ठीला, भगोर, गण्डमाला और हनुस्तभये रोग इस विडंगारिष्टमे अच्छे होने हैं ॥
 १९ ॥ (प्रमेहपर देवदारु अरिष्ट) मर्दतुला देवदारु, रूसा बीसपल, धं
 जी, इन्द्रयव, जमालगोटा, तगर, दोनों हल्दी ॥ २० ॥ रासन, विडंग, नागर

नी । भागान्दशपलान्दद्याद्यत्रान्यात्रत्सकस्यत्वरं १ चन्दन
 स्यगुडूच्याश्चरोहिण्याश्चित्रकस्यचं । भागानष्टपलाने
 तानष्ट्रोणेम्भसःपचेत् २२ द्रोणशोषेकषायेचशीतीभूतेप्र
 दापयेत् । धातक्याःषोडशपलं माक्षिकस्यतुलंत्रयम्
 २३ व्योषस्यद्विपलंदद्यात्त्रिजातस्यतुलंत्तुलम् । चतुष्प
 लंप्रियङ्गुश्चद्विपलंतागकेशरम् २४ सर्वाण्येतात्तिसञ्चू
 ष्यन्तुभण्डेनिधापयेत् । सासादूर्ध्वपिबेदेनंप्रमेहंहन्तिदु
 र्जयम् २५ वातरोमान्प्रहण्यशोमूत्रकृच्छ्राणिनाशयेत् ।
 देवदारुर्वादिःकोरिष्टदद्रुकुष्ठनिवारणः २६ खदिरस्यतुला
 द्विन्तु देवदारुचतस्रमम् । चाकुचीद्वादशपलांदावीस्या
 त्पलविंशतिः २७ त्रिफलाविंशतिपलान्यष्ट्रोणेम्भसःप्र
 चेत् । कषायेद्रोणशोषेचपूतेशीतेविनिक्षिपेत् २८ तुला
 द्वयंमाक्षिकस्यतुलंकाशकरामता । धातक्याविंशतिपलं
 कङ्कोलंतागकेशरम् २९ जातीफलंलवङ्गैलात्वक्पत्राणि
 पृथक्पृथक् । पलोन्मितानिकृष्णायादद्यात्पलचतुष्टय
 म् ३० घृतभाण्डेविनिक्षिप्यमासादूर्ध्वपिबेन्नरः । महा
 मोवा, सिरस, खैर और अर्जुन ये दश दश पल तथा अजनायन, दुर्वा ॥ २१ ॥
 चंदन, गुर्घ, कटुकी, चीता, आठ आठ पल पानी आठ द्रोण में पचावै ॥ २२ ॥
 जब द्रोण भर शेप रहै तौ ये औषधद्वारे पाणुष सोलहपल तीनतुला, शहद ॥
 २३ ॥ त्रिफुटा दोपल, तज, पत्रज, इलायची ४ पल, प्रियंगु, ४ पल और नागके
 शर दोपल ॥ २४ ॥ इनसत्रका चूर्ण घीके वर्तनमें माम भर राखै फिर पिपे तौ दुर्जय
 प्रमेहको हरताहै ॥ २५ ॥ तथा नातरोम, प्रङ्गी, अर्श व मूत्रकृच्छको नाशै इस देवदारु
 अरिष्टमे दाद व कुष्ठ अच्चा होताहै ॥ २६ ॥ (कुष्ठपरखदिरारिष्ट) खैर
 अर्द्धतुला, देवदारु अर्द्धतुला, वकुची १२ पल, हल्दी २० पल ॥ २७ ॥ त्रिफला
 २० पल इनको आठद्रोणे जनमें पचावै द्रोणभर रहै लवङ्गकणि औषधद्वारे ॥
 २८ ॥ शहद २ तुला, सांड़ १ तुला, धतूज २ पल, फोला, नागकेशर ॥ २९ ॥
 जायफला, लोण, इलायची, तज और पत्रज ये सत्र पल २ भा, पीपरी ४ पल ॥ ३० ॥

ऋद्विद्विके ॥ ४६ ॥ कुर्यात्पृथग्द्विपलिकान्पचेदष्टगुणेज
 ले । चतुर्थीशंशृतंतीत्वामृद्गाण्डेसंनिधापयेत् ५० चतुःषष्टि
 पलांद्राक्षांपचेत्तीरेचतुर्गुणे । त्रिपादशेषंशीतंचपूर्वकाथेशु
 तंक्षिपेत् ५१ द्वात्रिंशत्पलिकंक्षौद्रंदद्याद्बुडंचतुःशतम् ।
 त्रिंशत्पलानिधातिकायाःकङ्कोलंजलचन्दनम् ५२ जातीफ
 लंलवङ्गंचत्वंगेलापत्रकेशरम् । पिप्पलीचेतिसञ्चूर्णभा
 गौद्विपलिकैःपृथक् ५३ शाणमात्रांचकस्तूरींसर्वमेकत्रनि
 क्षिपेत् । भूमौनिखातयेद्गाण्डेततोजातरसंपिबेत् ५४ कत
 कस्यफलंक्षिप्त्वारसंनिर्मलतानयेत् । ग्रहणीमरुचिशूलं
 श्वांसकासंभगन्दरम् ५५ वातव्याधिच्छयंछर्दिपाण्डुरोगं
 चकामलाम् । कुष्ठान्यशींसिमेहांश्चमन्दाग्निमुदराणिच
 ५६ शर्करामश्मरींमूत्रकृच्छ्रन्धातुक्षयंजयेत् । कृशानांपु
 ष्टिजननोबन्ध्यानांपुत्रदःपरः । अरिष्टोदशमूलारव्यस्ते
 जःशुक्रबलप्रदः ॥ १५७ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेसंन्धा-
 नकल्पनायां दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अद्विद्विके ॥ ४६ ॥ ये सब दो रं पल सव ओपधियोका अठगुना जल आटावै जव
 चौध्याई शेष रहिजाय तत्र अंतरि माटी के पात्रमें धरै ॥ ५० ॥ दास साठ पल
 चौगुना जलटे आटे चौध्याई जरै तीन चरणरहै तत्र बंदाकरि पहिले फाय संग
 मिलावै ॥ ५१ ॥ शर्द पल ३२ गुड पल १०० धवपुष्प पल ३० शीतलचीनी,
 रस वा चंदन ॥ ५२ ॥ जायफल, लौंग, वज, इलायची, पत्रज, केशर और पीपरि
 इन सबों का चूर्ण दो दो पल ॥ ५३ ॥ कस्तूरी चारिमाशे सब इकट्ठेकरि उसी में
 डारि धरती सोदि गाढे उसमें का रस पिये ॥ ५४ ॥ निर्मली रगडके डाले तौ
 रस निर्मल होजाय इसके पान करने से ग्रहणी, अरुचि, शूल, रवांसकास, भगं-
 ॥ ५५ ॥ वातव्याधि, क्षयि, छर्दि, पांडु, कामला, कुष्ठ अरु, प्रमेह, मन्दाग्नि,
 उदररोग ॥ ५६ ॥ मिक्ताप्रमेह, पथरी, मूत्र कृच्छ्र और धातुक्षय ये रोग जायें दुर्बल
 मोटाहोय पाणिनि मुधजन यह दशमूलारिष्ट तेज धातु और जल को देताहै ॥ १५७ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरेदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

स्वर्णतारंताद्यमारंतागवङ्गौचतीक्ष्णकम् । धातवः स
 सविज्ञेयारततस्ताऽच्छोधयेद्बुधः १ स्वर्णतारारताघ्राणां
 पत्राण्यग्नीप्रतापयेत् । निषिञ्चेत्सप्ततप्तानितैलेतक्रेचका
 ज्जिके २ गोमूत्रेचकुलत्थानांकपायेचत्रिधात्रिधा । एवंस्व
 र्णादिलोहानांविशुद्धिःसम्प्रजायते ३ नागवङ्गौप्रतप्तौघ्रा
 गलितौतौनिपेचयेत् । त्रिधात्रिधाविशुद्धिःस्याद्रविदुग्धेन
 चत्रिधा ४ स्वर्णस्यद्विगुणंसूतमम्लेनसहमर्दयेत् । तद्गोल
 केसमंगन्धनिदध्यादधरोत्तरम् ५ गोलकंचततोरुध्याच्छ
 रावद्वसम्पुटे । त्रिंशद्वनोपलैर्दद्यात्पुटान्येवंचतुर्दशः ६
 निरुत्थंजायतेभस्मगन्धोदेयःपुनःपुनः। काञ्चनेगलितेना
 गंधोडशांशेननिक्षिपेत् ७ चूर्णयित्वातथास्लेनघृष्ट्वाकृ
 त्वाचगोलकम् । गोलकेनसमंगन्धदत्त्वाचैर्वाधरोत्तरम् ८
 शरावसम्पुटेघृत्वापुटेत्रिंशद्वनोपलैः । एवंसप्तपुटैर्हमनिरु
 त्थंभस्मजायते ९ काञ्चनाररसैर्घृष्ट्वासमसूतकगन्धयोः ।

(स्वर्णादिधातुशोधन) सोना, चांदी, तांबा, पीतर, सीसा, रांगा और
 लोहा इन सातों धातुओंके शोधने की रीति कहते हैं ॥ १ ॥ सोना, चांदी, पीतर
 और तांबा इनके सूक्ष्म पत्र बना आगिमें लाल तपाय तेल मट्टे का भीमें बुझाय ॥
 २ ॥ गोमूत्र में कुलथी फाथ में इन सप्तमें तीन तीनवार बुझावै इसीभाति स्व-
 र्णादि धातु शुद्ध होतीहै ॥ ३ ॥ सीसा रांगा ये गन्ताकण पूर्वोक्त पदार्थोंमें तीनवार
 बुझावै फिर तीन२ बार मदारदुग्धमें बुझावै ॥ ४ ॥ (सोना मारनेकी विधि)
 शुद्धसोना तिस३ दूना शुद्ध पारा मीठूके रसमें त्रोटि गोली करि गोली समान गं-
 धक पीसि तरे ऊपरघरे ॥ ५ ॥ मट्टीके दो सरवाले एकनीचे में गोलाघरि दूसरा
 ऊपरढके उसपर कपरीदीकरि त्रिगुणकंडा की आंचठेय इसे शरासंपुट फटते हैं
 इसी प्रकार आगिले निकार संपुटकरि चौदहवार आचदेवै ॥ ६ ॥ यों प्रतिआचदे
 गंत्रकटेनेसे स्वर्णभस्म निर्मल होती है (पुनर्विधि सोनेकी) १६ मासे सोना
 गलाय माशापरि सीसाठारि उतारि छट्टाकरि ॥ ७ ॥ चूर्णकरै नीडूके रस में
 गोलाघरै नीचे ऊपर गंत्रकरि ॥ ८ ॥ गोलके समान शरासंपुटकरि ३० गो-

कञ्जलीहेमपत्राणिलेपयेत्सममात्रया १० काञ्चनारत्व
 चःकल्कमूपायुग्मंप्रकल्पयेत् । धृत्वातत्सम्पुटेगोलंमृन्मूषा
 सम्पुटेचतत् ११ निधायसन्धिरोधंच कृत्वासंशोष्यकोकि
 लैः । वह्निस्वरतरंकुर्यादेवंदत्त्वापुटत्रयम् १२ निरुत्थंजा
 यतेभस्मसर्वकार्येषुयोजयेत् । काञ्चनारप्रकारेणलांगली
 हन्तिकाञ्चनम् १३ ज्वालामुखीतथाहन्यात्तथाहन्तिमनः
 शिला । शिलासिन्दूरयोश्चूर्णंसंमयोरर्कदुग्धकैः १४ सप्तै
 वभावनादद्याच्छोषयेच्चपुनःपुनः । ततस्तुगलितेहेम्नि
 कल्कोयंदीयतेसमः १५ पुनर्धमेदतितरां यथाकल्कोवि
 लीयते । एवंवारत्रयंदद्यात्कल्कोहेममृतिर्भवेत् १६
 पारावतमलैलिम्पेदथवाकुक्कुटोद्भवैः । हेमपत्राणितेषांच
 प्रदद्यादधरोत्तरम् १७ गन्धचूर्णसमं कृत्वा शरावयुगसम्पु
 टे । प्रदद्यात्कुक्कुटपुटं पञ्चभिर्गोमयोपलैः १८ एवंनवपु

इटाकी आचदे तब सोना निरुत्थ भस्म होजाताहै ॥ १० ॥ (तीसरा) कचनारके
 रस में पारा, गंधक समान मिलाय खरलकरै जब कजलीहो तब सोने के पत्रर
 लगावै ॥ १० ॥ फिर कचनार की छाल पीसिकै उस गोलेपर बहुतसी लपेटै
 फिर दोपरिया मिट्टीकी बना एकमें धरि दूसरी ऊपर ढकि ॥ ११ ॥ कसिकै क-
 परौटी करि सुत्ताय बड़ी आचदे इसीतरह मयम कही रीतिसे तीन आचदे ॥ १२ ॥
 जब जिलाने से न जिये तौ उचमहै भस्म जैसे कचनार, विरान से भरताहै तैसेही
 करि या रीति से भी भरताहै ॥ १३ ॥ ऐसे ज्वालामुखी कहे अरणी से भी भस्म
 होताहै तैसे मैनशिल से मैनशिल सेदुर सम ले मदारदूध में घोटि ॥ १४ ॥ सात
 बार घोटि घोटि सुत्ताय सुत्ताय ले तब दशमाशे सोना गलाइ चरक ताने लगै तब
 दशमाशे वह मैनशिल सिंदूर का सिद्धचूर्ण सोनेमें छोड़ै ॥ १५ ॥ हुकनी दके तीन
 आचदे जरतक वह हुकनी न जरिजाय तबतक आचदे इसीभाति हुकनी देदे तीन
 आचदेय तौ सोना भस्म होग ॥ १६ ॥ पाचवां कचनार की वा कुक्कुटकी घोट दोनों
 सोने के पत्रकरि ऊपरनीचे लपेटै ॥ १७ ॥ उसी के समान गन्धकचूर्ण भी दोनों

टंदद्याद्दशमं चर्महापुटम् । त्रिंशद्दशोपलैरेवं जायते हेम
 भस्मताम् १९ भागैकं तालकं मर्द्यं याममन्लेन केनचित् ।
 तेन भागत्रयं तारपत्राणि परिलेपयेत् २० धृत्वामूषापुटे
 रुध्वा पुटे त्रिंशद्दशोपलैः । समुद्धृत्य पुनस्तालं दत्त्वा व
 ध्वापुटे पचेत् । एवं चतुर्दशपुटे स्तारं भस्मप्रजायते २१
 स्नुहीक्षीरेण सम्पिष्टं माक्षिकं तेन लेपयेत् । तालकस्य प्रका
 रेण तारपत्राणि बुद्धिमान् । पुटे चतुर्दशपुटे स्तारं भस्मप्र
 जायते २२ अर्कक्षीरेण सम्पिष्टो गन्धकस्तेन लेपयेत् । समे
 नारस्य पत्राणि शुद्धान्यम्लद्रवैर्मुहुः २३ ततो मूषापुटे धृ
 त्वापुटे द्वजपुटे नतु । एवं पुटद्वये नैव भस्मारं भवति ध्रुवम् २४
 आरवत्कांस्यमप्येवं भस्मता घन्तुनिश्चितम् । अर्कक्षीरं
 घंदाजं स्यात्क्षीरं निर्गाण्डिका तथा । तादृशीति ध्वनिवधेस

मंगन्वकयोगतः २५ सूक्ष्माणिताक्षपत्राणि कृत्वामंशोधं
 येद्बुधः । वासरत्रयमम्लेनततःखल्वेविनिक्रिपेत् २६
 पादाशंसूतकंदत्वा याममम्लेनमर्दयेत् । ततउद्धृत्यप
 त्राणि लेपयेद्द्विगुणेनच २७ गन्धकेनाम्लघृष्टेन तस्य
 कुर्याच्चगोलकम् । ततःपिष्ट्वाचमीनाक्षी चाङ्गेरीचपुनर्नवा
 २८ तत्कलेनवर्हिर्गोलं लेपयेद्द्वयद्गुलोन्मितम् । धृ
 त्वातद्गोलकंभाण्डे शशावेणचरोधयेत् २९ बालुकाभिः प्र
 पूर्याथ विभूतिलवणाम्बुभिः । दत्त्वाभाण्डेमुखेमुद्रांततश्चु
 ल्ल्यांत्रिपाचयेत् ३० क्रमदृष्ट्वाग्निनासम्यग्वावद्याम
 चतुष्टयम् । स्वाङ्गशीतलमुद्धृत्यमर्दयेत्सूरणाद्रवैः ३१
 दिनैकंगोलकं कुर्याद्वर्द्धगन्धेन लेपयेत् । सघृतेनततो
 मूषापुटेगजपुटेपचेत् ३२ स्वाङ्गशीतसमुद्धृत्य मृतं
 ताम्रंशुभंभवेत् । वान्तिभ्रान्तिक्लमरेकं न करोतिकदाच

पय व भिन्डी-रस में गन्ध पीसि तावे वा-कासे जा पीतरपत्र पर लगाय पूर्वोक्त
 रीतिसे कूकै तौ तीनीपर ॥ २५ ॥ (ताम्रभस्म) डमली पत्रकी मुटार्ई-समपत्र
 करि ताम्रपत्र पर स्वटार्ईका पानीदे-तीन दोलायत्रकी आचदेकर सरलकरै ॥ २६ ॥
 तावे की चौधार्ई पारादे पहरभर नीचू में,घो-फिर तावेकी दूनी गन्ध नीचूके-रसमें
 घोट पत्र पत्रनेप गोला वात्रि मकोप या अमलोनिमा जा गदापुरैना ॥ -७१२८ ॥
 इनकी पीठी दो अंगुल मोटी-गोत्रपर लेपेट एक वासनमें धरि मुगमूदिदे ॥ २९ ॥
 तत्र एक बड़े वासनकी पेंदीमें छेदकरि उतपर अन्नरुधरि घोहा बालू भरै तिसपर
 लोनवा पानी छिडक पहिला वासनधरै फिर गालुभरि लोत्रका पानीदे त्वार्ईदे
 जिममें-बह-वासन तुपजाइ-तब बड़े वासन का मुहमूदि कपरौटी करि चूहेपै धरि
 लकड़ी-की आचदेय ॥ ३० ॥ मद आचदे फिर क्रममे तैज करता चार पहर
 आचदे ठंडावरि सूरनके रसमें ॥ ३१ ॥ एकदिन उसी तावेका आधा लघक आधा
 पीले सरलकरि उसे तावेपर लेपकरि,मूसार्थत्रमें धरि फिर गजपुट आचदे ॥ ३२ ॥
 जब उसी में स्वाभाविक शीत होजाय तब निकारिले तौ उवाकी संभ्रम चित्त

३३ तीम्बुलीरससम्पिष्टं शिलालेपात्पुनः पुनःपिष्टा
 त्रिंशद्भिः पुटेर्नागा निरुत्थोयातिभस्मताम् ३४ अश्व
 च्छात्रिञ्चात्त्वक्चूर्णं चतुर्थांशेननिक्षिपेत् । मृत्पात्रेद्राधिते
 नागेलोहदर्व्याप्रचालयेत् ३५ यामैकेनभवेद्भस्मतसुल्यां
 चमनःशिलाम् । काञ्जिकेनद्वयंपिष्ट्यापचेद्दृढपुटेनच ३६
 स्वाङ्गशीतंपुनःपिष्ट्याशिलयकाञ्जिकेनच । पुनःपुटच्छरा
 वाभ्यामेवं पट्टिपुटेर्मृतिः ३७ मृत्पात्रेद्राधितेवृद्धे चि
 ष्छाश्वत्थत्वचोरजःका क्षिप्त्वाबल्लचतुर्थांशमयोदर्व्याप्र
 चालयेत् ३८ ततोद्वियाममात्रेणवङ्गभस्मप्रजायते । अ
 थभस्मसमंतालं क्षिप्त्वाग्नेनविमर्दयेत् ३९ ततोगजपु
 टेपक्त्वा रसेनपुनरम्लयेत् । तालेनदशमांशेनयामैके
 ततःपुटेत् ४० एवंदशपुटेःपकोयद्भस्मस्तुध्रियतेध्रुवमनां शु
 ष्ढलोहमवचूर्णं पातालगरुडीरसैः । मर्दयित्वापुटेद्द्वयोद
 विकलाई और दस्त आना दूरहो तब जानिये ताकी शुद्धमया ॥ ३३ ॥ ताल
 भस्म) पानके रसमें पैतशिलको पीसि सीसे के पत्रपर लगाने बलिब करेगा है
 (आंचदे ऐसेही पचिस आंचदे ॥ ३४ ॥ (पुनःविधान) पीसि, बन्नीकी बन्नी
 का चूर्ण शौथई सीसीदे माटी के बसनेमें धरि नीचे कांचरी कर सीसे रस
 तब वही दोनों धाल का चूर्ण डारि डारि लोहेको कालीमें चनावाये ॥ ३५ ॥
 ऐसे पहर भर आंचदेय तब सीसकी भस्मलेके बराबर पैतशिलदे कांजीमें दोदि
 सुखाय गजपुट आंचदेय ॥ ३६ ॥ इत्येवमथे फिर पैतशिल कांजीदे पीसि
 गजपुटदेय ऐसे साठि आंचदेय तब सीसामर को साठिसे कनदेय तौ जीतला
 है ॥ ३७ ॥ धर्मभस्म रांगा माटी के बसने में लगाने चौपाई पीसि बन्नीकी
 धालको चूर्ण देकर लोहे की काली से घोट ॥ ३८ ॥ दोपहर घोट को रांगा
 भस्महोय रांगा की भस्म के तुल्य हरतानु डारि निम्बू के रस में घोट ॥ ३९ ॥
 गजपुटकी आंचदे फिर निकार नोईका रस और दशमं हरतानुदे पहरभर घोटै ॥
 ४० ॥ फिर उसे फूकेदे इसेभातिदश आंचदे तब चंग तैयार होय शुद्ध जोहा ति
 सिका चूर्ण पातालमूली और पातालमूली विना करेगा है रसमें घोटै आंच

११। द्यादेवंपुटत्रयम् ४१ पुटत्रयंकुमरिष्याश्चकुठारच्छिन्नकार
 सैः । पुटषट्कंतनोदद्यादेवंतीक्ष्णमृतिर्भवेत् ४२ क्षिपेद्द्वौ
 दशमांशेनदरशंतीक्ष्णलोहतः । मर्दयेत्कन्यकाद्रावैर्याम
 युग्मं ततः पुटत् । एवंमत्तपुटैर्मृत्युं लोहचूर्णमवाप्नुयात्
 ४३ रसैःकुठारच्छिन्नायाः पार्तालगरुडीरसैः । इस्तन्येन
 चार्भटुग्धेनतीक्ष्णस्यैवंमृतिर्भवेत् ४४ सूतकाद्विगुणंगन्धं
 दत्त्वाकुर्याच्चकञ्जलीम् । द्वयोःसमं लोहचूर्णं मर्दयेत्कन्य
 काद्रवैः ४५ यामयुग्मंततः पिण्डं कृत्वाताम्रस्यपात्रके । घ
 भेधृत्वोरुवृक्षस्य पत्रैराच्छादयेद्बुधः ४६ यामार्द्धेनोष्म
 ताभर्याद्वान्यराशौन्यसेत्ततः । दत्त्वोपरिशंरावञ्चत्रिदिना
 न्तैसमुद्धरेत् ४७ पिण्डाच्चगालयेद्वस्त्रादेवंवारितरंभवेत् ।
 एवंसर्वाणिलोहातिस्वर्णादीन्यपिमाहमेत् ४८ तिलगन्धा
 र्कंदुग्धाक्लोस्त्रणाद्यास्सप्तधावतः । खियन्तेद्वादशपुटैः
 सत्यंगुरुवचोयथा ४९ आक्षिपंतुत्यकाभ्रौचनीलाञ्जन
 देः एते त्रीणि आच दे ॥ ४१ ॥ फिल घीकुवारके रसमें घोटै तीन आचदे फिर
 कुरिया झाल के फाय में घोटि कुरियादे तो लोह भस्म होता है ॥ ४२ ॥ (पुनः)
 जितना लोहाहो तिसका चारहवा अंश सिंगरफदे घीकुवारके रसमें दोपहर घोटै
 आच दे तो लोह भस्म होता है ॥ ४३ ॥ (पुनः) कुरिया रस वा छरहटा रस
 में त्रा री के दूध में वा मदार रस में सिंगरफ युक्त किसी में घोटि सात आच
 दे तो लोह भस्म होता है ॥ ४४ ॥ (पुनः) पारे की दूनी गन्धकमिलाय कजली
 करि कजली के समान लोह चूर्ण ले, घीकुवारके, रसमें दोनों घोटै ॥ ४५ ॥
 दोपहर घाटि पिण्डी धनाय तापे के पत्र में घरि रंडपात से ढँकि ॥ ४६ ॥ चारि
 मरी घूय में राक्षि पतौआ उतारि फेंकिदेय दूसरे पात्रमें दाकि अनाज की राणि
 में तीनदिन गादिकै निकार लेय ॥ ४७ ॥ खच पीसिके कपड़े में द्यानि पानी
 पर डारे से लोह तिरंगा ऐसेही स्वर्णादि सब धातु मारिये ॥ ४८ ॥ (सीस-
 रीविधि) शिल ख गन्धक मदार के दूध में सरल कारणे इसी प्रकार सात
 धातु में चादे जिस धातुको चारह आचदे इससे धातु भस्म होजाती है यह रीति नि-

शिलालकाः । रसकश्चैवविज्ञेयाएतेसप्तोपधातवः । ५०
 माक्षिकस्यत्रयोभागा भागैकसैन्धवस्यच । मातुलुङ्गद्रवै
 र्वाथजम्बीरोत्थद्रवैः पचेत् ५१ चालयेहोहपात्रेणयावत्पा
 त्रंसुलोहितम् । भवेत्ततस्तुसंशुद्धंस्वर्णमाक्षिकमृच्छति
 ५२ (अन्यञ्च) कुलत्थस्यकपायेणघृष्ट्वातैलेनवापुटेत् । तं
 क्रेणवाजमूत्रेणघ्नियतेस्वर्णमाक्षिकम् ५३ कर्कोटीमेषत्
 ज्ज्युत्थैर्द्रवैर्जम्बीरजैरसैः । भावयेदातपेतीत्रेविमलाशुन्या
 तिध्रुवम् ५४ विष्टयासर्दयेत्तुत्थंमार्जारककपोतयोः । दशांशं
 टङ्कणं दत्त्वापचैनृदुपुटेत्ततः । पुटं दध्नः पुटं शौर्द्रैर्देयं तुत्थ
 विशुद्धये ५५ कृष्णाभ्रकन्धमेद्वह्नौ ततः क्षीरे विनिःक्षिपे
 त् । भिन्नपत्रंतुतत्कृत्वा तन्दुलीयाम्लघोर्द्रवैः ५६ भावयेद
 ष्टयामन्तं देवंशुध्यतिचाभ्रकम् । बद्धाधान्ययुतायस्त्रैर्मर्द
 येत्काञ्जिकैरसह ५७ कृत्वाधान्याभ्रकंतत्तुशोषधित्वायम

र्दयेत् । अर्कक्षीरैर्दिनंमर्द्यचक्राकारन्तुकारयेत् ५८ वेष्टये
 दर्कपत्रैश्चसन्प्रगजपुटेपचेत् । पुनर्मर्द्यपुनःपाच्यंसेत्
 वारंप्रयत्नतः ५९ ततोवटजटाकाथैस्तद्वद्द्वेषुपुटेत्रयम् ।
 धियतेनात्रसन्देहःसर्वरोगेषुयोजयेत् ६० शङ्खधान्याभ्रं
 कंमुस्तंशुण्ठीषड्भागयोजितम् । मर्दयेत्कांजिकेनैवंदिनेत्रि
 त्रकजैरसैः ६१ ततो गजपुटं दद्यात्तस्माद्दुद्धृत्यमर्दयेत् ।
 त्रिफलावारिणातद्वत्पुटेदेवपुटेस्त्रिभिः ६२ बलागोमूत्रमु
 शलीतुलसीशूरणद्रवैः । मर्दितंपुटितं बह्वौत्रित्रिवेलेन
 जेन्मृतिम् ६३ धान्याभ्रकस्यभागैकद्वौभागौटङ्कणस्यच
 पिण्ड्वात्तदधसुपायां रुद्ध्वातीत्राग्निनापचेत् । स्वभावशी
 तलंचूर्णसर्वरोगेषुयोजयेत् ६४ नीलाञ्जनंचूर्णयित्वाज
 म्बीरद्रवभाषितम् । दिनेकमातिपेशुद्धंभवेत्कार्येषुयोजयेत्
 ६५ एवंगौरिककाशीशंठङ्कणानियराटिका । तुवरीशंखकंकु
 प्टशुद्धिमायातिनिश्चितम् ६६ पचेत्त्रयहमजामूत्रैर्दोलाय

यासनमें धरि जव धिराय कांजी जराय अश्रक सुखाय मदार दधमें दिनभर पुटाय
 टिकियाकरै ॥ ५८ ॥ मदार परमें लपेट गजपुट आंचदे ऐसेही मदार दधमें घोटि
 घोटि सातपुटेदेय ॥ ५९ ॥ (फिर) परगदजटाकाथमें घोटि घोटि तीन पुटेदेय
 इस प्रकार निस्संदेह अश्रक मरेगा सबकर्म योग्य होगया ॥ ६० ॥ (दूसरीविधि)
 शुद्ध अश्रक ले बडा बडाभ्रंश मोघा व सौठ दे कांजीमें दिनभर सरलकरि फिर
 चीता के रसमें ॥ ६१ ॥ तत्र गजपुट आंचदे फिर निकार तीनभाग त्रिफला रस
 में घोटि घोटि गजपुट आंच देय ॥ ६२ ॥ फिर बरियारा, गोमूत्र, एशली,
 कृष्णतुलसी और सूरन इनके रस में घोटि घोटि तीनबार गजपुट आंच देय
 तो अश्रक मरे ॥ ६३ ॥ एक भाग शुद्ध अश्रक दो भाग सुहागा देकर अंधमूपक
 यगमें रुंघि गजपुटकी तेज आंच में फूंक इसकी छंटी मृदृति है सब रोगों में देना
 योग्यहै ॥ ६४ ॥ (सुरभा शोधन व भारण) सुरभा जूरीनरि जन्मीरी नींरु

* यथापि मृष्य भट्टना । कसी पद्य धादिभे भरकरे जो औषध शास्त्रीहो बसपी पाखी
 चार अठकार देव इसभाति सराविधि करवे को सातपुट कादि ॥ ५८ ॥ १११

त्रेमनःशिलाम् । भावयेत्सप्तधापितैरजायाःशुद्धिमृच्छति
 ६७ (अन्यच्च) अगस्तिपत्रतोयेन भावयेत्सप्तवारकम् ।
 शृङ्गवेररसैर्वापि विदधाति मनःशिलाम् ६८ तालकंकणशः
 कृत्वा तन्नूर्णकाञ्चिकेक्षिपेत् । दोलायन्त्रेण यामैकं ततः कृष्ण
 ण्डजैर्द्रवैः ६९ तिलतैलेपचेद्यामं आसञ्चेत्त्रिंफलाजलैः ।
 एवंअन्त्रेचतुर्ग्रामंपाच्यंशुद्धयति तालकम् ७० नरमूत्रे तु
 गोमूत्रे संसाहंरसकंपचेत् । दोलायन्त्रेण शुद्धं स्यात्ततः का
 र्यं पुनोजयेत् ७१ लाक्षां मीनपयश्छागं टङ्कणमृगशृङ्गकम् ।
 पिण्याकंसर्पपाशियर्गुञ्जोर्णागुडसैन्धवम् ७२ यथास्ति क्वा
 घृतं क्षौद्रं यथा लोभं विचूर्णयेत् । एभिर्विभिश्चिताः सर्वे धात
 वांगाढ्यं ह्निताः । सषाधमाताः प्रजायन्ते मुक्तमत्स्वनि संश
 यः ७३ कुलित्थकोद्रवकाथैर्दोलायन्त्रे विपाचयेत् । व्या

श्रीकन्दगतवज्रं त्रिदिनशुद्धिमृच्छति ७४ तसंततन्तुत्त
 द्वजं खरसूत्रे निषेचयेत् ॥ पुनस्ताप्यपुनःसेच्यमेवंकुर्यात्त्रि
 सप्तधा ७५ मत्कुणैस्तालकंपिप्पुह्वा प्रावद्धवतिगोलकम् ॥
 तद्गोलेनिहितं वज्रं तद्गोलंचाधिकंधमेत् ७६ सेचयेदख
 सूत्रेण तद्गोलंचक्षिपेत्पुनः ॥ रुद्धात्मातपुनःसेच्यमेवंकु
 र्यात्त्रिसप्तधा ॥ एवंचधियतेवज्रं चूर्णं सर्वत्रयोजयेत् ७७
 हिङ्गुसैन्धवभ्युक्तेकाधिकौलथ्यजेक्षिपेत् ॥ तप्ततप्तपुनर्वज्रं
 भूयाच्चूर्णं त्रिसप्तधा ७८ मण्डूककांस्यजेपात्रेनिगृह्यस्था
 पयेत्सुधीः ॥ सभितोमूत्रयेत्तत्र तन्मूत्रेवज्रमावपेत् ॥ तप्त
 न्तप्तञ्चबहुधावज्रस्यैवस्मृतिर्भवेत् ७९ वैक्रान्तं वज्रं वच्छो
 ध्यं नीलंवालोहितं तथा ॥ हयसूत्रे तु तत्सेच्यं तप्ततप्तहि
 सप्तधा ८० ततश्चमेषदुग्धेन पञ्चाङ्गेगोलकंक्षिपेत् ॥ पु
 टेन्मूपापुटेरुद्धा कुर्यादेवंचसप्तधा ८१ वैक्रान्तं भस्मतां

टैयाकी जड़की लुगदीमें हीराखं कपडेमेंधांधि तीनदिन सिद्ध करे तय हीरा शुद्धो
 फिर आगिमें तपाय खर(गच) के सूत्रमें २१ बार बुझावे ॥७४॥ मत्कुण कहै
 खटकिरिया और हरताल पीसि गोलकरि उसमें हीराधरि तीव्र आंचदेकर मूपा
 धर्ममें राखि भाषीमें फूके ॥ ७६ ॥ (फिर) अश्वत्थमें २१ बार बुझाय हरताल
 गोलामें धरि फूके इकीसवार अश्वत्थ में बुझाय फूके ऐसे हीरा भस्म होताह
 उसकी चूर्ण संबध साध्य है ॥ ७७ ॥ (पुनर्विधिः) हींग, सिध्दतोल, कुल्थी
 कापमें डारि उसमें हीरा तपाइ तपाइ २१ बार बुझावे तो हीरामरि ॥ ७८ ॥ (तृ
 तीयविधि) मेढक कांसके पात्रमें मूदे उसे डरायै जब मयसे मूदे उस मूतमें हीरा
 तपाय तपाय बहुत बुझावे तो खिलके चूर्णहो मरिजाय ॥ ७९ ॥ वैक्रान्त शाध
 नमारण) वैक्रान्त कबे हीरेको कहते हैं कालाही या लाल से हीरेको नहि
 शोभे लाल करिकरि १४ बार बुझाय ॥ ८० ॥ मेढासिगो के पंचांगके गोले में
 धरि मूपाधर्ममें अरिसंपुटकरि फूकवे इसीतरह सातवार फूके ॥ ८१ ॥ तय वैक्रा

यातिवज्रस्थानेनियोजयेत् । स्वेदयेद्दोलिकायन्त्रेजघन्त्याः
स्वरसेनत्र । मणिमुक्ताप्रवालानां यामैकशोधनंभवेत्
८२ कुमारीतन्दुलीधेनस्तन्येनचनिषेचयेत् । प्रत्येकं स
खेलञ्चतप्ततप्तानिकृत्स्नशः ८३ मौक्तिकानिप्रवालानि
तिथारत्नात्प्रशोषतः । क्षणाद्विविधवर्णानि धियन्तेनाग्रसं
शयः ८४ उक्त्वाक्षिकवन्मुक्ताप्रवालानिचमारयेत् । एवं
ज्वत्सर्वरत्नानि शोधयेन्मारयेत्तथा ८५ शिलाजतुसर्पा
नीधि ग्रीष्मतप्तशिलान्युतस । गोदुग्धैस्त्रिकलाकार्यैश्च
राजैश्चमर्दयेत् । आतपेदिनमेकन्तु तच्छुष्कंशुद्धतां
व्रजेत् ८६ मुख्यांशिलाजतुशिलां सूक्ष्मविषण्डप्रकीर्णत
म् । निक्षिप्यात्युष्णपानीयेग्रामैकंस्थापयेत्सुधाः ८७ म
र्दयित्वाततीनीरं गृह्णीयाद्बलगालितम् । स्थापयित्वा
चमृत्पात्रं धारयेदातपेत्सुधः ८८ उपरिस्थंघनंयस्या
त्तत्किपेदन्यपात्रके । धारयेदातपेतस्मादुपरिस्थंघनं
येत् ८९ एवंपुनःपुनर्नीत्वा द्विमासाभ्यांशिलाजतु । सू
तभस्महाय सोहीरेकी ठौरदेय ॥ (सर्वरत्नशोधन व मारण) अन्ते शोनी
वा माणिक वा भूंगा धरणी रसदे दोलायंत्र में एकाग्र सिद्ध करी ती दुग्ध रोज ॥
८२ ॥ चीकुवार चौराई वा लीका दूध इन तीनोंमें सातसातवार माणिकादि वपन
तपायं बुझावै ॥ ८३ ॥ मूमा मुक्तादि ये सब क्षणभरमें कृषी पलटजावै ईसमें तं-
शयनहीं ॥ ८४ ॥ भूंगा, भोती, सेमीयाली की रीतिसे भी मरताई और तत्र रत्न
हीरेकी नाई शोधै व मारै ॥ ८५ ॥ शिलाजीत शोधनं ग्रीष्मकी सातवसे
पर्वतसे चुया शिलानीत खाय गायका दूध वा त्रिकलाकार्ये वा भारेके स्तन पर
भर घोटी दिनभर घाममेंधरे सूखजावती शुधिजाय ॥ ८६ ॥ (दूसरीरीति) सूखी
शिलाजीतकी शिलाले छोटें छोटें टुकरी अति बष्णजलमें धारण करै ॥ ८७ ॥
उसे पानीमें पीसै फिर घामके लैलेप फिर भांटीके घासनमें करि धरने करै ॥ ८८ ॥
जब मलाई परे उसे कांछि और पात्रमें रखलै फिर और बल नकरै ॥ ८९ ॥
दे फिर मलाई लेले पहिली मलाई में रतता जाय इसीप्रति दो मासतक करै

यात्कार्यक्षमं बह्वौ क्षिप्त्वा लिङ्गोपभंभवेत् ९० । निर्धूमं च
 ततः शब्दं सर्वकर्ममुयोजयेत् । अथः स्थितं त्वत्तच्छेषं त
 स्मिन्नीरं विनिःक्षिपेत् । विमर्द्यधारयेद्घर्मे पूर्ववच्चैव न च
 येत् ९१ । अक्षाङ्गैरेधमेत्किट्टं लोहजंतद्गवांजलैः । सेच
 येत्तप्ततप्तं च सप्तवारंपुनःपुनः ९२ । चूर्णयित्वा ततः काथै
 द्विशुणैश्चिफलाभयैः । आलोल्य भर्जयेद्बह्वौ मण्डूरं जाय
 तेवरम् ९३ । क्षारवृक्षस्य काष्ठानि शुष्कान्यग्नौ प्रदीयते ।
 नीत्वा तद्गुणं मृत्पात्रे क्षिप्त्वा नीरे चतुर्गुणे ९४ । विमर्द्यधा
 रयेद्वात्रौ प्रातर्बद्धाजलं नयेत् । तन्नीरं काथयेद्बह्वौ याव
 त्सर्वं त्रिशुष्यति ९५ । ततः पात्रात्समुल्लिख्य क्षारोग्राह्यः
 सितप्रभः । चूर्णाभः प्रतिसार्यः स्यात्पेयः स्यात्काथवत्स्थि
 तः । इति क्षारद्वयंधीमान् युक्तकार्येषु योजयेत् ९६ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरेणैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

तत्र शिनाजीत कार्यकारी होता है और आगिमें रखने से लिंकार होता है ॥
 ९० ॥ निर्धूमण्ये जानिये कि शिनाजीत अच्छा चनगया पहिली मलाई इस प्रकार
 मनी फिर पहिली मलाई के तरे और जो बहुधारका निकला पानी उसके तरे ध-
 रारहे इन दोनोंको गरमपानी देदे पीसि फिर दोमासताई दूना पानी डारि शुद्ध
 करे ॥ ९१ ॥ (अथ मंडूरविधि) कीटी लोहेका मैल पहिराकी लकड़ीके
 कोषलामें लालकरि गोमूत्रमें सातवार बुभाये ॥ ९२ ॥ तत्र कीटका चूर्णकरि दूने
 चिफला कायमें मिजाय पात्रमें धरि आंचमें चिफला काय जरायके उतारिले तत्र
 मंडूर अच्छा होता है ॥ ९३ ॥ (अथ क्षारविधि) क्षारवृक्षकी लकड़ीकी
 राखकरि चौगुने पानीमें धोति ॥ ९४ ॥ रातभर राखि प्रभात धिराना पानी ले
 आगिपर चढ़ाय पानी जरायै जत्र पानी जरिजाय ॥ ९५ ॥ तत्र उतारिले उसीको
 चार कहते हैं सफेद होजाता है और सत्र पानी न जरै तो काय समरइता है ये दो
 प्रकार सार पैचमत्त औपधोमें देते हैं " कुरैया, पलाश, वकायन, घरेडा, अमल-
 तास, मदारे, अमली, सेहुँद, चिरचिरा, पादा, केला, जमालगोटा, सदिजन और
 मरी" इत्यादि चारवच कहाने हैं ॥ ९६ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेणैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

पारदःसर्वरोगाणांजेतापुष्टिकरःस्मृतः । सुदिनेसा
धनंकुर्यात्संसिद्धिदेहलोहयोः १ रसेन्द्रः पारदःसूतोहर
जःसूतकोरसः । बुधैस्तस्येतिनामानिज्ञेयानिरसकर्म
सु २ तास्यतारारनागाश्चेहमवङ्गौचतीक्ष्णकम् । कांस्थ
कंठतलोहंच धातघोनवसंस्थिताः । सूर्यादीनांग्रहाणां
तेकथितानामभिःक्रमात् ३ राजीरसोनमूपायारसंक्षिप्त्वा
विवन्धयेत् । वसोणदोलिकायन्त्रेस्वेदयेत्काञ्जिकैस्त्र्य
हम् । दिनैकमर्दयेत्सूतंकुमारीसम्भवेद्रवैः ४ तथाचित्र
कजैःकार्थैर्मर्दयेदेकवासरम् । काकमाचीरसेस्तद्विदिनमे
कञ्चमर्दयेत् ५ त्रिफलायारतथाकार्थैरसोमर्द्यःप्रयत्नतः ।
ततस्तेभ्यःपृथक्कुर्यात्सूतंप्रक्षाल्यकाञ्जिकैः ६ ततःक्षि
प्त्वारसंखल्वैरसाद्वैचसैन्धवम् । मर्दयेन्निम्बुकरसैर्दिन
मेकमनातुरम् ७ ततोराजीरसोन्श्चशुष्यश्चनवसाद

पाराको सर्वरोग जीतनेवाला व पुष्टिकारक कहते हैं शुभ दिन शुद्ध कम्पा
आरम्भ करै थच्छा सिद्धहो नो जरा व्याधि दूरकरै लोहादि धातु पारे मे नुंस्त्वा
करै उत्तम होय शरीर पुष्टि करती है प्रमाण ॥ उत्तमं सराज्ञेन मन्मथं पञ्चादि-
भिः । अधमं मूनक्षारैश्च तैलेनाप्यधमाधमम् ॥ १ ॥ (पारानान) रसेन्द्रः पारदः,
सूत, हरज, सूतक और रस ये छः नाम पंडित रसक्रिया में समझने हैं ॥ २ ॥
वावा, रूपा, पीतल और सीसा, सोना, रांगा, पोलाद, कांता और लोहा ये नव
धातु सूर्यादि नक्षत्रहके क्रमसे ही नाम समझने हैं ॥ ३ ॥ (रसशोधन) त्रिफलायारमुन
की लुगदीका सूसायंत्र करि पाराभरि सुवर्गदि गोत्रे बरगमे बाधि दोलायंत्रपेक्षांती
के संग तीनदिन आंचदे शुद्धकरै फिर एक दिन त्रिकुचार के रसमें घोटे ॥ ४ ॥
एकदिन चांवाकायमें एकदिन मकोथरसमें ॥ ५ ॥ एकदिन त्रिफलाके रसमें शेर
पारा निशारे धोय लेय ॥ ६ ॥ पारा एकभाग सैराश्रद्धभाग दिनभर नैचुं रसमें
खूबघोटे ॥ ७ ॥ राई, लहसुन अच्चा नालादर ये सब पारके समानले पारके संगे

१ सूयं नद्रपत्तौ भौम, नधिर्नाती राभां नौ । सूयं नद्रपत्तौ भौम, नधिर्नाती राभां नौ ॥

रः । एतैरससमैस्तद्वत्सूतोमर्द्यस्तुषाम्बुना ८ ततःशंशो
 प्यचक्रामंकृत्वालिप्त्वाचहिङ्गुना । द्विस्थालीसम्पुटेकृत्वा
 पूर्येल्लवणेनच ९ अथस्थालीततोमुद्रांदद्याद्दृढतरा
 म्बुधः । विशोप्याग्निविधायाधोनिषिञ्चेदम्बुचोपरि १०
 ततस्तुकुर्यात्तीवर्गिण तदधःप्रहरत्रयम् । एवंनिपातये
 दूर्ध्वैरसोदोषविवर्जितः । अथार्द्धपिठरीमध्येलग्नोग्राह्यो
 रसोत्तमः ११ लोहपात्रेविनिक्षिप्यघृतमग्नौप्रतापयेत् ।
 तप्तेघृतेतत्समानांक्षिपेद्गन्धकजंरजः १२ विद्रुतंगन्धकंज्ञा
 त्वाद्गन्धमध्येविनिक्षिपेत् । एवंगन्धकशुद्धिःस्यात्सर्वका
 र्येषुयोजयेत् १३ मेषीक्षीरेणदरदमम्लवर्गैश्चभावितम् ।
 सप्तवारंप्रयत्नेनशुद्धिमायातिनिश्चितम् १४ निम्बूरसैर्नि
 म्वपत्ररसैर्वायाममात्रकम् । पिण्ड्वादरदमूर्ध्वचपातयैत्सूत
 युक्तिवत् । ततःशुद्धंरसंतस्मान्नीत्वाकार्येषुयोजयेत् १५ का
 लकूटंवत्सनागःशृङ्गकश्चप्रदीपनः । हालाहलोब्रह्मपुत्रो

गुणाम्बुमें सब मिलाय मर्दनकरै ॥ ८ ॥ जब सूखकै गादाहो तब टिकरी बना रींग
 लेपकरि फिर एक हांडी नोनभरि तिसके बीचमें पूर्वोक्त टिकिया धरि तिसपर दू-
 जीहाड़ी के मुंहरगरेहों जिसमें संधि न रहै तब कपड़ीटी करि आचदेय ऊपर भीजी
 कयरीराखै उसे सौंचतारहै नीचे तीनपहर तक आच सेजराखै जब ठंडीहो तब उ-
 परचाली हांडीमें जो दोपबोजन रस लापटा छडायके सत्र कायमें युक्तकरै ॥ ९ ॥
 ११ ॥ (गंधकशोधन) लोहेकी कडाही में घी अतितप्तकरै घीके समान गंधक
 चूणै छोड़े जब गलै तब चौगुने दूधमें गरमही नाइके बुझावै तौ गंधक शुद्धहोकर
 सर्व कायोंमें योग्य होताहै ॥ १२ ॥ १३ ॥ (सिंगरफशोधन) सिंगरफको भेड़
 के दूध और नींबूके रसमें घोटि मुत्तावै इसे भावना कहिये ऐसे सात भावना देने
 से सिंगरफ निश्चय शुद्ध होताहै ॥ १४ ॥ (सिंगरफसे खार निकालने की
 विधि) नींबूरस वा नींबपत्र रसमें पहरभर सिंगरफ घोटि फिर दमरूपत्रकरि उ-
 तारिलेय "दमरूपत्र यों कहतेहैं" जैसे प्रथम पारा उड़ायाहै उड़ाय लेने से भी पारा
 शुद्धहोकर सर्व कार्यकारक होजाताहै ॥ १५ ॥ (अथ पारेका शुद्ध करनाकहे

हारिद्रः सहकुक्कुटस्तथा । सौराष्ट्रिकद्विप्रोक्ताविषभेदात्
 मीनव १६ अर्कसेहृण्डधतूरालाङ्गुलीकरवीरकः गुञ्जाहि
 फेनमित्येताः सप्तोपविपजातयः १७ एतैर्विमर्दितः सूत
 शिञ्जन्नपक्षः प्रजायते । मुखंचजायतेतस्यधातुश्चप्रसते
 परान् १८ अथवाकटुकक्षारौराजीलवणपञ्चकम् । रसो
 नोनवसारश्चशिशुश्चैकत्रचणितैः । समांशैः पारदादेतै
 र्जम्भीरेणुरसेनवा ॥ निम्ब्रूतयैः काञ्जिकैर्वाभोष्णखल्वेवि
 मर्दयेत् १९ अहोरात्रत्रयेणस्याद्रसेधातुचरंमुखम् । अथ
 वाविन्दुलीकिट्टैः रसोमर्द्यस्त्रिवासरम् । लवणाम्लैर्मुखंत
 स्यजायतेधातुघस्मरम् २० अथकच्छपयन्त्रेणगन्धजार
 णमुच्यते । मृत्कुण्डेनिक्षिपेत्तीरंतन्मध्येचशरार्वकम् २१
 महत्कुण्डविधानाभमध्येमेखलयोयुतमालिपंवाचमेखला
 मध्येचूर्णितत्ररसंक्षिपेत् २२ रसस्योपरिगन्धस्यरजोद्वया

शुष्काकर करनाभी कहते हैं) कालकूट, बर्धनग, सिंगिया, मंशिन,
 हलहल, ब्रह्मपुत्र, हरदिया, सहुब और सौराष्ट्र में मंत्रिपई औ मदारों सेईक,
 धूरा, कलिहारी, कनर, नालंउंउची, अर्धम ये सात उपविषई ॥, १६ । १७ । १८ ।
 सय विषमें मर्दन करने से पारा पत्थरीन होजाताहै समस्त धातुओं के भक्षण करने
 को समर्थ होताहै ॥ १८ ॥ (अथ दूसरा प्रकार) त्रिकुटा दोनों रसर और शूई
 और पांचोलोन, लारहून, नौमादार और सहजनकी धूलिये सब समभागलेचूर्ण
 करे तब पारे के समानने बरीरीरस या नौबूस वा कांभीमें गरमकरि डरलकरे ॥
 १९ ॥ तीन दिनरात तब पारा सब धातुओं को साथ और खोल न पर्द पारा के
 मुग होताहै और खरुंटा वा कीरनहरी में तीनदिन घोटै फिर पांचोलोन और
 नौबूके रसमें घोडे तब पारेका मुखखुलै और धातु भक्षणकरे ॥ २० ॥ (कच्छप-
 यंत्रकरि शंघक फूकनेकी विधि) एक माटी का कूडाले विसमें चार धंगुल
 पानी भरे एक नहनकी राति उस सदनकी केवरे पानी एक धंगुल ॥ २१ ॥ विस
 में पारा और गंरकसमभग भरिडरदूसरीसदनकी ठाकि सुनो दोनोसदनकी वरा
 मूल निःसंघि हुंउरशिखरउसके मुंदार पाटी लागद्वंदकै निसंघंघनकी कर्गी

त्समांशकम् । ततोपरिशरावंचभस्ममुद्रांप्रदापयेत् २३
 ततोपरिपुटंदत्त्वाचतुर्भिर्गोमयोपलेः । एवंपुनःपुनर्गन्धप
 ड्गुणंजारयेद्ब्रुधः ॥ गन्धेजीर्णेभवेत्सुतरतीक्ष्णाग्निःसर्व
 कर्मसु २४ धूमसारंरसंतोरीगन्धकंनवसादरम् । यामैकंमर्द
 येदन्लैर्भागंकृत्वासमांशकम् २५ काचकुप्यांविनिक्षिप्य
 तांचमृद्वस्समुद्रया । विलिप्यपरितोवक्तंमुद्रांदत्त्वाचशोपये
 त् २६ अधःसच्छिद्रपिठरीमध्येकूपीनिवेशयेत् । पिठरीं
 वालुकापूरैर्भूत्वाचाकुपिकागलम् २७ निवेश्यचुल्ल्यां
 तदधःकुर्याद्द्विज्ञानैःज्ञानैः । तस्मादप्यधिकंकिञ्चित्पावकं
 ज्वालयेत्क्रमात् २८ एवंद्वादशभिर्यामैस्त्रियतेसूतकोत्त
 मः । स्फोटयेत्स्वाङ्गशीतंतमूर्ध्वगंगन्धकंत्यजेत् । अध
 स्थंचियतेसूतंमर्वकार्थेपुयोजयेत् २९ अपामार्गस्यधी
 जानांसूपायुगमंप्रकल्पयेत् । तत्सम्पुटेन्यसेत्सूतंमलयूदु
 ग्धमिश्रितम् ३० द्रोणपुष्पीप्रसूनानिविडङ्गगिरिमेदक
 म् । एतच्चूर्णमधोर्ध्वंचदत्त्वामुद्रांप्रकल्पयेत् ३१ तंगोलं

न गिरै तत्र ऊपर से चार विनुरां कंटाकी आंचदेवे इसीप्रकार छःबार पारा गंधक
 समानदे चार फटाकी आच देद कर फूँके तौ पारा तीक्ष्णाग्निकारी होकर सर्प कार्य
 योग्य होता है ॥ २४ ॥ २५ ॥ । अध पारद भस्मविधि) पुश्पासार (करहुचां)
 पारा, फटकरी, गंधक और नौसादर इन सब द्रव्योंको समभागले पहरभर नीरूके
 रसमें घोटिा ॥ २४ ॥ फिर आतशी शीशीमें भरि कपडौटीवरि धूममें सुलावै तब एक
 नांदले बीच पेंदीमें छेदकर उस छिद्रपर अन्नकपरि उसपर शीशी स्थित करि ऊपर
 बालू भरि चूहेमें धरि तरे आगिगारि पहर धारह पहले अतिमंद आचकरि फिर क्रम
 क्रम आंच नीत्रकरै तौ पारा न उडै सिद्ध होजाय जब सिराय तब शीशी निकारि
 फेरै उभमें गंधक ऊपर गने में पारातले पेंदीमें होयगा उस गंधक को फेंक पारा
 सपेटिले यह पास सर्पकार्य योग्य होजाता है ॥ २६ ॥ २७ ॥ (पुनः) चिरचिरा
 धीज पीसि टोष्पा बनाय पारा कडगू करके धूममें घोटि ॥ ३० ॥ मूपाथेअर्धेइसचूर्ण
 के बीचमें पारापर मूपापन्न, तिंडग, गैरका चूर्ण ऊपर दूसरा मूसावरि कपडौटी,

सन्धयेत्सम्यङ्मृन्मूषासम्पुटेत्सुधीः । मुद्रादत्वाशोषयि
 त्वाततोगजपुटेपचेत् । एवमेकपुटेनैवजायतेभस्मसूतकम्
 ३२ काकोत्तुम्बरिकादुग्धैरसेकिञ्चिद्धिमर्दयेत् । तद्दुग्धघृ
 ट्प्रहिङ्गोश्चसूषायुग्मंशकल्पयेत् ३३ धृत्वातत्सम्पुटेसूतं
 तत्रमुद्रांप्रदापयेत् । धृत्वातद्गोलकंप्राज्ञोमृन्मूषासम्पुटेधि
 के ३४ पचेन्मृदुपुटेनैवसूतकोयातिभस्मताम् । नागवल्ली
 रसैर्घृष्टःकर्कोटीकन्दगर्भितः । मृन्मूषासम्पुटेपक्वःसूतोया
 त्येवभस्मताम् । ३५ खण्डितंमृगशृङ्गञ्ज्वालामुख्यारसैः
 समम् । रुद्धाभाण्डेपचेच्चुल्लयांयामयुग्मंततो नयेत् ३६ अ
 ट्प्रांशंत्रिकटुदद्यात्तिष्कमात्रंतुभक्षयेत् । नागवल्लीरसैःसांख्यै
 वातपित्तज्वरापहम् ३७ अयंज्वरांकुशोनाम्नारसैःसर्वज्वरा
 पहः । पारदंरमकंतालंतुत्थंठङ्कणगन्धके । सर्वमेतत्समंशुद्धं
 कारवेच्छरसैर्दिनम् ३८ मर्दयेल्लेपयेत्तेनताखपात्रोदरंभिष
 क् । अङ्गुल्यर्द्धप्रमाणेनततोरुद्ध्वाचतन्मुखम् ३९ विपचेद्वा

करि माटीलेमके मुखायै एक गजपुट आंचदे ऐसे पारा एकही आंच में भस्म
 होजाताहै ॥ ३१ । ३२ ॥ (पुनः) कटगूलरके दूधमें पाराघोटि फिर उसीदूधमें
 हींग पीसि मूसावनाइ पारा धरि कपडौटी करि मांटीके मूसा में धरि पुनः कपडौटी
 करि ॥ ३३ । ३४ ॥ वीस गोइटाकी आंचदे पारा भस्म होताहै (पुनः) पान
 के रसम पारा घोटि बांभरखसा की जह कोनके भरै उसीमें मूदि कपडौटी
 करै माटी लेप मुखाय थोडी आंचमें फूँके से पारा भस्म होता है ॥ ३५ ॥
 (अथ ज्वरांकुश) हरिण के सींग जूएँकरि बराबर जैतका रमले माथी के
 पासनमें धरि मुँह मूदि टोपहरकी आंच देकर उगारिलेवे ॥ ३६ ॥ फिरजाज्वा
 अंश त्रिमुटादे पीमे चाररची ज्वरांकुश पानके रसमें सिलावै तौ घात, पित्त, ज्वर
 नाशकरै ॥ ३७ ॥ यह ज्वरांकुश नामरम तय ज्वरको हरताहै (ज्वरारिरस)
 पारा, सर्परिया हरतान, हृदिया, मुद्गाया और गंधकये समानशोधि कोलेके रस
 में एकदिन ॥ ३८ ॥ रोडिके ताद्वसात्रमें आया शंगुलमोटालोसि पात्रमुखमूदि ॥ ३९ ॥

लुकायन्त्रेच्छिप्त्वाधान्यानितन्मुखे । यदास्फुटन्तिधान्यानि
 तदासिद्धं विनिर्दिशेत् ४० ततो नयेत्स्वाङ्गशीतं ताघपात्रो
 दराङ्गिषकारसंज्वरारिनामानं विचूर्ण्य मरिचैः समम् ४१ मा
 षैकं पर्णखण्डेन भक्षयेत्ताशयेज्ज्वरान् । त्रिदिनैर्विषमं तीव्र
 मेकद्वित्रिचतुर्थकम् ४२ तालकंतुत्थकंताघ्नरसंगन्धमन
 शिशुलाम् । कर्षकर्षप्रयोक्तव्यं मर्दयेत्त्रिफलाम्बुभिः ४३
 गोलं न्यसेत्सम्पुटकेपुटं दद्यात्प्रयत्नतः । ततो नीत्वा र्कदुग्धे
 नवज्जीदुग्धेन सप्तधा ४४ कथेन दन्त्याः श्यामाया भावयेत्स
 प्तधा पुनः । माषमात्रं संदेयं पञ्चाशन्मरिचैर्युतम् ४५ गुडं
 गद्यानकं चैव तुलसीदलयुग्मकम् । भक्षयेत्त्रिदिनं भक्त्या
 शीतारिर्दुर्लभं परम् ४६ पथ्यदुग्धौदनं देयं विषमं शीतपू
 र्वकम् । दाहपूर्वहरत्याशु तृतीयकचतुर्थकौ ४७ द्वयाहि
 कंसनतं चैव वैवर्ण्यं च नियच्छति । भागैकस्याद्रसाच्छुद्धा
 देलायाः पिप्पलीशिवा ४८ अकारकरभोगन्धः कटुतैलेन

कपडौटं करि बालुकायंत्र में धरि थंत्रमुख खुन्नाराति आचदेय जब उस बालू
 में घानडारे से खीनहोजाय तब जानिये कि रस सिद्ध होगया ॥ ४० ॥ जब
 स्वभावसे ठंढाहो तब उसे पात्रसे छुड़ायले उस ज्वराकुशके समान मरिच मिलाय
 पीसलेय एकमाश पानके टुकड़ेमें धरि खिलावैज्वरको नाशकरै तीनदिन खानेसे
 अतिकठिनज्वर, अन्तरिया, तिजारी और चातुर्थिकये सब दूरहोयो ॥ ४१ ॥ ४२ ॥
 (शीतज्वारि रस) हरताल, तूतिया और ताषा भस्म, शोधा पारा, गन्धक
 शुद्ध और मैन शिलयें सब कर्प कर्पभर लेकर त्रिफलाके रसमें धोदौ ॥ ४३ ॥ गोला
 याषि कपडौटी माटी लेस खूब फूफिमदार और मेहुँदके दूधमें सातभावनादे ॥ ४४ ॥
 फिर जमालगोद्री वी जडके काड़ेमें फिर निशोय के फूड़े में पात भावनादे तब
 एक माशेरस पचास मरिच ॥ ४५ ॥ छ माशे गुड़ दो तुलसीदल भक्तिपूर्वक तीन
 दिन खाय शीतारि रस इसका नाम है बहुत दुर्लभ है ॥ ४६ ॥ पथ्य दूधभातदेय
 छूड़ी, राह, ज्वर, तिजारी, चातुर्थिक ॥ ४७ ॥ अन्तरिया, नित्यज्वर और ज्वर
 अनिधिकार सब नाग होवें (अथ ज्वरघ्नी गुटिका) शुद्ध पारा एकभाग

शोधितः । फलानिचेद्रवारुण्याश्चतुर्भागमिताह्यमी ४६
एकत्रमर्दयेच्चूर्णमिन्द्रवारुणिकारसे । माषोन्मितांवटीकृ
त्वादद्यात्सर्वज्वरेभिषक् । त्रिन्नारसानुपानेनज्वरघ्नीगुटि
कामना ५० शुद्धोवुभुक्षितःसतोभागद्वयमितोभवेत्तथा
गन्धस्यभागोद्द्वीकुर्यात्कज्जलिकान्तयोः ५१ सूताञ्चतुर्गुणे
ष्वेवपारदेषुविनिक्षिपेत् । भागैकंठङ्कणदत्त्वागोक्षीरेणवि
मर्दयेत् ५२ तथाशङ्खस्यखण्डानांभागानष्टौप्रकल्पयेत्
क्षिपेत्सर्वपुटस्यान्तश्चूर्णलिप्तशरात्रयोः ५३ गर्तेहस्ता
न्मितेधृत्वापाच्यंगजपुटेनच । स्वाङ्गशीतंसमुद्धृत्यपिष्ट्वात
त्सर्वमेकतः ५४ षड्गुञ्जासम्मितंचूर्णमेकोनत्रिंशदूषणैः ।
घृतेनवातजेदद्यान्नवनीतेनप्रेत्तिके ५५ क्षौद्रेणकफजे
दद्यादतीसारैक्षयेतथा । अरुचौग्रहणीरोगैकार्श्येमन्दान
लेतथा ५६ कासश्वासेषुगुल्मेषुलोकनाथरसोहितः । त
स्योपरिघृतात्रंचभुञ्जीतकवलत्रयम् । भवेत्क्षणिकमुत्तानः
शर्यातानुपधानके ५७ अनम्लमन्नंसघृतंभुञ्जीतमधुरंद

पलुवा, पीपरी, हड़जंगी ॥ ४८ ॥ अकरकरहा, कदुआ तेलका शोषागन्धक और
इन्द्ररस ये चार चार भाग ॥ ४९ ॥ इन्द्ररस में घोड़ि मापमात्र गोली बांधि त
रणज्वर में गुर्च रस में वैद्य ज्वरघ्नी गुटिकाको खिलावे ॥ ५० ॥ (लोकनाथ
रस) पारा शुभुक्षित और धातुभक्तक दोभाग दोनोंको खरलकरि कजरी करै
पारेसे चौगुनी कौड़ीकी भस्म पारे समान मुहागा गांधके दूधमें घोटे ॥ ५१ ॥ ५२ ॥
पारेसे थंडगुणी शङ्खकी भस्म शुद्ध मव पीसि दो सरसों के भीतर लेस ॥ ५३ ॥
दोनोंको सम्पुटकरि बह लपेटि माटी लगाय गजपुटमें फूंकदे जब ठण्ढाहोतव खु
रचके निकारै खरल करै ॥ ५४ ॥ फिर बभरती यह रस मिरच संझ खरलकरि चातरो
गमें घीमें दे पित्तमें मक्खन साथ दे ॥ ५५ ॥ कफरोगमें शहदमें दे अतीसार, बर्दि,
अरुचि, ग्रहणी, दुर्बलता, मन्दाग्नि ॥ ५६ ॥ कास, स्वास और गुल्म (गोला) इन
रोगों में एहदयुक्त दे इस लोकनाथ पर प्रथम तीन कौर घी भात खायक्ति चरण

धि । प्रायेण जाङ्गलमांसं प्रदेयं घृतपाचितम् ५८ सदुग्ध
 भक्तं दद्याच्च जाते ग्नौ सान्ध्यभोजने । सघृतान्मुद्गवटकान्वय
 ज्जनेष्वेव चारयेत् ५९ तिलामलककल्केन स्नापयेत्मर्षिपा
 थना । अभ्यञ्जयेत्सर्षिषा च स्नानं कोष्णोदकेन च ६० क
 चित्तैलं न गृह्णीयात्तत्र विलंबं कारवेह्लकम् । वार्ताकिंशफरीं चि
 ष्चान्त्यजेद्व्यायाममैथुने ६१ मद्यं सन्धानकं हिङ्गुशुण्ठी
 माषांश्च सुरिकान् । कूपमाण्डं राजिकां कोलं काठिजकं चैव
 वर्जयेत् ६२ त्यजेद्युक्तां निद्रां च कांस्यपात्रे च भोजनम् ।
 ककारादियुतं सर्वत्यजेच्छाकफलादिकम् ६३ ग्राह्यो यं लो
 कनाथस्तु शुभेन क्षत्रवासरे । पूर्णातिथौ सिते पक्षे जाते चन्द्र
 वले तथा ६४ पूजयित्वा लोकनाथं कुमारं भोजयेत्ततः । दानं
 दद्याद्द्विघटि कामध्ये ग्राह्योरसोत्तमः ६५ रसात्सञ्जाय
 ते तापस्तदा शर्करायुतम् । सत्त्वं गुडच्या गृह्णीयाद्दंशलोच
 नयायुतम् ६६ खर्जूरं दाडिमं द्राक्षांश्च मिश्रुखण्डानि चारयेत् ।

भर बिना तकिये विद्यौने साटपर उताना से वे फिर चाहै जैसे शयन करै ॥ ५७ ॥
 खटाई छोड़ मधुर दही अच्छे मृतके सद्ग अन्नलाय और अथर्व्य जङ्गली मृगादिपशु
 भक्ष्य मांस घीमें अच्छीतरह भूजिलाय ॥ ५८ ॥ और सन् याके समय पका अर्द्धी
 वशेष दूधभात भोजन करै और भूगके मोदक अधिक घृतमें बने भोजन सद्गलाय ॥
 ५९ ॥ तिल, अँवरा पीसि उबटन लगाय दा घी मर्दन करि न्हाय उष्णोदक से
 कमर ताई न्हाय ॥ ६० ॥ तेल न छुवै बेल, करेला, भाटा, मडरी, अमली, श्रम
 और ह्रीभोगको त्यागै ॥ ६१ ॥ मद्य, अचार, हाँग, सोंठ, जर्द, मसूर, पेठा, राई,
 बेर और काजीको तजै ॥ ६२ ॥ असीमें न सोवै कालमें न खाय ककारादि आम
 के फल और सागोंको तजै ॥ ६३ ॥ यह लोकनाथरस शुभनक्षत्र, पार, पूर्णाति
 थि, शुरुक्ल, बलान्न चन्द्रमादेखि ॥ ६४ ॥ लोकनाथ रसको पूजि कुंवारी जि
 वाय दाट्ये द्विघटिका साधि भक्षण आरम्भकरै ॥ ६५ ॥ इसके स्नाने पर तप
 आतीहै तब मिथी, गुर्धका सत और दंशलोचन इन सबको मिलायकर देने ॥ ६६ ॥
 खनूर, अनार, दास च उज्वकी गँदेगी टे तो रसताप दूर हो धनियाकी डाल दूरे

अरुचौनिरतुपंधान्येधुनमृष्टंसशर्करम् ६७ दद्यात्तथाञ्च
 रेधान्यंगुडुचीकाथमाहरेत् । उशीरंवासकंकाथं दद्यात्सम
 धुशर्करम् ६८ रक्तपित्तकफेऽत्रासेकासेचरवरसंक्षयोऽग्नि
 मृष्टंजयाचूर्णमधुनानिशीरीयते ६९ निद्रानाश्रोतिसरिच
 ग्रहण्यापात्रकक्षये । सोवर्चलाभयाकृष्णाचूर्णसुष्णजलैः
 पिवेत् ७० शूलेजीर्णेतथाकृष्णामधुयुक्तज्वरेहिता । छिद्दीद
 रेवात्तरक्तेऽर्घ्यांघेवगुंदाङ्कुरे ७१ नासिकाश्रुतिरक्तेचरसंदा
 डिमपुष्पजम् । दूर्वायाःस्वरसनस्येप्रदद्याच्छर्करान्वितम्
 ७२ कालमञ्जांकणांघर्हिपक्षभरुमसशर्करम् । मधुनालेह
 येच्छर्दिहिकाकोपप्रशान्तये ७३ विधिरेपप्रयोज्यस्तुरव
 स्मिन्पोटलीरसे । मृगाङ्गेहेमगर्भेपमौक्तिकाख्येप्रेषुचाद्
 त्येवंलोकनाथोक्तेरसःसर्वरुजोजयेत् ७४ भूर्जवक्षुभ्रा
 णिहेम्नःसंक्षमाणिकारयेत् । तुल्यानितानिसूतेनखल्बेक्षि
 प्त्वाविमृदयेत् ७५ काञ्चनाररसेनैवज्वालामुख्यारसेनवा ।

करि घीमें भूजिकं चूर्ण करि मिश्री मिलाय तिलाव ॥ ६७ ॥ उसी तापमें भगियां
 गुर्वका कादादे, यस व उसेका कादादे, मटु व विशीको मित्तायदे ॥ ६८ ॥ रक्त
 पित्त, कफ, रसास, कास और ररभंग ये सब अञ्जे होयें यांगं भूजि चूर्णकरि
 लोकनाथसंयुक्त रातको खिलार ॥ ६९ ॥ तथा नदिनाश, अतीसार, संश्रुणा-
 गन्दाग्निमें-सोचकर, हृद् वापीपरिसाय रसदेकर गरमपानी पिलाव ॥ ७० ॥ तो भूर्ज
 व अजीर्ण को दूरिकरै, पीपरि, शहदयुक्त साय तो पिलानी, अंतरक्त, छर्दिषि
 येश को दूरिकरै ॥ ७१ ॥ (नासार्थ कारण) अनाररस में दे दूरस मिश्री
 लोकनाथसंयुक्त नासदे ॥ ७२ ॥ वेरमिगी, पीपरि, मोरपंतकी भरुम, मिश्री, श-
 हदयुक्त साय तो छर्दि व निचकी को दूरिकरै ॥ ७३ ॥ ये जो भोगि भांगि के
 अनोपान लोकनाथमें ऋहे तो पोदली के रसमें भी सब उसी रीतिसे देनाचाहिये
 जैसे भूर्गाक, हेमगर्भ, मौक्तिकाख्य और पंचमहादि पोदलिकारस इनसबों में लोक-
 नाथोक्तेरीति सदशकरै तो सम्पूर्णरोग अञ्जेहो ॥ ७४ ॥ (मृगांकपोदलीर
 स क्षयादि पर) सोनेका रथ समानयाय सोने के समं पास मिलाय रातना

लाङ्गल्यावारसैस्तावद्यावद्भवतिपिष्टिका, ७६ ततोद्देम्न
 श्चतुर्थांशं तङ्कणं तत्र निःक्षिपेत् । पिष्टं मौक्तिकचूर्णैश्च हेमं
 द्विगुणमाहरेत् ७७ तेषु सर्वसमं गन्धं क्षिप्त्वा चैकत्र मर्दये
 त् । तेषां कृत्वा ततो गोलं वा सोभिः परिवेष्टयेत् ७८ पश्चा
 न्मृदावेष्टयित्वा शोषयित्वा च धारयेत् । शरावसम्पुटं स्यान्ते
 तत्र मुद्रां प्रदापयेत् ७९ लवणापरितं भाण्डे स्थापयेत् च स
 म्पुटे । मुद्रां दत्त्वा शोषयित्वा ब्रह्मभिर्गोमयैः पुटेत् ८० ततः
 शीते समान् हृत्य गन्धं सूतसमं क्षिपेत् । घृण्ण्वा च पूर्ववत् खल्वेपु
 टेद्ब्रजपुटेन च ८१ स्वाङ्गशीतं ततो नीत्वा गुञ्जायुग्मं प्रयो
 जयेत् । अष्टभिर्मरिचैर्युक्तः कृष्णात्रयमथापि वा ८२ वि
 लोक्य द्वेयादोषादित्ते कैव रसरक्षिका । सर्पिषामधुना वापि
 देयादोषाद्यपेक्षया ८३ लोकनाथसमं पृथ्व्यं कुर्यात्स्वस्थम
 नाः शुचिः । श्लेष्माणे ग्रहणीका संश्वासं क्षयमरोचकम् ।
 मृगाङ्गोत्थं रसो ह्यन्यात्कृशत्वं बलहानिताम् ८४ सूतात्पाद

करे ॥ ७५ ॥ कचनारिका रस वा भरणीरस वा करिबारस में छोटे जपतक
 गोला रंधजाय ॥ ७६ ॥ सोने का चूर्ण मुद्रागादे और सोने का दूना मोती
 का घनादे ॥ ७७ ॥ इनसभके समान गंधकदे सब सरलपरि गोलावांधि रस क
 पड़ा लपेटे ॥ ७८ ॥ फिर माटी से लेस मुद्राय शरावसंपुट करि ॥ ७९ ॥ लोम
 पूरित पात्रमें संपुटपर उसका मुंहसुखाय गजपुट में फूंकते ॥ ८० ॥ दंडाभयेपर नि
 कारिके सोने के समान पारा धातु सोने समान गंधकका युक्तकरि पूर्ववत् रसमें
 सरलपरि फिर उसीक्रिया से गजपुट में फूंक ॥ ८१ ॥ जप टंटाहो तप निकासि
 दो गुंजा रस आठ मिरच वा तीन पीपरि के संगटे ॥ ८२ ॥ धातुदोषको विचारि
 के भांपर रचीभर घाट वा वाद रामभके देइ यी अथवा शहदके साथ टोप वि
 चारिके देना चाहिये ॥ ८३ ॥ पथ लोकनाथसदृश इसमें भी देना योग्य है चित्त
 एवाग्रकरि धृतिपविन होकर साथे सौ श्लेष्मा, ग्रहणी, कास, श्वास, क्षयी और
 अरुधि इन रोगोंको यह गृणांङ्गस दूर करता, न यन्हीनकी बलवान् करताहुआ,

प्रमाणेन हेमपिष्टिप्रकल्पयेत् । तयोः स्याद्विगुणो गन्धो म
 र्देयत्काञ्चनारिणा ८५ कृत्वा गोलं क्षिपेन्मूषासम्पुटे मुद्रये
 त्ततः । पचेद्ब्रूधरयन्त्रेण वा सरत्रितयंबुधः ८६ ततः उद्धृत्य
 तत्सर्वं दद्याद्ब्रूधं च तत्समम् । मर्दयेद्दार्द्रकरसैश्चित्रकस्य
 रसेन वा ८७ स्थूलपीतवराटांश्च पूरयेत्तेन यत्नतः ।
 एतस्माद्दौषधात्कुर्वाद्यदृष्टमांशेन टङ्कणम् ८८ टङ्कणार्द्धं
 विषं दत्त्वा पिष्ट्वा सेह्युण्डदुग्धैः । मुद्रयेत्तेन कल्केन वराटा
 नां मुखानि च ८९ भीण्डे चूर्णं प्रलिप्याथ घृत्वा मुद्रां प्रदाप
 येत् । गर्ते हस्तोन्मिते घृत्वा पुटे द्वजपुटे तच्च ९० स्वा
 द्भृशतीरसं नीत्वा प्रदद्यात्लोकनाथ वत् ९१ पथ्यं मृगाङ्गव
 द्येयं त्रिदिनं लवणं त्यजेत् ९२ यदाच्छर्दिर्भवेत्तस्य दद्या
 त्छिन्नारसं तदा ९३ मधुयुक्तं तदा श्लेष्मकोपे दद्याद्दुर्द्रक
 म् ९४ विरेके भजिता भङ्गा प्रदेयाद्दधिसंयुता । जयेत्कासं
 क्षयंश्वासं ग्रहणी मरुचिन्तथा ९५ अग्निं च कुरुते दीप्तं

दुर्बलको मोटा करता है ॥८४॥ (कफक्षयीपर हेमपोटलीरस) पारा, पारेकी
 चौथ्याई सोनाले सरलकर जर्ब पीठी होजाय तब दोनोंसे दूनी गंधकके कचनारके
 रसमें घोडि गोला करै ॥ ८५ ॥ सो मूषायंत्र में भरि संपुटकरी यत्न लपेट माटी
 लंगाय सुराय भूधरयंत्रमें फंरुदे भूधरयंत्र एकहाथ गदिरा, लंबा व चौड़ा खोदि
 तिसमें छोटागद्दाखोदि औपधरस माटीसे टानि तिसपर विनुवांकटा करसी करि
 वड़े गढ़में परि तीनदिन आंचदे ॥ ८६ ॥ जब रसभावसे शीतलहो तब निकारि
 समान गंत्रकले अद्रक वा चीतेके रसमें घोडि ॥ ८७ ॥ वही पीलीकौड़ी में भरि
 औपयका अष्टपांश सुरागा ॥ ८८ ॥ सुरागे का आधा सिगिया दोनों सेहुडके
 दूधमें पीसि कौड़ी का मुख बंदकरि ॥ ८९ ॥ फिर माटीपात्रमें चूनालेसि कौड़ी
 में भरि दूसरे दिवस बंधकरि सुद्वितकरि गजपुटसे आंचदे ॥ ९० ॥ टंडायये नि-
 कारि लोफनायकी रीति से खिलविय मृगांककी रीति से पथ्यदे तीनदिन लोन
 वर्जितरहै ॥ ९१ ॥ जो छर्दि होय तो मुचका रस वा काय मधुयुक्ते कफासि में
 गुड अद्रकस युक्तदे ॥ ९२ ॥ अतीसारमें भूनीभाग व हींग दोनोंके संगदे तथा

कक्रवातनिमच्छति । हेमगर्भः परोज्ञेयोरसः पोटलिकाभि
 धः १४ रसरुभ्रभागाश्चत्वारस्तावन्तः कनकस्य च । तयो
 र्चपिष्टिकांकृत्वागन्धोद्वाद्दशभागिकः १५ कुर्यात्कज्ज
 लिक्रान्तेषामुक्ताभागाश्चषोडश । चतुर्विंशच्चशङ्खस्य
 भागैकं टङ्कणस्य च १६ एकत्रमर्दयेत्सर्वैकनिम्बुकजैर
 स्त्रैः । कृत्वातेषां ततो गोलं मूपासम्पुटकेन्यसेत् १७ मुद्रां द
 र्वाततो हस्तमात्रे गते च गौमयैः । पुटेद्गजपुटेनैव स्वाङ्ग
 शीतं समुद्धरेत् १८ पिष्ट्वा गुञ्जाचतुर्मान्दद्याद्गव्याज्यसंयु
 तम् । एकोनत्रिंशद्गन्मान्मरिचैः सह दीयते १९ राजते मृन्म
 त्रे पात्रे काचजे वापिलेहयेत् । लोकनाथसमं पश्यं कुर्यात्प्रय
 त्तमानसः २० कासेश्वासेक्षयेवाते कफे ग्रहणिकागदे । अ
 तीसारप्रयोक्तव्या पोटली हेमगर्भिका १ शुद्धसूतो विपगन्धं
 प्रत्येकं शाणसन्मितम् । धूर्त्वा जत्रिशाणं स्यात्सर्वेभ्यो द्वि
 गुणी भवेत् २१ हेमाभंकारयेदेषां चूर्णं सूक्ष्मं प्रयत्नतः । देयं

कनकसंज्ञायी चत्वारः, ग्रहणी च अथचि इनमें भी देही च भंगके साथदे ॥ १३ ॥
 अग्निदीपनं च कफघ्नतनाशन हीकर यद् हेमपोटलीरस श्रेष्ठ कहाताई ॥ १४ ॥
 (पुनर्हेमगर्भरस कास पर) पारा चारभाग व सोना चारभाग इन दोनों की
 पात्रे करि द्वादशभाग गंधकेदे ॥ १५ ॥ च तीनोंको काजली करि, सोलहभाग गोती
 चौदीस भाग शङ्ख च एकभाग सुहागा ॥ १६ ॥ ये सब एकत्र करि पके चौबूके रस
 में जोडि गोलावां पि मूपापुट में धरि मुद्रां साधि ॥ १७ ॥ सुखाय शयभर सुमिको
 सोदि चसमें पराय हथिभर कंडा भरार्थं फूँदि जय शीतल हो जाये तब निकारि
 धरे ॥ १८ ॥ त्वारि रत्ती रसा मिर्च उन्तीस गोवृत्तमें पीसिदेवे ॥ १९ ॥ चांदी चो पाटो
 वा कांचके पात्रमें धरि खिलौपै थौर लोकनाथ रस सम पश्यं यताचै ॥ २० ॥ तो
 यह कंठा, रसात, ज्ञायी, चोत, कफ, ग्रहणी च अतीसारवाले को देयः यह हेमगर्भ
 पोटली इन सब रोगनको हरती है ॥ १ ॥ पारा गंधक विप शोषे चारि चारि
 गारे गन्धुभी च चारदमारो सयका यत्ना ॥ २ ॥ चोक चोक विना कूट सब युक्त

जसवीरमज्जाभिश्चूर्णागुञ्जाद्वयोन्मितम् ३ आर्द्रकश्चर
 सैर्वापिञ्चरंहन्तित्रिदोषजम् । १ एकाहिकद्वयाहिकवातृती
 प्रवाचतुर्थकम् । विषमञ्चञ्चरह्न्याद्विरव्यातोयञ्चराङ्कु
 शः ४ दरदं वत्सनाभं पमरिचं टङ्कणं कणाम् । चूर्णत्रयसम
 भागेनरसोह्यानन्दभैरवः ५ गुञ्जैकवाह्निगुञ्जवाः बलज्ञा
 त्वाप्रयो जयेत् । मधुनालेहयेच्चापिकुटजस्वफलत्रयचम् ।
 चूर्णितकपमात्रन्तुत्रिदोषोत्थातिसारजित् ६ दध्यन्नं द्रा
 पयेत्पथ्वंगव्याज्यंतक्रमेवत्रा ७ पिपासायां जलशीतं विज
 याचहितानि शिः ७ विषं पलमितं सूतः ८ शोणिकश्चूर्णये
 द्द्वयम् । तच्चूर्णसस्पुटघृत्वाकाचलितशरावयोः ९ मुद्गा
 दत्वाचसंशोष्यतत्तश्चुल्ल्यानिवेशयेत् । वह्निशनैःशनैः
 कुर्यात्प्रहरद्वयसङ्ख्यया ६ ततउत्पाद्यतन्मुद्गामुपरि
 स्थशरावकात् । संलग्नोयोभवेद्धूमः संगृहणीयाच्छनैः श
 नैः १० वायुस्पर्शोयथानस्यात्ततः कूप्यानिवेशयेत् ।

करि सूक्ष्म चूर्णकरि दो गुंजा रस जभीरी क ॥ ३ ॥ वा अदरकरस में दे त्रिदोष
 जनित ज्वर नाशकरि नित्य अनेवाला, अंतरिया, तिजरिया, चातुर्थक व विषम
 ज्वर को यह ज्वराकुश निरचय कर नाश करताह ॥ ४ ॥ (आनन्दभैरवरस
 अतीसारपर) शुद्ध सिंगरक, सिंगिया, मिरच, मुद्गा ६ जीरि ये सब स
 यानले महाने चूर्णकरिये यह आनन्दभैरवरस ॥ ५ ॥ रागीका बलदेखि एक
 गुंजा वा दो गुंजा द्रव्य न कुर्याद्वाल इन दोनों को दशमाश पीसि रसयुक्त श
 ह्दमें पिलाय छटावे तो त्रिदोषनन्य अतीसार दूरहोय ॥ ६ ॥ गुञ्जा दोरी च
 घृत वा मूत्रा पथ्य भतसाय खाय छटा पानी पिलावे धीर भोग अन्वतिद
 घोष वनाय रातको पिलावे ॥ ७ ॥ (सन्निपातपर लघुसूत्रिकाभरण)
 सिंगिया १ पल पाच ४ माशे दोना खलकरि दो पर कान के लुक्की हूडे
 में धरिके ॥ ८ ॥ मुद्गकरि सुलाय चूहेपर ज्वाय मंदमंद दो परकी आंचदेय ॥
 ९ ॥ दोना छुदाकरि ऊपर के सरया में लगा गुआं होले से धीतले ॥ १० ॥
 जिस पात्र में पवन न जासके उरा शीरी में पर मुनीमुन्दी शीरी करिले ॥ सु-

यावत्सूचीमुखेलग्नंकूप्यांनिर्यातिभेषजम् ११ तावन्मा
त्रोरसोदयोमूर्च्छितेसन्निपातिति । क्षुरेणप्रच्छितेमूर्धिते
तोङ्गुल्याच्चधर्षयेत् १२ रक्तभेषजसम्पर्कान्मूर्च्छितोपिहि
जीवाते । तथैवसर्पदंष्ट्रस्तुमृतावस्थोपिजीवति । यदाता
प्रोक्षवेत्तस्यमधुरतत्रदीयते १३ सूतभस्मसमंगन्धगन्धा
त्पादमनःशिला । साक्षिकंपिप्पलीव्योपंप्रत्येकंशिलया
समम् १४ चूर्णयेद्भावयेत्पित्तैर्मत्स्यमायूरसम्भवेः । सप्त
धाभांव्यसंशुष्कदेयगुञ्जाद्वयोन्मितम् १५ तालपर्णीरसै
श्चानुपञ्चक्रोलशृतोपिवा । जलवृन्दोरसोनासन्निपातं
नियच्छति । जलयोगश्चकर्तव्यस्तेनवीर्यभवेद्रसः १६
शुद्धसूतंविषगन्धंमरिचंटङ्कणंकणा । मर्दयेद्दूर्तजैर्द्रावैर्दिन
मेकंचशोषयेत् १७ पञ्चवक्त्रोरसोनासद्विगुञ्जःसन्निपातहा

चीमुख एक सुई समले कहे उसकापुल सुई समानहो उसे सूचीमुख कहते हैं
उससे जितना निकसे ॥ ११ ॥ तिनना सन्निपातका शिर मुड़ाय पढ़ने देय
जो रक्त निकले उसी प्रायपर उस रक्तको अंगुरी से मले ॥ १२ ॥ जो रुधिर
व रस में मिलजाय तो मूर्च्छित जागे तैसही सांपका काटा जागे फिर इसे
इस धातु से तै आये तब उस रोगी को मधुर अर्थात् भंडेरी, अनार, छुहारा
व दाखात्रे का खिलावे ॥ १३ ॥ (सन्निपात पर जलवृन्दरस) पाराभ-
स्म समान गन्धककी आध्याई मैनशिल, सोनासाखी, पीपरि, सांठि, मिच सब
मैनरित समान ले ॥ १४ ॥ सुलकरि मडरी के पित्तमें सात भावनादे तैसही
मधुरपित्त में सात भावनादे सुखाय दो गुंजा खवावे ॥ १५ ॥ श्वेत मुसली के
रसमें आर पंचकोल, सांठि, मिच, पीपरि, चाव व चीता इनके कादे में दे यह
जलवृन्दरस सन्निपातको दूर करता है जल ठण्डा विये व ठण्डे जल से हाथ मुँह
धोये व जल का स्पृशे राखे तो आपय बल पातीहुई सन्निपात को दूर करती
है ॥ १६ ॥ (सन्निपात पर पंचयकरस) शुद्धपारा, सिंगिया, गन्धक,
भिरच, मुहागा, पीपरि व धतूराके रसमें एक दिन मर्दनकर घाममें सुखावे ॥ १७ ॥

अर्कमूलकषायन्तुसत्रूपमनुपाययेत् १८ युक्तं द्रव्योदनं
 प्रथमं जलयोगं च कारयेत् । रसेनानेन गाम्बन्तिसत्तौद्रेण क
 फोद्भवाः १९ मध्वार्द्रकरसंचानुपिवेदग्निवितृह्वये ॥ यथे
 पृथ्वतमांसाशीशक्तो भवति पावकः २० रसगन्धौ समानांशं
 धतूरफलजैरसैः । मर्दयेद्दिनमेकन्तु तत्तुल्यं त्रिकटुक्षिपेत् ।
 उन्मत्तारण्योरसो नाम्ना नस्ये रघात्सन्निपातजित् २१ नि
 स्त्वग्जेपालबीजं च दशनिष्कं विचूर्णयेत् । मरिचम्पिप्प
 लीसूतं प्रतिनिष्कं विमिश्रयेत् २२ भावयोजम्बीरजैर्द्रावैः
 सप्ताहं सम्प्रयत्नतः । रसोयमञ्जने दत्तसन्निपातं विनाशये
 त् २३ सूतं टङ्कणकं तुल्यं मरिचं सूततुल्यकम् । गन्धकं पि
 प्पलीशुण्ठीद्वौ द्वौ भागौ विचूर्णयेत् २४ सर्वतुल्यं क्षिपेद्दन्ती
 बीजं निस्तुषितं भिषक् । गुञ्जैर्करेचनं सिद्धं नाराचोयं महा
 रसः । आध्मानं मलविष्टं भुदावर्त्तचनाशयेत् २५

यह पंचक रस दो गुंजा सन्निपात में देव तौ सन्निपात दूर होय ॥ (म-
 दारमूल काय) सौंदि, मिरच व पीपरि के सद्दे यही उन्मत्त है ॥
 १८ ॥ पथ्य दही भातदे और जलयोग कहे जलमें बैठि श्रीपंखापरक सडे
 देय तौ कफजनित उपद्रव अच्छे होय ॥ १९ ॥ यद्रक शब्द सद्दे तौ अग्नि
 दीपन करै और यथायोग्य दूत, मास साइ तौ अग्नि प्रवर्धन करै ॥ २० ॥ (स-
 न्निपात पर उन्मत्तरस) पारा, गन्धक सम भागदे इररुनवे रससे सरल
 करि तिसके समानं त्रिकुटा दे पीसि इस उन्मत्तरुद्धे नानदेने से सन्निपात
 दूरहोता है ॥ २१ ॥ (सन्निपात पर अञ्जन) इमानगोटा दीनि पिचा
 दूरकरि चालिस मासे चूर्ण करै पिरंच, पीपरि व सौंदि चार चार भागे ले ॥
 २२ ॥ जंभीररस में सौंदि दिनं थोडि अञ्जन करै तौ सन्निपात दूरहोय ॥ २३ ॥
 (शूलपर नाराचरस) पारा, सुदाया समभाग करि समान दिग्ध, गन्धक,
 पीपरि व सौंदि दो २ भागले सरल करै ॥ २४ ॥ सब के मर्दान रुद्धे दन्त-
 गोटा दे एकत्र करि सरल करै गुंजीभर देने से रचन होय यह नगच नानरन
 आमान, मलविष्टं व उदावर्त्त ये सब रोग नया करता है ॥ २५ ॥

दरदंष्ट्रकृष्णशुण्ठी पिप्पलीचैककार्षिकाः-१: हेमाह्लापलमा
 त्रास्याहन्तीवीजंचतत्समम् २६. विचूर्ण्यैकत्रसर्वाणिगो
 दुग्धेनैवसाधयेत् । त्रिगुञ्जैरेषनंद्याद्विष्टम्भाधसानरोगिषु
 २७ सूतभस्मत्रिभागस्याद्भागैकंहेमभस्मकम् । मृतंता
 म्बस्यंभागैकंशिलागन्धकतालकम्-२८ प्रतिभागद्वयंशु
 द्धमेकीकृत्यविचूर्णयेत् । वराटान्पूरयेत्तेनक्षार्गीक्षीरेणटङ्क
 णम् । पिष्ट्वातेनमुखंरुद्ध्वाभृद्गाण्डेसन्निरोधयेत् २९ शुष्कंग
 जपुष्टेपक्त्वाचूर्णयेत्स्वाङ्गशीतलम् । रत्नोरंजमृगाङ्कोयंच
 तुर्गुञ्जःक्षयापहः । दशपिप्पलिकाक्षाद्वैरेकोनत्रिशदूप
 षैः ३० शुद्धंसूतंद्विभागन्धं कुर्यात्खल्वेनकञ्जलीम् । त्रयोः
 समंतीक्ष्णं चूर्णमर्दयेत्कन्यकाद्रवैः ३१ द्विदामान्तेकृतंगो
 लंतास्रपात्रेनिधापयेत् । आच्छाद्यैरपडपत्रेणयामोद्वित्युष्णं
 ताभवेत् ३२ धान्यराशौन्यसेत्पश्चाद्दहोरत्रात्समुद्धरेत् ।

(शूलपर इच्छाभेदीरस) शुद्धशिगरफ, मुद्गागा, सोंठि कृपीपरि कर्प-कर्प
 भर, चोक पलभर जमालगोटा-पलभर ॥ २६ ॥ सत्र सरलकरि गोदूध में लीन
 गुंजा रचनार्थ देय इत् इच्छाभेदी रससे विष्टम् २ अमान् दरहो ॥ २७ ॥
 (क्षयीपर राजमृगांकरस) पाराम्भ्य-तीन भाग, सोनाभस्म एक भाग
 ताम्रभस्म एक भाग, मैनशिल, शुद्धगन्धक, हरताल ॥ २८ ॥ दो २ भाग सत्र
 योष्टि कौडी में भरि, पकरी के दूध में मुद्गागापीसि, बौडीका, सुग्ध मुँदि माटी
 पात्रमें धरि सम्पुटकरि ॥ २९ ॥ मुग्घाय गजपुष्पे, फूँरदेय जत्र सिराम्य तत्र सरलकरे
 इस राजमृगांकरसको चारगुंजा देय तौ जत्रयी जत्रहोयभनोराने दश पीपरि शूट
 या उर्नासि मिरच शदद सङ्गदेय ॥ ३० ॥ (क्षुद्रिपर त्वययन्नग्निरस) शुद्ध
 पारेसे दून्ने शुद्धगंधक सग्लकरि कजलीकरि दोनोंके समान पीलादकी भरमले
 सत्रको पीकृत्वारके रसमें ॥ ३१ ॥ दो पहरभर योष्टि यामन में रत्न रंदाप्रसे हापि
 प्रापे पहरभर दूधमें धरे उष्णहोय ॥ ३२ ॥ तत्र नाजकी राशिमें एक दिनरात दारि

संपीच्यगालश्लेहस्रैततोवारितरंभवेत् ३३ त्रिकटुत्रिफलो
 लाभिर्जातीफलत्वङ्गकैः । नवभागोन्मितैरतैःसमःपूर्वर
 सोभवेत् ३४ सञ्चूर्ण्यलोडयेत्क्षौद्रैर्भक्ष्यंनिष्कद्वयद्वयम् ।
 अथमग्निरसोनाम्नाक्षयकांसनिकृन्तनः ३५ सूतार्धो ग
 न्धकोमर्द्योयामैकं कन्यकारसैः । द्वयोस्तुल्यतास्रपत्रं पूर्वक
 लकेनलेपयेत् ३६ दिनैकंस्थालिकायत्रपक्वमादायचूर्णये
 त् । सूर्यावर्तोरसोद्येषद्विगुञ्जःश्वासजिह्वेत् ३७ शुद्धं सू
 तंमृतलोहंताप्यंगन्धकतालकम् । पथ्याग्निमन्थनिगण्डी
 त्र्यूषण्टङ्कणंविषम् ३८ तुल्यंशंमर्दयेत्खल्वेदिनांनिर्गुण्ड
 काद्रवैः । मुण्डीद्रवैर्दिनैकन्तुद्विगुञ्जं वटकीकृतम् ३९ भक्ष
 येद्वातरोगातीनाम्नास्वच्छन्दभैरवः । रास्नामृतादेवदारु
 शुण्ठीवातारिजंशृतम् । सगुग्गुलुं पिबत्कोष्णमनुपानं सुखा
 वहम् ४० दग्धान्कपर्दिकान्पिप्प्लुत्त्र्यूषण्टङ्कणंविषम् !

कै निम्बारि लेप फिर रासलकरि वस्त्रमें ध्यानिले तत्र जलपर डारै तौ तिरैगी ॥
 ३३ ॥ त्रिकुटा त्रिफला इलायची जायफल लोंग ये सत्र नवभाग इन सब समान
 स्वयमग्निरस ले ॥ ३४ ॥ ये सत्र खरलकरि शहर में दो निष्क राय यह अग्नि
 रस क्षयी व कास को नाश करता है ॥ ३५ ॥ (श्वासपर सूर्यावर्त्तरस)
 पारा की आधी गन्धक पहरमर धीकुवार के रसमें, ग्रीटि टोनों के सम तावेजा पात्र
 ले तिसपर लेपकरि यह कजरी ॥ ३६ ॥ एक दिन थालीश्वर में पकाय ऐंचले या-
 लिकापन्न माटीकी हांडीमें लोभभरि तिसपै तमकेका पत्रधरि मुहंमुंदि कपर्डीटी
 करि फूंक देय यह सूर्यावर्त्तरस पीसि-दो, गुंजा खबरै तौ श्रास नाशकरै ॥ ३७ ॥
 (स्वच्छन्द भैरवरस) शुद्धपारा, मरालोहा, सोनामासी, गंधक, दरताल, इड,
 अरणी, मेवड़ी, त्रिकुटा, अनासुहाना, सिंगिया, मेवड़ीरस ॥ ३८ ॥ त्रिकुटा, अना
 सुहाना, सिंगिया व मेवड़ी रसमें सब मिलाय समान खरल करि फिर, एक दिन
 गोरखमुंडीके रसमें रासल करि दो गुंजाके समान गोलीकरै ॥ ३९ ॥ यह स्वच्छन्द
 भैरवरस, वातरोगी को खिलावै तथा रासन, सुर्च, देवदारु, सोंठ व रण्डकी जूड़
 इनका तनादाकरि गुग्गुलुयुक्त गरम द्रव्यके सङ्ग पिलावै यह अतुपान सुखदायी

गन्धकं शुद्धसूतञ्चतुल्यं जम्बीरजैर्द्रवैः ४१ मर्दयेद्द्रव्ये
 न्मापं मरिचाज्यं लिहेदनु । निहन्ति ग्रहणीरोगं पथ्यंतक्रौद्
 नंहितम् ४२ मृतं ताश्च मज्जाक्षीरैः पाच्यंतुल्यैर्गतद्रवैः । त
 त्ताम्रं शुद्धसूतञ्च गन्धकं च समंसमम् ४३ निर्गुण्डीस्वर
 सेर्मर्द्यं दिनं तद्गोलकं त्रजेत् । यामैकं त्रालुकायन्त्रे पाच्यं योज्यं
 द्विगुञ्जकम् ४४ बीजपूरकं मूलञ्च सजलं चानुपाययेत् ।
 रसस्त्रिविक्रमो नास्नामासैकेनाश्मरी प्रणुत् ४५ तालं ता
 प्यं शिलां मृतं शुद्धं सैन्धवकङ्कणाम् । समांशं चूर्णयेत् खल्वे
 सूताद् द्विगुणं गन्धकम् ४६ गन्धतुल्यं मृतं ताश्च जम्बीरै
 र्दिनपञ्चकम् । मर्द्यं षड्भिः पुटैः पाच्यं भूधरे सम्पुटे पचेत् ।
 पुटे पुटे द्रवैर्मर्द्यं सर्वमेतत्तु षट्पलम् ४७ द्विपलं मारितं ताश्च
 लोहभस्म चतुष्पलम् । जम्बीराम्लेन तत्सर्वं दिनं मर्द्यं पुटे
 लघु ४८ त्रिंशदंशं विषं चास्याक्षिप्त्वा सर्वं विचूर्णयेत् । म

है ॥ ४० ॥ (हंसपोटली ग्रहणीपर) भुनी कौडी पीसि सॉठ, मिर्च, पीपरि,
 सुहागा, सिंगिष, गन्धक और शुद्धपारा इन सब द्रव्योंको समानले जंभीरी के
 रसमें ॥ ४१ ॥ खरलकरि माश एकभर मरिच व धीकेसाय राय तव ग्रहणी
 नाशहोय माठा भात पथ्य देय ॥ ४२ ॥ (त्रिविक्रमरस अश्मरीपर) मरा
 तांया, बकरी दूध समानले किसी पात्रमें घरि आंचदे दूधतरै उतारिले तय तांवे
 के समान शुद्धपारा, गन्धक ॥ ४३ ॥ मेवड़ीके रसमें एक दिन घोटि गोलींकरि
 मूसायन्त्र में भरि बालुकायन्त्र में आंचदे तय टो गुंजा खिलावै ॥ ४४ ॥ विजौरा
 की अड़के रसमें या काड़ेमें यह रसदेय इस रसका त्रिविक्रम नामहै माशेभर सेवन
 करै तो पपरीको दूर करता है ॥ ४५ ॥ (कुष्ठपर महातालेद्वर रस) हर-
 ताल, सोनामाखी, मैनशिल, पारा, सेंधव व सुहागा ये सब समान खरलकरि पारे
 से दूनी गन्धकदे ॥ ४६ ॥ गन्धककेतुल्य मरा तांया जंभीरी के रसमें पांच दिन
 घोटि शराबसम्पुट में धोरे कपड्डीकी करि भूधरयन्त्र में फूंकदे ऐसे ढःगर फूंकदे
 फिर निकारि विनासण में पांच दिन घोटै पूर्ववत् आंचदे तय छःपल रसले ॥
 ४७ ॥ मरा तांया टोपल व लोह मरा चारपल ये दौनों जंभीरी रसमें एक दिन

हिषाज्येनसम्मिश्रंनिष्कार्द्वैभक्षयेत्सदा ४९ मध्वाज्यैर्वा
 कुचीचूर्णंकर्षमात्रंलिहेदनु । सर्वकुष्ठंनिहन्त्याशुमहाता
 लेइवरारसः ५० सूतभस्मसमोगन्धो मृतायस्ताम्रगुग्गु
 लू । त्रिफलाचमहानिम्बश्चित्रकश्चगिलाजतु ५१ इत्ये
 तच्चूर्णितंकुर्यात्प्रत्येकंशाणषोडश । चतुष्पष्टिकरञ्जस्य
 बीजचूर्णंप्रकल्पयेत् ५२ चतुष्पष्टिमृतंचाभ्रंमध्वाज्याभ्यां
 विलोडयेत् । स्निग्धभाण्डेघृतंखादेद् द्विनिष्कंसर्वकुष्ठनु
 त् । रसःकुष्ठकुठारोयं गलत्कुष्ठनिवारणः ५३ शुद्धंसूतं
 द्विधागन्धमर्च्यंकन्याद्रवैर्दिनम् । तद्गोलांपिठरीमध्येताम्र
 पात्रेणरोधयेत् । सूतकाद्विगुणेनैवशुद्धेताधोमुखेनच ५४ पा
 र्श्वंभस्मनिधायथापात्रोर्ध्वगोमयंजलम् । किञ्चित्किञ्चि
 त्प्रदातव्यंचुल्लयांयामद्वयंपचेत् । चण्डाग्निनातदुद्धृत्य
 स्वाङ्गशीतंसमुदरेत् ५५ काष्ठादुम्बरिकावह्नित्रिफलारा

घोटि दश गोइटा में आचदे ॥ ४८ ॥ इस भस्मका तीसवा अंश सिंगियादे तरल
 करै तन दोमारो भसके घीमें नित्य साय ॥ ४९ ॥ इसके पीडे बहुचीको चूर्ण दश
 गोरो अहदयुक्त पीके साथ साथ तौ सब कुष्ठ नाशदोषे इसका नाम महातालेइसर
 है ॥ ५० ॥ (कुष्ठकुठाररस) मग भस्म, गन्धक, मसालोहा, ताम्र गुग्गुलू,
 त्रिफला, चकापन, चीता और शुद्धशिलाजीत ॥ ५१ ॥ ये द्रव्य सोलहशाण
 चीसंति शाण करेज घीचका चूर्ण ॥ ५२ ॥ अभ्रक भस्म ६४ शाणसच इकट्ठी
 करि शेट और घीमें मिलाय समान घृत भाइमें भरि धरि इसे आठमारो रिगलारै
 तौ सब कुष्ठ दूरकरै यह कुष्ठकुठार रस गलित कोइ भी नाशकरता है ॥ ५३ ॥
 (उदपादिस्पर्श) शुद्ध पारा च दूनी गन्धक एक दिन घीकुवार के रसमें
 मदेन करि गोली बापि माटीके पात्रमें धरि पारेसे त्रिगुणा तावेकी गहरी कटोरी
 बनाय उस माटीपात्र के भीतर गोलेपर ढापि किसी वस्तु से निःसंधिकरि बंद
 करि ॥ ५४ ॥ चार्गे और ढकों के रासपर चूल्हे पर धरि टोपहर आचदेय
 और उस तावेके ढकनेपर पानीमें गोबर घोलि थोडा थोडा छोडता जाय अन्न
 में तीव्र आचदेय देहा भये उतारि ॥ ५५ ॥ कङ्गलर, चीता, त्रिफला, अम-

जवृक्षकम् । विडङ्गवाकचीवीजं काथयेत्तेन भावयेत् ५६
 दिनैकमुदयादित्योरसोदेयोद्विगुञ्जकः । विचर्चिकांदद्भु
 कुष्ठं श्वेतकुष्ठञ्चनाशयेत् ५७ अनुपानं प्रकुर्वीत वा कु
 चीफलचूर्णकम् । खादिरस्य कपायेण समेन परिपाचितम्
 ५८ त्रिशाणवागत्रां क्षीरैः क्वाथैर्नात्रिफलोद्भवैः । त्रिदिना
 न्ते भवेत्स्फोटः सप्ताहाद्वा किलासके ५९ नीलंगुञ्जांचका
 सीसंघत्तरंहंसपादिकम् । सूर्यभक्तांघचाङ्गेरीपिष्ट्वा तुल्या
 निलेपयेत् ६० स्फोटस्थानप्रशान्त्यर्थं सप्तरात्रं पुनः पुनः ।
 श्वेतकुष्ठं निहृज्यांशुसाध्यासाध्यं न संशयः ६१ अपरं श्वित्र
 लेपोपिकथ्यतेऽत्र भिषग्वरैः । गुञ्जाफलाग्निचूर्णचलेपितं
 श्वेतकुष्ठनुत् । शिलापांमार्गभस्मानिलिप्तं श्वित्रं विनाश
 येत् ६२ शुद्धमूतं चतुर्गन्धपलं यामं विचूर्णयेत् । मृतताम्रा
 अलोहानांदरदचपलंप्लम् ६३ सुवर्णैरजतंचैव प्रत्येकं द

लतासपत्र, विडंग व बकुची बीज इनका काथकरि रसकी भावनादे ॥ ५६ ॥
 एक-दिन घोटि यह उदयादित्य रस दो गुंजा खिलाने से विचर्चिका, दाट व
 श्वेतकुष्ठ अच्छा होनाय ॥ ५७ ॥ अनुपान खदिरसार काथ वा गऊका दूध
 वा त्रिफले के काथमें तीन शाण्य बकुची चूर्ण दो गुंजा रसयुक्त राय तौ तीन
 दिनके अन्तमें स्फोट कुष्ठ दूरहो सात दिनके अन्तमें सफेद कुष्ठ दूरहो ॥ ५८ ॥
 ५९ ॥ (श्वित्रपर लेप) नीलपत्र, गुंजा, कसीस, धतूरा, हंसपद, सूर्यमुखी
 आदर छोटी लुनियां ये सब सम भाग लेप करने से ॥ ६० ॥ जहां फूटाहो तहां
 तौ सात दिन में गलितकुष्ठ अच्छा-होय और श्वेतकुष्ठ साध्य वा असाध्य दूर
 होय ॥ ६१ ॥ इसीपर श्रेष्ठ वैद्य और लेख कहते हैं श्लुग्नी व चीताको जल में
 पीसि लगाने से श्वेतकुष्ठ दूरहोय मैंनशिन चिरचिरा रास पीसि पानी के साथ
 लेपकरै तौ श्वेतकुष्ठ दूरहोय ॥ ६२ ॥ (कुष्ठपर, सबैद्वार रस) शुद्ध
 पाप एकपल, गन्धक चारपल एकपहर खरल मर मराताया, अभ्रक, लोह,
 रंग ये शुद्ध सब एक एक पल ॥ ६३ ॥ मरसोना व चांदी एकपल आदर

अध्याय १२ ।]

शनिष्ककम् । माषैकं मृतवज्रञ्चेतालं शुद्धपलद्वयम् ६४
 जम्बीरोन्मत्तवासाभिः स्नुह्यैर्कविषमुष्टिभिः । मर्द्यहयारिजैः
 द्रावैः प्रत्येकेन दिनं दिनम् ६५ एवं सप्तदिनं मर्द्यैतद्गोलं वल्कः
 वेष्टितम् । बालुकायन्त्रगंस्वेद्यं त्रिदितं लघुवह्निना ६६ आ
 दाय चूर्णयेच्छूलक्षणं पलैकं योजयेद्विषम् । द्विपलं पिप्पली
 चूर्णमिश्रं सर्वेश्वरोरसः ६७ द्विगुञ्जो लिह्यते जौद्रेः सुतिमं
 डलकुष्ठजित् । बाकुचीदेवकाष्ठं च कर्षमाणं मुचूर्णयेत् । लि
 हेदेरण्डतैलाक्तमनुपानं सुखावहम् ६८ हेमाह्वानञ्च पलि
 कांक्षिप्यवातकघटे पचेत् तत्रैर्जाणैः समुद्धृत्य पुनः क्षीरे घटे
 पचेत् । क्षीरे जीर्णैः समुद्धृत्य क्षालयित्वा विगोषयेत् ६९ त
 चूर्णपञ्चपलिकं मरिचानां पलद्वयम् । पलैकं मर्च्छितं सूतमे
 कीकृतवानुभक्षयेत् । निष्कैकं मुतकुष्ठार्तः स्वर्णक्षीरैरसौह्य
 यम् ७० भस्मसूते मृतं ज्ञातं मुग्डमस्मशिलाजनु । शुद्धं ना
 गं शिलाठयोपान्त्रिकलां जौलवीजकम् ७१ कृपित्थं रजनी

चूर्णभृङ्गराजेन भोजयेत् । विशद्वारं विशोप्याथ मधुचुक्रं लि-
 हेरसदा ७२ निष्कमात्रं हरेन्मेहान्मेहैवद्धरसोमहान् । मं-
 हानिम्बस्य बीजानि पिप्प्लवाषट्सम्भितानि च ७३ पलं त-
 षडुलतोयेन घृतनिष्कद्वयेन च । एकीकृत्य पिबेच्चानुहन्ति मे-
 हं चिरन्तनम् ७४ चतुःसूतस्य गन्धोष्टौरजनीत्रिफलाशि-
 वा । प्रत्येकं च द्विभागं स्यात्त्रिवृज्जैपालचित्रकम् ७५
 प्रत्येकं च त्रिभागं स्यात्त्र्यम्बुदन्ती च जीरकम् । प्रत्येकमष्ट-
 भागं स्यादेकीकृत्य विचूर्णयेत् ७६ जयन्ती स्नुक्पयोमृद्भ्र-
 ङ्गिवातारितैलकैः । प्रत्येकं क्रमाद्भाव्यं सप्तवारं पृथक्पृ-
 थक् ७७ महावह्निरसो नाम निष्कमुष्णजलैः पिबेत् । वि-
 रेचनं भवेत्ततः क्रमकं ससेन्धवम् ७८ दिनान्ते दापयेत्पथ्यं
 वर्जयेच्छीतलं जलम् । सर्वोदरहरः प्रोक्तो मूढवातहरः परः
 ७९ गन्धकं तालकं ताप्यं मृतताचं मनःशिला । शुद्धं सूतं च
 तुल्यांशं मर्दयेद्भ्रानयेद्दिनम् । पिप्पल्यास्तुकपायेण वजी-

निकला, भरवेरीकी गूदी ॥७१॥ कंधा और हल्दी इन सबका चूर्ण भँगोके रसमें
 घोटें जय सूगजाय तत्र शठ मिलाय चाटै ॥ ७२ ॥ ४ मासे नित्यखाय तो
 भगेह नाशहोय इस रस का मेहनद नाम कहते हैं ववायन के तिया छः पीसि
 लेय ॥ ७३ ॥ चारि पैसाभर चायलका धोवन आठमासे दी सय मिलायके
 पिये तो बहुत दिनी प्रमेह दूर होताई ॥ ७४ ॥ (जलोदर पर वह्निरस)
 पार पल चार, गन्धक पल आठ, हल्दी, त्रिफला व हड ये सय दो २ पल, नि-
 शोय, जैपाल और चीता ॥ ७५ ॥ ये सय तीन २ पल, त्रिकुटा, जमालगोटे
 की जड़ और इत्रे जीरा आठ २ पल सय मिलाय सरल करै ॥ ७६ ॥ अरणी
 वा रस सहृद्भृष भँगरागस चीतारम यकादा रेंदीका तेल इनमें क्रमसे सातसात
 भाग दादे ॥ ७७ ॥ यह महावह्निरस चार मासे मुहमें धरि गरमपानी से उतारि
 जाय तत्र मल गिरे सन्धाको रेचन के पीछे पच्य मट्टा भात संधपलोन देकर
 गरम जल पिये सय पेटके रोग दूरहोयै न भूदयात दूरहो ॥ ७८ ॥ ७९ ॥
 (शुद्धनपर विनोर्धररस) शुद्ध गन्धक, हरताल, सोनामांसी, मरातावा,

क्षीरेण भावयेत् ॥ ८० ॥ निष्कार्द्वभक्षयेत्क्षौद्रैर्गुल्मसंघ्नीहादिकं
जयेत् । रसो विद्याधरो नाम गोमूत्रं च पिवेदनु ॥ ८१ ॥ टङ्गणं
हारिणं शृङ्गरवर्षीं शुल्बं मृत्तरसम् । दिनैकमाद्रकद्रावैर्मर्च्यैरु
द्धापुटेपचेत् ॥ ८२ ॥ त्रिनेत्रारसः सोयं माषं मध्वाज्यकैलि
हेत् । सैन्धवं जीरकं हिङ्गुमध्वाज्याभ्यां लिहेदनु । पक्तिशूलं
हरत्याशुमासमात्रं न संशयः ॥ ८३ ॥ शुद्धसूतं द्विधा गन्धयामै
कं मर्दयेद्दृढम् । द्वयोस्तुल्यं शुद्धताम्रं सम्पुटेतं निरोधयेत्
॥ ८४ ॥ ऊर्ध्वाधोलवणं दत्त्वा मृद्गाण्डे धारयेद्विषक् । ततो गज
पुटेपक्त्वास्त्राङ्गशीतं समुद्धरेत् ॥ ८५ ॥ सम्पुटं चूर्णयेत्सूक्ष्मं
पर्णखण्डे द्विगुल्लकम् । भक्षयेत्सर्वशूलार्तो हिङ्गुशुण्ठीसजी
रकम् ॥ ८६ ॥ वचामरिचजं चूर्णं कर्षमुष्णजलैः पिवेत् । असाध्यं
नाशयेच्छूलं रसोयं गजकेशरी ॥ ८७ ॥ शुद्धसूतं विषं गन्धमज
मोदाफलत्रयम् । सर्जक्षारं यवक्षारं वह्निसैन्धवजीरकौ ॥ ८८

मैन्शिल और पारा सत्र समानले खरल करि फिर पीपरि कायमें दिनभर खरल
करै एक दिन सेंहूड दूप में खरल करै ॥ ८० ॥ दो मासे शहद सत्र चाटै तौ
। गुल्म व छीहा दूरहोय यह विद्याधर रस खाय ऊपर से गोमूत्र पिये ॥ ८१ ॥
(त्रिनेत्ररस पक्तिशूलपर) सुहागा, हरिणशृंग, सोना, तांजा और पारामरा
एक दिन अदरकके रसमें घोटि गजपुटेमें फूंकदे ॥ ८२ ॥ यह त्रिनेत्ररस माशा
भर घृत शहद में चाटै तिसपर सैधव, जीरा, होंग, घृत और शहद चाटै यों मास
भर चाटनेसे पसुरी की समस्त पीडा दूरहोय ॥ ८३ ॥ (शूलपर गजकेशरी
रस) शुद्धपारा व दूना शुद्ध गन्धक-दोनों बलपूर्वक घोटि तिसके समान शुद्ध
तापेके कुटके करि कजली में मिलाय सम्पुटकरै ॥ ८४ ॥ फिर माटी के पात्रमें
नोन बीचमें सम्पुटगाडि गजपुट आचदे वयदाभये निकाले ॥ ८५ ॥ तब खरल
करि पकेयान में दो गुंजारस खवावै तौ पेटता शूल मिटै और लसीपर भुनीहोंग,
सोंठ, जीरा ॥ ८६ ॥ वच और मरिच इनका चूर्ण लप्पेणोदकके साथ पिये तौ असाम्य
शूल भी नाश होजाय यह गजकेशरी रस कहाता है ॥ ८७ ॥ (मन्दाग्नि
पर अग्निनुपडीरस) शुद्ध पारा, विष, गन्धक, अजमोद, त्रिकला, सङ्गी

सौवर्चलं विडङ्गानिसामुद्रं त्र्युषणं समम् । विपमुष्टिसर्व्व
 तुल्यं जम्बीरान्लेन मर्दयेत् । मरिचां भावटीं स्वादे द्वह्लिमन्ध
 प्रशान्तये ८९ शुद्धसूतं विपंगन्धं समं सर्व्वविचूर्णयेत् । मरि
 चं सर्व्वतुल्यां शं कण्टकार्याः फलद्रवैः । मर्दयेद्वाचयेत्स
 र्वमेकं विंशतिवारकम् ९० चटीं गुञ्जात्रयं स्वादे त्सर्वाजीर्णप्र
 शान्तये । अजीर्णकण्टकश्चायं रसो हन्ति विसूचिकाम् ९१
 मृतं सूतं मृतं ताद्यं हिङ्गुपुष्करमूलकम् । सैन्धवं गन्धकं तालं क
 टुकीं चूर्णयेत् समम् ९२ पुनर्नवादेव दालीनिर्गुण्डीतन्दुली
 यकैः । तिक्तकोशातकी द्रावैर्दिनेकं मर्दयेद्दृढम् ९३ माषमा
 त्रिलिहेत्त्रौर्द्वैरभं मन्थानभैरवम् । कफरोगप्रशान्त्यर्थं छिन्ना
 काथं पिबेदनु ९४ सूतहाटकवज्राणि ताम्रलोहं च माक्षिकम् ।
 तालं नीलाञ्जनं तु त्वमहिफेनं समांशकम् ९५ पञ्चानां लवणा
 नां च भागमेकं विमर्दयेत् । वजीचीरैर्दिनेकं तुरुद्धातं भूधरे

जदाप्पार, चीता, सैन्धव, जीरा ॥ ८८ ॥ कालानोन, विडङ्ग, पागालोन और बिजुटा
 ये सब समान भागले और सबके समान कुचलाले जमीरीके रसमें घोटे मरिच
 सम गोली वापि राय इस अग्निगुणैरससे मन्दानि दूर होजाती है ॥ ८९ ॥
 (विसूचिका (हैजा) पर अजीर्णकण्टकरस) पारा, सिंगिया और
 गन्धक ये तीनों शुद्ध सबसम भागले सरल करि सबके समान मरिचदे भटक
 देवा फलके रसमें भिजोय इफीसवार घोटे ॥ ९० ॥ तीनरत्ती भर चटी बनाय
 कर स्वादे तो इस अजीर्णकण्टकचटी के स्वाने से सब अजीर्ण शान्त होयें और
 विसूचिका को हने ॥ ९१ ॥ (अथ मन्थानभैरव) मृतक पारा व तांजा,
 हींग, पुष्करमूल, सैन्धव, शुद्ध गन्धक, इरताल और कटुकी ये सब सम भाग
 खरल करि ॥ ९२ ॥ गदापुरैना, बंदाल, मेरही, चौराई और बहुचीतोरई इन
 सबके रसमें एक एक दिन बलपूर्वक क्रमसे घोटे ॥ ९३ ॥ माशाभर शहद
 युक्त नित्य खाय यह मन्थानभैरवरस कदाता है इसपर कफरोगनाशार्थं गुर्च का
 काथं पिबे ॥ ९४ ॥ (अथ चार्तनाशकरस) शुद्धपारा, शुद्धसोना, शुद्धहीरा, शु
 द्दलोहा, शुद्धमौनामासी, शुद्धरत्नाल, शुद्धसुग्मा, शुद्धतृतीया और अफीम ये

पचेत् ६६ माषैकमाद्रकद्रात्रैर्लेहयेद्वातनाशनम् । पिप्प
लीमूलजंक्राथंसकृष्णमनुपाययेत् । सर्वान्वातविकारांस्तु
निहन्त्याक्षेपकादिकान् ६७ कनकस्याष्टभागाःस्यु सूतो
द्वादशभिर्मतः । गन्धोपिद्वादशप्रोक्तस्ताधंशाणद्वयोन्मि
तम् ९८ अन्नकस्यचतुःशाणंमाक्षिकस्यद्विशाणिकम् ।
वह्नोद्विशाणःसौवीरंत्रिशाणंलोहमष्टकम् ९९ विषंत्रिशा
णिकंचैवलाङ्गलीपलसम्भिता । मर्दयेद्दिनमेकञ्चरसैरम्ल
फलोद्भवैः २०० दद्यान्मृदुपुटंवह्नौततश्चूर्णितुकारयेत् ।
माषमात्रोरसोद्वेयः सन्निपातेसुदारुणे १ आद्रकस्वरसै
नेवरसोनस्यरसेनवा । किलासंसर्वकुष्ठानिविसर्पचभगन्द
रम् । ज्वरंगरसजीर्णचहरेद्रोगहरोरसः २ रसोगन्धस्त्रि
त्रिकर्षौकुर्यात्कज्जलिकांद्वयोः । ताराभ्रताखवङ्गाहि
साराश्चैकैरुकार्षिकाः ३ शिशुज्वालामुखीशुण्ठीविल्वेभ्य

समानभाग ॥ ६५ ॥ एक भागमें पांचौलीन ये सत्र द्रव्यले एकदिन सेहूँडके दूध
में खरलकरै संपुट में राखि भूरर्यत्रमें पचावै ॥ ६६ ॥ माशेभर रस अदरकके
रसमें मिश्रित करि खावे तौ सत्र वायु नाश होय अथवा पिपरामूल काप में पीपरि
मिलायके देखे तौ सत्र दात विकार आक्षेपकादि विलाय जाय ॥ ६७ ॥ (सन्निपात
पर कनकसुन्दर रस) आठभाग सोनाभस्म, बारहभाग पाराभस्म, शुद्धग-
न्धक बारहभाग, दोशाण ताद्वभस्म ॥ ६८ ॥ अन्नकभस्म ४ शाण, सोनामाती
भस्म २ वह्न २ सुरमाभस्म ३ लोहाभस्म ८ ॥ ६९ ॥ विष ३ पल, परियारी
पलभर ये द्रव्य और रस एक दिन जम्बीरी, नींबू में खरलकरै ॥ २०० ॥
संपुटकगि थोडी आचट्टे फूँकि फिर खरलकरै मागामर सिलारै तौ अत्यन्त कदा
हुआ सन्निपात दूरहोय ॥ १ ॥ अदरक वा लहसुन के रसमें सिलारै तौ, कि
लास, सर्वकुष्ठ, विसर्प, भगंदर, ज्वर, विषविकार और अजीर्ण इन रोगों को यह
कनकसुन्दर रस हरताहै ॥ २ ॥ (सन्निपात पर भैरवरस) पारा ३-कर्ष य
गन्धक ३ कर्ष इनदोनोको घोटिकजलीकरि तागा, चाँदी, पीतर, बंग और योलाट
ये पाचौंभस्म कर्षभर ॥ ३ ॥ सहिजन ज्वालामुखी व साँठि का कादा बेलके, फल

स्तन्दुलीयकात् । प्रत्येकस्वरसैः कुर्याद्यामैकैकं विमर्दये
 त् ४ कृत्वांगोलं च तं वस्त्रैर्लवणैः पूरितं न्यसेत् । काचभाण्डे
 ततः स्थाल्यां काचकूर्पीं निवेशयेत् । बालुकाभिः प्रपूर्याथ
 वह्निर्यामद्वयं भवेत् ५ तत उद्धृत्य तंगोलं चूर्णयित्वा विमि
 श्रयेत् । प्रवालचूर्णकर्षणं शोणमात्राविषेण च १ कृष्णस
 पिस्यगरलैर्दिवसं भावयेत्तथा ६ तगरमुशलीमांसीहेमाह्ला
 वितसः कणा । नीलिनीपत्रकंचेलाचित्रकश्चकुटेरकः ७ श
 तपुष्पादेवेदालीधत्तुरागस्त्यमुण्डिकाः । मधुकजातिमद
 नारसैरेषां विमर्दयेत् । प्रत्येकमेकवेलं च ततः संशोष्य धारये
 त् ८ बीजपूरार्द्रकद्रावमरिचैः षोडशोन्मितैः । रसो द्विगुञ्जाप्र
 मितः सन्निपातेषु दीयते । प्रसिद्धो यं रसो नास्ना सन्निपातस्य
 भैरवः ९ तारमौक्तिकहेमानिसारश्चैकैकभागिकाः । द्विभा
 गोगन्धकः सूतस्त्रिभागो मर्दयेदिमान् १० कपित्थस्वरसैर्गा
 ढंमृगशृङ्गेततः क्षिपेत् । पुटेन्मध्यपुटेनैव समुद्धृत्य च मर्दये

का रस चौसईरस इन रसमें पहरपहर भर घोटि ॥ ४ ॥ गोलांवाधि कपडौटीकरि
 दो कांचके प्याले एकमें लोहभरि गोलां धरि दूसरा लोह पूरित प्याला ढांकि
 कपडौटीकरि तय माठी पात्रे के बालुकांयंत्रमें धरि दोपहरकी आंचदेय ॥ ५ ॥ ठंडा
 भये निकारि खरलकरि फिरि मुंगा चूर्ण कर्पभर, विष शोणभर व काले सांपका
 जहरयुक्त एक दिन खरलकरि फिर कांचकी शीशोमें भरि बालुकायंत्रमें दोपहरकी
 आंचदे ठंडाभये निकारि चूर्णकरि ॥ ६ ॥ तगर, मुशली, जटायांसी, चौके, जगन्नाथी
 पीपरि, नीलक्रीपाती, इलायची, चीता, कटसरैयां ॥ ७ ॥ सौंफ, धनतोरई, धतूरा,
 अमृत्स्य, मुंठी, महुआ, चमेली और मैनफल इनसबका रस वा काढ़ा करि क्रम
 से एकएकवार घोटि सुखाय राखे ॥ ८ ॥ जंभीरीरस वा अदरकरस १६ मरिचो
 से दोगुंजा प्रमाण रसके साथ सन्निपात में देय यह प्रसिद्ध सन्निपातभैरवनाम
 रस कहाताहै ॥ ९ ॥ (अथ ब्रह्मणीकपाटेरस) चांदी, मोती, सोना और
 लोहा इनकी भरम एक एक भाग, शुद्धगंधक दो भाग और शुद्धपारा तीन भाग से
 सब खरनकरि ॥ १० ॥ फिर कौंचके रसमें खरलकरि धरिणके सांगमें भरि कपडौटी

त ११ वलारसैः सप्तवेलमपामार्गरसैस्त्रिधा। लोधं प्रतिविषा
 मुस्तं धातकीन्द्रयवाः स्मृताः । प्रत्येकैः स्वरसैर्नित्यं भावना
 स्यात्त्रिधात्रिधा १२ माषमात्रोरसो देयो मधुना मरिचैस्त
 था । हन्यात्सर्वान्तीसारान्ग्रहणीं सर्वजामपि । कपाटो ग्रह
 णी रोगरसो यं वह्निदीपनः १३ मृतसूताभ्रके गन्धं यवक्षारं
 सटङ्कणम् । अग्निमन्थं वचां कुर्यात्सूततुल्यानिमान्सुधीः
 १४ ततो जयन्ती जम्बीरमृद्गुद्रावैर्विमर्दयेत् । त्रिवासरंततो
 गोलं कृत्वा संशोष्य धारयेत् । लोहपात्रेशरावच्चद्रवोपरि
 त्रिमुद्रयेत् १५ अधो वह्निशनैः कुर्याद्यामाद्धतत उद्धरेत् ।
 रसतुल्यां प्रतिविषां दद्यान्मोचरसं तथा । कपिस्थविजया
 द्रावैर्भावयेत्सप्तधाभिषक् १६ धातकीन्द्रयवामुस्तं लोध
 म्बिल्वंगुडूचिका । एतद्रसं भावयित्वा वेलकैकं च शोषयेत्
 १७ रसं वज्रकपाटारख्यं शाणैकं मधुना लिहेत् । वह्निशुण्ठी
 विडंबिल्वं लवणं चूर्णयेत्समम् । पिवेदुष्णाम्बुना चानुसर्व

करि तीस गोयेंदा की आचदे ढंढाभये निकारि निकारि खरलकरि ॥ ११ ॥ परि-
 यारारसमें सातवार खरलकरि फिर तीनवार भिरभिरारसमें खरलकरि फिर लोष,
 अतीस, मोया, धवपुष्प, इन्द्रयव और गुर्च इनके रसमें तीन तीनवार क्रमसे खरल
 करि ॥ १२ ॥ माशाभर रस शहद मरिच मिलाय चाटे तो सब अतीसार व ग्रहणी
 को दूरिकरै यह ग्रहणीरुपाट अग्निको दीपन करताहै ॥ १३ ॥ वज्र कपाटरस
 ग्रहणीपर) पारापस, अन्नकभस, शुद्धगन्धक, जवाभार, सुहागा, अरणी
 बीज और धालवच ये सब समानभागले ॥ १४ ॥ यह रस जैति, जंभीरी व भंगरा
 इनके रसमें तीन तीन दिन थोटे गोलाकरि सुखाय लोहेकी कड़ेया में धरि माटी
 पात्रसे बंदकरि ॥ १५ ॥ मंद मंद चार घड़ी आंचदे उतारिलेय तब उस रस के
 समान अतीस व मोचरस डालि कैया व भाग के रसमें वैय सातसात बारघोटे ॥
 १६ ॥ फिर धवपुष्प, इन्द्रयव, मोया, लोष, वेल और गुर्च इनके रसमें एकएक बार
 घोट सुखायले ॥ १७ ॥ यह वज्रकपाटरस शाणभर शहद के संगसाय ऊपर से
 पीता, सोधि, पागानोन, वेल और संधव इन सबका समभाग खरियरि उष्णजलके

जाग्रहणीजयेत् १८ तारवज्रसुवर्णचताघंसूतचगन्धक
म् । लोहकमविष्ट्वानिकुर्यादितानिमात्रया १९ विमर्द्य
कन्धकाद्रात्रैर्न्यसेत्काचमयेघटे । विमुच्यपिठरीमध्येधार
येत्सैन्धवैर्भृते । पिठरीमुद्रयेत्सम्यक्ततश्चुल्ल्यानिवेशये
त् २० वह्निशनेः शनेः कुर्याद्विनैकततउद्धरेत् । स्वाङ्गशी
तंचसंचूर्णभात्रयेदर्कदुग्धकैः २१ अश्वगन्धाचकाको
लीवानरीमुशलीक्षुरी । त्रित्रिवेलंरसैरासांशतावर्चाश्चभा
वयेत् । पद्मकन्दकसरुणारसैः कासस्यभावयेत् २२ कस्तूरी
व्यापकपूरकङ्गोलैलालवङ्गकम् । पूर्वचूर्णादष्टमांशमेतच्च
र्णविमिश्रयेत् २३ सर्वैःसमांशकराचदत्त्वाशाणोन्मिता
भजेत् । गोदुग्धद्विपलेनैवमधुराहारसेवकः । तरुणीरम
येद्बह्वीःशुक्रहानिर्नजायते २४ सूतोवज्रमणिमुक्ताता
रहेमसिताश्रकम् । रसैः कर्पमितानैतान्मर्दयेदिरिमेदजैः
२५ प्रवालचूर्णगन्धश्चद्विद्विकर्षविमिश्रयेत् । ततोश्वग

पाय स्वाय तौ सद्य ग्रहणी दूरिहोषं ॥ १८ ॥ (मदन कामदेवरस) चांदी
हीरा, सोना और तांबा इन चारोंकी भस्म तथा पारा, गंधक व लोहा ये तीनों शुद्ध
इन सातोंको क्रमसे बढती भागले ॥ १९ ॥ धीकुरारके रसमें घोट्टि शीशीमें धरि
कपड्डीकीकरि गाठीपात्र में नीचे ऊपर नोनपरि पांचमें शीशीधरि सपुटकरि चूल्हेपर
धरि ॥ २० ॥ दिनभर मंद मंद आंच धारि फिर निकारि मदारकेदूधमें सरलकरि ॥
२१ ॥ असंगंध काकोली बिना भी असंगंधे, किमाच, मुशली, तालमलाना और
शतापरि इनके रसमें तीन तीन भावना दे फिर कमलकी जड़ कसेरु व कांस इनकी
तीन तीन भावनादेय ॥ २२ ॥ कस्तूरी, त्रिकुटा, कपूर, शीतलचीनी, इलायची और
लवंग पीसि पूर्वचूर्ण जो भावनादिसे सिद्धकिये का आठमांश कस्तूर्यादिचूर्णयुक्त
करि ॥ २३ ॥ सबके समान शकर मिलाय शोणभरि स्वाय आठ पैसाभरि दूधपियै
पथ्य मधुरकरि इसके स्थानसे बहुत स्त्रियों से गमनकरै परन्तु धातु न घटै ॥ २४ ॥
(अथ कंदर्पसुन्दररस) शुद्धपारा, हीरा, मोती, चांदी, सोना व कृष्णाश्रक ये
पांच भस्म सद्य कर्ष करी भरले खिरकायमें एकदिन घोट्टै ॥ २५ ॥ मूंगका चूर्ण

न्धास्वरसैर्विमर्द्यमृगशृङ्गके । क्षिप्त्वामृदुपुटेपक्त्वाभावये
 द्वातकीरसैः २६ काकोलीमधुकंमांसीवलात्रयविशेङ्गुद्
 म् । द्राक्षापिप्पलिवन्दाकंवरीपर्णीचतुष्टयम् २७ परूषकं
 कंसेरुश्चमधुकंवानरी तथा । भावयित्त्वारसैरासांशोषयि
 त्वाविचूर्णयेत् २८ एलात्वक्पत्रकंमांसीलवङ्गाशुरुकेशर
 म् । मुस्तंमृगमदःकृष्णाजलंचन्द्रश्चमिश्रयेत् २९ एत
 ज्ञैःशाणमितैरसंकन्दर्पसुन्दरम् । खादेच्छाणमितंरात्रौ
 सिताधात्रीविदारिकां ३० एतासांकर्षचूर्णेनसर्पिःकर्षण
 संयुतम् । तस्यानुद्विपलंक्षीरंपिवेत्सुस्थितमानसः । रम
 णीरमयेद्वह्नीहानिकापिनंगच्छति ३१ शुद्धरसेन्द्रभागे
 कंद्विभागंशुद्धगन्धकम् । क्षिपेत्कज्जलिकांकुर्यात्तत्रती
 क्ष्णभवंरजः । क्षिप्त्वाकज्जलिकातुल्यंप्रहरैकंविमर्दयेत्
 ३२ तत्रकन्याद्रवैर्घर्मत्रिदिनंपरिमर्दयेत् । ततःसञ्जायते
 तस्यसोष्णोधूमोद्गमोमहान् ३३ अथतत्पिण्डतंकृत्वाता

व शुद्धगंधक दोसो कर्ष मिलाय असंगंध के रसमें एकदिन घुटाय मृगसंग में भर
 कपडोंकी करि थोड़ी आचम धरि फूंकदे फिर धवफूलके रस वा फायमें भावनादे ॥
 २६ ॥ फिर काकोली, त्रिना आसन, मुलेठी, जटामासी, बरियारा, गुलशकरी, कर्कई,
 मसीङ्ग, हिंगवट, मुनवा, पीपरका वादा, कटसरैया, वनभूंग, मुद्गगण्डी, मापपण्डी ॥
 २७ ॥ फालसा, कसेरु, महुआ और किमाचबीज इन सबों के रसमें एक एक मार-
 नादे सुराय खरलकरि धरिरालै ॥२८ ॥ इलायची, वज्र, पत्रज, जटामासी, लौंग,
 अमर, केशर, मोथा, कस्तूरी, पीपरि, सुगन्धमाला और कपर इनका चूर्णकरि ॥२९॥
 शाखभरले और शाखभर पूर्वोक्त वन्दर्पसुन्दरस और सांड, औंकरा व विदारी-
 कंद ॥ ३० ॥ इन सबको मिलाय कर्षभर धी रातिको साय बिपथीपुरुष दूधपियै
 सो पुरुष बहुत स्त्रीसंग भोगकरै तौ वैधैहानि नहीं होतीहै ॥ ३१ ॥ (क्षयीपर
 लोहरसायन) शुद्धारा एकभाग व शुद्धगंधक एक भाग इन दोनों को घोटि
 कजली करि तीन भाग शुद्ध पोल्लाडका चूर्ण कजली संग पहरभर घोटि ॥ ३२ ॥
 फिर धीठारके रसमें रदिन - १ मयें दंडि घोटै तव घाम और घोटनेकी गरमीसे बहुत

अत्रेतिघायच । मध्येधान्यकुशूलस्यत्रिदिनंधारयेद्बु-
 धः ३४ उद्धृत्यतस्मात्खल्वेतुक्षिप्त्वाघर्मेनिघायच । रसैः
 कुठारच्छिन्नायास्त्रिवेलंपरिभावयेत् ३५ संशोष्यघर्मेकाथे
 श्रभावयेत्त्रिकटोस्त्रिधा । वासामृताचित्रकाणारसैर्भाव्यंक्र-
 मात्त्रिधा ३६ लोहपात्रेततःक्षिप्त्वाभावयेत्त्रिफलाजले ।
 निर्गुण्डीदाडिमत्वग्भिर्धिसंभृङ्गकुरण्टकैः ३७ पलाशकद-
 लीद्रावैर्वाजकस्यश्रुतेनच । नीलिकालम्बुपाद्रावैर्वज्रूलफ-
 लिकारसैः ३८ भावयेत्त्रिनेत्रिवेलंच ततोनागवलारसैः । श-
 तावरीगोक्षुरकैः पातालगरुडीरसैः । त्रिनेत्रिवेलंयथात्मानं
 भावयेदेभिरौषधैः ३९ ततःप्रातर्लिहेदाज्यमधुभ्यांकोलमा-
 त्रकम् । पलमात्रं वलाकाथं पिवेदस्थानुपानकम् ४० मास-
 त्रयाच्छीलितं स्याद्वलीपलितनाशनम् । मन्दाग्निश्वास-
 कासौ च पाण्डुत्ताकफमारुतौ ४१ पिप्पलीमधुसंयुक्तं हन्या-
 देतन्नसंशयः । वातास्त्रमूत्रकृच्छ्रं च ग्रहणी चोदरं तथा ४२

धुआं उरगा ॥ ३३ ॥ जब कड़ाही गोला बांधि संदपत्र लपेट तांवे के पात्र में रख
 मुख भूंदि घाममें तीन दिन गाढ़रखलै ॥ ३४ ॥ फिर निकारि वैद्य घाममें धरि स-
 युजाके रसमें तीन भावनादे ॥ ३५ ॥ जब सूखिजाय तत्र सोंठि, मिर्च व पीपरि
 तीनोंके तीनकाथ करि तीन भावना दे फिर रूसा, गुर्च व चीता इन्हें एक एक के
 रसमें तीन-तीन भावनादे ॥ ३६ ॥ जलसे निकारि लोहपात्रमें धरि त्रिफलामें घोटि
 मेवड़ी, अनारका बिलका, भसीड़, भंगरा, कटसरैया ॥ ३७ ॥ पलाश, केलाष्टचारस
 व विजयसारके रसका काथ, नीलगुण्डीरस, बज्रकी छाल ॥ ३८ ॥ ये सब इन
 के रस वा काथमें तीन-तीन भावनादे फिर धरियारा, शतावरी, गुग्गुलु व धरदह
 इनके रसमें तीन-तीन भावना देना जो मिलै ॥ ३९ ॥ प्रभात समय आठमासे
 रस घृत शहद में खिलावे तिसपर धरियाराकाथ पलभर पिये यह अनुपान
 है ॥ ४० ॥ तीन महीना सेवनकरे रवेत बार न होय और त्वचाकी कुरीपड़ना
 दूरहोय मन्दाग्नि, रवात, खांसी, पांडू, कफ और वायुविकार इनके ग्रथे ॥ ४१ ॥
 पीपरि, शहदयुक्त साथ ही चातरचत, मूत्रकृच्छ्र, ग्रहणी, जलोदर ॥ ४२ ॥

अण्डवृद्धिजयेदेतच्छिन्नासत्त्वमधुप्लुतम् । बलवर्णकरंवृ
ष्यमायुष्यंपरमंस्मृतम् ४३ कूष्माण्डंतिलतैलं चमाषाक्षरा
जिकांतथा । मद्यमग्नरसंचैवत्यजेह्यस्यैवकः २४४ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेरसशोधनमारणं
द्वादशोऽध्यायः १२ ॥

इति शार्ङ्गधरस्यद्वितीयखण्डस्समाप्तः ॥

तथा अण्डवृद्धि न रहै गुर्चका सत और रंद्दयुक्त देवे तौ बल सुन्दरता व आयुको
बनाता है ॥ ४३ ॥ श्वेत कुम्हडा, तिल तैल, चर्बेद, राई, मद्य और खटाई इन
पदार्थों को लोह खानेवाला त्याग देवे ॥ २४४ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरेमध्यखण्डेभापाटीकायाद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरस्यवार्तिकभापासमेतोद्वितीयखण्डस्समाप्तिमगादिति शिर्वम् ॥

शार्ङ्गधरसंहिता

भाषाटीकासमेता ॥

(तृतीयखण्डः)

प्रथमाध्यायः ॥

स्नेहश्चतुर्विधः प्रोक्तो घृतं तैलं वसा तथा । मज्जा च त
त्पिवेन्मर्त्यः किञ्चिदभ्युदितैर्वो १ स्थावरो जङ्गमश्चैव
द्वियोनिः स्नेह उच्यते । तिलतैलस्थावरेषु जङ्गमेषु घृतं व
म् । द्वाभ्यां त्रिभिश्चतुर्भिस्तैर्यमकस्त्रितो महान् २ पिवे
त्त्रयहं चतुरहं षडहं तथा । सप्त रात्रात्परं स्नेहः सात्मी
भवति सेवितः ३ दोषकालाग्निवयसां वलं दृष्ट्वा प्रयोजये
त् । हीनां च मध्यमां ज्येष्ठां मात्रां स्नेहस्य बुद्धिमान् ४ अमा

(अथोत्तरखण्डः प्रारभ्यते) प्रथम स्नेहपानक्रिया—स्नेह चारिमांतिका कहिये
घृत १ तेल २ वसा कहे “मांसमें मिली चर्बी” ३ हाडके भीतरकी मज्जा ये चारों
स्नेह वैद्य सूर्योदय होते मनुष्य को पिलावै ॥ १ ॥ ये स्नेह दोषकारके हैं स्थावर
और जंगम स्थावर कहिये (अघर) जहां उपजै वहाँ स्थिर रहै ऐसे स्नेह अनेक प्रकार
के हैं उनमेंसे तिलका तेल श्रेष्ठ है जंगम कहे (घर) जो रवासासहित है तिनसे उत्पत्ति
घृतादि अनेकनमें घृत श्रेष्ठ है (अथ स्नेहभेद) घी, तैल वैद्य तिसे यम कह घी तैल
वसा मिलावै तौ मिष्टक है घी, तैल, वसा, मज्जासंयुक्त हो तौ महान् कहते हैं ॥ २ ॥
(अथ स्नेहपानक्रम) घृत रोगीको तीनदिन पिलावै तैल चारदिन वसा पांच
दिन मज्जा छहदिन घृतादि स्नेह सात दिनसे अधिक से अधिक पान करने से
आहार होजाता है औषध सदृश गुण नहीं करता है ॥ ३ ॥ (अथ स्नेहमात्रा
प्रकार) वातादि दोष, प्रतुक्काल, जठराग्नि, अस्थि और निर्वज, सबल व

त्रयातथाकालेमिथ्याहारविहारतः । स्नेहःकरोतिशोकांशौ
तन्द्रानिद्रांसंज्ञिताम् ५ अकालेचातिमात्रंवाश्रसात्म्ये
यच्चभोजनम् । विपमाशनयद्भुक्तमिथ्याहारः सकथ्यते ६
हृत्प्रादीक्षाग्नयेमात्रास्नेहस्यपलसम्भिता । मध्यमायेत्रि
कर्पोस्याब्जघन्याचद्विकर्षिका ७ अथवास्नेहमात्राः स्यु
स्तिशोन्याः सर्वसम्भताः । अहोरात्रेणमहतीजीर्यत्यद्वि
तुमध्यगा ८ जीर्यत्यल्पादिनार्द्धेचसाविज्ञेयासुखावहा ।
अल्पास्वाहीपनीलृप्यारवल्पदोषेचपूजिता ९ मध्यमास्ने
हनीज्ञेयावृंहणीअमहारिणी । ज्येष्ठीकुष्ठविषोन्मादग्रहाप
रमारनाशिनी १० केवलंपैत्तिकेसपिर्वातिकेखण्डान्वित

म् । प्रेयं बहुकफेवाधिव्योषक्षारसमन्वितम् ११ रुक्षक्ष
 तविपार्त्तानावातपित्तधिकारिणाम् । हीनमेधास्मृतीनांच
 सर्पिःपानं प्रशस्यते १२ कृमिकोष्ठानिलाविष्टाः प्रवृद्धक
 फमेदसः । पिवेयुस्तेलरात्म्यायेतैलं दीप्ताग्नेयस्तुये १३
 व्यायामकर्षिताः शुष्करेतोरक्तमहारुजः । महाग्नेभारु
 तप्राणावसायोग्यानराः स्मृताः १४ क्रूराशयाः क्लेशसहा
 वातार्तादीप्तवह्नयः । मज्जानंचपिवेयुस्तेसर्पिर्वासर्वतो
 हितम् १५ शीतकाले दिवास्नेहमष्णकालेपिवेन्निशि ।
 वातपित्ताधिके रात्रौ वातश्लेष्माधिके दिवा १६ नस्याभ्य
 ज्ञनगण्डूषमूर्द्धकर्णाक्षितर्पणे । तैलं घृतं वायुञ्जीतदृष्ट्वा दो
 षवलाविलम् १७ घृतेकोष्णं जलं पेथं तैलेयूषः प्रशस्यते ।

घृत, कफत्रोषमें सौंठ, मिर्च, पीपरि च जवाखार पीसि घृतमें युक्तकरि प्यावै ॥
 ११ ॥ (अपर रोगों पर घृत) क्लेश, उरुःक्षत, विपार्त्त, रात पित्त दोष, हीन-
 बुद्धि और सुधि भूलना इनमें अवश्य घृत पिलाना भेष्ट कहा है ॥ १२ ॥ (तेल
 योग्य रोगी) कृमिविकार, वायुवृद्धि, शरीर कफ और घेदवृद्धि इनमें तेल
 पिलावै जो तेल उसे स्वाभाविक अहित न हो तो अग्नि दीप्त करेगा ॥ १३ ॥
 (बसापान योग्य) जो मनुष्य दंड कसरत व फुशतीभावि तथा परिश्रम करि
 दुर्बल और पीड़ित हो थातुक्षीण शुष्करक्त शरीरपीडा भस्मक आक्षेपकाटि वायु
 प्लिष्ट इनमें बसा पिलाना योग्य है ॥ १४ ॥ (अस्थि मज्जा योग्य) कुह
 फोण्डों क्लेशिन को वायुपीडित को प्रवलाग्नि को मज्जा पिलाना योग्य है तथा
 गी, सर्प शरीर को, हितदायक है ॥ १५ ॥ (अथ स्नेहपान समय) शीत
 कालमें दिनको पिलावै उष्णकालमें रात को घात पित्त अधिकवाले को रातको
 घात कफ अधिकवालेको दिनमें पिलावै ॥ १६ ॥ (घृतादिक कर्म विशेषपर
 नामके कारण) मर्दन को कुलीको मस्तकमें दावने का कान आंखिमें डालने

१ मज्जानावसाय मज्जा मासं तारादिभ्यस्तारयोरिति भागुरराव तापि ॥ मज्जोक्तामज्जयास
 इति द्विरूपकाशायेति ॥

२ आम, अग्नि, पच व भूव इनके आगप, यह्न और ज्योडा तथा दहन, उरु और
 पुष्कस व नर काठ कहात हैं ॥

वसामञ्जोःपिवेन्मण्डमनुपानसुखावहम् १८ स्नेहद्विषः
 शिशून्वृद्धान्सकुमारान्कृशानपि । तृष्णातुरानुष्णकाले
 सहभक्तेनपाययेत् १९ सर्पिष्मतीबहुतिलायवागूः स्व
 ल्पतण्डुला । सुखोष्णासेव्यमानातु सद्यः स्नेहस्यकारि
 णी २० शर्कराचूर्णसम्भृष्टेदोहनस्थेघतेतुगाम् । दुग्ध्वा
 चीरपिवेदुष्णंसद्यःस्नेहनमुच्यते २१ मिथ्याहाराद्विहारा
 द्वायस्यस्नेहानजीर्यति । विष्टभ्यवापिजीर्यतवारिणोष्णे
 नवामयेत् २२ स्नेहस्याजीर्णशङ्कायापिवेदुष्णोदकनरः ।
 तेनोद्गारोभवेच्छुद्धोभक्तप्रतिरुचिस्तथा २३ स्नेहेनपैत्ति
 कस्याग्निर्घटातीक्ष्णतरीकृतः । तदास्योदीरयेत्तृष्णावि
 षमातस्यपाययेत् । शीतजलवामयेच्चपिपासातेनशाम्य

को घृत वा तैल वातादि दीप सबल निबल विचारि वैद्य युक्तकरे ॥ १७ ॥
 (अथ स्नेहपानानुपान) घृत उष्णोदकके संगपिय तैल यूपसंयुक्त चरवी हाइ
 मञ्जो मांड युक्त पिये तौ सुखदशोय यूप मांड पिधि मध्यखण्डमं देखिकरना ॥
 १८ ॥ स्नेहद्वेषी कहे जिसे स्नेह न भावे तिसे अन्न के राङ्ग देना और बालक,
 वृद्धा, सुकुमार, दुर्बल व तृष्णायुक्त ऐसे मनुष्यको भातके साथ गरमी में देना ॥
 १९ ॥ (स्नेह यवागू) तैल मलेप्रकार कूटि थोड़ाचावलका चर्चटारि
 थोड़ादान और जल देकर पतला पकायले तब गुनगुना साथ तौ तुरन्त घातु
 को उत्पन्न करताहुया शरीर को चिकना करता है ॥ २० ॥ (अथ घृ-
 रोष्णे दुग्धविधिः) दोहनी के भीतर मिथी पीसि घृत मिलाय लिप्तकरे
 तिस में दुग्ध दुहाय तुरन्त गर्भ गर्भ पिये तौ तुरन्त घातु उत्पन्न होजावे ॥
 २१ ॥ स्नेह पिये पर परिश्रम करने वा कफहत यद्वि खानसे स्नेह न पचाहो
 वा मलारोध किया हो तौ उष्ण जलसे चमने करावे तौ अजीर्णका दीप यित्था
 है ॥ २२ ॥ जो स्नेह अजीर्ण की शंका हो तौ ताम्रजल प्यावे जय शुद्धिकार आन
 व अन्नपर इच्छाकरे तब जानै कि अजीर्ण शान्त भया ॥ २३ ॥ (स्नेह जन्य
 पित्तकोप यज्ञ) पित्तमहाविवाले को स्नेहपान से गरमी होती है प्यास
 विशेष लगती है उस थण्डाजल पिला चमने करावे तौ प्यासकी उष्मा (गरमी)

यामभारांश्चसेवेतामयमुक्तये । ५ येषानस्यविधातव्यव
 स्तिश्चापिहिदेहिनाम् । शोधनीयांश्चयेकेधित्पूर्वस्वेद्या
 श्चतेमताः ६ पश्चात्स्वेद्यागतेशल्येमूढगर्भगदेतथा । स्वे
 द्याःपूर्वत्रयःप्लीहभगन्दर्शसांतथा ७ अश्मर्याश्चातुरो
 जन्तुःशमयेच्छस्त्रकर्मणा । सर्वान्स्वेदान्निवातेचजीर्णाहारे
 चकारयेत् ८ स्वेदान्वातुस्थितादोषाः स्नेहछिन्नस्यदेहि
 नः । द्रवत्वप्राप्यकोष्ठान्तर्गतावान्तिविरेकताम् ९ स्विद्य
 मानशरीरस्यहृदयशीतलैःस्पृशेत् । स्नेहाभ्यक्तशरीरस्य
 शीतैराच्छाद्यचक्षुषी १० अजीर्णादुर्वलोमेहीक्षतक्षीणः
 पिपासितः । अतीसाररक्तपित्तीपाण्डुरोगीतथोदरी ११

कराय बोझ उठवाय ऐसी बुद्धियाँ से कफ मद्गुक्त चायुरोग दूर होता है ॥ ५ ॥
 और नासयोग्य चस्तियोग्य रेचनयोग्यको प्रथम स्वेद निकलाय, उमाय करै ॥ ६ ॥
 जिस स्त्रीके पेटके भीतर गर्भका शालहो वा मूढगर्भहो, इत दोका गर्भ जब बाहर
 होनाय तब स्वेदकरै जिस मनुष्यकी प्लीह, भागदर अर्श ॥ ७ ॥ और अश्मरी इन
 चारों रोगियों को प्रथम स्वेदन करि शल उपाय करना, उचितहै स्वेदकर्म करने
 का समय स्थान आहारपचने के अनन्तर जिस स्थान में पचनेका प्रवेश न होसके
 तहां बैठायके स्वेदकर्मकरै ॥ ८ ॥ "स्वेदकिये, पुरुषको बड़े पात्रमें तेलभरि बैठाय
 लै वातादिक दोष और रसादि सप्तधातु के विकार मनको पतला करिके उसके
 साथ निकलजाते हैं यह अन्य ग्रंथका मतहै" और शाश्वर, मत (राय) से स्वेदी
 मनुष्य के पसीना निकलतेहो रसादि सप्तधातुमें स्थित वातादि विकार मलको प
 तलाकरि निकलजाते हैं ॥ ९ ॥ (स्वेदीके चित्त स्वस्थकरनेका यत्न)
 जिसका स्वेदकरि पसीना निकलानेसे मल पतलाहो चित्त सावधानहो तौ धाती
 पर धंदन लगाने से सावधानहोगा जिसका शरीर तेलमें भिजोया गयाहै और
 अल पतला गिरनाहै उसकी आंखोंपर कदली वा फेयड़ाके जलमें वस्त्र भिजोयके
 धरने से चित्त स्वस्थ होगा ॥ १० ॥ स्वेद अयोग्य अजीर्णा दुर्वल, ममेही उरः
 क्षतपीडित प्यासातुर अतीसारयुक्त, रक्तपित्त रोगी पाण्डुरासीरी उदररोगी ॥ ११ ॥

॥ १ भाषिणा मे धीयय इत्यने के प्रयोगको नहरकर्म कहते हैं ॥

॥ ११ पुराणों विषकारी लगाने के कर्मको चस्ति कहते हैं ॥

सदातोर्गर्भिणीचेदनहिस्वेद्याविजानता । एतानपिमृदुस्वे
 दैःस्वेदसाध्यानुपाचरेत् १२ मृदुरवेदंप्रयुञ्जीततथाहन्मु
 ष्कट्टट्टिपु । अतिस्वेद्वारसन्धिपीडादाहतृष्णाक्लमोभ्रमः
 १३ पित्तासृक्पिपटकाकोपस्तत्रशीतैरुपाचरेत् । तेषुता
 पाभिधःस्वेदोवालुकावस्त्रपाणिभिः १४ कपालकन्दुकां
 गारैर्यथायोग्यंप्रयुज्यते । ऊष्मस्वेदःप्रयोक्तव्योलोहपि
 ष्ण्डेष्टिकादिभिः १५ प्रतप्तैरम्लसिक्कैश्चकायेवस्त्राववेष्टि
 ते । अथवातविनाशाहर्द्रव्यकाथरसादिभिः १६ उष्णे
 र्घटंपूरयित्वापाईर्बेच्छिद्रंविधायच । विमृद्यास्यंत्रिखण्डांच
 धातुजांकाष्ठवंशजाम् १७ पङ्कजलास्याङ्गोपुच्छान्नाडीयु
 ञ्ज्याद्विहस्तिकाम् । सुखोपविष्टंस्वभ्यक्तंगुरुप्रावरणावृत
 म् १८ हस्तिशुण्डिकयानाड्यास्त्रेदयेद्वातरोगिणाम् । पुरुषा

सदातोर्गर्भिणी ऐसे रोगी को स्वेदन न करे जो अशुभ्य वरनाहो तो मूष्म
 स्वेदले ॥ १२ ॥ (अल्पस्वेदनविधि) हृदय श्रंद्धृद्धि नयरोग इनरोगों में
 थोड़ा स्वेदले अतिस्वेदोपद्रव सन्धिपीडा, दाह, तृष्णा, लानि, भ्रम ॥ १३ ॥
 रक्त पित्तसे कुसी इनके शमन करने के लिये शीतोपचारकरै शान्तिदोय (अथ-
 तापस्वेद) ताप, वालु, कपड़ा ॥ १४ ॥ हाथ कपड़े की गेद बनापकै और
 अंगार ये द्यः भौतिके तापस्वेद कहे जैसा जहा योग्यहो तैसाकरै (अथा-
 ष्मविधिः) पत्थरादि तप्तकरि सेंकने यो ऊष्मकट्टे लोहेका गोला वा ईट था
 पत्थर तपाय ॥ १५ ॥ उसपर सद्य पदार्थ थोड़ा ब्रिडक मुखोष्ण भये लेके
 केवल उदाय स्वेदनकरै दूसरा वातहारी कहे दशमूलादि काथ वा रस ॥
 १६ ॥ उष्णकरि चढ़े घें भरि मुख मूँदि यगल छेदि धातु की वा बांस की
 टो, हाथ लम्बी नल बनावै गोपूत्र की मूरति तिसके सगट तीनकरै एक द्यः
 शंशुल बाकीके टो समान पतली औरसे उस द्यः शंशुलके टुकड़े का मोटा,
 मुख चढ़े के छेद-में भवेशकर उस में मध्यसगट ऊंचा करिजेरै ॥ १७ ॥ १८ ॥
 फिर तीसरागण्ड सौंयालगाय नजशुण्डि सा करि तीनों सन्धि मूँदि तत्र रोगी
 को भी व तेल लगाय व,लेप करि कम्वल उदाय सब और से ढक निम्सन्धि

याम्मात्रीवाभूमिमुत्कीर्यखादिरैः १९ काष्ठैर्दग्धातथाभ्यु-
 द्यक्षीरधान्याम्लवारिभिः । वातघ्नत्रैराच्छाद्यशयानंस्वे-
 दयेन्नरम् ॥ २० ॥ एवंमाधादिभिःस्विन्नैःशयानःस्वेदमाचरे-
 त् ॥ अथोपनाहस्वेदंश्चकुर्याद्वातहरौषधीः २१ अदिह्यदेहं
 वातातैस्तीक्ष्णमांसरसान्वितैः । अम्लपिष्टैःसलवणैःसुखोष्णैः
 स्नेहसंयुतैः २२ ततोग्रान्यानूपमांसैर्जीवनीयगणैर्नच । द-
 धिसौवीर्यकारैर्वीरतर्वादिनातथा २३ कुलित्थमापगोधू-
 मैरतसीतिलसर्षपैः । शतपुष्पादेवदारुशेफालीस्थूलजी-
 रकैः २४ एरण्डमूलवीजैश्चरास्नामूलकशिशुभिः । मिश्रि-
 कृष्णाकुठेरैश्चलवणैरम्लसंयुतैः २५ प्रसारण्यश्वगन्धा-
 करि तत्रैत गजशुण्डि कां मुख कम्बलके भीतरः खोलि स्वेदनकरै तो पसीना
 निकलै (तृतीय) , रोगा के शरीर से बीताभर अधिक लम्बा चौड़ा गदासो-
 दि द्वादशगुल गदिग रैरक्षी लकड़ी भरि ॥ १६ ॥ फूँकि चारुभारि गड़े में
 दूध च कांजी वा मट्ठा छिड़क वायुहारी एण्डपत्र पिंडाय रोगों को सुलाय
 भारी बख्ख उदायै तो पसीना निकलै ॥ २० ॥ (चौथा) पूर्वप्रकार गदा-
 तमाय उर्द (आठि पानीले छिड़क एण्ड चड़पातादिसे शय्या रंघि पूर्वस्वेदनकरै ॥
 २१ ॥ (अथ ग्रन्थान्तरे) वातहारी द्रव्य घड़े में धरि जलभरि हुँहउन्दकरि
 चारपट्टी आच दे उतारिलेय रोगीको उष्णतेल मल सरहरीखाटपर मुलाय कपड़ा
 उदाय नीचे चड़ाधरि नितम्ब की ओर घटमुखओर वाफदे पसीना पोंदि पोंदि
 ले इस उष्ण संज्ञक स्वेदसे रसादिक सातौ धातु के वातादिके दोष पसीने साथ
 सब निकल जाते हैं ॥ २२ ॥ (अथोपनाहक्रिया) दशमूलादि वातहारी
 द्रव्यों का मुखकर उसमें दूध च हरिणादिकों का मांस मिलाय कुछ गर्म कर
 पायुपीड़ित जो श्रंगहो उसमें गावा लेपकर बख्ख ओदाय पसीना निकाले इस
 क्रिया को उपनाह कहते हैं (अथोपनाह महाशाल्वण क्रिया अर्थात्
 पोटेलिकासिक्तविधि) आधीमांस, जलचरमांस, जीवनीयगण द्रव्य, गो-
 दधि, सृञ्जी, जरासार, रासालोन, वीरतर्वादि गण वा मुखुस्फूल ॥ २३ ॥
 कुलथी, उड़द, गेहूँ, अलसी, तिल, सरसौं, सौंफ, देवदारु, निरगुण्टी, मग-
 रैला ॥ २४ ॥ रेंडी, रासन, मूल, सदिमना, सोबाजीज, पीपरि, नाजरोई पांचो

भ्यां वलाभिर्दशमूलकैः । गुडचीवानरीत्रीजैर्यथालाभंसमा
 हृतैः २६ स्विन्नैश्च वस्त्रसम्बद्धैः सदासंस्वेदयेन्नरम् । महाशा
 ल्वणसंज्ञोययोगः सर्वानिलात्तिहत् २७ द्रवस्वेदस्तुवात
 घ्नद्रव्यकाथेनपरिते । कटाहेकोष्ठकेवापिसूपविष्टोवगाहये
 त् २८ सौवर्णैराजतेवापिताघत्रायसदारुजे । कोष्ठकं
 तत्रकुर्वीतोच्छ्रायेषट्त्रिंशद्गुलम् २९ आयामेनतदेव
 स्याच्चतुष्टुङ्कसृणितथा । नाभेःषडङ्गुलंयावन्मग्नःकाथस्य
 धारया ३० कोष्ठकेस्कन्धयोःसिक्तस्तिष्ठेत्स्निग्धतनुर्नरः ।
 एवंतैलेनदुग्धेनसर्पिषास्वेदयेन्नरम् । एकान्तरेद्व्यन्तरेवा
 स्नेहोयुक्तोवगाहने ३१ शरीरेबलमाधत्सेयुक्तस्नेहोवगाह
 ने । शिरामुखेरोमकूपैर्धमनीभिश्चतर्पयेत् ३२ जलसिक्त
 स्यवर्द्धन्तेगथामूलेङ्कुरास्तरोः । तथाधातुर्विष्टुद्धिस्तुस्नेह
 सिक्तस्यजायते ३३ नातःपरतरःकश्चिदुपायोवातनाश

लोन ॥ २५ ॥ अनार, कटनरैया, असगन्, वरियारा, दशमूल. तुर्व और
 किमाचविया इनमें जितने मिलें ॥ २६ ॥ उन्हें जलमें पीसि तपाय दोटनी बाँधि
 सेंकें ठण्डी परे गरम तपेपर तपाय तपाय सेंकें इस शाल्वण-प्रयोग से सब च्यु
 पीड़ा दूर होती है ॥ २७ ॥ (अथ द्रवस्वेदविधि) दरन्लाहि बपुडानं
 द्रव्यों का काथ बनाय रोगी कड़ाउ वा चौकोन कोडर ॥ २८ ॥ सने, चाँदी,
 तांबा, लोहा वा काठ छत्तीस अंगुल ऊंचा बनाय बँठाप ॥ २९ ॥ वह कानने
 रोगी के ऊपर पतली धार से नावै नाभिके छः अंगुल ऊंचे बाँधे तब हाथ को
 हटावै इसीप्रकार एक वा दो दिन टार टार करै इसी भाँति तैल, दूध, घृत
 और द्रवस्वेदन भी करै फिर पन्न को बचावै ऐसे त्रे तीनदिन घृत वा तेल
 लगाय करै सब नसें और रोमों का मुख खुलि जाता है जो पन्न प्रवेश करने
 पावे तो उनके मुख से स्नेहादि पदार्थ प्रवेश के वायु को निजान देने हे
 शरीर को तृप्त और बलवान् करते हैं ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ दृष्टान्त जैधे जडमें
 जल सींचनेसे वृक्ष बढ़कर पुष्टहोजाता है तैसेही द्रवस्वेदक स्नेह ने मनुष्य का
 रोग नाशहोता व उमर बढ़ती है तैसेही रसादि मत्तगुणों में वातदोष वदने से

नःशीतशूलान्युपरमेस्तन्मगौरवविग्रहे। दीप्तेग्नौभार्दवेजा
तेस्वेदनाद्विरतिर्मता ३४ सम्यक्स्विन्नविमृदितस्नानमुं
षणांभुभिशनैः। भोजयेच्चानभिष्यन्दिव्यायामंचनकार
येत् ३५ इति श्रीशार्ङ्गधरेस्वेदविधिर्द्वितीयोऽध्यायः २ ॥

शरत्कालेवसन्तेचप्रावृत्कालेचदेहिनाम् । वमनरेच
नंचैवकारयेत्कुशलोभिषक् १ बलवन्तंकफव्याप्तहृल्लासा
त्तिनिपीडितम् । तथावमनसार्वभ्यंचधीरचितंचवामयेत्
२ विषदोषेस्तन्यरोगेमन्देग्नौश्लीपदेवुदे । हृद्रोगकुष्ठ
वीसर्पमेहाजीर्णभ्रमेषुचे ३ विदारिकापचीकासश्वासपी
नसवृद्धिषु । अपस्मारेज्वरोन्मादेतथारक्तातिसारके ४
नास्ताताल्वोष्ठपाकेषुकर्णस्त्रावेद्विजिह्वके । गलगुण्ड्याम
तीसारेपित्तश्लेष्मभदेतथा ५ मेदोगदेरुचौचैववमनंका
रयेद्विषक् । नवामनीयस्तिमिरीनगुल्मीनोदरीकृशः । ना

पेट वा मलमार्ग में भरभराहटहो तो तेलस्वेदकरै ॥ ३३ ॥ इससेपरे वातनाशक
और यत्र नहीं जयताई स्वेदकरै कि वायुगूल देह जकड़ना भारीपन दूरहोय अ-
ग्निदीप्त देह कोमल हलकी हो तब न करै ॥ ३४ ॥ स्वेदकरे पर तेल लगाय
मुखोष्ण जलसे न्हाय कफकारी भोजन करै ॥ ३५ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

शरद्, वसन्त और प्रावृत्काल के आदि चतुरस्रैय वमन (छर्दि) व निरे-
चन (दस्त) को करारैक्योंकि अश्विनीकुमार संहितादि सत्र ग्रन्थकार ऐसेही
कहते आये हैं इसमें मनुष्य की प्रवृत्ति शुद्ध रहती है ॥ १ ॥ (वमन योग्य)
जिसे वमन करने की सामर्थ्यहो कफ व्याप्तहो क्षुब्धसे तार बहती हो जिसे वमन
दितहो धीरचित्तहो उसे वमन करारै ॥ २ ॥ विपरोग, स्तन्यरोग, भृङ्गाग्नि, फीला-
पांव, अर्बुद, हृद्रोग, कुष्ठ, विसर्प, प्रमेह, अजीर्ण, भ्रम ॥ ३ ॥ विदारी, अपची, कास,
श्वास, पीनस, अश्वत्थुद्धि, अपस्मार, ज्वर, उन्माद, रक्तातीसार ॥ ४ ॥ नासा,
शोष्ठ, तागुपाक, कर्णस्त्राव, द्विजिह्वरु, गलगण्ड, धतीसार, पित्त, श्लेष्म ॥ ५ ॥ मेद-
शीर अरुणि इन रोगोंमें वैय वमन करारै (वमन अयोग्य) तिमिरी, गुल्मरोगी,

तिवृद्धोगर्भिणीचनस्थूलोनक्षतातुरः ६ मदातींबालको
रूक्षःक्षुधितश्चनिरुहितः । उदावर्त्यूर्ध्वरक्तीचदुरच्छर्दिः
केवलानिली ७ पाण्डुरोगीकृमिव्याप्तः पठनात्स्वरघात
कः । एतेप्यजीर्णव्यथितावाभ्यायेविषपीडिताः ८ कफ
व्याप्ताश्चतेवाभ्यामधुक्काथरयपानतः । सुकुमारंकृशंवा
लं वृद्धंभीरुंनवामयेत् ९ पीत्वायन्नागमाकरंठंक्षीरतक्रद
धीनिच । असात्स्यैःश्लेष्मलैर्भोज्यैर्दोषानुच्छिद्यदेहिनः
१० स्निग्धस्विन्न्यायवमनंक्षुत्तंसम्यक्प्रवर्तते । वमनेषु
चसर्वेषुसैन्धवंमधुनाहितम् ११ वीभत्संवमनंक्षुत्तंसम्यक्प्रवर्तते । वमनेषु
तंविरेचनम् । काथ्यद्रव्यस्यकुडवं श्रपयित्वाजलाढके
१२ अर्द्धभागवशिष्टं चवमनेष्वेवचारयेत् । काथपाने
नवप्रस्था ज्येष्ठाभात्राप्रकीर्त्तिता १३ मध्यमाषण्णिम
उदरोगी, कृश (दुर्बल), अतिबूदा, गर्भिणी, मोटा, घावसे व्याकुल ॥ ६ ॥
मदपीडित, बालक, रूपदेही, भूला, निरुहण वस्ति प्रिया, उदात्ती, ऊर्ध्वरक्ती,
छर्दिरोगी, केवल वाताती ॥ ७ ॥ पाण्डुरोगी, कृमी और बहुनायक श्रमसे-स्वर-
भङ्गी ऐसे रोगियों को वमन कराने और प्रजीर्णयुक्त व विषपीडित ॥ ८ ॥
तथा कफव्याप्त इन मनुष्यों को मुलेठी व महुआकी छालका काथ पिलाय वमन
कराने और सुकुमार, दुबला, बालक, बूढ़ा और भयभीत इनको कभी वमन न
कराने ॥ ९ ॥ (वमन के पूर्व उपचार) जिसे वमन करानाहो उसे पहिले
पेटपर यवागू, दूध, मट्ठा, दही, मनभावन पदार्थ और कफकारी पदार्थ इनके राने
से दोष ऊपर उभरयाते है ॥ १० ॥ तब वमनको औषध देय तो वमन अच्छे
भकार होताहै और स्नेह पानकियेको अच्छेभकार होताहै वमन योग्य पदार्थ सत्र
वमन प्रयोग में हैंअत्र वा शब्द युक्त औषध दितकारक होती है ॥ ११ ॥ जो
तूतिया वा तांपा घृत युक्त देते हैं वह वीभत्स वमनहै जिसे वीभत्स वमन दिवे
पर रेचनदेना हो तो घृत न खानेदेय वमन औषध यदि काथका प्रमाण काथकी
द्रव्य कुड्वं भरि कूटिके आड़कभर जलमें औटाए ॥ १२ ॥ आत्रा अन्तनाय तब
उत्वारिलेय फिर वमन करनेवाले मनुष्यको पिलाने (वमन जाय पान करने
का प्रमाण) वमन प्रियाका काथ नवप्रस्था पिलाने सो ज्येष्ठमानाहै ॥ १३ ॥

ताप्रोक्तात्रिप्रस्थाचकनीयसी । कल्कचूर्णावलेहांनांत्रि-
 पलंश्रेष्ठमात्रया १४ मध्यमां द्विपलाविद्यात्कनिष्ठांपलस-
 न्मितामावमनेचापिवेगास्स्युरष्टौपित्तान्तमुत्तमाः १५ पङ्-
 वेगामध्यमावेगाश्चत्वाररत्ववरामताः । वमनेचविरेकेच
 तथाशोणितमोक्षणे १६ सार्द्धत्रयं दशपलंप्रस्थमाहुर्मनी-
 षिणः । कफंकटुकृतीक्ष्णोष्णैःपित्तंस्वां दुहिमैर्जयेत् । सस्वां
 दुलवणाम्लोष्णैस्संसृष्टंवायुनाकफम् १७ कृष्णाराठफलैः
 सिन्धुकफेकोष्णजलैःपिवेत् । पटोलवासानिम्बैश्चपित्तेशी-
 तजलंपिवेत् १८ सश्लेष्मवातपीडायांसधीरंमदनंपिवे-
 त् । अजीर्णैकोष्णपानीयंसिन्धुपीत्वावमेत्सुधीः १९ वमं

द्वःप्रस्थ पिलावै सो मध्यममात्रा है तीन प्रस्थ पिलावै सो छोटी मात्रा है वमन कार्य
 में कल्कादिक औषध का प्रमाण वमन में कल्क चूर्ण अवलेह तीन तीन पल
 देना सो बड़ी मात्रा है ॥ १४ ॥ दो दो पलकी मध्यममात्रा है एक एक पलकी
 लघुमात्रा जानना वमन कार्य उत्तम, मध्यम व कनिष्ठ तीन भांतिका होता है (वेगका
 प्रमाण) जिस मनुष्य को वमन की औषध देय उसके सात वारताई सब दोष
 गिरिं आठवींवार पित्तगिरिं तो उत्तम वेग है ॥ १५ ॥ पांचवार में, सब दोषगिरि
 छठीवार पित्त गिरिं वह मध्यमवेग है तीनवार में सब दोषगिरि चौथी वार पित्त
 गिरिं वह कनिष्ठ वेग है वगनादिक में प्रस्थप्रमाण वमन और रेचन तथा सिरारक्त-
 मोक्षण अर्थात् फस्तलेने में ॥ १६ ॥ प्रस्थ साद्वेनेश्च पल्का जालना दोषविशेष
 में वमनोपचार द्रव्य कटु तीक्ष्ण उस पदार्थ से वमनकराने से कफार्ता का कफ
 नाश होता है मधुर व शीतल पदार्थकरि वमनकरानेसे पित्त नाश होता है मधुर
 चार खटाई उष्ण पदार्थ से कफयुक्त वात नाश होता है सौंठ, मिर्च व पीपरि ये
 तीक्ष्ण हैं गुणका अनारादि मधुर हैं ॥ १७ ॥ (कफमें वमनविधि) कफप्रकृति
 को पीपरि, मैनफल व सेंधव चूर्णकरि उष्णजल में पिलाने से चारवार कफ
 गिरैगा पित्तप्रकृति को परसरनीमत्र चूर्णकरि ठण्डे पानी में पिलानेसे चार वार
 पित्त गिरैगा ॥ १८ ॥ और कफ, वातपीडित को मैनफल दूधमें पिलानेसे कफ
 वात दूर होता है और सेंधव उष्णजल में पिलानेसे अजीर्ण मिटता है ॥ १९ ॥

नपाययित्वाचजानुमात्रासनेस्थितम् । कण्ठमेरण्डनालेन
 स्पृशन्तं चामधेद्विषक् २० ललाटं वमनः पुंसः पार्श्वे द्वौ च प्र
 वोधयेत् । प्रसेको हृद्ग्रहः कोठः कण्डूदुश्चर्दिताद्भवेत् २१
 अतिवान्ते भवेत्तृष्णा हि क्रोद्धारौ विसंज्ञता । जिह्वानिःसर्प
 णं चाक्षणोर्व्यावृत्तिर्हनुसंहतिः २२ रक्तच्छर्दिः ष्ठीविनंचक
 ष्ठेपीडाचजायते । वमनस्यातियोगेतुमृदुकुर्याद्विरेचनम् ।
 वदनान्तःप्रविष्टायां जिह्वायां कवलग्रहः २३ स्निग्धाम्ल
 लवणैर्हृद्यैर्घृतक्षीररसैर्हितः । फलान्यम्लानिखादेयुस्त
 स्यचान्येग्रंतोनराः २४ निःसृतांतुतिलद्राक्षाकल्कलि
 प्त्वाप्रवेशयेत् । व्यावृत्तेदिणघृताभ्यक्तेपीडयेच्चशनैः श
 नैः २५ हनुमोक्षेस्मृतः स्वेदोनस्यंचङ्गलेष्मवातहत् ।
 वमन करने की रीति वमन औषध पीके दोनों घुटने तौरिके बैठे और रंड
 पत्र की डण्डी शुद्ध करि गरे में प्रवेश करै तौ वमन होगा और वमन करनेवाले
 का मस्तक और दोनों ओरकी पसुरी सहाराताजाय इसी रीतिसे वैद्यलोग वमन
 कराते हैं ॥ २० ॥ (वमन कोपलक्षण) जो वमन अच्छी तरह न होय तौ
 रोगीके मुखसे लार बहै हृदय में पीड़ा रहै बोठे में खजली ये उपद्रव होते हैं ॥
 २१ ॥ (अति वमन उपद्रव) तृष्णा अधिक, हिचकी, टकार, अज्ञानता,
 जीभ निगलना, नेत्र चंचलता, संभ्रमचित्त, ठोड़ी जकड़ना ॥ २२ ॥ मुख से
 रुधिर गिरना, शरदार थूकना और कण्ठपीड़ा ये अतिवमन के लक्षण हैं ॥
 (अतिवान्त चिकित्सा) जो वमन अधिकहो तौ उसे मृदुरेचनकरे ॥ २३ ॥
 (वमनमें जिह्वा एँठनेपर चिकित्सा) अति उबकाई, अति जीभ एँठजातीहै
 उसे जो पदार्थ अच्छा लगताहो चिकना वा सटा वा सलोना सो दीपुक्त को
 खवाय उसके मुखमें रखदेना वा दूध, दही व घृत इनमें से कोई में सानि मुखमें
 राखे और उसके सम्मुख अन्य मनुष्य को सटे फलादि रिसलावे तो उसे देखने
 से घामनी की जीभमें पानी छूटे तौ जीभ कोमल होजाती है और प्रकृति स्वस्थ
 होती है ॥ २४ ॥ (अतिवान्त से जीभ बाहर निकल आवै उसका
 यत्न) जो उबकाते उबकाते जीभ निकल आवै तौ तिल व दासपीसि जीभपर
 लेपकर वैद्यपदेय और जो थावे चंचल भईरौ तौ आंसपर घी लगायधीरे धीरे

रक्तपित्तविधानेनरक्तच्छर्दिमुपाचरेत् २६ धात्रीरसाञ्जनो
 शीरलाजाचन्दनवारिभिः । मन्थं कृत्वा पाययेच्च सघृतं क्षौद्र
 शर्करम् । शाम्यन्त्यनेन कृष्णाद्याः पीडाश्छर्दिसमुद्भवाः
 २७ हृत्कण्ठशिरसांशुद्धिदीप्ताग्निचैवलाघवम् । कफपित्त
 विनाशश्च सम्यग्वान्तस्य चेष्टितम् २८ ततोपराह्णेदीप्ता
 ग्निमुद्गषष्टिकशालिभिः । हृद्यैश्च जाङ्गलरसैः कृत्वा यूपं च
 भोजयेत् २९ तन्द्रानिद्रास्यदौर्गन्ध्यं कण्डूञ्जग्रहणीविषम् ।
 सुवान्तस्य न पीडा चैभ्यन्त्येते कदाचन ३० अजीर्णशीत
 पानीयं व्याधामं मैथुनं तथा । स्नेहाभ्यङ्गं प्रकोपं च दिने कं व
 र्जयेत्सुधीः ३१ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

स्निग्धस्विन्नस्यवान्तस्य दद्यात्सम्यग्विरेचनम् । अत्र

सहराय देय ॥ २२ ॥ (वमन में हनुस्तम्भ उपचार) जो वमन के अन्त
 में ठोड़ी जकड़ जाय तो सेंकने व कफवातहारी द्रव्यों के सूत्रों से खुजलाती है
 (वमन के अन्तमें रक्तगिरने का चक्र) जो वमनात में रुदिर आनेलगे
 तो मयसपट्टमें कहा रक्तपित्तोपचार करै ॥ २६ ॥ (अति वमन से प्यास
 पड़ने का चक्र) जो कृष्णा वदें आवले वा रस, रसोत, रसस, धानकी खील व
 लालचन्दन ये पाचों पल भर चारपल ँडे पानीमें मथिके नी, शहद संयुक्त मिश्री
 डालिकै पिलावै तो शांति होय (रसांजन कटे रसोत बनाने की विधि)
 दाहद्वीका काय करि तिसके समान रुद्री का दूध मिलाय शौंठि गाढ़ा करि
 सुगाय ले उसे रसांजन कहते हैं ॥ २७ ॥ (वमन उत्तम होने का लक्षण)
 जो वमन अच्छा हो तो हृदय, कण्ठ व मन्तक के बफाटिकया दोष न रहै अग्नि
 दीप्तहो श्रंग हलका हो कफपित्तजनित विषार नाश होय ॥ २८ ॥ (वमन पर
 पथ्य) मूंग वा साठी के चारदाहा दूधदेना वा हिरन वा मास अभावे खसी
 मासका दूध दे ॥ २९ ॥ सम्यग् वमन भये तन्द्रा, निद्रा, मुखमें दुर्गंध, साज, संग्र-
 हणी व विपटोप ये रोग नहीं रहते न होते हैं ॥ ३० ॥ (वमन पर सघृत)
 भारी व गरिष्ठ पदार्थ, त्रंदा जल, परिश्रम, मैथुन, तेलमर्दन व क्रोध जिसदिन वमन
 करे तो इनसे बचाव है ॥ ३१ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरे चत्वारण्ये तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

(वमनान्तमें विरेचन) मयम मनुष्य स्नेह पानादिक कर्मकारि स्नेह कर्म करै

वान्तरैयत्वेधःस्वस्तोग्रहणीछाद्येत्कफः १ मन्दाग्निगौर
 चंकुर्याज्जनयेद्वाप्रवाहिकाम् । अथवापाचनेरामं बलासं
 चविपाचयेत् २ स्निग्धस्यस्नेहनैः कार्यंस्वेदैः । स्विन्नस्थरे
 चनम् । शरदृतौ वसन्ते च देहशुद्धौ विरेचयेत् । अन्यदात्य
 यिके कालेशोधनं शीलयेद्बुधः ३ पित्ते विरेचनं दद्यादामो
 जूते गदे तथा । शरीरजानां दोषाणां क्रमेण परमौषधम् । अस्ति
 विरेको वमनं तथा तैलघृतं मधु ४ दोषाः कदाचित् कुप्यन्ति
 जिता लङ्घनपाचनैः । ये तु संशोधनैः शुद्धान्तेषां पुनरुद्भवः
 ५ बालवृद्धावतिस्निग्धः क्षतक्षीणो भयान्वितः । श्रान्त
 रत्नपार्तः स्थूलश्च गर्भिणी च नवज्वरी ६ नवप्रसूतानारी
 फिर वमनं करै तव रेचनकरै सो रेचन उत्तम प्रकार है और प्रथम कर्महीन रेचन
 करे, कफ नीचे जाय ग्रहणी कहे पित्तवरा अग्निधरा घाइलेता है ॥ १ ॥ इसकारण
 से अग्निमंद, देहभारी, देह जकडना, प्रवाहिका कहे दाखण प्रतीसार ये रोग
 उत्पन्न होते हैं जो कर्महीन रेचन शीघ्रदियाचाहे तौ नीचे गिरनेवाला कफ और
 आव तिसे सूजे रंडकी जड़ आदि सेवन कराय पचाय रेचनकरै और भेड, चरक,
 सुश्रुत व वाग्भट इनका मत यह है कि प्रथम वमन कराय छ. दिन विताय तीन
 दिन स्नेहपान कराय फिर तीन स्वेद साधित तीन वाद सोरहे दिनमें लडुभोजन
 दे रेचनकराय ॥ २ ॥ (रेचनका दूसरा प्रकार) जो घृत दूधकनि म्नि-
 मनुष्य वा मट्टीके गोला व र्ट करि स्वेदित मनुष्य तिसे रेचन और वमने करा
 हार, कातिम्, चैत व वैशाराममें रेचन कर्म किये देह शुद्ध होजाती है और जो
 वैद्य रोगीका रोग विचार तिनके निवारणार्थ अनुक्तकालमें भी विरेचन करै ॥
 ३ ॥ विशेष रेचन योग्य पित्त विकार, आमवायु, उदररोग, नादान, वायुकोष्ठ-
 वद्ध इनरोगों को विशेष शुद्धकरि कराय परमौषध ब्रह्मने जानना बन्धिकर्म,
 रेचनकर्म, वमनकर्म, तैल, घृत, शहद यथारोग यत्करै ॥ ४ ॥ (दोष नि-
 वारण मे उत्कर्ष रेचन) वातादि दोष लघन पाचनकरे वचनाने हे परन्तु
 थोड़े कुपय किये ते उमर आते हे और जो रेचनकरि वातादि दोषों से शुद्ध
 किये शरीर वेग नहीं उभरते ॥ ५ ॥ (रेचन के अयोग्य) वानर, वृद्ध,
 अतिस्नेह पानपर उर. न्त, क्षीणमनुष्य, भययुक्त, अपित्त, वृषित, स्थूलशरीर,

चमन्दाग्निश्चमदात्ययी ॥ शाल्यादितश्चरूक्षश्चनविरे
 च्याविजानता ७ जीर्णज्वरीगरव्याप्तोवातरक्तीभगन्द
 री । अर्शःपाण्डूदरोग्रन्थीहृद्रोगारुचिपीडिताः ८ योनि
 रोगःप्रमेहार्तागुल्मप्लीहव्रणादिताः । विद्रधिच्छर्दिविस्फो
 टविसूचीकुष्ठसंयुता ९ कर्णनासाशिरोवक्त्रगुदमेहामया
 न्विताः । छीहशोफाक्षिरोगार्ताःकृमिक्षारानिलादिताः ।
 शूलिनोमूत्रघातार्ताविरेकार्दानरामताः १० बहुपित्तोमृदुः
 प्रौक्तोबहुश्लेष्माचमध्यमः । बहुवातःकूरकोष्ठोदुर्विरेच्यः
 सकथ्यते ११ मृद्धीमात्रामृदौकोष्ठेमध्यकोष्ठेचमध्यमा ।
 क्रूरेतीक्ष्णामताद्रव्यैर्मृदुमध्यमतीक्ष्णकैः १२ मृदुर्द्राक्षप
 यश्चञ्चुतैरपिविरिच्यते । मध्यमस्त्रित्वातिक्राराजवृक्षै
 विरिच्यतेकूरःस्तुक्पयसाहेमक्षीरीदन्तीफलादिभिः १३
 गर्भिणी, नत्रज्वरी ॥ ६ ॥ तुरन्त पुत्रजनिता री, मन्दाग्नि, अतिमदपीडित,
 शल्यवेधित, क्षतयुक्त और रुक्ष कहे निस्तेज मनुष्य इनको रेचन नहीं देना ॥
 ७ ॥ (रेचनयोग्य) जीर्णज्वरी, विपपीडित, वातरक्त व भगंदर रोगी, अ-
 र्शरोगी, पादुरोगी, उदररोगी, ग्रन्थिरोगी, हृदयरोगी, थरुचिसे पीडित ॥ ८ ॥
 योनिरोग, प्रमेह, गुल्म, प्लीहा, व्रणी, विद्रधि, छर्दि, विस्फोटक, विसूची, कुष्ठ ॥
 ९ ॥ कानरोग, नाकरोग, मस्तकरोग, मुखरोग, गुदारोग, गरमी, यवृत्, सूजन,
 नेत्ररोग, कृमिरोग, सोम्लादि रोग शूल और मूत्राघात इन रोगन करि पीडित
 मनुष्य को रेचन देवे ॥ १० ॥ (रेचन तीन प्रकार) कोमल मध्यम व
 कराल कोष्ठवेधक जिस मनुष्यकी कोमल भृतिहो उसका कोठा मृदुहै जिसकी
 केवल मृतिहै, उसका कोठा मध्यम है जिसकी केवल वात भृति हो उसका
 कठोर कोठा है सो कड़े कोठेवाला रेचन विपम में दुःखपाताहै उसे रेचन करने
 से मलद्राघ शीघ्र नहीं होताहै ॥ ११ ॥ कोमल कोठा समुभि मृदुरेचन करावे
 मध्यम कोठावाले को मध्यम मात्र विरेचन करावे मृदु मध्यमादिककोष्ठी को
 मृदु मध्यमादि औषधे कोमलकोष्ठी को दाख, दूध व रंठी का तेलयुक्त करि
 रेचन दे मध्यमकोष्ठी को निशोध, कुटकी व अमलतास इनका रेचन दे कूर-
 कोष्ठी को सेंहुड़ का दूध वा जमालगोटा इनका रेचन दे ॥ १२ । १३ ॥

मात्रोत्तमाविरेकस्यत्रिंशद्भेदैः कफान्तिका । वेगैर्विंशति
 भिर्मध्या हीनोक्तादशवेगिका १४ द्विफलंश्रेष्ठमाख्या
 तं मध्यमंचपलंभवेत् । पलाह्वैचकषायाणां कनीयस्तु
 विरेचनम् १५ कल्कमोदकचूर्णानां कर्षमध्वाज्यलेह
 तः । कर्षद्वयंपलंवापि वयोरोगाद्यपेक्षया १६ पित्तो
 त्तरेत्रिवृत्तूर्णं द्राक्षाकाथादिभिःपिवेत् । त्रिफलाकाथगो
 मूत्रैःपिवेद्वयोषंकफार्हितः १७ त्रिवृत्सैन्धवशुण्ठीनां चूर्ण
 मम्लैःपिवेन्नरः । वातार्हितोविरेकायजाङ्गलानारसेनवा
 १८ एरण्डतैलंत्रिफलाकाथेनद्विगुणेनवा । युक्तम्पीत्वा
 पयोभिर्वा नचिरेणविरिच्यते १९ त्रिवृताकौटजंवीजं पि
 प्पलीविड्वभेजम् । मृहीकायारसश्चौद्रं वर्षाकालेदि
 रेचनम् २० त्रिवृद्दुरालभासुस्ताशर्करादिव्यचन्दनम् ।

उत्तम, मध्यम और कनिष्ठ रेचन प्रमाण मल गिरते गिरते अन्त में कफ गिरे
 ऐसे तीस वेग आये सो उत्तम मात्रा है वेगकहे ठस्त जिसमें बीस वेग तक
 अन्तमें कफ गिरे वह मध्यम है जिसमें दश वेग तक कफ गिरे यह हीनरेचन
 मात्रा है ॥ १४ ॥ (रेचन काथादि प्रमाण) रेचन में काथा की मात्रा दो
 पल उत्तम एक मयम आघापल कनिष्ठमात्रा है ॥ १५ ॥ (रेचन कल्का
 दिक प्रमाण) कल्क मोदक चूर्ण तीनों का कर्ष कर्ष प्रमाण है और शब्द
 वृत्तयुक्त रेचन देय वा रोगीका रोग, अस्थि वा बलको देखि दो कर्ष से पनभ
 तक यथोचित मात्रा देना ॥ १६ ॥ (रेचनमें द्रव्यप्रकार) पित्तमें निरोध
 चूर्ण दास काथमें गुलकन्द गुलाब फूल वही सौंफके बने में देय कफ दोषमें
 सौंठ, मिर्च पीपरि चूर्ण व त्रिफला काथमें पियायें कफदोष दूर होइ ॥ १७ ॥
 वातकोप में निशोय, सौंठ, सैन्धव चूर्ण, नींबूस वा काँची या जंगनी चन्दक
 मांसका रूपयुक्त देइ तो रेचन अच्छाहो वायुकोप शांतहो ॥ १८ ॥ (अपर
 औषध रेचनपर) रेंडी तेल से दूना त्रिफलाकाथ प्यायें वा दूनाच्य युक्त
 प्यायें काढा जल्दहो ॥ १९ ॥ (रेचन कतु भेदसे) निगोय, उन्धक, पी-
 परि, सौंठ व दासके काथ शहद डारि वर्षामें प्यायें ॥ २० ॥ (जरद नें)

द्राक्षाम्बुनासयष्ट्याह्णंशीतलंपघनात्यये २१, त्रिवृताचि
त्रकंपाठाह्यजाजीसरलावचा । हेमक्षीरीचहेमन्तेचूर्णमु
ष्णाम्बुनापिवेत् २२ पिप्पलीनागरंसिन्धुंश्यामाचत्रिवृता
सह । लिहेत्क्षौद्रेणशिशिरेवसन्तेचविरेचनम् । त्रिवृताश
र्करातुल्याग्रीष्मकालेविरेचनम् २३ अभयामरिचंशुण्ठी
विडङ्गामलकानिच । पिप्पलीपिप्पलीमूलंत्वक्पत्रंमुस्त
मेवच २४ एतानिसमभागानिदन्तीचत्रिगुणाभवेत् ।
त्रिवृदष्टगणाज्ञेयाषड्गुणाचात्रशर्करा २५ मधुनामोद
कंकृत्वाकर्षमात्रप्रमाणतः । एकैकंभक्षयेत्प्रातःशीतंवानु
पिवेज्जलम् २६ तावद्विरिच्यतेजन्तुर्यावदुष्णंनसेव्यते ।
पानाहारविहारेषुभवेन्निर्यन्त्रणंसदा २७ विषमज्वरम
न्दाग्निपाण्डुकासभगन्दरान् । दुर्नामकुष्ठगुल्माशोर्गलं
गण्डभ्रमोदरान् २८ विदाहप्लीहमेहांश्चयक्षमाणंनयना
मयान् । वातरोगंतथाधमानंमूत्रकृच्छ्राणिचाश्मरीम् २९

निशोध, जवासा, मोथा, सुगन्धराता, मिथी श्वेतचन्दन, मुलेठी, दाख कायपै
प्यापै तौ रेचनहो ॥ २१ ॥ (हेमन्तमें) निशोय, चीता, पादा, जीरा, देवदारु,
बच और चूक इनका चूर्ण उष्णजलके साथ पियै तौ रेचनहो ॥ २२ ॥ (शि-
शिर व चसन्त में) पीपरि, सोंठ, सेंपव, विघारा, निशोध इनका चूर्ण शहद
युक्त चाटै तौ रेचनहो ग्रीष्म में निशोध का चूर्ण शकर समभाग गुक्करि फाकै
तौ रेचनहो ॥ २३ ॥ (रेचन पर अभयादिक मोदक) इष्ट, मिर्च, सोंठ,
विड्ग, आवला, पीपरि, पीपरामूल, तज, पत्रज व मोथा ॥ २४ ॥ ये सब समान
भागले कमालगोटा की जह त्रिगुण निशोभ अठगुणा शकर द्वगुणी ॥ २५ ॥
शहद में मल कर्ष कर्ष भरकी गोली चाधि प्रभात एकनाप शीतलजन पियै ॥
२६ ॥ जत्र वेग मल को रोंकाचाहै तत्र तत्ताजन्नपियै और खान पान विहार यत्र
से परहेज रखते ॥ २७ ॥ तौ विषमज्वर मंदाग्नि, पाण्डु, कास, भगन्दर, दुर्नाम,
कुष्ठ, गुल्म, अर्श, गलगण्ड, भ्रम, उदररोग ॥ २८ ॥ दाह, प्लीह, ममेह, यक्ष्मा,

अभयामोदकाद्येतेरसायनवराः स्मृताः । पृष्ठपाश्वोरुज
घनकट्युदररुजंजयेत् । सततंशीलनादेषांपलितानिप्र
णाशयेत् ३० पीत्वाविरेचनंशीतजलैःसंसिच्यचक्षुषी ।
सुगन्धिकिञ्चिदाघ्रायताम्बूलंशीलयेन्नरः ३१निर्घातस्थो
नवेगांश्चधारयेन्नस्वपेत्तथा । शीताम्बुनस्पृशेत्कापिको
ष्णानीरंपिवेन्मुहुः ३२ वलादौषधपित्तानिवायुर्वान्तेयथा
व्रजेत् । रेकात्तथामलंपित्तंभेषजंचकफोव्रजेत् ३३ दुर्वि
रक्तस्यनाभेस्तुस्तब्धत्वंकुक्षिशूलता । पुरीषवातसङ्गश्च
कण्डूमण्डलगोरवम् । विदाहोरुचिराध्मानंभ्रमश्छर्दि
श्चजायते ३४तंपुनःपाचनैःस्नेहैःपक्त्वासंस्नेह्यरेचयेत् ।
तेनास्थोपद्रवाद्यान्तिदीप्ताग्नेर्लघुताभवेत् ३५ विरेक

नेत्ररोग; वातरोग; पेटफूलना, मूत्रकृच्छ्र, पयरी ॥ २६ ॥ पीठ, एसुरी, ज्वाली,
जांघ, कटि और पेट इनके रोग दूरहो इस अभयामोदक सेवनसे तुरतही चाल
पकना भिटे यह रसायनश्रेष्ठ है ॥ ३० ॥ (रेचनअच्छेप्रकार होभेका पल)
रेचनौषध पीके ठंडे जल से आँखें व मुख पोंछें व सुगन्धादि फूल सूंघ पानखा-
या करै इस योग के करने से चित्त स्वस्थ रहता है व अच्छी तरह वेग धातेहैं ॥
३१ ॥ (रेचन समय साधना) पवन व मलमूत्र को न रोकें न थोटे ठंडा
जलन छुवै ज्योंज्यों वेग होय त्योंत्यों बारबार तत्तापानी पियै इससे खुलकर मल
गिरैगा ॥ ३२ ॥ सम्यक् रेचन में जैसे सम्यक् व्रमन में कफ और खाईहुई औ-
षध से पित्त, वायु व सबदोष मुख से गिरते हैं वैसेही ये सब मलमार्ग से गिरते
हैं ॥ ३३ ॥ (रेचन देने पर वेग न होय तिसके उपद्रव) जिस मनुष्य
को रेचन देने से वेग अच्छी तरह न आवै उसकी नाभिके नीचे कड़ापन और
कोप में शूल मल में वायु मिलजाय खजुली, मण्डल, देह जकड़ना, दाह, भ्र-
वसि, पेटफूलना, भ्रम व छर्दि ये उपद्रव उत्पन्न होते हैं ॥ ३४ ॥ (अशुद्ध
रेचनयत्न) जिसे रेचन अच्छी तरह न हुआ उसे रातका आरगुधादि पा-
चन दे फिर स्नेहयिधि से शृत पिलाय कोठा धिकना करि रेचन देने से शुद्ध
रेचन होगा सब उपद्रव शान्ते होंगे और जत्राग्नि दीप्तही व देह हलकी होजती

स्यातियोगेनमूर्च्छांशोऽगुदस्यचाशूलंकफातियोगःस्या
 न्यांसधावनसाक्षिभम् । मेदोनिभञ्जलाभासं रक्तंवापिवि
 रिच्यते ३६ तस्यशीताम्बुभिःसिक्तंशरीरंतन्दुलाम्बु
 भिः । मधुमिश्रैस्तथाशीतैःकारयेद्धमनंमृदु ३७ सहकार
 त्वचः कल्कोद्धनासौवीरकेणवा । पिष्टोनाभिप्रलेपेनह
 न्त्यतीसारमुल्बणम् ३८ अजाक्षीरंपिवेद्वापिवैष्किरंहारिणं
 तथा । शालिभिःषष्टिकैःस्वल्पंमसूरैर्वापिभोजयेत् ३९
 शीतैःसंग्राहिभिर्द्रव्यैःकुर्यात्संग्रहणंभिषक् । लाघवेमनस
 स्तृष्ट्यामनुलोमेगतेनिले ४० सुविरिक्तंनरंज्ञात्वापाचनं
 पाययेत्त्रिंशः । इन्द्रियाणांवलंबुद्धेःप्रसादोवह्निदीपनम् ।
 धातुस्थैर्यत्रयस्थैर्यत्रभवेद्रेचनसेवनात् ४१ प्रवातसेवा
 शीताम्बुस्नेहाभ्यङ्गमजीर्णताम् । व्यायामंमैथुनंवापिनसे
 वेतविरचितः ४२ शालिषष्टिकमुद्गाद्यैर्यवागुंभोजयेत्कृता

है ॥ ३५ ॥ (अतिविरेक में उपद्रव) मूर्च्छा, कांच निकरना, पेटमें शूल,
 कफ अधिक गिरना, मांस के धोत्रन सदृश गिरना, चरबी सीं वा पानी व रुधिर
 गिरै ॥ ३६ ॥ (अतिविरेकोपद्रव यत्) उगड़े जल से शरीर पोंछे व
 गुलाब कंबुडा छिरके व यत्न से पोंछे वा चावलका धोवन शहदयुक्त पीवे और
 शर्द्रे औषध दे मृदुवमन करावे इससे उपशमन होताहै ॥ ३७ ॥ आम की द्याल
 गोदधि व सौवीर इन्हें पीसि कल्ककरि नाभिपर लगावे तो वेग बन्दहो अथवा
 सौवीर में आम की द्याल पीसि नाभि पर लगावे "सौवीर वी क्रिया मध्यखण्ड
 में कही है" ॥ ३८ ॥ (झाडा घन्द करने की) घकरी का दूध, शकुनीचि-
 डिया का मांस घूम, भात व मसूरी सत साठीचावलका भात खाय ॥ ३९ ॥
 और अनार व ठंडे पदार्थका सेवन करै वेग बन्दहोय (स्वल्प विरेकमें ल-
 क्षण) शरीर हलका प्रसन्नचित्त स्वस्थ गमन वायु ॥ ४० ॥ ऐसे लक्षण देखि
 रातिकी पाचन देना वा पाचनार्थ ' रंडपूल, सोंठ, धनियेंका काथ दे' रेचन
 सेवने से इन्द्रियां चलवान् हों बुद्धि प्रसन्नरहे अग्नि दीप्तहो धातुपुष्टो व अवस्था
 यदकर स्थिर होनी है ॥ ४१ ॥ (रेचन पर अर्जित) व्याय, उगड़ा जल

मृ । जाङ्गलैर्विष्किराणांवारसैःशाल्योदनंहितम् ॥ ४३ ॥
 इतिःशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेरेचनाऽध्यायश्चतुर्थः ॥ ४ ॥
 वस्तिद्विधानुवासाख्योनिरूहश्चततःपरम् । वस्ति
 भिर्दीयतेयस्मात्तस्माद्वस्तिरितिस्मृतः १ यःस्नेहैर्दीयते
 सस्यादनुवासननामकः । कषायक्षीरतैलैर्योनिरूहःसनि
 गद्यते २ तत्रानुवासनाख्योद्विवस्तिर्यःसोत्रकथ्यते । पू
 र्वमेवततोवस्तिर्निरूहाख्योभविष्यति ३ निरूहादुत्तरं चै
 ववस्तिःस्यादुत्तराभिधः । अनुवासनभेदैश्चमात्रावस्ति
 रुदीरितः ४ पलद्वयंतस्यमात्रातस्मादर्द्धापिवाभवेत् ।
 अनुवासस्तुरूक्षःस्यात्तीक्ष्णाग्निःकेवलानिती ५ नानुवा
 स्यस्तुकुष्ठीस्यान्मेहीस्थूलस्तथोदरी । अस्थाप्यानानुवा
 स्याःस्युरजीर्णान्मादृड्युताः । शोकमूर्च्छारुचिभयश्वा
 तेलस्पर्श, अजीर्ण, श्रम व मैथुन इनसे वचारहे ॥ ४२ ॥ (रेचनपर पथ्य)
 चावल, मूंग की यबागू वा हरिणादि मांसका यूप वा लवा बदेर तीतर मांसका
 यूप भात में दे ॥ ४३ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरे उन्नरखण्डे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

(अथ वस्तिकर्म) गुदाके भीतर अण्डकोशकी जड़ताई द्रव्यभरि पिच-
 कारी देनेको वस्ति कहते हैं सो दो प्रकारकी है अनुवासन १ निरूहण २ जिस
 में धी-बोलादि चिकनी वस्तु भरि दीजै उसे अनुवासनवस्ति कहते हैं और
 काफ़, दूध व तेल मिश्रित पिचकारी भरि पीड़ितकरै वह निरूहणवस्ति कहाती
 है ॥ १ ॥ २ ॥ सो प्रथम अनुवासन वस्ति है पीछे निरूहण है इसी से निरू-
 हण को उत्तरवस्ति भी कहते हैं ॥ ३ ॥ ४ ॥ (अनुवासन की द्रव्यका
 प्रमाण) स्नेहादि दो पल व एक पलका प्रमाण जानना ऐसे पिचकारी के भेद
 हैं (अनुवासन योग्य) रूतमकृती वा स्नेहपानराहित को वा अग्नि दीप्त
 करनेको केवल वातरोगी को ये अवश्य अनुवासन योग्यहैं ॥ ५ ॥ (अथानुवा-
 सन अयोग्य निरूहण योग्य) कुष्ठी, प्रमेही, मोटा शरीर और उदर
 रोगी ये अनुवासन योग्य नहीं हैं और अजीर्ण, उन्मादी, वृषी, शोक, मूर्च्छा-

सकासक्षयातुराः ६ नेत्रंकार्यसुवर्णादिधातुभिर्वक्षवेणुभिः ।
 नलैर्दन्तैर्विषाणाग्रैर्मणिभिर्वाविधीयते ७ एकवर्षानुपङ्क
 र्षयावन्मानं पङ्कगुलम् । ततोद्वादशकंयावन्मानं स्याद्
 षट्सम्मितम् । ततःपरंद्वादशभिरङ्गुलैर्नेत्रदोर्घतांस्मुद्ग
 च्छिद्रं कलायाभं छिद्रं कोलास्थिसन्निभम् । यथासंख्यंभ
 वेत्नेत्रंश्लक्ष्णंगोपुच्छसन्निभम् ९ आतुराङ्गुष्ठमानेनमू
 लेस्थूलंविधीयते । कनिष्ठिकापरीणाहमग्रेचगुटिकामुख
 म् १० तन्मूलेकणिकेद्वेचकार्यभागान्चतुर्थकात् । योजयेत्त
 त्रवस्तिचवन्धद्वयविधानतः ११ सृगाजशूकरगवांमोहि
 षस्यापिवाभवेत् ॥ मूत्रक्रोशस्यवस्तिस्तुतदलाभेनचर्म
 जः । कषायरक्तःसुमृदुस्तोक्ष्णः स्निग्धोहृदोहितः १२

अरुचि, भय, श्वास, कास व ज्वर इनसे पीडित को निरूहण वस्ति अयोग्य है ॥
 ६ ॥ परन्तु अनुवासन योग्य है वस्ति कहे (पिचकारी निर्माण विधि)
 नेत्राहे पिचकारी की नली जो गुदमें प्रवेशी जाय तो सुवर्णादि धातुकी, चांस,
 नरकुल, राजदन्त व सृगसौंग की हो और उसका अग्रभाग पद्मा व बिलौरका
 घनावै ॥ ७ ॥ नली योग्य अवस्था जो वर्ष एक से छः वर्षताई बालक के
 वस्ति की नली छःअंगुल घनावै और छः वर्ष से बारह वर्षताई की आठअंगुलकी
 घनावै और बारह वर्षसे ऊपरवाले की नली बारह अंगुलकी घनावै ॥ ८ ॥ (नली
 छिद्रप्रमाण और निर्माणविधि) छ अंगुलकी नलीका प्रवेश करनेवाला मुख
 भूग समान करे नीचेका छोटी अंगुली समान और आठ अंगुलकी मटरसा दूसरी
 मध्य अंगुलीसा बारह अंगुलवाली का भरवेरी के घेर समान । दूसरी अंगुली
 समानराखे नली बहुत चिकनी रहे गोपुच्छ सदृश ॥ ९ ॥ एकओर पतली दूसरी
 ओर मोटी मोटी ओरके चौथ्याई भाग में दो छल्ले जड़ेहों जिसमें थैली हरि-
 ण्यादि के मूतने की चढ़ाई पूर्वोक्त छल्लोंका भाग थैली समेत बहुत पुष्ट कर्म
 जिसमें थैली औषध न और राहसे निकले तय पिचकारी टीका जानो ॥ १० ॥
 ११ ॥ थैली निर्मित जानो-हरिण, द्याग, वराह, बिल व भैंसा इनके मूत्रकी
 थैली उस नली में लगावै जो ये न मिले तो इनके चमड़े को कमलापत्र सम काटि

व्रणवस्तेस्तुनेत्रस्याच्छृङ्खणमष्टाङ्गुलोन्मितम् । सुद्रच्छि
 द्रमृध्रपक्षनलिकापरिणाहिच १३ शरीरोपचयवर्णवल
 मारोग्यमायुषः । कुरुतेपरिवृद्धिचवस्तिःसम्यगुपासि
 तः १४ दिवसान्तेवसन्तेचस्नेहवस्तिःप्रदीयते । ग्रीष्म
 वर्षाशरत्कालरात्रौस्यादनुवासनम् १५ नचातिस्निग्ध
 मशनभोजयित्वानुवासयेत् । मद्मूर्च्छाचजनयेद्विधास्ने
 हःप्रयोजितः १६ रुक्चभुक्तवतोत्यन्तंवलंवर्णचहीयते । यु
 क्तस्नेहमतोजन्तुंभोजयित्वानुवासयेत् । हीनमात्रावुभौ
 वस्तीनातिकार्यकरौस्मृतौ १७ अतिमात्रौतथानाहङ्कमा
 तीसारकारकौ । उत्तमस्यपलैः षड्भिर्मध्यमस्यपलैस्त्रि
 भिः १८ पलाद्यद्देनहीनस्ययुक्तामात्रानुवासने । शता
 ह्लासैन्धवाभ्यांचदेयस्नेहेचचूर्णकम् १९ तन्मात्रोत्तमम

दोनों और द्धीलि साक करि थेली समान बनाय नलीपर चढ़ावै ॥ १२ ॥
 (व्रणादि पिचकारी का प्रणाम) मान फोड़ा नासूरादि की पिचकारी आठ
 अंगुल लम्बी मंग पैठने मुवाकिक डेद रहै शृध्र के पन्नसदृश मोटी अतिभिकनी
 पतली द्योटी नासूर व्रणयोग है ॥ १३ ॥ (वस्तिगुण) वस्ति अचेप्रकार हो
 ती शरीर पुष्ट थी कांति, बल, आरोग्य व आनुशुद्धि करै ॥ १४ ॥ (वस्ति
 सेचनकाल) वसन्तऋतुमें सन्ध्यासमय स्नेहवस्ति करे अनुवस्ति करना ग्रीष्म
 वर्षा शरद में रात को करना ॥ १५ ॥ रोगी को उष्ण चिकना भोजन रात को
 खिलाय अनुवासन करने से मद वा मूर्च्छा उत्पन्न होती है और खले भोजन से पला
 व कांति की हानि होय ये दोनों तरह वस्तिकर्म करे ये रोग होते हैं ॥ १६ ॥ १७ ॥
 (वस्तिकर्म में न्यूनाधिकमात्रादोष) अनुवासन वा निरुद्दण में
 हीन मात्रा देने से रोग नहीं जाता अति मात्रा देने से आनाह, रलानि, व अती-
 सार ये उपजते हैं वस्तिकी उत्तम मात्रा छः पलकी पली को अनुवासन देना
 मध्यम पलको तीन पलकी ॥ १८ ॥ पलहीन को हीन मात्रा डेडपल देना स्नेह में
 और द्रव्य मात्रा शतावरि संधव का चूर्ण छः माशे की उत्तम मात्रा चारि माशे
 की मध्यम दोमाशे की कनिष्ठ जानना (विरेचन पर वस्तिप्रकार) विरे-

ध्यान्ताः पट्चतुर्द्वयमाषकैः । विरेचनात्सप्तरात्रिगतेजात
 वलायच २० भुक्तात्रायानुवास्यायवस्तिदेयानुवासनः ।
 अथानुवास्यंस्वभक्तमुष्णाम्बुस्वेदितंशनैः २१ भोजयि
 त्वायथाशास्त्रकृतंचङ्गमणंततः । उत्सृष्टानिलविष्मूत्रयो
 जयेत्स्नेहवस्तिना २२ सुप्तस्यवामपाश्वेनवामजङ्घाप्र
 सारिणः । कुञ्चित्तापरजङ्घस्यनेत्रंस्निग्धगुदेन्यसेत् २३
 बद्धावस्तिमुखंसूत्रैर्वामहस्तेनधारयेत् । पीडयेदक्षिणेनैव
 मध्यवेगेनधीरधीः २४ जृम्भाकासक्षयादीश्चवस्तिकाले
 नकारयेत् । त्रिंशन्मात्रामितःकालःप्रोक्तोवस्तेस्तुपीड
 ने २५ ततःप्राणिहितःस्नेहउत्तानोवाक्छतंभवेत् । जा
 नुमण्डलमावेष्ट्यकुर्याच्छोठिकयायुतम् २६ एकामात्रा
 भवेदेपासर्वत्रैषविनिश्चयः । प्रसारितैःसर्वगात्रैर्यथावी
 र्यंप्रसर्पति २७ ताडयेत्तलयोरेनंत्रीन्वारांश्चशनैःशनैः ।

चन किये को सात दिन बिताय बल आने पर ॥ १६ ॥ २० ॥ भोजन कराथ
 अनुवासन वस्तिकरना (पिचकारी पीड़ित प्रकार) अनुवासन कर्म के प्रथम
 तेल लगाय गरम पानी से नहवाय ॥ २१ ॥ यथा लिखित भोजन कराथ कुद
 टहलाय पवन, मल व मूत्र की शक्का मिटाथ ॥ २२ ॥ चाँदे करवट पीडाय दहिना
 गोढ़ सिकोड़ बायां बगारि मलमार्ग में घी लगायै ॥ २३ ॥ तब पिचकारी थैली
 में गंधा लिखित स्नेह पात्रा भरि बैद्यवर गरिह कर फुल सूत्र से बाँधि बाँधे कर
 धारि धीरे धीरे मलमार्ग में दो अंगुल प्रवेश ॥ २४ ॥ तब दहिने हाथ से द्रव्यभरी
 थैली मन्द मन्द पीड़ित करे जिसमें भीतर पिचकारी देते हैं उस समय उसांसी
 छोक खांसी न आवै (रोगीको चस्तिप्रदसमय) पिचकारी दे तीस मात्रा
 साईं राके इतनी बेर में स्नेहादिका अन्दर प्रवेश होजायगा फिर सौ मात्रा तक
 सीधा गुलाबै (माध्याप्रमाण) जय मण्डल करे "कादि से गुदनी पर्यन्त" तिसके
 चारों ओर चुटका बजाता हाथ घूमआवै ॥ २५ ॥ २६ ॥ तौ एकमात्राहोय यह
 सब प्रन्थन में निश्चय है (चस्तिके पीछे कृत्य) चस्ति पीड़ित करि रोगी के
 पाँच हाथ व शरीर फैलाय लम्बा करदे इससे सातों धातु अपने अपने स्थानमें पैल

स्त्रिकजश्चैवंततःश्रीर्णां शय्यां धैवोत्क्षिपेत्ततः २८ जाते
 त्रिधानेतुततःकुर्वाच्चिद्रायशामुखम् । सांनिलःमुपरोष
 इचस्नेहःप्रत्येतिप्रयत्नः २९ उपद्रवविनाशोघ्नं ससम्यग
 नुवासितः ३० जीर्णांशमर्थसांयाह्ने । रनेहेप्रत्यागतेषु
 नः ३१ लक्ष्मणं भोजयेत्कामंदास्तागिस्तुतरोयदि ३२ ७ अनु
 धासिताय देयं स्थाद् द्वितीये ह्यिच्छुखोदकम् । धान्यजुखुठी
 क्रपायोवारत्नेह व्यापत्तिनाशनम् ३३ अनेन विधिनापह्ना
 सप्तवीष्टेन वा शिवा ३४ त्रिधेयान्स्तयस्तेषामन्ते चैव निखेह
 ग्राम ३५ दन्तस्तु प्रथमो वसितस्नेहयेद्वस्तिघृक्षणेऽस्ति
 त्र्यंशदत्तो द्वितीयस्तु मूर्द्धस्थमनिलं जयेत् । ३६ चतुर्थं च
 अनेनैवात्मीयस्तु प्रयोजितः ३७ चतुर्थं च त्रयोस्नेहयेत्ता
 र्णामृजी ३८ प्रष्टोभांस्नेहयति सप्तभोजेद्वत्तच ३९

मोनिवमश्चापिमज्जानेचयथाक्रमम् ३५ एवंशुक्रगतान्दी
 प्राग्निद्विगुणःसाधुसाधयेत् । अष्टादशाष्टादशकान्त्वस्तीनां
 योनिषेवते ३६ सकुञ्जरबलोप्यश्वजयेत्तुल्योमरप्रभः । रु
 द्धांश्वहुवाताग्रस्नेहवस्तिदिनेदिने ३७ दद्याद्द्वैद्यस्तधान्ये
 षामन्यांवाधामपाहरेत् । स्नेहोल्पमात्रोरुक्षाणादीर्घकाल
 मनात्ययः ३८ तथानिरुहःस्निग्धानामल्पमात्रःप्रशस्य
 ते । अथत्रायस्यत्कालस्नेहोनिर्घातिकेवलः ३९ तस्यान्यो
 न्यतरोदयोनिहिस्निग्धस्यतिष्ठति । अशुद्धस्यमलोन्मिश्रः
 स्नेहो नैतियदापुनः ४० तथाशीथिल्यसाध्मानंशूलंश्वास
 श्चजायते । पक्काशयैगुरुत्वंचतत्रदद्यान्निरुहणम् ४१ ती
 र्क्ष्णंतीक्ष्णौपधैर्युक्ताफलवर्तिहितायच । यथानुलोमनंवा
 युर्मलंस्नेहश्चजायते ४२ तथाविरेधनंदद्यात्तीक्ष्णनस्यच

होतै ॥ ३५ ॥ इस प्रकार से नव द्विगुनी अठारह बेग देने से शुक्रवातुका दोष
 नाश होजाता है ॥ ३६ ॥ और जिस छत्तीस बेगहो तिसे हाथी घोड़े सहश
 बलही थीर देवतासमान कातिहा (अल्पमत म) जो रुद्ध जातकरि अधिक
 पीडित हो उसे अनुवासन वस्ति जब जब प्रयोगन जानै तब तब देय ॥ ३७ ॥
 और चिकने या मोटे मनुष्यको जब जब उचित जानै तब तब निरुहणवस्ति
 देय ती रोग नाश होताहै भूत मनुष्य को स्नेहवस्ति हलकी हलकी नित्य
 मात देय ॥ ३८ ॥ और जो रोग विरकाल का होय ती निरुहण वस्ति
 हलकी हलकी नित्यमात देय (स्नेह शीघ्र निकलनेपर) जब स्नेहादि शीघ्र
 निकलपर तब निरुहणवस्ति करेइसी रीतिसे जितने बेग देय संपके अतमवृहण
 देता जाय (स्नेहद्याव न हनिपर उपद्रव्य) जो विरेधन वमनकरि शुद्ध किया
 वास्तकमे किया तिसमे स्नेहादिक फरनेसे ये उपद्रव्य होतेहै ॥ ३९ ॥ शिथिल
 गात्र, पेटहलना, शूल, श्वास, आभरी, कठोर इन उपद्रवके दूरकरने को तीक्ष्ण
 निरुहण देना ॥ ४१ ॥ तीक्ष्ण औषध युक्त फलवर्ती जिसमे वायु अधोमासी
 हुई मल युक्त स्नेहा गिराये तिते तीक्ष्ण रेचन तीक्ष्ण नास देने से शमन होते
 है ॥ ४२ ॥ जो स्नेहवस्ति रुद्धने से कोई उपद्रव न होय और स्नेहादि भीतर रुते

मानिकृतानि मुनिपुङ्गवैः १ निरुहस्योपरंतामप्रोक्तमास्था
 पतंनुधैः। स्वस्थानस्थाप्रोक्तोपधांततारंथाप्रंनंमत्तम् २ नि
 रुहस्यप्रमाणंतुप्रस्थंपादोत्तरंमत्तम् । मध्यमंप्रस्थमुद्विष्ट
 हीनंचकुडवास्त्रयः ३ अतिस्तिग्धोत्किष्टदोषोक्षतो रस्कः
 कृशस्तथा । अध्मान, वृद्धिदिहिक्कार्शकासंश्वासप्रप्रीडितः
 ४ गुदशोफालिसारातो वित्तुचीकुष्ठसंशुतः ५ गर्भिणीमधु
 मेहीचतास्थाप्यश्चजलोदरी ६ वार्तक्यावाहुदावैतपाता
 मृग्विषमज्वरे । सूच्छांतृष्णादरात्ताहिसूत्रकृच्छ्राप्ररीपाव
 ६ वृद्धोसृग्दरमन्दाग्निप्रमेहेपुनिरुहपाम् ७ शालेच्छि
 त्तहृद्योगेयोजयेद्विधिवद्वधः ७ उत्सृष्टानिलनिष्पन्नस्तिग्ध
 स्विज्ञमभोजितखनकध्वाह्नेष्टहमध्यम्यथायोग्यंनिरुहये
 के अनेक भेद हैं जहा पैसा केना चाडिये तदा मुनी इतने जतेसही तांम प्ररा है
 यथा तेशनवस्ति दोषप्रयुक्ति व दोषरामनवस्ति चह नाम प्रकार जानना ॥ १ ॥
 निरुहगका दूसरा नाम आस्थानवस्ति कहते हैं इत्त कारण से कि उत्पन्न हुये
 दोषसंयुक्त रसादिक धातु अक्षने स्थान में प्राप्त हैं उनको वातादिक दोषवा
 रोगों को दूरकरि शुद्ध धातुओं को स्थितकरती है ॥ ३ ॥ (निरुह नैऋत्य
 प्रमाण) निरुह सत्रामस्थती उत्तममाना है मध्यमकी मध्यम तीन कुट्टन की
 कनिष्ठमात्र कदाती है ॥ ३ ॥ (निरुहमें अयोःग्य) अतिस्तिग्ध कोदेवाला)
 ऊर्गत् दोषमाना, उरुजती, हृशी, अध्मानी, दृष्टिरेगी, हिक्की, अर्शा, मासाती,
 शौर ग्वासी प्रेमे मनुष्य ॥ ४ ॥ गुदाके निरुह पीडित, शोथी, अतीसारी, शीत,
 रक्त, कुंठी, गर्भिणी, मधुमेही और जलोदरी इन रोगियों को निरुह देना
 योग्य नहीं ॥ ५ ॥ (निरुहवस्ति योग्य) पात, उग्रजती, वातरक्त, विष,
 मज्जर, सूच्छा, तृष्णा, उदर, अनाह, मूत्रकृच्छ्र, पर्यती ॥ ६ ॥ पुराना रक्तमास
 मन्दाग्नि, प्रमेह, शूल, क्षमन विष और वृद्धरोग इन रोगों में युक्त को निरुह
 देना योग्य है ॥ ७ ॥ (निरुहवस्तिवियान) जिसे निरुह देनीक्षे जिसे
 मरु मूत्रकी रंजा निरंतरण कराय परत कुट्टने की शंका विद्याय कोटा शब्दमदि
 देह में वेसनगाय तप्तमल से अन्न पीडनी से भोजी सेकि दो पहर मयग से
 योग्य हागि जिस जता दे प देव तिस तमी धांपन्नमिद्रकारि से गेरे पुरांक

तटः स्नेहवस्तिविधानेनबुधः कुर्याद्विकृद्दणम् । जातेनि
 रूहे चततो भवेदुत्कटकासतः ११ तिष्ठन्मूहत्तमात्रं तु निरू
 हागसलेच्छया ॥ अनायातं मूहत्तां तु निरूहशोधने हेरत् १०
 निरूहेरेवमतिमांश्चारमूत्रांश्चलसन्धवैः । यस्यक्रमेण गच्छ
 न्ति विटपित्तकफवायवः । लाघवं चोपजायतसु निरूहत्तमा
 दिशत् ११ यस्यस्याद्वास्तिरेलपारपर्वगोहीनमलाशितः ।
 मूत्रांश्चिजाड्यारुचिमान्दु निरूहत्तमादिशत् १२ विविक्त
 तामनस्तुष्टिः स्तिरघताव्याधिसिग्रहः । आस्थामनस्नेहव
 ह्योरसम्यग्दाने तु जक्षणम् १३ अनेन विधिना युञ्ज्याद्वि
 रूहवस्तिदानवित् । द्वितीयात्तृतीयवाचतुर्थवाचथोचित
 म् १४ सस्नेह एकः पवने पित्ते द्वौ पत्रसासह । कपायकदुर्लभा
 द्याः कफकोष्णाखयोमताः १५ पित्तश्लेष्मानिलाविष्टक्षीर
 यधरसैः क्रमात्तानिरूहयोजयित्वा चेतस्तदनुवासयत् १६

अनुवासेन वास्तिविधानसे निरूहणवस्ति करे ॥ १० ॥ फिर औषध धार
 निकलने के कारण मूहत्त कहें "दोपेडी" कधी "चुडु" बगव इतने में आप
 गिरिजे अन्धा जो न गिरि तो शोधने कहें रत्न ॥ १० ॥ वा भी न गिरि तो
 जत्रात्तार, गोपने, खट्टे को रस व संध विनाय फिर निरूहण देतेत गिरि
 (धच्छी) निरूहलक्षण) निरूह अन्धी हो तो इनसे मज, तित्त, कफ व
 वायु गिर और शरीर हलका शोधन तो निरूह भला जानिये ॥ ११ ॥
 (अशुद्धवस्ति लक्षण) जिसके वस्तिद्वरे स विदोपम्य विकार और मल
 नहीं निकलगये उसके मूत्रमणि में पीडा शरीरजडा और क्लेशि होय ॥ १२ ॥
 (निरूहस्नेहवस्ति लक्षण) देह हलके, मन मन्त्र स्तु विचिना रोगिनाश ये
 पाच्छी वास्ति के लक्षण है ॥ १३ ॥ जो चतुर वस्तिरूप जाननेवालें वेय यो
 निरूहवास्ति करे नहीं तो वास्ति विद्ध होता है (निरूहवस्तिदानप्रमाण)
 निरूहवास्ति एक वा दो न दोन वा चार चार कता दोप उता दे ॥ १४ ॥
 यात्रोर्गे में स्नेहयुक्त निरूह एकवार देविते में शुद्धो धार कफ में कषायकदु
 र्वादिपुत्र तुषोष्णकारे तीनवार दे ॥ १५ ॥ विदोपम कताप द्वय मांसरसयुक्त

सुकुमारस्य वृद्धस्य बालस्य च मृदुर्हितः । वस्तिस्तौक्ष्णः
 प्रयुक्तस्तुतेषां हन्त्रा द्विलायुपीः १७ दद्याद्दुष्केशने पूर्वमध्य
 दोषहरंततः । पश्चात्संशमनीयं च दद्याद्वास्तिविचक्षणः १८
 एरण्डबीजमधुकंपिपलीसैन्धववचा । हवुषाफलकल्करचं
 वस्तिरुत्केशनस्मृतः १९ शताह्वामधुकं विल्वं कौटजं फली
 मेव चासकाञ्जिकुःसंगोमूत्रो वस्तिर्दोषहरः स्मृतः २० शोधनं
 नद्रव्यनिष्कार्यस्तत्कल्कैः स्नेहसैन्धवैः । युक्त्या खंजेन स
 थिता वस्तयः शोधनाः स्मृताः २१ प्रियङ्गुर्मधुकोमुस्तात
 थैव च रसाञ्जनम् । सक्षीरः शस्यते वस्तिर्दोषाणां शमने स्मृ
 तः २२ त्रिफलाकाथगोमूत्रक्षौद्रचारसमायुताः । ऊर्षकादि
 प्रतीवापैर्धस्तयोलेखनास्स्मृताः २३ बृंहणद्रव्यनिष्कार्यः

क्रमसे चारुमार देना तिस पीछे स्नेहवस्ति देना ॥ १६ ॥ सुकुमार वा वृद्ध
 वा बालक को हलकी निरुद्ध देना सुकुमारवृद्धिकी तीक्ष्णवस्ति से बल और
 आयु घटती है हड्डी वा आक्लादि कटु रस फुलथी व यवादि रुतर्ह ये द्रव्य आदि
 मध्यात क्रमसे देना प्रथम दोष उभारना माय से दोष उभारना व अन्त में दोष
 क्षीण करि शमनकारक देना ॥ १७ ॥ १८ ॥ (दोष उभारन द्रव्य) रेडी,
 धीज, महुआबाल, पीपरि, सैन्धव, वच और हाऊरे इनकी पिचकारी में दोष
 उभरता है ॥ १९ ॥ (दोषनाशक द्रव्य) शतावरी, मुलेठी, बेल और इन्द्र-
 यव, इनको काजी में पीसे गोमूत्र युक्त पिचकारी रोगहारक देना ॥ २० ॥
 (दोषशमन औषध) निशोध आदिक शोधन द्रव्यका कार्य करि तैल ना-
 सैन्धव डारि मथिके दोष शोधन निमित्त इसीका अथवा और द्रव्यको बल्क भी
 मथिके पिचकारी देना ॥ २१ ॥ -मकरासूल, महुआबाल, नामरमोथा और
 रसात ये सब समभाग द्रव्यमें पीसि दोषशमनार्थ देना ॥ २२ ॥ (दोषशमनवस्ति)
 त्रिफलादायमें गोमूत्र, गद्द व, जवाखार ये द्रव्य समान भागले ऊर्षकादिगाण
 द्रव्य मिश्रित करि लेखनवस्ति देना लेखन कहे " जो मूत्र दूषित तिन रोगिनको
 द्रावसाकरे " ॥ २३ ॥ (बृंहणवस्ति) मुसली, गुठुलू व केराचरीज इत्यादि
 बृंहण द्रव्य हैं सो धातुको घटाती है इनको काथ करि महुआ की छाल दाख व

कल्कैमधुरकैद्युतः ॥ २४ ॥ सपिमांसरसोपतावस्तयोवहणाम
 ताः ॥ २४ ॥ चदयैरावतीशिलुशालर्मलीधन्वनागराः ॥ क्षी
 रसिद्धाः त्र्ययुक्तानाम्नापिच्छिलसंज्ञिताः ॥ २५ ॥ अजोरधौ
 णरुधिरैर्युक्तादेयात्रिचक्षणेः ॥ मात्रापिच्छिलवस्तीनांपले
 द्वाद्दशभिर्मताः ॥ २६ ॥ द्रव्यादौसैन्धवस्याक्षमधुनाप्रसृति
 द्वयम् ॥ त्रिनिर्मथ्यततोदद्यात्स्नेहस्यप्रसृतित्रयम् ॥ २७ ॥
 एकोभूतततोस्तैहकल्कस्यप्रसृतिक्षिपत् ॥ संस्मृच्छिते
 कृपायतुचतुष्प्रसृतिसमित्तम् ॥ २८ ॥ क्षिप्रवादिमथ्यदद्या
 त्रिनिरूहकुशलोभिपक् ॥ वातिचतुष्पलक्षौद्रदद्यात्स्नेह
 स्यषट्पलम् ॥ २९ ॥ पित्तेचतुष्पलक्षौद्रस्नेहस्यचपलत्र
 यम् ॥ कफेषट्पलिकक्षौद्रस्नेहस्यैवचतुष्पलम् ॥ ३० ॥ एर
 षड्काथतुल्यांशमधुतैलपलाष्टकम् ॥ शतपुष्पापलाद्धैत
 सैन्धवाद्धनसंयुतम् ॥ ३१ ॥ मधुतैलकसंज्ञोयंत्रस्तिदेवीविलो

अंतरासिद्धः मधुरः द्रव्यं कांकरक और घृत तथा मांसरस ये सब पूर्वोक्त काय में
 दालि। घाह चदाने को पिचकारी देण ॥ २४ ॥ (पिच्छिलवस्ति) केशी
 खाल, श्लापित्री, लसोदकी, खाल, सेमर, अयासा, व सोह, ये सब समान भाग
 ले दूध में पीसि शहद ॥ २५ ॥ द्राग, मेवा, नहरिण, इनका रश्मि, मिथिवकरी
 चतुर, वैद्य दोष पिचलाने के लिषे पिच्छिलवस्ति को देते हैं इस को मात्रा को
 प्रमाण बारपल है (निरूहणवस्ति प्रमाणत्रिभिः) अत्र त्र रूप की एकही
 संज्ञा है अथवा कृपाय, शहद चारपल प्रदेन करि बहपल)वी दे ॥ २६ ॥ २७ ॥
 एकत्र करि इस में दोपल पूर्वोक्त कल्क द्रव्य मिलावे भाषवा, पूर्वोक्त कल्कद्रव्यका
 कायंहे (काहा) करि लीजिये ॥ २८ ॥ आठपल अमाण कुशल तैल इकट्ठी
 करि मथि निरूहवस्ति देण निरूहवस्ति को साधारण विधि जानो (विशेष
 विधान) वातेमें ४ पल मधु ५ पल स्नेह इकट्ठा करि पिचकारी देना ॥ २९ ॥
 पित्त में ४ पल मधु ३ पल स्नेह इकट्ठा करि पिचकारी देण कफ में बहपल मधु ४
 पल स्नेह एकत्र करि देना ॥ ३० ॥ (मधुतैलवस्ति) रण्डमुक्तकाय ५ पल
 शहद तैल आठपल बड़ी सोफ ये सब चार भागों काया पल ये सब एकत्रि

डितः । मेदोगुल्मकृमिंश्लोहमूलोदावर्तनाग्रनः ३२ ॥ वल
वर्णकरउचैवृष्योवृहेणदीपनः ॥ श्रोत्राज्यक्षीरतेलानां प्र
सृतिः प्रसृतिर्भवेत् ३३ ॥ द्रुपासैन्धवाक्षांशौ नस्तिः स्याद्दी
पन. परः ॥ एरण्डमूलमिष्काथोसधुतैलसैन्धवम् ३४ ॥ एष
युक्तरसोवस्तिः रात्रचापिर्षलीफल ॥ पञ्चमूलस्यनिष्का
थस्तैलमांगधिकामधु ३५ ॥ ससैन्धवः ससधुक्कः सिद्धवस्ति
रिति स्मृतः । स्ननिमुष्णोदकैः कुर्याद्दिवास्वप्नमजीर्ण
ताम् १ ॥ वर्जयेत्परं सर्वमाचरेत्स्नेहवस्तिवत् २६ ॥ इति
श्रीशार्ङ्गधरे उत्तरखण्डे निरूहणविधिः प्रष्टोऽध्यायः ६ ॥

अतः परं प्रवक्ष्यामि नस्ति मुक्तरसं जितम् । द्वादशमूलकं
नेत्रमध्ये चकृतकर्पिकम् १ ॥ मालतीपुष्पं चन्ताभञ्जिङ्गसर्प
प्रनिर्गमम् । पञ्चविंशतिवर्षाणामथो मात्राद्विकार्पिकी २
तदूर्ध्वपलमानं त्रस्नेहस्योक्ताविचक्षणैः ॥ अथोक्त्यापन
क्षणपर मधि ॥ ३१ ॥ यह मधुतेल वस्ति है इमे देने मे मँवरोग, गुल्म, रुमि,
प्लीह, मन वा उदावर्त ये रोग नाश होते हैं ॥ ३२ ॥ वल कोति, श्री, दच्छा, शानु
शुद्धि शग्नि दीप्तहोय (दीपनवस्ति) शहद, धी, धूय दे मिल ये की पल ॥ ३३ ॥
हाकरे व सैन्धव कर्कषु मूत्रमपीसि सत्रे मित्तार्थ पिच-रारी दिने से अग्नि क्ष
होय (युक्तरसवस्ति) रेडमूलकाय शहद तेलमें से ३३ ॥ ३४ ॥ वच, पीपरि,
मैनफल, चारों समभाग मूँकैरि मिलाय पिचरारी देय यह युक्तरसवस्ति सव
रोगों पर दीजानी है (सिद्धवस्ति पंचमूल जाय) तैल और मधुआमुलेदी
कायमें पीपरि व सैन्धव मिलाय देय यह सिद्धवस्ति सव रोगनपर भेते है (स्वस्ति
में सैन्धव निषेध पदार्थ) वस्तिसेवक उष्ण जन से भडाइ दिन में न स्तेने
अजीर्ण न होय और स्नेहवस्ति के समान संय आचरण मात्रा ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरेसुधाकोत्तरखण्डेऽध्यायः ॥ ६ ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥
॥ (अथोक्तरसवस्तिविधानं) उत्तरं वस्ति कहे "मूत्रमार्गं मे विचरारी देने
की विधि" तिस से भक्षण बोहे स्वर्गुज लेशरी तिसके मध्य में पडुरी ॥ ३१ ॥ सै-
मेली के पुष्प शोशे व चमेली पुष्पकी देवी समान मोटी रहे (आत्राप्रमाण)
मनुष्य के २५ वर्षताई स्नेहमात्रा दी वर्षकी देय ॥ २ ॥ पचीसके ऊपर पलगर

शुद्धस्य तृप्तस्य स्नानभोजनैः ३ स्थितस्य जानुमात्रे च पीठे त्विष्टशलाकया । स्निग्धयामेदुमार्गे च ततो नेत्रं नियोजयेत् ४ शनैश्शनैर्घृताभ्यक्तमेदुमध्ये झुलानिपटं । ततो विपीडयेद्दस्तिं शनैर्नेत्रं च निहरेत् ५ ततः प्रत्यागते स्नेहे स्नेहवस्तिक्रमोहितः । स्त्रीणां कनिष्ठिकास्थूलं नेत्रं कुर्याद्दशाङ्गुलम् ६ मुद्गप्रवेशं योज्यं च घोन्यं तश्चतुरङ्गुलम् । क्यङ्गुलं मूत्रमार्गे च सूक्ष्मनेत्रं नियोजयेत् ७ मूत्रकृच्छ्रविकारेषु बालानां त्वेकमङ्गुलम् । शनैर्निष्कम्पमाधेयं सूक्ष्मनेत्रं विचक्षणैः ८ योनिमार्गेषु नारीणां स्नेहमात्राद्विपालिकी । मूत्रमार्गे पलोन्माना बालानां च द्विकार्षिकी ९ उत्तानायै स्त्रियै दद्याद्दूर्ध्वजान्वै विचक्षणः । अप्रत्यागच्छति भिषग्वस्ता

देना (अथास्थापनवस्तिविधि) स्थापन क्रमे उत्तर सेवक को शुद्ध स्नान भोजन कराय ॥ ३ ॥ घुटने टेकाय बैठावै वा घुटनेको टेंकि सझारहे तब इष्ट शलाका चांटीका दो अंगुल भुटपरपुरा ५ अंगुलसीधा सरसोंतिकरिजाने माफिक छेद होता है उस में घी वा तेल लगाय मूत्रमार्ग में ॥ ४ ॥ धीरे धीरे हः तथा आठअंगुल प्रवेशकरे यत्रपूर्वक जिसमें पीड़ा न करे जर मूत्र यैलीतक पहुँचि ग्यटसद जै तो जानो इमके पथरीहै ॥ ५ ॥ इमी शलाका से बन्द मूत्रभी खुलजाता है शलाकादिद्र से बहिजाता है और जो विचकारी देनी हो तो शलाकाकी पेंदी पर बैली चदाय औपधभरि पूर्ववत् पीडिनकरै इससे मूत्रकृच्छ्रादि दूरहोते हैं यह उत्तरवस्ति क्रम है ॥ ६ ॥ (स्त्रीके उत्तरवस्तिविधान) स्त्री की योनि में दो दिद्र होते हैं एक मूत्रमार्ग दूसरा गर्भमार्ग योनि यही है उसकी शलाका अंगुनिवा की मुटार्द्धशलागुल की पूंग निकरने माफिक छेद राखि चारि अंगुल योनि में प्रवेश विचकारी दे और मूत्रमार्ग में सूक्ष्म शलाका दो अंगुल प्रवेश ॥ ७ ॥ बालक के अंगुल एक शलाका प्रवेश चतुर यैय क्षतिपहीन बालक के स्थापन से देय विचकारी पीडने में राय न करै ॥ ८ ॥ (पित्तियों की वस्ति फी मात्रा प्रमाण योनिमार्ग) विचकारी देने की मात्रा दो पल औपन लेना मूत्रमार्ग की मात्रा एकपल है बालक वस्तिफी दो कर्पहै ॥ ९ ॥ निपुणवैद्य स्त्रीको उत्ताना

वित्तरसंज्ञिते १० भयोवस्तिनिदध्याच्चसंयुक्तैः शोधनैर्गुणैः । फलवर्तिनिदध्याद्वायोनिमार्गेदृढंभिषक् ११ सूत्रे
 त्विनिर्मितांस्निग्धांशोधनद्रव्यसंयुताम् । दध्यमानेतथा
 भवस्तौदद्याद्द्वस्तिविचक्षणः १२ क्षीरवृक्षरूपायेणपयसा
 ऽशीतलेनच । वस्तिःशुक्ररजःपुंसां स्त्रीणामार्तवजारुजः
 १३ हन्यादुत्तरवस्तिस्तुनोचितोमेहिनांकवित् । सम्य
 ग्दत्तस्यलिङ्गानिव्यापदःक्रमएवच १४ वस्तेरुत्तरसंज्ञ
 स्यशमनंस्नेहवस्तिना । घृताभ्यक्तेगुदेक्षेप्याश्लक्षणेस्वा
 दुष्टसन्निभा । मलप्रवर्तिनीवर्तिःफलवर्तिश्चसास्मृता
 १५ ॥ इति श्रीदामोदरसूनुनाशार्ङ्गधरेणविरचितायांसं
 हितायांचिकित्सास्थानेउत्तरखण्डेउत्तरवस्तिविधानज्ञाम
 सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

नस्यतत्कथ्यतेधीरैर्नासाग्राह्यंयदौषधम् । नावनन

पौष्ट्याय पिचकारी पीडितकरै फिरे उकुडूविठाय दियाहुंआ स्नेह गिरात्रे ॥ १० ॥
 (शोधनद्रव्य मूत्रकृच्छ्रादि में शोधनद्रव्य) रेंडी तेलादि द्रव्यभरि
 पिचकारी देय अथवा फलवर्ति रेंडीजादि सूत या बखकी कडीवर्ती बनाय रंड
 तेलादि में तप्तारि भिजोय उसपर रेंडी पीसि चुपरि योनि में राखे ॥ ११ ॥
 जो वस्ति किये नाभितरे वस्तिस्थान अधिक उष्णहोय तौ बड़ व गुलर वी द्याल के
 काथ की पिचकारी देना व ठंडे दूध की इन से वस्ति शुद्ध होती है और शुक्रसंघी
 पीडा और स्त्रीके आर्तवसम्बन्धी रोगपीडा दूरहोय ॥ १२ ॥ प्रमेहीको उत्तरवस्ति
 कभी अयुक्तनहो (उत्तरवस्तिलक्षण) उत्तरवस्ति में स्नेहवस्ति हुई तत्र शुक्र
 सम्बन्धी प्रमेहादिक पीडा दूर होती है उससे ये लक्षणहैं ॥ १४ ॥ (मलमार्गे
 फलवर्तिविधान) मलमार्ग में दलगाय मल गिराने के कारण रचन द्रव्य
 रेंडीजादि कड़ी बत्तीपर लेपि गुदा में धरे इसे फलवर्ति कहते हैं ॥ १५ ॥

इति श्रीशार्ङ्गमुपाकरेउत्तरखण्डेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

(अथ नरपकर्म) नाक की राह आपन देनेको नास कहते हैं इसके दो नाय

स्यकर्मैति तस्यनासद्वयमंतम् १ नस्यभेदोद्विधाप्रोक्तो
 रेचनस्नेहनंतथा । रेचनकर्षणंप्रोक्तंस्नेहंतं वृंहणमतम् २
 कफपित्तानिलध्वसे पूर्वमध्यापराह्णके । दिनस्यग्रह्यते
 नस्यं रात्रावप्युत्कटेगदे ३ नस्यंत्यजेद्भोजनान्ते । दुर्दिने
 चापतर्पणे । तथानवप्रतिश्यायीगर्भिणीगरदूषितः ४
 अजीर्णीदत्तवस्तिश्चपीतस्नेहोदकासवः । कुक्षशोकी
 भिभूतश्च तृपार्तोद्वद्बालकौ ५ वेगावरोधीस्नातश्च
 स्नातुकामश्चवर्जयेत् ६ अष्टवर्षस्यबालस्य नस्यकर्म
 समाचरेत् । अशीतिवर्षादूर्ध्वंचनावननैवदीयते ७ अथ
 वारेचनंनस्यं ग्राह्यंतेलैःसुतीक्ष्णकैः । तीक्ष्णभेषजसिद्धै
 र्वास्नेहैःकाथैरसैस्तथा ८ नासिकारन्ध्रयोरष्टौ षट्चत्वारि

हैं नासन एक नस्य-दो ॥ १ ॥ नस्य रीति दो विधिकी है, एक रेचन दूसरी स्ने-
 हन और रेचनको कर्षण भी कहिये सो चांतादि लेखनको कर्षण करनेवाली
 है और स्नेहन नस्य धातुको दृढ करती है इससे बृंहण कहिये ॥ २ ॥ नस्य-
 कर्म समय) कफदूषितको प्रात नस्यदेना पित्तदूषितको मध्याह्न में देना वायु
 दूषितको संध्या के भीतरदेना और जो अतिपीडितहो तो रात्रिकोदेना ॥ ३ ॥
 (अथ नस्यनिषेधः) नस्यकर्म ऐसे को वर्जितहै भोजन करबुके पर तुरतही
 न दे दुर्दिन कहे आंधी वा पवन अति चलै वा मेवाच्चादितहो और लंगनी को
 पीनसके आरम्भ में गर्भिणीको निपदूषित को ॥ ४ ॥ अजीर्णपर वस्तिकृतको-
 स्नेहरीतको पानी वा मधुपीको तर्पणकृतको क्रोधशोकार्तो दृढ और बालकको ॥
 ५ ॥ मलमूत्र वायु अवरोधीको तुरत स्नान क्रियेपर स्नानाकांक्षीको ऐसे मनुष्यन
 को और-इन कर्मन क्रियेपर नस्यकर्म न करै ॥ ६ ॥ (नस्यकर्मणि योग्या-
 योग्य) आठवर्ष के उपरान्त अस्तीवर्षपर्यंत नासकर्म करना ॥ ७ ॥ (रेचन
 नासाग्निधि) रेचनकारक द्रव्यकी नास देनाचाहै तो सराई वा सरसोंका तेल
 तीक्ष्ण है, निसकी नासदेना वा तीक्ष्ण द्रव्य में सिद्ध किया तेल वा तीक्ष्णद्रव्य
 का काथ वा तीक्ष्णद्रव्यका स्वरसले तेल गृह सिद्धकरि नासदेना ॥ ८ ॥ (रे-
 चने नस्यप्रमाणम्) रेचनसंस्पर्धी शीषकी याठवृंद दोनों नधुनों में नास :

रश्चबिन्दवः । प्रत्येकरेचनेयोज्यंमुखमध्यान्त्यमात्रया ६
 नस्यकर्मणिदातव्यंशाणैकंतीक्ष्णमौषधम् । हिङ्गुस्याद्यव
 मात्रन्तु माषैकैश्चैन्धवंमतम् १० क्षीरंचैवाष्टशाणंस्या
 त्पानीयंचत्रिकापिकम् । कार्पिकंमधुरंद्रव्यं नस्यकर्मणि
 योजयेत् ११ अवपीडःप्रधमनंद्रौभेदावपरौस्मृतौ । शि
 रोविरेचनस्थानेतौतुदेयौयथायथम् १२ कल्कीकृतादौ
 षधाद्यः पीडितोनिस्सृतोरसः । सोवपीडःसमुद्दिष्टस्ती
 क्ष्णद्रव्यसमुद्भवः १३ षडङ्गुलाद्विवक्त्राया नाडीचूर्णततो
 भमेत् । तीक्ष्णंकोलमितंबक्तं यातैःप्रधमनंहितम् १४
 ऊर्ध्वजत्रुगतरोगे कफजेस्वरसंक्षये । अरोचकेप्रतिश्या
 ये शिरःशूलेचपीतसे १५ शोफापस्मारकुष्ठेषु नस्यंवेरे
 चनंहितम् । भीरुस्त्रीकृशवालानानस्यंस्नेहेनदीयते १६
 गलरोगेसन्निपाते निद्रायांविषमज्वरे । मनोविकारेकृमि
 पुयुज्यतेचावपीडनम् १७ अत्यन्तोत्कटदोषेषुघिसंज्ञेषुच

देय तौ उत्तममात्रा है द्यःदूदकी मायम पारिधूदकी कनिष्ठमात्रा कहाती है ॥६॥

(नस्येद्रव्यप्रमाणम्) नासदेनेको तेलादि सिद्धकरने में तीक्ष्ण औषध एक
 शाण देना हींग यवभरि सैधव मापभरि ॥ १० ॥ दूध आठ शाण पानी तीन कर्ष
 प्रमाण पीठीद्रव्य कर्षप्रमाण देना ॥ ११ ॥ (मस्तकरेचनविधि) मस्तकरेचन
 दो प्रकारवा है एक अवपीडन दूसरा प्रधमन ये मस्तकरेचन जानना ॥ १२ ॥
 (अवपीडन या प्रधमन विधान) तीक्ष्ण द्रव्य पीसिके स्वरसलेनेको अवपीडन
 कहते हैं ॥ १३ ॥ दूसरी छः अंगुल प्रमाण मली दो मुखकी बनाई एकपर तीक्ष्ण
 द्रव्यका चूर्णपरि नाकमें प्रवेशकरि दूसरेमुखमें मुंहलगाय फूँके उसे प्रधमनकहते हैं
 तीक्ष्णद्रव्य सोंठि,भिर्च व पीपरि इसे त्रिकुटा कहते हैं ॥ १४ ॥ (रेचन वा स्नेहन
 ना सयोग्य) ऊर्ध्वगत कहे शृकुटी, मस्तक, कपाल, दशमद्वार पर्यंत गतरोग कफ-
 जन्म, स्वरभंग, अरोचक, नाक दपकना, माथेकी पीडा, पीनस, सूजन, मृगी और कुष्ठ
 इनमें रेचन उचितहै स्त्री, दुर्बल व बालक इन्हें स्नेह उचित नहीं है ॥ १५ ॥ १६ ॥
 (अवपीडनयोग्य) कंठरोग, सन्निपात, निद्रा, विषमज्वर व मनोविकार इनमें

दीयते । चूर्णप्रधमनंधीरेस्तद्वितीक्ष्णतरयतः १८ न
 स्यंस्याद्गुडशुण्ठीभ्यांपिपल्यासैन्धवेनच । जलपिष्टे
 नतेनाक्षिकर्णनासाशिरोगदाः १९ हनुमन्यागलोद्भूतान
 श्यन्तिभुजपृष्ठजाः । मधुकसारकृष्णाभ्यांवचामरिचसैन्ध
 वैः २० नस्यंकोष्णेजलेपिष्टंद्वात्संज्ञाप्रबोधने । अप
 स्मारेतथोन्मादेसन्निपातेऽपतन्त्रके २१ सैन्धवंश्चेत्तमरिचं
 सर्षपाःकुष्ठमेवच । वस्तमूत्रेणपिष्टान्निस्यंतन्द्रानिवारण
 म् २२ रोहीतमत्स्यपित्तेनभाचितंसैन्धवंवचा । मरिचंपि
 प्पलीशुण्ठीकङ्कोलंलशुनंपुरम् । कट्फलंचेतितच्चूर्णदेयंप्र
 धमनंबुधैः २३ अथ बृंहणनस्यस्यकल्पनाकथ्यतेऽधुना ।
 मर्शश्चप्रतिमर्शश्चद्वौभेदोस्नेहनेमतौ २४ मर्शस्यतर्प
 णीमात्रामुख्यशाणैःस्मृताष्टभिः । मध्यमाचचतुःशाणै

अवपीडन नासयोग्यहै ॥१७॥ (प्रधमन योग्य) मूर्च्छा, अपस्मार व संन्या-
 सादि अचेतन रोगमें अत्यन्त तीक्ष्ण चूर्णादि करि नासदेना ॥२०॥ (अथ रेचन
 संज्ञकनस्य) गुड सौंठि औंठिकै व अद्रकरस गुडगोलि नासदे पीपरि व सेंधा
 औंठिके दे तिससे नेत्र, कान, नाक, माया ॥ १९ ॥ टोड़ी, कंध, गल, हाथ व पांय
 की पीड़ा अस्वीहोय (पुनःप्रकार) महुवे की छालका गाभा, पीपरि, वच,
 मिरच व सेंवानमक ॥ २० ॥ इन्हें पीसि तप्त जलसे नासदेय तौ मृगी, उन्माद
 सन्निपात व अपतन्त्र ये सब रोग मिटें शरीर हलका हो बुद्धि सावधानहो तो जान-
 ना ॥२१॥ (पुनस्तृतीय प्रकार) सेंधव, श्वेत मिरच, सरसों व कूट ये सब द्वाग
 मूत्रमें पीसि नास देने से तन्द्रा नेत्रालस्य दूरहोइ ॥ २२ ॥ (अथ प्रधमननस्य)
 सेंधव, वच, मिरच, पीपरि, सांठ, कंकोल, लहसुन, गुग्गुल व कायफर इनका
 चूर्ण रोहू मञ्जली के पित्तामें पुटदेइ एकनली के मुंहमेंधरि दूसरा मुख नाक में म-
 चेशि औंषध की ओर से फूंकदेय तो तंद्रादि अचेतनरोग नाशहोयँ इस चूर्ण का
 प्रधमन नाम है ॥ २३ ॥ (अथ बृंहणनस्यविधान) बृंहणकहे धातुको पुष्ट
 करै व बढ़ावै इस बृंहणनास की मात्रा-बृंहणता के दो भेद है एकमर्श दूसरा म-
 तिमर्श ये दोनों बृंहण हैं ॥ २४ ॥ इनके योग्य, मर्श, में, तर्पणी नस्यकी मात्रा

नशाम्यन्तिरोगाश्चैवोर्ध्वजत्रजाः ४१ वलीपलितनाश
 इचवलमिन्द्रियजंभवेत् । विभीतनिम्बकंभारोशिवाशोलु
 इचकामिनी ४२ एकैकं तैलनस्येनपलितं नश्यतिध्रुवम् ।
 अधनस्यविधिवक्ष्येनस्यग्रहणहेतवे । देशेवातरजोयुक्ते
 कृतदन्तनिर्घर्षणम् ४३ विशुद्धं धूमपानेन स्वन्नं भालंगलं
 तथा १ उत्तानशायिनं किञ्चित्प्रलम्बशिरसं नरम् ४४ आ
 स्तीर्णहस्तपादं च वस्त्राच्छादितलोचनम् । समुन्नमितना
 साग्रं वैद्यो नस्येन योजयेत् ४५ कोष्णमच्छिन्नधारं च हेमं
 तारादिशुक्तिभिः । शुक्यावापत्रशुक्यावाप्रोतैर्वा नस्य
 माचरेत् । नस्यप्रासिच्यमानेषु शिरो नैव प्रकम्पयेत् ४६
 नकुप्येन्नप्रभाषेत नोच्छिन्येन्नहसैत्तथा । एतर्हि विहितस्ने
 हो नैवान्तः सम्प्रपद्यते ४७ ततः कासप्रतिश्यायशिरोक्षि
 षदसम्भवः । शृङ्गाटकमभिष्ठाव्यस्थापयेन्नागिलेद्द्रवम्
 ४८ पञ्चमत्तदशैवस्युर्मात्रानस्यस्वधारणे । उपविश्याथ
 निष्ठीवेन्नासावक्तगतं द्रवम् ४९ वामदक्षिणपाश्वर्वाभ्यांनि

नास) बहेडा नीर, संभारी, हड, लसोड़ा व क्लृकतुण्डी ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ इनके
 बीजनका गेल भिन्न भिन्न वादि नास देय तो बाल कारे होयें (नस्यविधि)
 पचन व धूरि चर्मित स्यानमें मनुष्य दातूनकरि ॥ ४३ ॥ हुका पी गला मस्तक
 शुद्धकरि राममें उताना पौडे पीछे शिर भुक्त्याय नाक ऊंची रहै ॥ ४४ ॥ हाथ
 पात्र फैनाय काण्डे स आसैदाकि नाकका अग्रभाग नत्राय वैद्य नहीं घीरेसे एक
 एकओर नस्य देय ॥ ४५ ॥ (नस्य देने का पात्र) सोने, स्ये, तावे वा सीसे
 का होय वा सोपीपत्र द्रोण वा काण्डेकी पोटनीसे नामदेय नासलेनेत्राला मीया
 न केंपावे ॥ ४६ ॥ क्रोध न करै गेले नहीं मारणी, मच्छइव सटकीरादि काटने न
 पावे हते नहीं ऐसे सधमयिना नस्यद्रव्य प्रवेश नहीं होनी ॥ ४७ ॥ ग्यासी आजाती
 है तो खराबहो मस्तक में आगिन में कंठ पीड़ा उत्पन्न करीहै ॥ ४८ ॥ (नस्ये
 साधारणप्रकार) नास देनेसे शृङ्गाटक में औषध प्रवेशनार्थ पाच वा सात या
 दशमात्रा ताई नास शरणकरे जत्र मुँहमें उतर आवै तब परेपरे ॥ ४९ ॥ दाहिने

ष्ठीवेत्संमुखेनहि । नस्येनीतेमनस्तापं रजःक्रोधंचसन्त्य
 जेत ५० शयीतनिद्रांत्यक्त्वाचउत्तानोवाक्कृतंनरः ।
 तथावैरेचनस्यान्तेधूमोवाक्वलोहितः ५१ नस्येत्रीण्युप
 दिष्टानि लक्षणानिसमासतः । शुद्धहीनातियोगानिवि
 शेषाच्छास्त्रचिन्तकैः ५२ लाघवंमनसःशुद्धिं स्रोतसां
 व्याधिसंज्ञयः । चित्तेन्द्रियप्रसादश्चशिरसःशुद्धिलक्षण
 म् ५३ कण्डूपदेहौगुरुतास्रोतसांकफसंज्ञवः । मूर्ध्निहीन
 विशुद्धेतुलक्षणंपेरिकीर्तितम् ५४ मस्तलुङ्गागमोवात
 वृद्धिरिन्द्रियविभ्रमः । शून्यताशिरसश्चापिमूर्ध्निगाढेवि
 रेचयेत् ५५ हीनातिशुद्धेशिरसिकफवातघ्नमाचरेत् । स
 म्यग्विशुद्धेशिरसिसर्पिनस्येनिषेचयेत् ५६ कफप्रसक्तः
 शिरसोगुरुतेन्द्रियविभ्रमः । लक्षणंतदातिस्निग्धंरुक्षंतत्र
 प्रदापयेत् ५७ भोजयेच्चानभिष्यन्दिनस्याचारिकमादि

धर्मं धूकदे सम्मुख उठके धूकने से औपय गिरजाती है शृगाटक उने कहते हैं
 जो नाकके दोनों छेद मोहतक पहुँच दो गलेकी चलेगये हैं ॥ ५० ॥ एक
 दीहिनी एकवाई धूकुडी के नीचेही कपाल को चलेगये हैं (नस्य वाजजत)
 नास लेकर संताप न करे घृति, क्रोध, वैठना व निद्रा सौमाया ताई इनसे वयै
 उताना पराहै धुवां न पीने धूक न लीलै ॥ ५१ ॥ (नस्यशुद्ध आदिभेद)
 नास विषे तीन लक्षण शास्त्र कहतेहैं शुद्ध, हीन व अतिपोग सो में संज्ञेप से
 कहताहै ॥ ५२ ॥ उत्तम शुद्धयोग भये से देह हलकी, मनशुद्ध, मुस, नाकरं
 शुद्ध शिर रोगरहित चित्त इंद्रिय मसन्न ये शुद्धयोग के लक्षणहैं ॥ ५३ ॥ (ही-
 नयोग) लघुयोग भये देह खजली, शुद्ध, मुस व नाकसे कफ गिरे ये हीनयोग
 के लक्षण हैं ॥ ५४ ॥ (अतिपोग लक्षण) मस्तक की मज्जा नाकसे
 गिरे वापु वृद्धि, इंद्रिय संभ्रम व माया खाली ॥ ५५ ॥ (हीनशुद्धयोगयत्न)
 कफचायुहारक द्रव्यकी भलीभाँति नास दे फिर धी की नासदेय ॥ ५६ ॥
 (अतिस्निग्ध लक्षण) जो नस्यकर्म से स्निग्धता अधिक हो तौ कफ आविरु
 गिरे माया भारी इंद्रिय भ्रम ऐसे मनुष्य को रुक्त नामदेना ॥ ५७ ॥ (नामसे

शेत् । वतनं रेचनं नस्यं निरूहमनुवासनम् । एतानि पञ्च
कर्माणि कथितानि मुनीश्वरैः ५८ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरे उत्तरखण्डे नस्यविधिरष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

धूमस्तुषड्विधः प्रोक्तः शमनो वृंहणस्तथा । रेचनः का
सहाचैत्रवामनो ब्रणधूपनः १ शमनस्य तु पर्यायौ मध्यः
प्रायोगिकस्तथा । वृंहणस्यापि पर्यायो स्नेहनो मृदुरेव च २
रेचनस्यापि पर्यायो शोधनस्तीक्ष्ण एव च । अधमार्हाश्च
खल्वेते श्रान्तो भीरुश्चतुःखितः ३ दत्तवस्तिर्विरिक्तश्च रा
त्रौ जागरितस्तथा । पिपासितश्च दाहार्तस्तालुशोषी तथो
दरी ४ शिरोभितापीतिमिरीच्छर्माध्मानप्रपीडितः । क्षतो
रस्कः प्रमेहार्तपाण्डुरोगी च गर्भिणी ५ रूक्षः क्षीणो भ्यवह
तक्षीरक्षौद्रघृतासिवः । भुक्तान्नदधिमत्स्यश्च वालो वृद्धः कृ
शस्तथा ६ अकाले चातिपीतश्च धूमः कुर्यादुपद्रवान् ।

पद्य) आभिव्यञ्जकहे "दृढ्यादि भक्षण" त्यागे सुष्ठु पूर्वोक्त आचार करे
(पञ्चकर्म संस्था) शमन, विरेक, नस्य, निरूहवस्ति और अनुवासनवस्ति ये
पञ्चकर्म मुनीश्वरों ने कहे हैं ॥ ५८ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरमुवाको उत्तरखण्डे अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

(अथ धूमपानविधानम्) धूमपान छः प्रकारके हैं शमन, वृंहण, विरे-
चन, कासहा, शमन और ब्रणधूपन ये छः प्रकार जानना ॥ १ ॥ (शमनादि
धूमोंके पर्याय) शमन धूमपान की पर्याय संज्ञा मध्य और प्रायोगिक वृंहण
पर्याय स्नेह और मृदु ॥ २ ॥ रेचन पर्याय शोधन और तीक्ष्ण धूम में अयोग्य
थोकेत भयभीत दुःख पीडित ॥ ३ ॥ धूमसेवन अयोग्य प्राणी वस्तिक्रिया दस्त
आते को रातिजगमे को प्यासेको दाहसे पीडित को तालु उदर सूखनेवालेको ॥
४ ॥ शिररोगी को तिमिररोगी को उचाकी रोगीको आध्मानरोगी को पेट फूलने
को उरःक्षतीको प्रमेही पाण्डुरोगीको गर्भिणी को ॥ ५ ॥ रूक्षको क्षीणको दूध,
शहद, घृत स्वरस, मद्य, दही या मछली इनके भोजन किये को बालक वृद्ध दुर्बल
इनको धूमपान योग्य नहीं ॥ ६ ॥ और अधमग्य धूमपान करने से उपद्रव उत्पन्न

तत्रैष्टसर्पिषःपानंनावनाञ्जनतर्पणम् ७ सर्पिरिक्षुरसंद्रा
 क्षापयोवाशर्कराम्बुवा । मधुराम्लौरसौवापिशमनायप्रदा
 पयेत् ८ धूमश्चद्वादशाङ्गुलैर्द्व्यह्यतेऽशीतिकान्नरः । का
 सश्वासप्रतिश्यायान्मन्याहनुशिरोरुजः ९ वातश्लेष्म
 विकारांश्च हन्याद्दूमःसुयोजितः १० धूमोपयोगात्पुरुषः
 प्रसन्नेन्द्रियवाङ्मनाः १० दृढकेशद्विजश्मश्रुसुगन्धवद्
 नोभवेत् । धूमनाडीभवेत्तत्रत्रिखण्डाचत्रिपर्विका ११ कनि
 ष्टिकापरीणाहाराजमाषागमान्तरा । धूमनाडीभवेद्दीर्घा
 शमनेरोगिणोऽङ्गुलैः १२ चत्वारिंशन्मितैरतद्द्वद्वात्रिंश
 द्भिर्मृदौस्मृता । तीक्ष्णोचत्तर्विंशतिभिःकासघ्नेषोडशोन्मि
 तैः १३ दशाङ्गुलैर्वामनीयेतथास्याद्ब्रणनाडिका।कला
 यमण्डलंस्थूलाकुलिस्थागमरन्ध्रिका १४ अथेषि क्षांप्रलि

हेतु हैं (अकाले धूमपानादि कृत उपद्रव की चिकित्सा) धूमपानभे
 भये उपद्रव में धी पिलावै नास, देय श्रंजन करै अर्थात् शरीर वृत्ति करने का
 दासका रूप दे ॥ ७ ॥ घृत, ऊवरस, दास, दूध, भित्री व शर्करा योति
 विलावै वा इनका रस शब्द युक्त पिलावै व और मधुर वस्तु वा सटीमिष्टा पदार्थ
 दे तो धूमउपद्रव शांतहो ॥ ८ ॥ (धूमपानायस्था समय) धूमसेवन पारद्
 र्थ से अस्मी वर्ष पर्यन्तके मनुष्य को न रावै जो धूमपान अच्छा बने ता शत्राय,
 कास, नाक पहना, गले व माथे की पीडा ॥ ९ ॥ अत रुफजन्म विचार सप्त
 दूर हों (धूमपानविषे उपयोगी की प्रकृति) श्रच्छे, धूमपान भये चक्षु-
 रादि इन्द्रिय व अन्तःकरण तथा बाणी ये मसन्न होती हैं ॥ १० ॥ और
 केश, दन्त व छोटी हड्दो धूमनाडी तीन खण्ड तीन पर्व की ॥ ११ ॥ द्रु-
 निया सी मोटी मटरसाब्देदहो दीर्घो ॥ १२ ॥ शमादूधपान की नली४०श्रगु
 ल लम्बी ले मृदुसंज्ञककी ३२ श्रगुल लम्बी तीक्ष्णसंज्ञककी २४ श्रगुल लम्बी
 कासत्र की १६ श्रगुल लम्बी ॥ १३ ॥ वामनीसंज्ञक की १० श्रगुल लम्बी
 और त्रण कहे याव में-धूनी देने की १० श्रगुल की लम्बी पन्तु त्रणही
 नली पूर्वोक्त नलियों से मदीन हो और क्षेत्र कुनधी प्रवेश करने स्वच्छिन्नरहै

म्पेच्चसुश्लक्षणाद्वादशाङ्गुलम् । धूमद्रव्यस्यकल्केनलेपः
 श्याष्टाङ्गुलःस्मृतः १५ कल्कं कर्षमितं लिप्त्वा ज्ञायाशुष्कं
 नकारयेत् । ईषिकामपनीयाथस्नेहाक्तां वर्तिमादरात् १६
 अङ्गारैर्दीपितां कृत्वा घृत्वानेत्रस्य रन्धके । वदनेनपिवेद्धूमं
 वदनेनैवसन्त्यजेत् १७ नासिकाभ्यां ततः पीत्वामुखेनैव
 मेत्सुधीः । सरावसम्पुटेक्षिप्त्वा कल्कमङ्गारदीपितम् १८ छि
 द्रेनेत्रं विवेश्याथ व्रणं तेनैव धूपयेत् । एलादिकल्कं शमने
 स्निग्धं सर्जरसंमृदौ १९ रेचनेतीक्ष्णकल्कं च कासघ्नेक्षु
 द्विकोषणम् । वामनेस्नायुचर्माद्यं दद्याद्धूमस्य पानं कम् २०
 व्रणेनिम्बवचाद्यं च धूपनं संप्रशस्यते । अन्येषु धूमगेहेषु क
 र्तव्यारोगशान्तये २१ मयूरपिच्छं निम्बस्य पत्राणि बृहती
 फलम् । मरिचं हिङ्गुमांसी च व्रीजं कार्पाससम्भवम् २२

तौ व्रण धूमित शैवेगा ॥ १४ ॥ (धूमपानस्यैकविधानम्) द्वादश अंगुल
 की सीक दिलके समेत धूमद्रव्य कल्क चढाय छौह में सुराय सीक निकारि
 बकला कल्क लिप्त रहिजाय ॥ १५ ॥ १६ ॥ उसके छेदमें धूमवोरी महीन बेत्ती
 मवेश जलाय देय दूसरा छोर मुँह में ले धुवा खंचे और मुँहसे धुवा छौहै ॥
 १७ ॥ और बुद्धिमान् नाकसे पी मुँह से छौहै (धूनी विधान) दो सकोरे
 एक संपुट कर ऊपर छेदरहै उस छेद से संपुट में अग्नि धरि कल्क सुलगावै
 तय दुमुही नलीले एक संपुटके छिद्रमें दूसरे मुँहसे व्रणपर धुवा देय (कल्कधूम
 द्रव्याणि) शमन धूमपान में एलादि गणका कल्क देय मृदु में घृतादि स्नेह
 राल मिलाय कल्ककरि देय ॥ १८ ॥ १९ ॥ तीक्ष्णमें सरसों च मधु आदिकोंको
 कल्ककरि देय वास में मरिच भटकटैयादि कल्ककरि देय यमन हेतु चर्मादिका
 धुवादेना ॥ २० ॥ व्रण में नीम वचादि कल्ककरि देय (चाग्भटोक्ते एला-
 दिगण) उभय इलायची, शिलारस, मूड, कसेरु मूल, मकरा, जटामांसी,
 रस, रोदिपट्टण वा अगिया सर, कपूर, वचरो, विरमानी, अजवायन, तज,
 तमालपत्र, तगर, मोथा, चमेली, केसर, सीरी, गदनम, टेणदारु, अगर, केसर
 किमाचमूल, गूगल, रान, कपूर, चम्पापुत्र ये एलादिगण हैं ॥ २१ ॥

आगरोमाहिनिर्मोकंधिप्रावैडालकीतथा । गजदन्तश्चत
 चूर्णकिञ्चिद्घृतविमिश्रितम् २३ गेहेषुधूपनंदत्तंसर्वान्वा
 लग्रहञ्जयेत् । पिशाचानाक्षसाञ्जित्वासर्वज्वरहरंभवे
 त् २४ परिहारस्तुधूमेषुकायेरिचननस्यवत् । नेत्राणि
 धातुजान्याहुर्नलवंशादिजान्यपि २५ ॥ इति श्रीशार्ङ्ग
 धरेउत्तरखण्डेधूमपानविधिर्नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

चतुर्विधःस्याद्गण्डूषःस्नेहिकःशमनस्तथा॥ शोधनोरोप
 णश्चैवकवलश्चापितद्विधः १ स्निग्धोष्णैःस्नेहिकोवाते
 स्वाहुशीतैःप्रसादनः । पित्तकट्टुम्ललवणैरुच्चैःसंशोधनः
 कफे २ कषायतिक्तमधुरैःकटुष्णारोपणेत्रये । चतुःप्रका
 रोगण्डूषःकवलश्चापिकीर्तितः ३ असञ्चारीमुखिपूर्णेगण्डू
 षाकवलश्चरः। तत्रद्रव्येणगण्डूषःकल्केनकवलःस्मृतः ४

('घोलग्रह निवारण धूप') मोरंग, निम्बेयत्र, भटकटैया, मरिच, हींग
 जयमांसी, विनयर ॥ २२ ॥ केचुरी, विलारसीड और शर्षी दंत इन ग्यारहों
 के चूर्ण में घृत मिलाय ॥ २३ ॥ घर धूपित करने से सब बालग्रह निशच
 व राक्षसों के उपद्रव और इन सम्बन्धी सर्व ज्वर नाशहोय ॥ २४ ॥ (धूम
 पान में परिहार) रेचन नस्य सरश करना धुमां पीनेकी नली धातुमय
 वा बांसकी में पिये ॥ २५ ॥ इति श्रीशार्ङ्गरेउत्तरखण्डेनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

('गण्डूष कवल य प्रतिसारणकी विधि') गण्डूष ४ प्रकार के हैं स्नेहिक
 शमन, शोधन व रोपण योंही ४ प्रकार के कवल भी हैं ॥ १ ॥ (स्नेहिक गं-
 दूष भेद) चिकना उष्ण पदार्थ स्नेहिकहै वायु प्रबलता में दीजे ठंडा पदार्थ
 शमन में पित्त विकार में कटुवा सटा उपण शोधन में कफ विकार में ॥ २ ॥
 कषाय कटु मधुर तसुकरि रोपण में देना द्रव्यादि में ऐसेही कवल में जानना ॥
 ३ ॥ (गण्डूष कवलरिति) जो भीला कादादि भुंझमें भरी सूव गुलगुलायै

१ द्रवपदार्थों से भुंझे करनेका प्रकार ॥

२ पदार्थों को गुल में घट कराने का प्रकार ॥

दद्याद्द्रवेषुचूर्णैश्चगण्डूषेकोलमात्रकम् । कर्षप्रमाणःक
 लकरचदीयतेकवल्लोवुधेः ५ धार्यन्तेपञ्चमाद्वर्षाद्गण्डूषकव
 लादयः । गण्डूषात्सुस्थित-कुर्यात्स्विन्नभालगलादिकः६
 मनुष्यस्त्रीस्तथापञ्चसप्तवादोषनाशनात् । कफपूर्णास्य
 तांयावच्छेदोदोषस्यवाभवेत् ७ नेत्रघ्राणस्रुतिर्यावत्तावद्ग
 ण्डूषधारणम् । तिलकल्कोदकक्षीरंस्नेहोवास्नौहिकेहितः
 ८ तिलानीलोत्पलंसर्पिःशर्कराक्षीरमेवच । सक्षौद्रोहनुव
 क्तस्योगण्डूषोदाहनाशनः ९ वैशद्यंजनयत्यास्येसन्दधा
 तिमुखत्रणान् । दाहतृष्णाप्रशमनंमधुगण्डूषधारणम् १०
 विषक्षारोगिनदग्नेचसर्पिर्धार्थपयोथवा।तैलसैन्धवगण्डूषो
 दन्तचालेप्रशस्यते ११ शोषंमुखस्यवैरस्यंगण्डूष-काञ्जि
 कोजयेत् । सिन्धुत्रिस्टराजीमिरार्द्रकेणकफेहितः १२ त्रिफ

उसे गंडूप कहें जो कलककरि मुँहमें धरि फेराकरै सो करल है ॥ ४ ॥ (उभयो-
 द्रव्यप्रमाणम्) गंडूप के ढाधमें द्रव्य प्रमाण कोल कवल में कर्ष वर्ष देना ॥
 ५ ॥ (गंडूप व कवलयोग्य अवस्था) पाचवर्ष के ऊपर तावधान-करि
 रोगनिवारणार्थ कपाल, गला व मुख कुद्ध सैक तीन वा पाच वा सात दोषनाशक
 गंडूप (कुद्धे) करै (पुनःप्रमाण) जा मुखमें कफ भरयावै वा तीनों दोष
 शान्तितक ॥ ६ । ७ ॥ वा नेत्र नाकसे जल टपकनेतक गंडूपकरै यातरोग स्नेह
 गंडूप तिलकल्क पानी दूध वा तिलादि स्निग्ध ये देना ॥ ८ ॥ (पित्त शमन-
 गंडूपम्) तिल, नीलकमल, घृत, ताड़, दूध व शहद युक्त कुल्ले करने से पित्त
 जदाह ठोढ़ी और मुखसे द्रहोय ॥ ९ ॥ (जणादि पर गंडूप) शहदके कुल्ले
 करनेसे मुख निर्मल, गुणमें घाव, दाह व प्यास ये उपद्रव दूरहो मुख शुद्धहो ॥ १० ॥
 (विषादिपर गंडूप) घृत वा दूध के कुल्ले करने से विष विकार चूने से फटा
 अग्निसे जरामुख अच्छाहो टात हलनेपर तिल तैल सैन्धव युक्त कुल्ले करने से
 टात हलना दूर होताहै ॥ ११ ॥ (मुखशोषपर) मुख सूखना व पीका
 रहना काजीके कुल्लेसे शांति होय (कफदोषपर) अदरस के रसमें सैन्धव,
 त्रिकुटा व राई पीसि मिलाय कुल्ले करने से कफ दोष मिटजाता है ॥ १२ ॥

लामधुगण्डूषः कफासृक्पित्तनाशनेः । दार्वीगुडूचीत्रिफला
 द्राक्षाजात्यश्चपल्लवाः १३ यवासश्चेतितत्काथः षष्टांगः
 क्षौद्रसंयुतः । शीतोमुखेघृतोहन्यान्मुखपाकं त्रिदोषजित्
 १४ यस्यौषधस्य गण्डूषस्तस्यैव प्रतिसारणम् । कवलश्चा
 पित्तस्यैव देयोऽत्र कुशलेर्नरैः । केसरं मातुलुङ्गस्य सैन्धव
 व्योषसंयुतम् १५ हन्यात्कवलतो जाड्यमरुचिकफघात
 जाम् । कल्कोवलेहश्चूर्णं च त्रिविधं प्रतिसारणम् १६ अङ्गु
 ल्यग्रगृहीतं च यथास्वं मुखरोगिणाम् । कुष्ठं दार्वीसमङ्गाच्च
 पाठातिकाचपीतिका १७ तेजनीमुस्तलोध्रं चूर्णी स्यात्
 प्रतिसारणम् । रक्तस्रातिदन्तपीडां शोथं दाहं च नाशयेत्
 १८ हीनयोगात्कफोत्क्लेशोरसाज्ञानारुची तथा । अतियो
 गान्मुखेपाकः शोषस्तृष्णा क्लमो भवेत् १९ व्याधेरवचय

(कफ रक्तपित्तपर) त्रिफला चूर्णं शब्द में डारि कुला करनेसे कफ, रक्त
 पित्त दोष मुखमें न रहै (मुखरोगपर) दारुहल्दी, गुर्च, त्रिफला, दास,
 चमेली ॥ १३ ॥ और जवासाये समान भागलेकाथकरि छठवा भाग शब्ददे ठंढे
 कुड्ढे करनेसे त्रिदोष मुखपाक मिटताहै ॥ १४ ॥ गंडूष करनेवाली द्रव्य प्रति-
 सारण (मंजन) और कवल भी कुरली जनों को जानना चाहिये (कवल
 विधान) केसर, विजौरा गूदी, सैन्धव व त्रिगुडा ॥ १५ ॥ इन सबका कौर
 वनाय मुग्न में त्रिलोत्रै तौ मुख की कठोरता और कफ व घात की अरुचि दूर
 हो (प्रतिसारण प्रकार) प्रतिसारण में तीन प्रकार औषध देनेकेहैं कर्कक,
 अबलेह व चूर्ण ॥ १६ ॥ जैसा मुख में दोष देखै तैसी औषध अंगुली के अग्र-
 भाग से मुखके भीतर मलै (प्रतिसारण चूर्ण) कूट, दारुहल्दी, धनुष्य,
 पादा, कुटकी, इट्डी ॥ १७ ॥ तेजसल, नागरपोषा व लोध इनका चूर्ण जीभ
 और दात की जड में वा सार मलै गिरावै इस प्रतिसारण से दातपीडा, रक्त
 गिरना, मसूदा मंजन और दाह ये रोग दूरहोयें ॥ १८ ॥ (गण्डूषादि हीन
 घृक्षभये से उपद्रव्य के लक्षणः) हीन भये कफ अधिक, स्याद अज्ञानता
 होती है अन्न से अरुचि, अतियोग से मुख पकना, पिडिकी होना, मुखशोष

स्तुष्टिर्वशयं वक्तलाघवम् । इन्द्रियाणां प्रसादश्च गण्डूपैः
शुद्धिलक्षणम् २० ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरे उत्तरखण्डे गण्डूषा
दिविधिर्दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

आलेपकस्य नामानिलितोलेपश्च लेपनम् । दोषघ्नो
विषहावर्ष्यो मुखलेपस्त्रिधा मत्तः १ त्रिप्रमाणश्चतुर्भाग
स्त्रिभागार्द्धाष्टगुलान्नतः । आर्द्रो व्याधिहरः सस्याच्छुष्को
दूषयति च्छविम् २ पुनर्नवांदा रुशुण्ठीसिद्धार्थं शिशुमेव
च । पिष्टां चैवारनालेन प्रलेपः सर्वशोथहा ३ विभीतफल
भज्जाकलेपो दाहार्तिनाशनः । शिरीषं मधुयष्टी च तगरं र
क्तचन्दनम् ४ एलाभासी निशायुगमंकुष्ठं त्रालकमेव च । इ
तिसंचूर्ण्य लेपो यंपञ्चमांशघृतप्लुतः ५ जलेन क्रियते सुज्ञै
र्दशाङ्ग इति संज्ञितः । विसर्पान्विषविस्फोटाञ्छोथान्दुष्टत्र

प्यास व श्लानि ये उपद्रव हेते हे ॥ १२ ॥ (सम्पक् गण्डूप लक्षण) मूत
व्याधिनाश, वित्त प्रसन्न, मुग निर्मल, हलका व इन्द्रियों की प्रसन्नता ये लक्षण
होते हे ॥ २० ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरे उत्तरखण्डे दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

(अथ लेपविधानम्) लेपके तीन नाम हैं, लिप्त, लेप व लेपन लेपदोषघ्न
व विषघ्न होकर उर्णमद है ॥ १ ॥ मुखलेप तीन प्रकारका है उसका प्रमाण तीन
भाति है जो अंगुलभर मोटा लेप हो सो दोषघ्न है, पौन अंगुल मोटा लेप च-
दावे सो विषघ्न है, अर्द्धांगुललेप वर्ष्य है ऐसे तीन प्रमाण हैं ओदालेप रोग-
हर्ता है सूखा कातिहर्ता है ॥ २ ॥ (दोषघ्न लेप) गदापुरैना, देवदार,
सोड, सफेद सरसों और सहिजेने की छाल ये पाचों समान भागले कांजी में
पीसि सूजन पर लेपन करे नयों सूजन दूरहोगे ॥ ३ ॥ घरेडे की मीमीके लेपसे
दाह व पीडा नाशहो (दशांगलेप) सिरस की छाल, सुलेठी, तगर, लालचं-
न्दन ॥ ४ ॥ इलायची, जटाभासी, हल्दी, दाहहल्दी, कूट और नेत्रजाला ये दशों
समभाग चूर्णकरि पंचमाश घृत मिलाय ॥ ५ ॥ पानीमें पीसि लेपकरनेसे विसर्प,
विषदोष, विस्फोटक, सूजन व दुष्ट फोड़ा ये सब पराजयहो इसका दशांगलेप

पाञ्जयेत् ६ अजादुग्धतिलैलेपोनवनीतेनसंयुतः । शो
थमरुष्करंहन्तिलेपोवाकृष्णमृत्तिकैः ७ लाङ्गल्यतिवि
षालावृजालिनीमूलबीजैः । लेपोधान्याम्बुसम्पिष्टःकीट
विस्फोटनाशनःरक्तचन्दनमञ्जिष्ठातोष्णकुष्ठप्रियङ्गवः ।
वटाङ्कुरमिसूराश्चव्यङ्गनासुखकान्तिदाः ९ मातुलुङ्गज
टासर्पिःशिलागोशकृतोरसः । मुखवाग्नतिकरोलेपःपिटिका
व्यङ्गकीलजित् १० । लोघ्रधान्यवत्रालेपस्तारुण्यपिटि
कापहः । तद्द्रोरोचनायुक्तम्मरिचंमुखलेपनात् ११ सि
द्धार्थकवचोलोघ्रसैन्धवैश्चप्रलेपनम् । व्यङ्गेषुचार्जुनत्व
ग्वामञ्जिष्ठावासमाक्षिका १२ लेपःसनवनीतोवाश्वेताश्व
खुरजामषी । अर्कलीरहरिद्राभ्यामर्दयित्वाविलेपनात् १३

नामहै ॥ ६ ॥ (विपन्नलेप) बकरीके दूधमें तिलोंको पीसि माखनयुक्त लेप
करै वा काशीमाटी व तिलका लेपकरै तो विपत्तभव सूजन व भित्तावै सूजन दूर
होय ॥ ७ ॥ (पुनर्लेप) कलिहारी, अतीस, कटुदूध या कटुतुरई मूरी तीनों के
बीज पांचों के समान कांजी में पीसिके कीटदंश व विस्फोट पर लगाने से टोप
मिटते हैं ॥ ८ ॥ (कांतिकारकलेप) रक्तचन्दन, मँजीठ, लोप, कूट, माल-
कंगनी, बटाङ्कुर व मसूर ये सब समान भागाने जलमें पीसि लेपकरै व्यंग (झाई)
रोग मिटै व कांतिवर्द्ध ॥ ९ ॥ (पुनः) बीजपूर की जड़, मृत, मैनशिल, गोरका रस
मिलाय लेपै कांति बर्द्ध मुहँ और भाईरोग ये सब दूरहोयें ॥ १० ॥ (तारु-
ण्यपिटिका (मुहँसे) पर लेप) जो तरुण मनुष्य के मुँहपर कोटी २ पिडिकी
जमै वह तारुण्यपिटिकाह (लेप) लोघ, धनिपां और वच ये तीनों सभभाग
ले पीसि लेपकरै तथा गोरौचन व कालीमिर्च पानी में पीसि लगायें ॥ ११ ॥
अथवा सरसों, वच, लोप और सैषय ये सभभाग ले जलमें पीसिले ये तीनप्रकार
के लेपहैं इनके लगाने से मुँहपर की तरुणपन की पिडिका अच्छी होयें (व्यंग
रोगपर लेप) अर्जुनवृत्त की बाल वा मँजीठ वा रस्त्रे घोंडेके नखकी भस्म इन
तीनों में से कोई द्रव्य रूहद संयुक्त लेपकरै तो व्यंगरोग मिटै (मुखपर की
झाईपर लेप) पदार के दूध में हल्दी को पिस लगायें ॥ १२ । १३ ॥

मुखकाण्ठार्थशमंयाति चिरकालोद्भवंध्रुवम् । वटस्यपा
 ण्डुपत्राणिमालतीरक्तचन्दनम् १४ कुष्ठं कालीयकं लोध्रमे
 भिल्लेपं प्रयोजयेत् । तारुण्यपिटिकाव्यङ्गनीलिकादिवि
 नाशनम् १५ पुराणमथपिण्याकंपुरीषंकुक्कुटस्यच । मूत्रं
 पिष्टः प्रलेपोयं शीघ्रं हन्यादरुंषिकाम् १६ खदिरारिष्टज
 म्बूनां त्वग्निभर्वा मूत्रसंयुतैः । कुटजत्वक्सैन्धवंवालेपोहन्या
 दरुंषिकाम् १७ प्रियालबीजमधुकुक्कुष्टमाषैः ससैन्धवैः । का
 र्थोदारुणकेमूर्धिनप्रलेपोमधुसंयुतः १८ दुग्धेनखाखसं
 बीजंप्रलेपाद्दारुणं जयेत् । आघबीजस्य चूर्णं तु शिवाचूर्णं
 समं द्वयम् १९ दुग्धपिष्टः प्रलेपोयं दारुणं हन्ति दारुणम् ।
 रसस्तिक्कपटोलस्यपत्राणां तद्विलेपनात् २० इन्द्रलुप्तं श
 मंयाति त्रिभिरेवदिनैर्ध्रुवम् । इन्द्रलुप्तापहोलेपोमधुनावृ
 हतीरसः २१ गुञ्जामूलफलं वापि भल्लातकरसोपि वा ।
 गोक्षुरस्ति लपुष्पाणितुल्येन मधुसर्पिषी २२ शिरःप्रलेप

तो बहुत दिनकी भई मुखपरकी भाई निश्चय दूरहोय (तारुण्य पिटिकापर
 लेप) वटके पीलेपत्ते, चमेली, रक्तचन्दन ॥ १४ ॥ कुट,दारुहृदी और लोघ इन
 सबको एक में पीसि लेपै तो तरुणपिटिका व्यंग (छाई) दूरहोय ॥ १५ ॥
 (रूथी पर लेप) पुराने तिलोकी रली व कुक्कुट (मुर्गी) की बीट दोनों
 गोमूत्र में पीसि लेपकरै रूथी दूरहोय ॥ १६ ॥ (पुनःप्रकार) खैर, नबि व
 जामुन इन तीनोंकी छाल गोमूत्रमें पीसि लेपकरै रूथी नाशहोय (दारुणरोग
 पर लेप) चिरांजी, मुलेठी, फूट उड़द और सेंधव ये पांचों समानभागले पीसि
 शब्दयुक्त लेपकरै दारुणरोग मिटै ॥ १७ ॥ १८ ॥ (पुनर्लेप) खसरस पीस
 दूधमें लेपकरै वा आमकी बिजुरी छोटीइड़ ॥ १९ ॥ दूधमें पीसिलेपै तो दारुणरोग
 नाशहोय (इन्द्रलुप्त पर लेप) कहुवे परजनकी पचीका रस तीन दिनलेपै
 ही वादखोरा दूरहो (पुनः) गटकटैया और शब्दका लेपकरै ॥ २० ॥ २१ ॥ च
 धुंजुबीजइ या फलके रसका शब्दके साथ लेपकरै वा भिलावैका रस शब्दके
 साथ लेपकरने से वादखोरा दूर हो (केशवईन लेप) गुखुरु व तिलपुष्प

नतैर्नकेशसंवर्द्धनंपरम् । हस्तिदन्तमर्षीकृत्वाळागीदुग्धंश्च
 साञ्जनम् २३ रोमाणितेनजायन्तेलेपात्राणितलेष्वपि ।
 यष्टीन्दीवरमृद्धीकातैलाज्यक्षीरलेपनैः २४ इन्द्रलुप्तःशमं
 यातिकेशाःस्युःसघनादृढाः । चतुष्पदानांत्वग्रोमनखशृ
 ङ्गास्थिभस्मभिः २५ तैलेनसहलेपोयंरोमसञ्जननःपरः ।
 इन्द्रवारुणिकाबीजतैलेनाभ्यङ्गमाचरेत् २६ प्रत्यहंतेन
 कालाग्निसन्निभाःकुन्तलाह्यलम् । अयोरजोभृङ्गराजस्त्रि
 फलाकृष्णमृत्तिका २७ स्थितमिक्षुरसेमासंलेपनात्पलि
 तंजयेत् । धात्रीफलत्रयंपथ्येद्द्वैतथैकंविभीतकम् २८ पञ्चा
 ममञ्जालोहस्यकर्षैकंचप्रदीयते । पिष्ट्वालोहमयेभाण्डेस्था
 पयेदुषितंनिशि २९ लेपोथंहन्तिनचिरादकालपलितंमह
 त् । त्रिफलानीलिकापत्रंलोहंभृङ्गरजःसमम् ३० अजा
 मूत्रेणसम्पिष्टंलेपात्कृष्णीकरंस्मृतम् । त्रिफलालोहचूर्णंच

इनका समान चूर्ण करिके समान घृत वं शहद में फेंदि ॥ २२ ॥ लगाने तो
 बालगर्भे बालजमे पर हाथीदातको जलाय रसौत और चक्रीके दूधमें पीसिलेप
 करे ॥ २३ ॥ जहां बाल न हों गय्या द्येली में तो नारजगे और अङ्गमें क्यों न
 जमेंगे (रसौतविधि) निरूहण अस्तिमें कही है (इन्द्रलुप्तपर लेप) मु-
 लेटी, कमल व दासको तिलतेल, घृत व गऊके दूधमें पीसि लेपकरे ॥ २४ ॥
 यादसोरा दूरहोष बाल सघनहों (पुनः) चतुष्पद जीर्वांश चर्म, रोम, नख,
 साँग और हाड इनकी भस्म ॥ २५ ॥ तिल तेलमें पेंदि लेपकरे तो नष्ट बाल
 जायें (केश कृष्णिकरण) इन्द्रायनके बीजका तेल पाताल थंयसे निरुह्रि
 संफेदबालों में लगाने तो काले होजायें (पुनः) लोह, शून, भंगरा, त्रिफला,
 कालीःमाटी ये चर्वाँ समान चूर्ण करि ॥ २६ ॥ २७ ॥ उष्ण रस में सानि
 मास भर राशि कुड दिनोंमें लेपकरे तो अकालके श्वेतबाल काले होयें (तृ-
 तीयः) श्रावरा तीन चहेहा दो ॥ २८ ॥ आमकी त्रिमुली पाच लोहचून
 एक कर्षे ये सब कड़ाही में अतिमूक्ष्म घोटै उसी में दिन रात रहने दे ॥ २९ ॥
 फिर लेपकरे तो श्वेत केन काले हों (चतुर्थः) त्रिफला, नीलपत्र, लंका

दाडिमत्वग्विसंतथा ३१ प्रत्येकंपञ्चपलिकंचूर्णंकुर्याद्वि
चक्षणः । भृङ्गराजरसस्यापिप्रस्थषट्कंप्रदापयेत् ३२
मासमेकंततःकुर्याच्छागीदुग्धेनलेपनम् । कूर्धेशिरसिरा
त्रौचसंवेष्टोरण्डपत्रकैः ३३ स्वपेत्प्रातस्ततःकुर्यात्सना
न्तेनप्रजायते । पलितंस्यत्रिंशश्चत्रिभिल्लैर्नैसशयः
३४ शङ्खचूर्णस्यभागौद्वौहरितालञ्चभागिकम् । मनः
शिलाश्वाहभागोस्त्रिंशत्त्रिंशत्कभागिका ३५ लेपोयंवारि
पिष्टस्तुकेशानुत्पाद्यदीयते । अन्यालेपयुस्त्यात्रसप्तवे
लंप्रयुक्तया ३६ निर्मूलकेशस्थानंस्यात्क्षपणस्यशिरोय
था । तालकंशाणयुग्मंस्यात्षट्शाणशङ्खचूर्णकम् ३७
द्विशाणिवंपलाशस्यक्षारंदत्त्राप्रमदयेत् । कदलीदण्डतो
येनरविपत्ररसेनत्रा ३८ अस्यापिसप्तभिल्लैर्लोमशातन

चून और भंगरा ये सम भागज ॥ ३० ॥ जगरी के मूत्रमें पीसि पकवालों पर
लगाये तो काले होयें (पंचमलेप) त्रिकला लोहचून, अनारकी, धाल और
क्रमलका कन्द ॥ ३१ ॥ ये पाँचों औषध पाँच पल और भंगरेका रस छः
प्रस्थ निचोरे पूर्वोक्त द्रव्य एकत्र करि लाहेकी कड़ाही में मूत्रमं करि घोटै ॥
३२ ॥ एक मासभरि रातै तिस पीडे निकारि बकरी के दूधमें धित श्वेत वा
लोंपर लेपकरै और ऊपर से ङडके पचा वायै ॥ ३३ ॥ रातिभरि वांधेदे प्र
भात स्नान करते समय धोय डारै योही तीन दिन लेप करने से सफेद बाल
काले होयें ॥ ३४ ॥ (अथ लोमशातन प्रकार बाल गिरानेका लेप)
शंखचूर्ण दोभाग, हरताल एक भाग, सैन्धुज, अर्द्धभाग, सज्जी एक भाग ॥
३५ ॥ ये सब दवाई पानी में पीसि जहाँके बाल गिराने मंतरहाँ वहाँ लेप करै
वाकी बाजोंको कपड़े से ढका राखे लेप के पहिने बाल दूर करिके तब उस
दौरमें यह लेप सातबार करै ॥ ३६ ॥ सब बाल गिरै फिर न होयें जैसे बाल
बनगये पर यह रोमशातन अतिउत्तम है (पुनः हरताल दो, शाण, शंख
चूर्ण छःशाय ॥ ३७ ॥ पत्नीशंकार, दोदो-शाण केले के दण्डके पानी में वा
यारूपके रसमें पीसि ॥ ३८ ॥ रातभरि लेप करने से बाल गिरजायै बाल

मुत्तमम् । सुवर्णपुष्पीकासीसं विडङ्गानिमनःशिलाः ३९
 रोचनासैन्धवंचैवलेपनाच्छिन्ननाशनम् । वायस्येडगजा
 कुष्ठकृष्णाभिर्गुटिकाकृता ४० । वस्तमूत्रेणसम्पिष्टाप्रले
 पाच्छिन्ननाशिनी । वाकुचीवेतसोलाक्षाकाकोदुम्बरिका
 कणा ४१ रसाञ्जनमयश्चूर्णीतिलाःकृष्णास्तदेकतः । चू
 र्णयित्वागवांपितैःपिष्टाचगुटिकाकृता ४२ अस्याःप्रले
 पाच्छिन्नाणिप्रणश्यन्त्यतिवेगतः । धात्रीसर्जरसश्चैवय
 वक्षारश्चूर्णितः ४३सौवीरेणप्रलेपोयंप्रयोज्यःसिध्मना
 श्नेने । दार्दीमूलकत्रीजानि तालकंसुरदारुच ४४ ताम्बूल
 पत्रंसर्वाणिकार्षिकाणिपृथक्पृथक् । शङ्खचूर्णशाणमात्रं
 त्र्वाण्येकत्रचूर्णयेत् ४५ लेपोयंवारिणापिष्टःसिध्मनाश
 करःपरः । हरीतकीसैन्धवंचगौरिकंचरसाञ्जनम् ४६ विडा
 लकोजलेपिष्टःसर्वनेत्रामयापहःरसाञ्जनंव्योषयुतंसम्पि

गिराने को यह लेप उत्तम है (सफेद कुष्ठपर लेप) पीली चमेली, गजपी-
 परि, कसीस, विडंग, मैतशिल ॥ ३९ ॥ गोरोचन, सैन्धव खर्चों समभाग गो-
 मूत्र में पीसि लेप करै श्वेत कुष्ठ दूरहोय (पुनः) कौवाढोदी, कूट और पीपरि
 ये सब समान भागले ॥ ४० ॥ सपी (बकरे) के मूत्र में पीसि लेपकरै श्वेत कुष्ठ
 दूरहोय, (तीसरा) यकुची, प्रमलश्वेतस, लाल, कठगुलरी, पीपरि ॥ ४१ ॥
 रसीत लोहचून, काले निल आठों समभाग गोपित्तमें पीसि लेपकरै ॥ ४२ ॥
 तो श्वेत कुष्ठ अतिशीघ्र दूरहोय (सेहुआं परलेप) आंबरा, राल व जरा-
 खार ये तीन ॥ ४३ ॥ सौरीर या कांजी में पीसि लेप करै सेहुआं दूरहोय
 "सौरीर और कांजी का विधान रेचनाध्याय से जानना" पुनः) दासहस्त्री,
 मुरी के बीज, हरताल, देवदारु ॥ ४४ ॥ और पान ये सब कर्ष कर्षः भर शंख
 चूर्ण शाणभर सब ॥ ४५ ॥ पानी में पीसि लेपकरै सिध्म जो सेहुआं सो दूर
 होय (नेत्रलेप) हड, सैन्धव, गेरू और रसीत ये चारों समान भागले ॥
 ४६ ॥ पानी में पीसि पलकपर लेपकरै तो सर्व नेत्ररोग दूरहोय, (पुनः) र-
 सीत, सौंड, मिर्च और पीपरि ये चारों समान भाग ले पानी में पीसि गोली

त्वानांचमूलैः कुर्यात्प्रलेपनम् ६२ शिरोत्तिपित्तजांहन्या
 द्रक्तपित्तरुजंतथा । हरेणुनतशैलेयमुस्तैलांगुरुदारु
 भिः ६३ मांसीरासनोरुवृकैश्चकोष्णोलेपः कफातिनुत् ।
 शुण्ठीकुष्ठप्रपुत्राटदेवकाष्ठैः सरोहिषैः ६४ मूत्रंपिष्टैः सुखां
 षणैश्चलेपः श्लेष्मशिरोत्तिनुत् । सारिवाकुष्ठमधुकंवचाकृ
 ष्णोत्पलैस्तथा ६५ लेपस्सकाञ्जिकस्नेहः सूर्यावर्त्ताद्भेद
 के । वरीनीलोत्पलंदूर्वातिलाः कृष्णाः पुनर्नवाः ६६ शंखकै
 नन्तवातेचलेपः सर्वशिरोत्तिजित् । अथलेपविधिश्चान्यः
 प्रोच्यतेसुज्ञमम्मतः ६७ द्वौतस्यकथितौ भेदौ प्रलेपाख्यप्र
 देहकौ । चर्माद्रिमाहिषयद्वत्प्रोन्नतंसमितिस्तयोः ६८ शीत
 स्तनुविशोषीचप्रलेपः परिकीर्तितः । आद्रोघनस्तथोष्णः

द्वकी, अड़, खस और नरकद की जड़ ये नवों द्रव्य समान भाग ले पानी में पीसि माथेपर लेप कियेसे ॥ ६२ ॥ पित्तसम्बन्धी और रक्त पित्त सम्बन्धी मस्तक पीड़ा दूरहो । कफसम्बन्ध शिरपीड़ापर) मेवड़ी बीज, तगर, बाल, छड़, नागरमोथा, इलायची, अमर, देवदारु ॥ ६३ ॥ जटाभांसी, रासन और रण्डमूल ये दश द्रव्य पानी में पीसि गरम करि माथे पर लेपे तौ कफसम्बन्धी पीड़ा दूरहो (पुनः) सोंठ, कूट, चकौड़ी बीज, देवदारु, रोहिण विना अगिषा खर ये पांचों द्रव्य समान भागले ॥ ६४ ॥ गोमूत्र में पीसि सुरोष्ण माथेपर लेपेसे कफजन्य पीड़ा दूरहो (सूर्यावर्त्त आधाशोशी पर) सारिवन, कूट, मुलेठी, वच, पीपरि और नीलकमल ॥ ६५ ॥ ये कांजी में पीसि रण्डतेलयुक्त लेप कियेसे सूर्यावर्त्त (आधाशोशी) दूरहो (शंखक अनन्तवात सर्व शिरोरोग पर) विदारीकन्द, नीलकमल, दूध, कारे तिल और गदापुरैना ये पांचों समान भागले पानीमें पीसि ॥ ६६ ॥ लेप किये से शंखक अनन्तवात च सब शिरपीड़ा मिटै पुनर्विधान) ज्ञानी वैद्योंकी सम्मतिसे लेपका दूसरा विधान कहाजाता है ॥ ६७ ॥ (एक प्रलेपाख्य दूसरा प्रदेहक इनकी उँचाई का प्रमाण) ये दोनों लेप भँसेके गीले चमड़े की मुटाईकी तरह रहें तो गुणदायक हैं ॥ ६८ ॥ शीतकीर्ण सूक्ष्ममरेश बाधारहित है और चनाप्रलेप

स्यात्प्रलेपः इलेष्मत्रातहा ६९ । रोमामिमुखमादेयोप्रलेपा
 ख्यप्रदेहकौ । वीर्यसम्भयविशेश्याशुरोमकूपैः शिरामुखैः
 ७० नरात्रौलेपनं कुर्याच्छुष्क्यमाणं नधारयेत् । शुष्यमाणम्
 पेक्षेत्प्रदेहं पीडनं प्रति ७१ । तमसापिहितो ह्युष्मारोमकूप
 मुखे स्थितः । त्रिनालेपेन निर्यातिरात्रौ न लेपयेत्ततः ७२
 रात्रावपि प्रलेपो दिविधिः कांयोत्रिचक्षणैः । अपाकिशोथे ग
 म्भीरि रक्तइलेष्मसमुद्भवे ७३ । आदौ शोथहरो लेपो द्वितीयो
 रक्तसेचनः । तृतीयश्चापनाहः स्याच्चतुर्थः पाटनक्रमः ७४
 पञ्चमः शोवनोभूयात्पष्ठोरोपण्डप्यते । सप्तमो वर्णकरणो
 व्रणरथैते क्रममताः ७५ । बीजं पूरजटामांसी देवदारुमहौष
 धम् । रास्नाग्निमन्थोलेपोऽत्रातशोथविनाशनः ७६ । म
 धुकंचन्दनं मूर्धानलसूलं च पद्मकम् । उशीरं बालकंपद्मं
 जानो लण्णमदेहक कफ च वात को हस्ता है ॥ ६६ ॥ ये दोनों लेप रोम दूर
 करायने लगाने रोम दूर होनेसे रोमसुग्य सुखकौ प्रन्वीतरह से लेप गुण मवेश
 करता है ॥ ७० ॥ (लेपने नियम) रातको लेप न करे और बारका लेप गूस्ते
 न पावे क्योंकि सुखने से रोम उचरे तौ देह में अतिक्रम पीडा करे ॥ ७१ ॥
 (रात्रिलेप नियमकारण) रात्रिको तम बेगसे शरीर को उच्छ्रिता उफाय
 रोम सुगपर आय रहती है त्रिना लेप निरर जाती है इस कारण रात्रिको लेप
 न करे ॥ ७२ ॥ (रात्रिक लेपकी विधि) रात्रिको लेप चतुर वैद्य नियम
 करे जहा त्रण चिरकाल तक पयता नहीं और गम्भीर शोथको वा रक्त कफ
 सम्भव हो ॥ ७३ ॥ (व्रणोपचार सप्तप्रकार लेपक्रम) प्रथम लेप मूजन
 दूर करने को दूमग जगह में रधिर दो यथास्थान में पित्रला के फैलाने को
 तीसरा व्रणपर की राल को मृदु और एतली करने दो चौथा त्रण फोर के
 एहाने को ॥ ७४ ॥ पांचवां सुद्ध करनेको जो पीन न चाही रातें उजायय पूने
 को सानवां घाय के चर्मको शरीर को रंगिने ठरने को जो पीन न रहे ॥ ७५ ॥
 (व्रणमें वातरोपनिवारणलेप) त्रिजैरापूने, जटामांसी, देवदारु, लौंड,
 रासन और अरखीमूल ये सब समान भागसे पानी में पीसि लेपकरे वातशोथ
 शान्त हो ॥ ७६ ॥ (पित्तशोथ पर) मुलेनी, रक्तचन्दन, मूर्त, नरसलकी

पित्तशोथे प्रलेपनम् ७७ कृष्णापुराणपिएयाकंशिश्रुत्व
 क्षिपकताशिवा । मूत्रपिष्टः सुखोष्णोयं प्रदेहः श्लेष्मशोथ
 हत् ७८ द्वेनिशे चन्दने द्वे च शिवाटूर्वापुनर्नवा । उशीरं पद्म
 कंलोध्रं गैरिकञ्च रसाञ्जनम् ७९ आगन्तुके रक्तजे च शोथे
 कुर्यात्प्रलेपनम् । शणमूलकशिश्रूणां फलानि तिलसर्षपाः
 ८० सक्तवः किण्वमतसी प्रदेहः पाचनः स्मृतः । दन्तीचित्र
 कमूलत्वक्स्नुह्यर्कपयसीगुडः ८१ भल्लातकश्चकाशीश
 सैन्धवंदारणे स्मृतः । चिरविल्वो ग्निको दन्तीचित्रको ह्य
 मारकः ८२ कपोतकङ्कगृध्राणां मलं लेपेनदारणम् । स्वर्जि
 कायावमूकाढ्याः क्षारालेपेनदारणाः ८३ हेमन्तीर्यास्तथा
 लेपो वृणोपरमदारणः ८४ तिलसैन्धवयष्ट्या ह्निम्बपत्रनि

जड, पद्माक, खस, नेत्रबाला और कमल ये आठों समानभागले पानी में पीसि लेप
 करे तो पित्तशोथ दूरहो ॥ ७७ ॥ (कफशोथपर लेप) पीपरि, पीना, सर्हि-
 जनेकी छाल, चालू वा खांड और हड़ इन पांचोंको गोमूत्रमें पीसि गुनगुना लेप
 करे यह प्रदेह संज्ञक लेप कफशोथको दूर करता है ॥ ७८ ॥ (आगन्तुक और
 रक्तशोथपर लेप) हल्दी, दाहहल्दी, रक्त व श्वेतचन्दन हड़, रूच, मदापुईना,
 खस, पद्माक, लोध, गेरु और रसांत ये सप्तसमभागले पानीमें पीसि ॥ ७९ ॥
 लेप करने से आगन्तुक और रक्तशोथ दूरहो (व्रणपकाने पर लेप)
 सनकी जड़, मूली, सर्हिजने के बीज, तिल, सरसों ॥ ८० ॥ सप्त, लोहकीट,
 अलसी के बीज ये आठों समानले पानीमें पीसि प्रदेह संज्ञक लेपसे व्रणपकैगा
 (व्रण फोरनेपर लेप) जमालगोटा, चीताकी जड वा छाल—सेहुँड़ व मदारका
 दूध, गुड ॥ ८१ ॥ भिलावां, कसीस और सैन्धव ये धौपय दोनों दूधमें पीसि
 व्रणपर लेप करनेसे फूटै (पुनः) करंजमीर्गी, भिलावां, दन्तीकी जड़, चीताछाल
 कनेरकी जड़ ये पांचों चूर्णकरै ॥ ८२ ॥ तथा कपूतर सफेद चील वा गिद्धके
 घोटमें समान मिलाय लेपकरे फोड़ा फूटै (तीसरा लेप) सज्जी व जवाखार
 इन दोनोंका लेपकरै ॥ ८३ ॥ अथवा हेमन्तीरी (चोककी) जड़की छालका
 लेप करै फोड़ा फोड़नेमें वात प्रयत्नकरै ॥ ८४ ॥ (व्रणशोधन लेप) तिल,
 सैन्धव, मुनेठी, नींबपत्र, हल्दी, दाहहल्दी और निशोय ये सप्त समभागले चूर्ण

शायुगैः । तृट्टघृतयुतैः पिष्टैः प्रलेपोत्रणशोधनः ८५ नि
 म्वपत्रघृतत्रौद्रदार्धिमधुकसंयुतः । तिलैश्चसहसंयुक्तौले
 पः शोधनरोपणः ८६ करञ्जारिष्टनिर्गुण्डीलेपोह्न्याद्ब्र
 णकृमीन्लशुनस्याथवालेपोहिङ्गुनिबभवोधवा ८७ नि
 म्वपत्रंतिलादन्तीत्रितृत्सैन्धवमाक्षिकम् । दुष्टत्रणप्रशम
 नोलेपः शोधनरोपणः ८८ मदनस्यफलंतिक्तांपिष्ट्वाकाञ्जि
 कंवारिणा । कोष्णं कुर्यान्नाभिलेपंशलशान्तिर्भवेत्ततः ८९
 शिशुशोफालिकैरण्डयवगोधूममुद्गकैः । सुखोष्णोबहुलोले
 पः प्रयोज्योवातविद्रधौ ९० पैत्तिके सर्पिषालाजमधुकैः शर्क
 रान्वितैः । प्रलिम्पेत्क्षीरपिष्टैर्वापयस्योशीरचन्दनैः ९१ इ
 ष्टिकासिकतालोहकिट्टंगोशकृतासहसुखोष्णश्चप्रदेहोयं

करि धीमें वेपि फूटे फोड़ेपर लगावै वा-इनके करक की टिकिया बनाप धीमें
 छोड़ जलावै जब टिकिया जलजाय तब उतार धी राखिदांड़ै टिकिया फेंकि
 देय ये दोनों प्रकार ब्रण शुद्धकरै ॥ ८५ ॥ (ब्रणशोधन व रोपणपर लेप)
 नीवपत्र, घृत, शहद, दासूहदी, मुलेठी, तिल इन सबको पीसि के लेप किये
 ते ब्रण शुद्ध होके पूरआताहै ॥ ८६ ॥ (कृमिनिवारण लेप) करंज, नीव
 और वकायन इन तीनों को पीसि कृमि के स्थान में भरै तौ कृमि मरजाय वा
 लहसुन वा हींग पीसिभरै वा हींग वा नीवपत्र भरै तौ कृमि मरै ॥ ८७ ॥ (ब्रण
 शोधन व रोपण पर लेप) नीवपत्र, तिल, दन्तीकी जड़ औरसैन्धव ये सब
 समान पीसि शहदयुक्त लेप किये ते ब्रण शुद्ध होके पूरि धावै ॥ ८८ ॥ (पेट
 पीर पर नाभिलेपन) मैनफल व कुटकी इन दोनों को काजी में पीसि कुट
 गरम करि नाभिर लेप किये से पेटशूल मिटता है ॥ ८९ ॥ (वातविद्रधि
 पर) सहिजने की दाल वकायनपत्र, रंडमूल, यव, गेहूं और मूंग ये सब पीसि
 सुखोष्ण लेप करेसं वातविद्रधि पूरहोवी है ॥ ९० ॥ (पित्तविद्रधिपर) लाव
 मुलेठी व शकरको धीमें लेपकरेसे वा असगंध, खस और रक्तचंदनकोदूधमें पीसि-
 लेपकरे से पित्तविद्रधि दूरहो ॥ ९१ ॥ (कफविद्रधि पर) ट, बालू, लोह,
 कौट और गोवर इनचारोंको गोमूत्रमें पीसि लेपकरे इस प्रदेह लेपसे कफविद्रधि-

मूत्रैः स्याच्छ्लेष्मविद्रव्यौ ९२ रक्तचन्द्रनमठिजष्ठानिर्गामधु
 कगैरिकैः। क्षीरेण विद्रव्यौ लोपोरक्तागन्तुनिमित्तजे ९३ निचु
 लः शिशुबीजानिदशमूलमथापिवा । प्रदेहोवातगण्डेषु सु
 खोष्णः संप्रदीयते ६५ देवदारुनिशाले च कफगण्डे प्रलेपये
 त् । सर्पपारिष्टपत्राणिदग्ध्याभर्त्सातकैः सह ६५ छागमूत्रे
 णमन्पिष्टमपचीघ्नम्प्रलेपनम् । सर्पपाण्डिद्युबीजानि शण
 बीजातसीयवान् ९६ मूलकस्य च बीजानितक्रेणाम्लेन पे
 षयेत् । गण्डमालार्धुदंगण्डलोपेनानेन शाम्यति ६७ तर्क्ष
 यित्वाक्षुरेणाङ्गकेवलानिलपीडितम् । तत्र प्रदेहद्वयाच्च पि
 ष्टुगुञ्जाफलैः कृतम् ६८ तेनापवाहुजापीडा विश्वाची गृह्य
 सीतथा । अन्यापिवातजापीडात्रशर्मयाति चैगताः ९९ ध
 त्तूररएडनिर्गुण्डीचर्पाभूशिशुसर्पपैः । प्रलेपः श्लीपदंहन्ति
 दूरं होजातीहै ॥ ६२ ॥ (आगतुक विद्रधि पर) रक्तचन्द्रन, मँठि, हन्टी,
 मुलेठी और गेरु ये सब समानभागले दूध में पीसि चोट या रुधिरिद्वारपर
 लेपकरे अच्छाहो ॥ ६३ ॥ (वातगलगंड पर) बेल और सहिजन के बीज
 इनदोनों को समानभागले जलमें पीसि शीत गरम प्रदेहमग्न लेप करे तैसे
 ही दशमूल पीसि नेहकरे ॥ ६४ ॥ (कफगण्ड पर) देवदारु व इंद्रायण
 की जड़ इन दोनोंको पीसि प्रदेहकलेप कफ व गण्डमालाको दूरकरे (अपची
 पर) सरसौ, नीपत्र और भिलाया इन तीनोंको समभाग राखिकरि ॥ ६५ ॥
 बकरे के मूत्रमें लेपकरे तो अपची दूरहो (गण्डमाला अर्धुद व गण्डपर
 लेप) सरसौ, सहिजनके बीज, सनई के बीज, प्रलसी, यत्र ॥ ६६ ॥ और
 मूली के बीज ये सब औषध समानभागले सटाये भये मट्टे में पीसिके लेपकरे तो
 गण्डमाना, अर्धुद और गलगंड ये रोग दूरहोयें ॥ ६७ ॥ (अपवाहुकपरलेप)
 केवल जन्पीडित रोग अथवा अपने स्वभाविक कर्म में पीडाकरे तहां के रोम दूर
 करि कुटुबीको पीसि सुखोष्ण लेप करने से अपवाहुक वायु विश्वाची हाथकी
 वायु और शब्दी जंवाकी वायुमें भय पीडा दूरहोयें ॥ ६८ ॥ (फीलगांध
 परलेप) घूरु, रंड और मेरुकी इन तीनोंके पीसि, जरातुरना व सहिजनेरी
 घाल और सरसौ ये चारों पीसि अतिपातके भये फीलगांध पर लेप किये अच्छे

चिरोत्थमपिदाहुरणम् १०० अजाजीह्वुषांकुष्ठमेरण्डवद
 रान्वितम् । काञ्चिककेतुसंपिष्टं कुरण्डघ्नप्रलेपनम् १ क
 रवीरस्यमूलेनपशिपिष्टेनवारिणा । अमाध्यापित्रजत्यस्तं
 लिङ्गोत्थारुकप्रलेपनात् २ दहेत्कटाहेत्रिफलांसानर्षीमधु
 संयुताम् । उपदेशेप्रलेपोयंसद्योरोपयनिव्रणम् ३ रसाञ्ज
 नंशिरीषेणपथ्ययाचसमन्वितम् । सक्षौद्रंलेपनंयोज्यमुपदं
 शगदापहम् ४ अग्निदग्धेनुगाक्षीरीहृक्षचन्दनगौरिकैः । सा
 सृतैःसर्पिषास्निग्धैरालेपंकारयेद्भिषक् ५ तिन्दुकीत्वक्का
 यैर्वाघृतमिश्रैःप्रलेपनात् । यवान्दग्ध्वामर्षीकार्यान्लेनयु
 तयानयाद् दद्यात्सर्वाग्निदग्धेषुप्रलेपोव्रणरोपणः । पला
 शोदुग्धरफलेस्त्रितलैलसमन्वितैः ७ मधुनायोनिमालि
 स्पेद् गाढीकरणमुत्तमम् । माकन्दफलसंयुक्तमधुकर्पूरलेप
 नात् ८ गतेपियौवनेस्त्रीणांयोनिर्गाढातिजायते । मरिचसै

होय ॥ १०० ॥ (कुरण्ड "अण्डवृत्ति" रौमपर) तालाभीरा, हाउरेर, सूट
 रण्डवालु और नेरवाल ये पांचों समानभागले पांचों में पीसि अण्डकोश पर
 लेप किये अच्छे होय ॥ १ ॥ (उपदेश कहे गरभीपर लेप) कनेर की जड़
 पानी में पीसि इन्द्रियपर लेपे तौ वर्षदशसम्पन्नी असाध्य पीडा दृग्होय ॥ २ ॥
 (पुनः) विकृतो कडाही में जनाय राख करि शहद्यों फेदिकरि लेपकरे तो गरभी
 के घात्र शीघ्र पर आते है ॥ ३ ॥ (पुनः) रसोंत, सरसों व इह इन तीनों को
 समानभागने पीसि शहदे में येनि ज्वरंश्मन्पन्नी राठ रहते दग्धपर लेपकरे
 तौ वर्षदश को हन्ता है ॥ ४ ॥ (अग्निदग्धपर लेप) बंशलोचन, पाकुरि,
 रक्तचन्दन, मेरु और मुर्घ ये पांचों पीसि यो मिना जलेपर लगवै ॥ ५ ॥ अथवा घी
 को चोरोइकाय में भिलोय लेप करे तौ जलेयि व्यथा शांतदाय (पुनः) यवकी
 गार्तिलोके तेलमें देयि ॥ ६ ॥ लमार्ये तौ दग्ध दण पूरि आयै (योनि
 संक्षौद्रोप) पलाश (टाक) के फूल, मूगंरफन मिलके तेलमें पीसि ॥ ७ ॥
 गदर दिनाय योनिमें लेपकरे हर संसुचिन होय (पुनः) माकण्ड व कपूर को
 पीसि शहदे फेदिके लोकरै ॥ ८ ॥ गिरिहूड योनि तनिआयै (पुनः इन्द्रिय

न्धवंकृष्णातगरंवृहतीफलम् ९ अपामार्गस्तिलाःकुष्ठं
 वामापाश्चसर्षपाः । अश्वगन्धाचतत्रूर्णमधुनासहयोजये
 त् १० अस्यसन्ततलेपेनमर्दनाच्चप्रजायते । लिङ्गवृद्धिः
 स्तनोत्सेधःसंहतिर्भुजकर्णयोः ११ सिताश्वगन्धासिन्धु
 त्थच्छागक्षीरैर्घृतंपचेत् । तल्लेपान्मर्दनाल्लिङ्गवृद्धिःसञ्जाय
 तेपर। १२ इन्द्रवारुणिकापत्ररसैःसूतंविमर्दयेत् । रक्तस्यक
 र्वारस्यकाष्ठेनचमुहुर्मुहः १३ तल्लिप्तलिङ्गसंयोगाद्योनिद्रा
 वोभिजायते । ताम्बूलपत्रचूर्णंतुचूर्णकुष्ठशिवाभवम् १४
 वारिणालेपनंकुर्याद्वात्रदौर्गन्ध्यनाशनम् । कुलित्थसक्तवः
 कुष्ठंमांसीचन्दनजंरजः १५ सक्तवश्चणकस्यैवत्वचंचै
 कत्रकारयेत् । स्वेददौर्गन्ध्यनाशश्चजायतेस्यावधूलना
 त् १६ वचासौवर्चलंकुष्ठंरजन्योमरिचानिच । एतल्लेप
 प्रभावेणवशीकरणमुत्तमम् १७ श्रुभ्यङ्गःपरिषेकश्चपि

कठोर करनेका लेप) मरिच, सेंधव, पीपरि, तगर, भटकटैया के फल ॥ ९ ॥
 लटजीरा के बिया, काने तिल, फूट, यव, उड़द, सरसों और असगन्ध ये सब
 समान पीसि शहद मिश्रितकरि ॥ १० ॥ नित्य इन्द्रिय पर मलाकरै तो इन्द्रिय
 मोटीहोय व स्त्री के स्तनपर लगाया करे तो कठोर पड़जायै और पुरुषके भुजदण्ड
 व कानपर मर्दन करना भलाहै ॥ ११ ॥ (पुनर्लेप) श्वेत फूलका असगन्ध व
 सेंधव इन दोनोंको सूक्ष्म पीसि चौगुना घृत व घृतका चौगुना भेड़ीका दूध एक
 करि आचपर दूध जलाव वा ज्वानि इन्द्रियपर लगावै तो इन्द्रिय मोटीहोय ॥ १२ ॥
 (योनिद्रव लेप) इन्द्रायण पत्रका रसले पारा रक्त कनेर के सोंटेभे घोटि चार
 चार रस डाले ॥ १३ ॥ जत्र कजरी पीठी सम होजाय सब इन्द्रिय पर लेपि स्त्री
 प्रसंग करै तो स्त्री सुख पावै पहिले वीर्यपातकरै (देहदुर्गन्धनिवारण लेप)
 पान, फूट व इड़को पानीमें पीसि लेपकरे दुर्गंध दूरहोय (पुनः) कुलयी भुंजि फूट,
 जटामासी व श्वेतचन्दन का बुरादा ॥ १४ ॥ व भुंजे चने इन सबको पीसि कपट-
 द्धानकर धूराकरै तो देहदुर्गंध दूरहो ॥ १५ ॥ (वशीकरण लेप) वच, का-
 लालोन, फूट, हल्दी, दाणहल्दी और मिर्च ये सब समान भागले पानीमें पीसि

चुर्वस्तिरितिक्रमात् । मूर्ध्वतैलंचतुर्धास्याद्दलवच्च यथोत्तरम् १८ त्रयोभ्यङ्गादयःपूर्वेप्रसिद्धाःसर्वतःस्मृताः । शिरोवस्तिविधिश्चात्रप्रोच्यतेसुज्ञसम्मतः १९ शिरोवस्तिश्चर्मेणःस्याद्विमुखोद्वादशाङ्गुलः । शिरःप्रमाणस्तंबद्धामस्तकेमाषपिष्टकैः २० सन्धिरोधंविधायादौ स्नेहैःकोष्णैः प्रपूरयेत् । तावद्द्वार्यस्तुयावत्स्यान्नासानेत्रमुखस्रुतिः २१ वेदनोपशमोवापिमात्राणांवासहस्रकम् । विनाभोजनमेवात्रशिरोवस्तिःप्रशस्यते २२ प्रयोज्यस्तुशिरोवस्तिःपञ्चसप्ताहमेववा । विमुच्यशिरसोवस्तिगृह्णीयाच्चसमन्ततः २३ ऊर्ध्वकायंततःकोष्णनीरैःस्नानंसमाचरेत् । अनेन दुर्जयारोगावातजायान्तिसंक्षयम् २४ शिरःकम्पादय देहमें लोकवश होने के निमित्त लगावै तौ अचञ्चा हे ॥ १६ । १७ ॥ (मस्तक में तेल लगानेकी विधि) अभ्यङ्ग कहे "तैलमर्दन" परिपेक कहे "तेल चुपड़ना" पित्तु कहे "रूई के पहलको तेलमें घोरि माथे में बांधै" वस्ति कहे "माथे में चौफेर चर्भ बाधि तेलभरै" ये चार प्रकार हैं सो क्रमते उत्तरोत्तर बलवान् कहते हैं ॥ १८ (शिरोवस्तिविधान) अभ्यङ्ग, परिपेक और पित्तु ये तीनों सर्वत्र प्रसिद्ध हैं और शिरोवस्तिविधि तथा मात्रा यहां नहीं कही सो आगे श्लोक में कहेंगे ॥ १९ ॥ (शिरोवस्तिप्रकार) मस्तकपर औषध धारण करनेको शिरोवस्ति कहते हैं बारह शृंगुल चौड़ी व हाथभर लम्बी शिरके समान डफ़कर हरिणचर्मकी सी लेइ दोनों ओर खुली दील न हो सो माथेपर चढ़ाव भीतर से चारों ओर उर्द के पीठेसे ॥ २० ॥ निस्संधि करै फिर नीचे चढ़े भये चमड़ेको शृंगुलभर पीठेसे चारों ओर निस्संधि करि सुलोप्य तेलभरै (शिरोवस्तिप्रमाण) जयतक नाक, नेत्र व मुखसे जल न बहे ॥ २१ ॥ अथवा मस्तकव्यया न मिटै वा इनार मात्रा तक वस्ति स्थित रहै (मात्राप्रमाण) श्रुतुवासनवस्ति में कहिआये हैं (शिरोवस्तिकाल) भोजनके मयम पांच व सातदिन शिरोवस्ति करै (शिरोवस्तिके पीछे क्रिया) माथेपर धारण कीहुई वस्तिके चारोंतरफ एकसां उचारकर पटक देने जय वस्तिको उखाड़ चुके तो ॥ २२ ॥ २३ ॥ सुलोप्य जल से माथा धोनाय नदामे (शिरोवस्तिगुण) वायुजन्म शिरःकम्पादि दुर्जय

स्तेनसर्वकालेषु भोजयेत् । स्वदयेत्कर्णदेशंतुकिञ्चिच्चतुःपा
 र्श्वशाशिनः २५ मूत्रैः स्नेहैरसैः कोष्णैस्ततः कर्णं प्रपूरये
 त् । कर्णंतुपूरितरक्षेच्छतं पञ्चशतानि च २६ सहस्रं चाति
 मात्राणां श्रोत्रकण्ठशिरोगदे । स्वजान्तिनः करावर्तकुर्वाच्छो
 टिकवायुतम् २७ एषामात्राभेदेकासर्वत्रैवैपनिश्चयः ।
 रसाद्यैः पूरणं कर्णभोजनात्प्राग्प्रशस्यते २८ तैलाद्यैः पूर
 णं कर्णेभास्करेस्तमुपागते । पीतार्कपत्रमाज्येन लिप्त्वाव
 ह्नौ प्रतापयेत् २९ तद्रसः श्रवणेक्षितः कर्णशूलहरः परः ।
 कर्णशूलानुरेकोष्णांस्तमूत्रससैन्धवम् ३० निक्षिपेत्तेन
 शाम्यन्ति शूलपाकादिकारुजः । शृङ्गवेरंचमधुकंसधुसैन्ध
 वसामलम् ३१ तिलपर्णीरसस्तेलं टङ्कणानिन्धुकंद्रवम् ।
 कृत्तुष्णं कर्णयोर्देयमेतद्वैवेदनापहम् ३२ कपिस्थमातुलु
 ङ्गान्म्लशृङ्गवेररसेः शुभैः । सुखोष्णैः पूरयेत्कर्णो कर्णशूलो

रोग दूर होते हैं इस से पैय सदा इस रोग में शिरोशक्ति करावे ॥ २४ ॥ २५ ॥
 (कर्णोपचार) गनुषको कुछ स्वेदादि सुस्त गोमूत्र व तेज व स्वरस गुणोष्ण
 कान में पूरे ॥ २६ ॥ (कर्णमें द्रव्यधारण प्रमाण) कान, कंठ व शिरोगो के
 निवारणार्थ सौ माना व पांचसौ व हजार यात्रातक राखे (मात्राप्रमाण)
 घुटनों पर चुटकी बनावे हाथरूपे चौफेर सौ माना प्रमाण है (कर्णोपचार
 समय) कान में औषध भोजनके प्रथम रसादिक पूरे ॥ २७ ॥ २८ ॥ और
 तेल आदि संघ्यासमय पूरे (कर्णव्यथापर औषध) अर्कवृक्ष में जो गत्त
 पालेपड़जाते हैं तिन्हें खोमि उनपर घृत लगावे तब लथारी ध्यागि में सेक लेय
 जप गरम होय तब निराले ॥ २९ ॥ कानमें छोड़े तो संय कर्णशूल दूरहोय
 (पुनः) घागमूत्र में संधेउहारि कुछ सचा ॥ ३० ॥ करि कान में पूरे तो कान
 के भीतरकी विटिका दूर होय (लुनीय) अद्रकका रस मुमेठी, शंख, संधव,
 धानरा ॥ ३१ ॥ वित्तर्णी “ दूध में होती है और गुबुलकीसी सबै तूरति पची
 सपेन फली तिनमदश होती है वह तिलपर्णी है ” तरसों का तेज, सुहागा व
 नीधुका रस ये सब पीसि कान में डालें तो कानकी पीड़ा दूरकरे ॥ ३२ ॥ कैयों

पशान्तये ३३ अर्काङ्कुरानम्लपिष्टांस्तैलाक्ताल्लैवणान्वि
 तान् । सन्निद्ध्यात्स्नुहीकाण्डेकोरितेतच्छदावृते ३४ पु
 टपाकक्रमंकृत्वारसैस्तच्चप्रपूरयेत् । सुखोष्णैरतेनशाम्य
 न्तिकर्णपीडाःसुदारुणाः ३५ महतःपञ्चमूलस्यकाण्डा
 न्यष्टाङ्गुलानितु । क्षौभेणावेद्यसंसिच्यतैलेनादीपयेत्ततः
 ३६ यत्तैलंचयवतेतेभ्यःसुखोष्णैतेतपूरयेत् । ज्ञेयंतदीपि
 कातैलंसद्योगृह्णातिवेदनाम् ३७ एवंस्याद्दीपिकातैलंकुष्ठे
 देवतरौतथातैलंज्ञयोनाकमूलेनमन्देग्नौपरिपाचितम् ३८
 हरेदाशुत्रिदोपोत्थंकर्णशूलंप्रपूरणात् । कल्ककाथेनच
 घ्राह्णाकाकोलीभाषधान्यकैः ३९ शूकरस्यवसांपक्त्वाकर्ण
 नादार्तिहारिणी । स्वर्जिका मूलकंशुष्कंहिट्मुकृष्णासमन्वि

और कैथफल का रस त्रिगौरारस, अमलवेतके रस बिना शूकरस और धदरकरस
 ये चारों सुखोष्ण कान में डालने से कर्णशूल नाश होय ॥ ३३ ॥ (पंचम)
 मदारका कोमल टिगुसा नींबूरस में पीसि तिल का तेल व सेंधानोन मिलाय
 गोला बांध सेड्डा के मोटे रण्ड में पोलाकरि गीला रई अचड़ी भांति दाबि
 उसीके पत्र लपेटि कपडौठी करि माडी चढाय मधुरी आंच में पकाय एटभाक
 सदृश पकजाय तत्र निकालि माटी कपडा उतारि कूटके रस निचोरनेय फिर
 उस रसको सुखोष्णकरि कान में डारै तौ कानकी टारुणशूल शान्तहोय ॥
 ३४ ॥ ३५ ॥ (कर्णशूलपर दीपिकातेल) महापञ्चमूलकी जड़ आटश्रंगुन
 रुई वा बख लपेट टीपमें चारि चिमटी से, पकरि कटेरी में टपकावै, वही, गुनगुना
 तैल कानमें डालनेसे कानकी तपक, दूर होती है तथा शहद, पञ्चमूल, वैल, रण्ड,
 टेटी, शिक्नी और पाटल इनकी जड़को कहते हैं ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ (पुनः) टेडू
 तेल व टेडूमूल को पानी में पीसि कल्क करि चौगुना तिल तेलको मिलाय
 समान जल देय-जलजलाय उतारि सहता सहता ॥ ३८ ॥ कानमें डालनेसे त्रिदोष-
 जन्य कर्णशूल मिटै (कर्णनादपर तेल) मुलेठी, असगन्ध, पाष और धनिषां
 इनचारोंका फाय व कल्क ॥ ३९ ॥, शूकर की चरई में पचाय जब चरई
 रहिनाय तब कान में डालै तौ कर्णनाद को निकालै (कर्णनादपर अ्रेछनेल)

तम् ४० शतपुष्पाचतसैलंपक्कंशुक्तंचतुर्गुणम् । प्रणादंशू
 लवाधिर्यैस्त्रावंकर्णस्यनाशयेत् ४१ अपामार्गक्षारजलेत
 रक्षारंकलिकतंक्षिपेत् । तेनपक्कंजयेत्तैलंवाधिर्यैकर्णनादक
 म् ४२ शम्बूकरयतुमांसेनपचेत्तैलंतुसार्षषम् । तस्यपूरण
 मात्रेण कर्णनाडीप्रशाम्यति ४३ चूर्णपञ्चकषायाणांकपि
 त्थरसमेवच । कर्णस्त्रावेप्रशंसन्तिपूरणंमधुनासह ४४ ति
 न्दुकान्यभयालोध्रंसमङ्गाचामलक्यपि । ज्ञेयाःपञ्चकषाया
 स्तुक्कर्मण्यस्मिन्निषगवरैः ४५ स्वर्जिकाचूर्णसंयुक्तंबीजपूर
 रसंक्षिपेत् । कर्णस्त्रावरुजोदाहाःप्रणश्यन्तिनसंशयः ४६
 आम्रजम्ब्रप्रवालानिमधुकस्यवटस्यचाण्भिःसंसाधितंते
 लंपूतिकर्णोपशान्तिकृत् ४७ पूरणंहरितालेनगवांमूत्रयुते

सज्जी, सूरी मूली, हीम, पीपरि ॥ ४० ॥ और सौंफ ये पांचों समभाग ले
 चौगुने तिल तेलमें समान मध्यखण्डोक्त शुक्तमें पचावै जर केवल तेल रहजाय
 तत्र कान में चुबावै तौ कर्णनादशूल धधिरत्व व कान बहर इन रोगों को
 नशाता है ॥ ४१ ॥ (धधिरत्व पर अपामार्गक्षारतेल) लटजीरे की
 रास चौगुने पानी में घोलि धेगोलि रात्रिभर धर भातःनिर्मल जलले चौध्याई
 तेलदे पचाय पानी जलाय कान में डालै तौ धधिरत्व (धधिरापन) मिटै
 गुनने लगे ॥ ४२ ॥ (कर्णव्रण पर शंबूकतेल) घोंयेका मांस चौगुने तेलमें
 टालकरि पचाय ले यह तेल कान में डालै तो व्रण दूरकरै ॥ ४३ ॥ (कर्णस्त्राव
 पर औषध) पञ्चकषाय का चूर्ण, कैथरस और शहद मिलाय कान में डालै
 तौ कान बहना बन्द होजाय ॥ ४४ ॥ (पञ्चकषायवृक्ष) तेंदू, हड़, लोध,
 मँगीठ और आंवला इनपाचों में से हड व आंवलाका फल बाकीकी छाललेना
 चाहिये इस कर्म में श्रेष्ठ बैद्योंको पञ्चकषायसंज्ञक वृक्ष जानना चाहिये ॥ ४५ ॥
 (पुनःकर्णस्त्राव पर) सज्जीको निजौरा रसमें थोटा कान में डाले तो कान
 का बहना बन्द होय ॥ ४६ ॥ (पुनः) आय, जामुन, महुआ व बरगद इन
 चारों के गोंपल की लुगदी चौगुने तिल तेलमें जराय तेन कानमें डालने से
 पीन बरना बन्द होय ॥ ४७ ॥ (कर्णकीटपर तेल) हरिताल पीसि गोमूत्र

नच । अथवासार्षपंतैलंकर्णकीटहरंपरम् ४८ स्वरसंज्ञिय
मूलस्यसूर्यावर्त्तरसंतथा । त्र्यूषणंचूर्णितंचेवकपिकचू
रसंतथा । कृत्वैकत्रक्षिपेत्कर्णेकर्णकीटहरम्परम् ४९ स
द्योमद्योनिहन्त्याशुकर्णकीटंसुदारुणम् । सद्योहिङ्गुनिह
न्त्याशुकर्णकीटंसुदारुणम् ५० इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तर
खण्डेलेपादिकर्णपूरणविधिरेकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

शोणितंस्त्रावयेज्जन्तोरामयंप्रसमीक्ष्यच । प्रस्थंप्र
स्थाद्द्वकंचापिप्रस्थाद्द्वार्द्धमथापिवा १ शरत्कालेस्वभावे
नकुर्याद्रक्तस्रुतिनरः । त्वग्दोषग्रन्थिशोथाद्यानस्यूरक्तस्रु
तेर्यतः २ मधुरंरक्तोवर्णमशीतोष्णंतथागुरु । शोणितं
स्निग्धविस्रंस्याद्विदाहश्चास्यपित्तवत् ३ विस्रताद्रवता
रागश्चलनंविलयस्तथा । भूम्यादिपञ्चभूतानामेतेरक्तगु
णाःस्मृताः४रक्तेदुष्टेवेदनास्यात्पाकोदाहश्चजायते । रक्त

वा कडुवे तेलमें मिलावे तो कर्णजन्तु दूरहोय ॥ ४८॥ (पुनः) सहिजन मूल
का रस, सूर्यमुलीका रस, सोंठ, मिर्च व पीपरिको पीसि वन क्यमाच की जड़
का रस ये सब मिलाय पेटि कानमें छोड़ै तौ कर्णकीट मरै ॥ ४९ ॥ हींग और
शराय इन दोनों में से किसी वस्तुको कान में डाले तो शीघ्रही कर्णकीट को
बिनाशताहै ॥ ५० ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरेउत्तरखण्डेएकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

(अथ रुधिरमोक्षणप्रयत्न) मनुष्य के शरीर में रक्तमन्थविकार से कु-
ष्ठादि रोग जानि रुधिर निकलाने का प्रमाण कहे हैं, प्रस्थमर वा अर्द्धप्रस्थच
चौध्याई प्रस्थ कहे कुड़व भर ॥ १ ॥ (रुधिरमोक्षणकाल) देह से रुधिर
निकलाने से त्वचापर के रोग, फोड़ा, फुंसी व शोधादिक रोग दूर होतेहैं इन
कारण शब्द काल में मनुष्य को रुधिर निकलाना उचित है ॥ २ ॥ (रुधिर
गुण) रुधिर मजुर है लाल व कुड गरम, गरुआ, चिकना, विसर्पिद्य गन्धी,
पित्त समान उष्णलोहू का रूप गुण है ॥ ३ ॥ और रक्त पञ्चतन्त्रमय है नि
सायैधी गंध पृथ्वीगुण, नीलापन जलगुण, उष्णस्पर्श अग्निगुण, चलना वायु-
गुण, नीला होना और श्यामता लाना आकाशका गुण है ॥४ ॥ (रुधिर दुष्ट

मण्डलताकण्डूः शोथश्चपिटिकोद्गमः ५ वृद्धेरक्ताङ्गनेत्रत्वं
 शिराणांपूरणंतथा । गात्राणांगौरवंनिद्रामदोदाहश्चजाय
 तेदक्षिणेऽम्लमधुराकांक्षीमूर्च्छाचत्वचिरुक्षता । शैथिल्यं
 चशिराणाम्याद्वातादुन्मार्गगामिता ७ अरुणंफेनिलंरुक्ल
 म्परुषंतनुशीघ्रगम् । अस्कन्दिस्सूचिनिस्तोदंरक्तंस्याद्वात
 दूषितमूर्च्छापित्तनपीतंहरितंनोलंकृष्णंचविलम् । अस्क
 न्द्युष्णंमक्षिकाणापिपीलीनामनिष्टकम् ९ शीतलचवहुलं
 स्निग्धंगौरिजोदकसन्निभम् । मांसपेशीप्रभंस्कन्दिमन्दगं
 कफदूषितम् १० द्विदोषदुष्टंमंसृष्टंत्रिदुष्टंपूतिगन्धकम् । स
 र्वलक्षणमंयुक्तंकाञ्जिकाभंचजायते ११ विपदुष्टंभवेच्छया
 ननासिफेन्मार्गगतथा । विस्त्रंकाञ्जिकसंकाशंसर्वदुष्टकरं
 ज्ञानेके लक्षण) रधिर गुष्ठभये देह में पीड़ा, मण, दाह, रक्तमण्डल, त्राज,
 शोथ व देह पाकसा दर्द होता है ॥ ५ ॥ (रक्त वद्धने का लक्षण) रधिर बड़े
 सौ श्रेष्ठ वनेत्र लाल रंग और नसें रक्तयुरित होकर पूरा जाती है वेद गरु रहती है
 नंद विशेष, मद् व दाहये उपद्रव होते हैं ॥ ६ ॥ (जोषरक्तलक्षण) जिसके
 रधिर शरीरप्रमाण से घटनाता है उसकी रधि सदैव मीठेपर अधिक रहती
 है और मूर्च्छा, त्रया रूयी, शिथिल शरीर और प्रायु ऊर्ध्वगामी होजाता है ऐसे
 लक्षण जानो ॥ ७ ॥ (वायु वरिष्ठ रक्त उपग्र लक्षण) वायु कुपित रधिर
 न्याल रग, पेनसरित हो, रुपा, कर्कर, हलका, शीघ्रगामी, पतला व दहमें सुई
 समान कोंचल है ॥ ८ ॥ (पित्तकरि दुष्ट रधिर लक्षण) पित्त कुपित र
 धिर—नीला, हरित, नीला व काला, पके आमकी म चवाला व तत्रा शेर चिंटी
 वाली न हार्थ ॥ ९ ॥ (कफकरि दुष्ट रधिर लक्षण) कफ कुपित रक्तका स्पर्श
 उबडा, चिकना, गेरुका रङ्ग मांस व कुत्ती मिथिल व गादा हेकर स्थिर होता
 है ॥ १० ॥ (दो वा तीन दोष कुपित रधिर लक्षण) दो दोषकरि दू
 पित्त लोहमें दो दोषक लक्षण पाये जाते हैं त्रिदोषदूषित में पीयकी गन्ध होती
 है और रास लक्षण त्रिदोषके पाये जाते हैं और कानी सदृश रग होता है ॥
 ११ ॥ (अग्निदुष्ट रक्तलक्षण) नाकारग रक्त उपरचद् के नाककी रास
 पीय है आमकी सी रास (गन्ध) होती है व कानी सदृश रास भागुष्यों फो

हृत् । इन्द्रगोपप्रभंज्ञेयंप्रकृतिस्थमसंहतम् १२ शोथेदाहे
 लूपाकेचरक्तवर्णसूजःसूतो । वातरक्तेतथाकुष्ठेसपीडेदुर्ज
 येनिले १३ पाणिरोगेश्लीपदेचविषदुष्टेचशोणिते । ग्रन्थ्य
 बुदापचीक्षुद्रोगरक्ताधिमन्धिषु १४ विदारीस्तनरोगेषु
 गात्राणांसादगौरवे । रक्ताभिष्यन्दतन्द्रायांपतिघ्राणास्य
 देहके १५ यकृत्प्लीहविसर्पेषुविद्रधौपिटिकोद्गमे । कर्णौष्ठ
 घ्राणवक्त्राणांपाकेदाहेशिरोरुजि १६ उपदंशेरक्तपित्तेरक्त
 स्त्रावःप्रशस्यते । एषुरोगेषुशृङ्गैर्वाजलौकालावुकैरपि १७
 अथवापिशिरामोक्षैःकुर्याद्रक्तसूतिंनरः । नकुर्वीतशिरामो
 क्षंकृशस्यातिव्यवायिनः १७ क्लीवस्यभीरोर्गर्भिण्याःसूति
 कापाण्डुरोगिणाम् । पञ्चकर्मविशुद्धस्यपीतस्नेहस्यचा
 र्शसाम् १९ सर्वाङ्गशोथयुक्तानामुदरश्वासकासिनाम् ।
 छर्द्यतीसारयुक्तानामतिस्त्रिन्नतनोरपि २० ऊनषोडशव
 र्धस्यगतसप्ततिकस्यच । आघातसूतिरक्तस्यशिरामो

बहुत दुष्ट करता है (शुद्धरक्तलक्षण) शुद्धरक्त धीरवृद्धी के रंगवाला हो
 कर पतला होताहै स्पर्श में उष्ण व शीघ्रचारी कहाताहै ॥ १२ ॥ (रक्तमो
 क्षणयोग्य) शोधमें ढाहमें अंगपाक में रक्तवर्ण अंग में नाक से बहने में
 वातरक्त, कुष्ठ, कष्टसाध्य पीड़ा वातसंयुक्त में ॥ १३ ॥ हायरोग में पीलपाठ-
 वा विपकरि गिरे रक्तमें ग्रंथि, अर्धुद, अपची, क्षुद्ररोग, रक्ताधिमन्थ ॥ १४ ॥
 विदारी, क्षुचरोग, देहजकडना, रक्ताभिष्यन्द, तन्द्रा, दुर्गंध ॥ १५ ॥ यकृत्, प्लीह,
 विसर्प, विद्रधि, पिटिका, कान, ओठ, नाक व मुस पकने में ढाह, माथे की पीड़ा ॥
 १६ ॥ उपदंश व रक्तपित्त इनरोगों में रुधिर निकलाना उचित है (रक्तमो-
 क्षणप्रकार) सिंगी, जोंक, तौथी और फस्त इन चारों से रक्त निकलाने ॥
 १७ ॥ वा शिरामोक्षों से मनुष्य रक्तनिकलाने (शिराच्छेदनअयोग्य) दुर्बल,
 विपथी ॥ १८ ॥ नपुंसक, भीत (डरपोक), गर्भिणी, मोदवाली, पांडुरोगी,
 वमनादिपंचकर्मकृती, स्नेहादिकर्मकृती, अर्शरोगी ॥ १९ ॥ सर्वांगभोग्ययुक्त,
 उदर, दवांस, रुस, उगरी, अतीसारी और अतिस्त्रेदी ॥ २० ॥ व सोलहकेभीतर

क्षोनशस्यते २१ एषांचात्ययिकेयोगेजलौकाभिस्तुनिर्ह
 रेत् । तथापित्रिषयुक्कानांशिरामोक्षोपिशस्यते २२ गोशृ
 ङ्गेणजलौकाभिरलावुभिरपित्रिधा । वातपि कफैर्दुष्टंशो
 णितंस्त्रावयेद्बुधः २३ द्विदोषाभ्यांतुसंसृष्टंत्रिदोषैरपिदूषि
 तम् । शोणितंस्त्रावयेद्युक्त्याशिरामोक्षैः पदेस्तथा २४
 गृह्णातिशोणितंशृङ्गं दशाङ्गुलमितं वलात् । जलौकाहस्त
 मात्रं चतुर्भुजं च द्वादशाङ्गुलम् २५ पदमङ्गुलमात्रेणशि
 रासर्वाङ्गशोधिनी । शीतेनिरन्नेमूर्च्छातितन्द्राभीतिमदश्र
 मैः २६ युतानांनस्रवेद्रक्तं तथाविष्णुमूत्रसङ्घिनाम् । अत्र
 तिनिरक्तेचकुष्ठचित्रकसैन्धवैः २७ मर्दयेद्द्रवणवक्त्रं च तेन
 सम्यक्प्रवर्तते । तस्मान्नशीतेनात्युष्णेनस्विन्नेनातिता
 पिते २८ पीत्वायवागूत्तस्यशोणितंस्त्रावयेद्बुधः ।

तथा सत्तर के ऊपर श्वस्य (उमर) वाले को अकस्मात् नाकसे रक्तगिरे तो
 ऐसे मनुष्य श्वस्यके वदाचित्र फोड़ा फुंसी हो तो जोक लगाने ऐसे रोगियोंका
 विपाद संयोग से रक्त अतिदुष्ट हो तो शिरामोक्षण करे २१ । २२ ॥ (दोषा-
 दिकमें रक्तनिकालनेकाविधान) वायु दूषित स्वतः सिंगीसे लेय, पित्तदूषित
 जोक से लेय, कफदूषित तौबीसे लेय ॥ २३ ॥ दो वा तीन दोषों से दूषित दुष्ट
 रुधिर शिरावेदन करि लेय ॥ २४ ॥ (सिंगी आदिसे रुधिर खिंचने का
 प्रमाण) सिंगी, जिस और लता है उसके बसोंओर दूरअंगुलताईका रक्त खिंचती
 है जोक हाथभरताई तौबी चारह अंगुलताई ॥ २५ ॥ सूक्ष्मशिरा अंगुलभरकी
 और मोठी शिरा जो सब नसोंको रक्तदेय वह सब शरीरके रुधिरको शुद्ध करती
 है (रुधिरमोक्षणअर्थात्) शीतकाल में उपास में तंद्रा में मदमें व परिश्रम
 में ॥ २६ ॥ तथा गलभूननिरोधमें ऐसे मनुष्यके शरीरसे रुधिर नहीं निकलता
 (शिरारक्त न देनेका यत्न) जो नस द्विदूकै रुधिरभनीभाति न द्रवै तो कूट,
 चीता और सैन्धव ये समान भागले पीति ॥ २७ ॥ उस छेदपर रगड़ने से
 अच्छे प्रकार रक्त देयगी (रक्तमोक्षणकाल) न जाड़ाहो न गरमीहो न
 स्वेद क्रिये को न उष्णशरीरी को ॥ २८ ॥ जो रक्त निकाले तो प्रथम यवागू

अतिस्विन्नेसोष्णकालेतथैवातिशिराव्यधात् २९ अति
 प्रवर्ततेरक्तत्रकुर्यात्प्रतिक्रियाम् । अतिप्रवृत्तेरक्तेचलोध्र
 सर्जरसाञ्जनैः ३० यवगोधूमचूर्णैर्वाधवधन्वनगैरिकैः ।
 सर्पनिर्मोकचूर्णैर्वाभस्मनाक्षौमवस्त्रयोः ३१ मुखत्रणस्यव
 द्वायशीतैश्चोपचरेद्द्रुणम् । विध्येदूर्ध्वशिरान्तांवादहेत्का
 रेणवाग्निना ३२ वृषांकपायःसन्धत्तेरक्तंस्कन्दयतेहिमम् ।
 वृणास्यंपाचयेत्क्षारोदाहःसङ्कोचयेच्छिराम् ३३ वामाण्ड
 शोथेदक्षस्यकरस्याङ्गुष्ठमूलजाम् । दहेच्छिरां व्यत्ययेतु
 वामाङ्गुष्ठशिरांदहेत् ३४ शिरादाहप्रभावेणशुष्कशोथः
 प्रशाम्यति । विसूच्यां पाददाहेनजायतेग्नेःप्रदीपनम् ३५
 सङ्कुचन्ति यतस्तेनरसश्लेष्मवहाःशिराः । यदाटद्विर्यकृ
 त्स्त्रीह्नोःशिशोःसञ्जायतेसृजः ३६ तदातत्स्थानदाहेनस

दे वृषकर लोह निकलावै (अतिरुधिरत्त्राव) जिते स्वेद किये वा
 ऊष्मासे स्थूल नस से ॥ २६ ॥ रक्तअधिक आचै वन्द न हो तिसके हित यत्र
 आगेवाले श्लो रुमें कहतेहैं रुधिर न धँभनेपर ॥ जो शिरामोक्षसे रक्त न बन्दहो
 तौ लोच, राल व रसांत इन तीनों का चूर्ण ॥ ३० ॥ या यव गेहूँ का चूर्ण वा
 धव, जवासा और गेरु का चूर्ण वा सर्पकी केंजुल वा रेशमी लत्ताकी भस्म इन
 में कोई ॥ ३१ ॥ फस्त के मुखपर बलकरि दायदे उसपर चन्दनादि शीतोपचार
 करै शीतल लेपकरै जो इसमें बन्द न होय तौ उसके कुञ्ज ऊपर बधिके फस्त
 दे वा अग्निसम खार उसके मुँहपर लगावै वा अग्निसे दागदे तौ बन्द होगा ॥
 ३२ ॥ इससे क्यों बन्द हो सो कहते हैं लोधादि से घाव मुख अमलाताहै
 शीतल लेप से रक्त र्थभता है चारादि से जत पचताहै जलानेसे नस का मुख
 सिकुड़ताहै ॥ ३३ ॥ (दग्धकृतरोगशांति) जिसका दहिना अण्डकोशफूलै
 उसके बायें हाथ के अंगूठे की जड़दागै जो वाम अण्डकोश फूलै तौ दहिने हाथ
 के अंगूठा की मूल दागै ॥ ३४ ॥ जो यह आरम्भ में करै तो अवश्य अच्छा
 होय और जिते शीतरस हो उसने गोड़के तलवे अत्यन्तसँके तौ रसवाहिनीव
 कफवाहिनी के मुख सिकुड़ जाते हैं व अग्निदीप्त होती है ॥ ३५ ॥ ३६ (दुष्टरक्त

डुकुचन्त्यसृजःशिराः। रक्तेदुष्टेवशिष्टेपिव्याधिर्नैवप्रकुप्य
 ति ३७ अतःस्त्रावंसावशेपरक्तेनातिकमोहितः । आन्ध्य
 माक्षेपकंतृष्णांतिमिरंशिरसोरुजम् ३८ पक्षाघातंश्वा
 सकासौहिक्कांदाहंचपाण्डुताम् । कुरुतेविस्तृतंरक्तंमरणंवा
 करोतिच ३९ देहस्योत्पत्तिरसृजादेहस्तेनैवधार्यते । वि
 नातेनचूजेज्जीवोरक्षेद्रक्तमतोबुधः ४० शीतोपचारैःकुपि
 तेस्तृणरक्तस्यमारुते । कोष्णेनसर्पिषाशोथंसर्वतःपरिषे
 चयेत् ४१ क्षीणस्यैषशशोरभ्रहरिणच्छागमांसजः । रसः
 समुचितःपानेक्षीरंवाफट्टिकाहिताः ४२ पीडाशान्तिर्लघु
 त्वंचव्याधेरुद्रेकसङ्क्षयः । मनःस्वास्थ्यंभवेच्चिह्नंसम्यग्वि
 स्त्रावितेऽमृजि ४३ व्यायाममैथुनक्रोधशीतस्नानप्रवात

अक्षेप न होनेपर (दुष्ट रुधिर का देनेमें कुछ बाकी रहिजाय तो रोग भी कोप
 न करेगा ॥ ३७ ॥ और अक्षेप होने वा ज्यादा निकलनेमें उपद्रव उत्पन्न होतेहैं
 अन्धता, आक्षेपक वायु, तृष्ण, तिमिर, माथे में पीड़ा ॥ ३८ ॥ पक्षाघात वायु,
 रवास, कास, हुचकी, जलन और पांडु ये रोग होते हैं और सब रुधिर निकल जाने
 पर मरनेका भी आश्चर्य नहीं होताहै ॥ ३९ ॥ क्योंकि रक्तसे शरीर की उत्पत्ति
 है और वही देहका आधारहै रक्त रहने से जीवत्वहै इसीकारण बुद्धिमान् वैद्य
 रुधिरकी रक्षा करतेहैं ॥ ४० ॥ (रुधिरमोक्षणपर दोषकोप) रुधिर निकले
 पर श्राव पर पिच्छकोप दीखै तौ शीतलचन्दनादि लेपकरै व वायुकोप टीपै तौ
 वा घावपर सूजन होय पीड़ा करै तौ सुरोष्ण घी लगावै तौ रोग नाश होय ॥
 ४१ ॥ (रुधिरमोक्षणपर पथ्य) जो रक्त निकालने परनिर्भल भयाहो तौ
 सरगोश, भेड़, काला हरिण वा क्षाम इनका मांस खिलावै वा गोदूधमें साठी
 के चावलकी सौर करि खिलावै वा गऊके दूधसाध भातको खिलावै ये पथ्य
 हितकारक हैं ॥ ४२ ॥ (सम्यकरक्तमोक्षणलक्षण) पीडाविगत,
 शरी हलका, रोगका नाश व प्रसन्नमन ऐसे लक्षणहैं तौ रक्तमोक्षण अच्छा
 भया ॥ ४३ ॥ (रक्तमोक्षणपरनिषेध) परिश्रम, मैथुन, क्रोध, ठंडे पानीसे
 नहाना, बाहर जाना एकवार खाना व दिन में सोना तथा जग्रावार, सदाई व

कात् । एकाशनं दिवा निद्रां क्षारास्त्रकटुभोजनम् । शोकं
 यादमजीर्णं च त्यजेदावलदर्शनात् ४४ ॥ इति श्रीशार्ङ्ग
 धरे उत्तरखण्डे रक्तमोक्षणविधिर्नाम द्वादशोऽध्यायः १२ ॥
 १, सेक आश्च्योतनं पिण्डी विडालस्तर्पणं तथा । पुटपाको
 उजनं चैभिः कल्केर्नेत्रमुपाचरेत् १ सेकस्तु सूक्ष्मधाराभिः
 सर्वस्मिन्नयने हितः । मीलिताक्षस्य मर्त्यरयप्रदेयश्चतुर
 हुलम् २ सचापि स्नेहनोवातेरक्तेपित्ते च रोपणः । लेख
 नश्च कफकार्यस्तस्य मात्राऽधुनोच्यते ३ पङ्क्वाकच्छतेः
 स्नेहनेषु चतुर्भिश्चैत्रोपणे । वाक्छतेश्च त्रिभिः कार्यः से
 को लेखनकर्मणि । कार्यरतुदिवसे सेको रात्रौ चात्ययिके गदे
 ४ एरण्डत्वक्पत्रमूलैः शृतमाजं पयोहितम् । सुखोपणं सेचनं
 नेत्रे वाताभिष्यन्दनाशनम् ५ परिपेकोहितो नेत्रेपयः को
 षणं ससैन्धवम् ॥ रजनीदारुसिद्धं वासैन्धवेन समन्वितम् ६

कडुवे पटार्योको त्यागै शोक, वकना, अजीर्ण और जिसमें जोर पड़ता देखें उस
 को न करै ॥ ४४ ॥ इति श्रीशार्ङ्गधरसुधाकरोत्तरखण्डे द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

(अथ नेत्रोपचारप्रकार) नेत्ररोगपर सात प्रकारकी औषध कहते हैं
 सेक, आश्च्योतन, पिण्डी, विडाल, तर्पण, पुटपाक और अजन ये सात प्रकार
 नेत्ररोगमें कहे हैं ॥ १ ॥ (सेकाधिधान) दूध, घृत व रस आदिक गंगीकी
 आरिं मुँदवय चार अंगुल ऊपरसे महीन धारदे औषध गिरावै इसे सेक कहते हैं ॥ २ ॥
 (सेकभेद) वातदूषित नेत्ररोग में स्नेहन सेक वेय, रक्तपित्तपर रोपण-मेक
 देय, कफदूषित में लेखन सेक देय, दूग्धतादि स्नेहन द्रव्य है, लोण, मुलेठी व
 धिफलादि ये रोपण द्रव्य है इन्हें दूधमें पीलिले सोंट, पिर्घ व पीपरि में लेखन
 द्रव्य कहाते हैं अथ आगे इनकी मात्रा कहें ॥ ३ ॥ स्नेहन सेककी मात्रा छह
 रोपण सेककी चारसौ लेखनकी तीससौ मात्रा ताईससौ सेकादिकालमें दिन
 दिनमें करै व रात्रिको तेज रोगमें करै ॥ ४ ॥ (वाताभिष्यन्दपर सेक)
 रण्डकी ज्वाल, पत्र, मूल व काय तथा वकरीका दूध सुखोपणम् मुँके वीं हान
 अभिष्यन्द तेजमेऽद्रो ॥ ५ ॥ (पुनः) अगरी वा दूध संघन दानि सुखोपण

चाताभिष्यन्दशमनंहितमारुतपर्यये । शुष्काक्षिपाकेचहि
 तभिदंसेचनकंतथा ७ शावरंमधुकंतुल्यं घृतमृष्टंसुचू
 षितम् । आगक्षीरेस्थितंसेकात्पित्तरक्ताभिघातजित् ८
 त्रिफलालोध्रयष्टीभिः शर्कराभद्रमुस्तकैः । पिष्टैःशीता
 म्बुनासेकोरक्ताभिष्यन्दनाशनः ९ लाक्षामधुकमडिजघ्ना
 लोध्रकालानुसारिवा । पुण्डरीकयुतःसेकोरक्ताभिष्यन्दना
 शनः १० श्वेतंलोध्रंघृतेमृष्टंचूणितंपटविस्तृतम् । उष्णाम्बु
 नाविमृदितंसेकाच्छूलधनमम्बके ११ अथाश्च्योतनकंका
 र्यनिशायांनकथंचन । उन्मीलितेक्षिणह्रद्वाध्येविन्दुभिर्द्वा
 ङ्गुलाद्धितम् १२ विन्दवोष्टौलेखनेपुस्नेहनेदशविन्दवः ।
 रौप्येद्वादशप्रोक्तास्तेशीतेकोष्णरूपिणः १३ उष्णेचशी
 तरूपाःस्युःसर्वत्रैवैषनिश्चयः । चातेतिकंतथास्निग्धंपित्ते

करि सेंकै वा हल्दी देवदारु व सैधवको डालि द्यगरीपयते सेंकै ॥ ६ ॥ तो अभिष्य-
 न्द, चातपर्वण व शुष्काक्षिपाक ये रोग दूरहोयें ॥ ७ ॥ (पित्तरक्त व अ-
 भिघातपर सेक) लोपव मुलेठी इन दोनोंके समानघृतमें भूजि दूधमें मिलाय
 तप्तकरि सेंकरै तौ पित्त, रक्तपिकार व अभिघातजनित दोष दूरहोयें ॥ ८ ॥
 (रक्ताभिष्यन्दपर सेक) त्रिफला, लोप, मुलेठी, शर्कर व नागर्मोथा ये
 सब समान भागले पीसि ठंडे पानीमें सेक किये से रक्त अभिष्यन्द दूरहोय ॥ ९ ॥
 (रक्ताभिष्यन्दपर) लाव, मुलेठी, मँजीठ लोप, कालासारिवा और कपल
 ये सब पीसि पानीमें सेक करै तौ नेत्रनमे रक्ताभिष्यन्द दूरहो ॥ १० ॥ (नेत्र
 शूलपर) सफेद लोपको घृतमें भूजि चूर्णकरि पोटलीमें बांधि उष्णजलमें धोरि
 धोरि आंसको पलकन पर फेरै तौ नेत्रशूल दूरहो ॥ ११ ॥ (आश्च्योतन
 विधान) आश्च्योतन कहे विंदु चुवावना आंसिलोलि दूध काथ स्वरसादि
 द्रव पदार्थ दे। आंगुलीसे धोरि आंसिमें चुवाय देय इसको "आश्च्योतन" कहते
 हैं इसको निशासमय कभी न करै ॥ १२ ॥ (लेखनादि आश्च्योतन
 में विंदु डालने का प्रमाण) लेखनकर्ष में आठ विंदु (बूंद) नेत्र में
 देय स्नेहन में दश शोण में बारह शीतकाल में सुखोष्ण ॥ १३ ॥ उष्ण

मधुरशीतलम् १४ तिकोष्णरूक्षचकफेकमादाश्च्योतनं
हितम् । आश्च्योतनानां सर्वेषां मात्रास्याद्वाक्छतंहितम्
१५ निमेषोन्मेषणंपुंसामङ्गुल्योश्श्रोटिकाथवा । गुर्वक्षरो
चारणं वावाङ्मात्रेयं स्मृता बुधैः १६ विलवादिपद्ममूलेन बृह
त्येरण्डशिग्रुभिः । काथ आश्च्योतने कोष्णो वाताभिष्यन्द
नाशनः १७ अम्बुपिष्टैर्निम्बपत्रैस्त्वचं लोधस्यं लेपयेत् । प्र
ताप्यवह्निना पिष्ट्वा तद्रसोनेत्रपूरणात् १८ वातोत्थं रक्त
पित्तोत्थं मभिष्यन्दं विनाशयेत् । त्रिफलाश्च्योतनं नेत्रे स
र्वाभिष्यन्दनाशनम् १९ स्त्रीस्तन्याश्च्योतनं नेत्रे रक्तपि
त्तानिलार्तिजित्वाश्रीरंते लघुतं वापित्रातरं करुजं जयेत् २०
पिण्डीकवलिकाप्रोक्ता वध्यत पट्टवस्त्रकैः । नेत्राभिष्यन्द
योग्यासात्रणेष्वपि निवध्यते २१ अभिष्यन्देऽधिमन्ये च
(वातादिभ्यो आश्च्योतनं योन्द) इति सू-

सज्जातेऽलेष्मसम्भवे । स्निग्धस्विन्नोत्तमाङ्गस्यशिरस्तीक्ष्णैर्विरेचयेत् २२ अधिमन्थेषसर्वेषुललाटेवेधयेच्छिराम् । अज्ञान्तेमर्वथामन्थेषु शोरोपरिदाहयेत् २३ अभिष्यन्देषुसर्वेषुधनीयात्पिण्डिकां बुधः । वाताभिष्यन्दगान्त्यर्थंस्निग्धोष्णापिण्डिकाभवेत् । एरण्डपत्रमूलत्वङ्निर्मिता वातनाशिनी २४ पित्ताभिष्यन्दनाशायधात्रीपिण्डीसुखावहा । महानिम्बफलोद्भूतापिण्डीपित्तविनाशिनी २५ शिशुपत्रकृतापिण्डीऽलेष्माभिष्यन्दनाशिनी । निम्बपत्रकृतापिण्डीऽलेष्मपित्तहराभवेत् २६ त्रिफलापिण्डिकाप्रोक्तानाशिनीऽलेष्मपित्तयोः । पिप्पलाकाञ्जिकतोयेनघृतमृष्टा चपिण्डिका २७ शोघ्नस्यहरतिक्षिप्रमभिष्यन्दमलुग्भवस्य । शुण्ठीनिम्बदलैःपिण्डीसुखोष्णास्वल्पसैन्धवैः २८ धार्वाचक्षुषिसंयोगाच्छोथकण्डूव्यथापहा । विडालंकोवहि

(नेत्राभिष्यन्दपर शिरोरेचन) जिसे कफवृत्त अभिष्यन्द व अधिमन्थहो उसके मस्तकमें तेजलगाय परीना निकलाय नासलेय यठ मस्तक शुद्ध करनकी यत्नाहै ॥ २२ ॥ (सर्वाधिनन्दपर) सर अधिमन्त्र में शिरकी फस्तले अर्शमन्थ में भीह दन्त्र कर ता प्रशाम होय ॥ २३ ॥ (अभिष्यन्दादि पर) सर्वाभिष्यन्द में वही द्रव्यया कल्क नेत्रपर यात्रे वाताभिष्यन्दमें चिकनी व जपणद्रव्यकी पिण्डी धार्य (वात च पित्ताभिष्यन्दपर) रंडके एत्र मूत्रा जालकी पीसि पिंडी करि नेत्र र गारने से वाताभिष्यन्द दूरहोय ॥ २४ ॥ आचरे की पिण्डी वाधने व पित्ताभिष्यन्द दूरहोय (पुनःपित्ताभिष्यन्दपर) दशायनके फलकी पिंडी धारि से पित्ताभिष्यन्द दूरहोय ॥ २५ ॥ (कफाभिष्यन्दपर) सहिजनके पत्तों की पिंडी धार्य कफाभिष्यन्द दूर होय (कफपित्ताभिष्यन्दपर) निरपन वा त्रिकनेकी पिंडी धार्य तो कफपित्ताभिष्यन्द दूरहोय (रक्ताभिष्यन्दपर) लोषकी काजीमें तांदि वृत्तमें भूमि पिंडीकरि करनसे ॥ २६ ॥ २७ ॥ रक्ताभिष्यन्द विनाशहोय (नेत्ररक्ष धनवाजपर) सोंड, नीयदत्र र थोड़ाता सेंधय पिलाय गुनगुनी पिंडीया ॥ २८ ॥ ती नत्ररुजा रुजनी दूहोया (विडालादि-

लेपोनेत्रपक्षमवित्रर्जितः । तन्मात्रासापरिज्ञेयामुखलेप
 विधानवत् २९ यष्टीगैरिकसिन्धूत्थदावीताक्षर्यैः संमांश
 कैः । जलपिट्टैर्बहिल्लेपः सर्वनेत्रामयापहः ३० रसाञ्जनेन
 बालेपः पथ्याविश्वदलैरपि । कुमारिकाग्निपत्रैर्वादाडिमी
 पल्लवैरपि ३१ वचाहरिद्राविश्वैर्वातथानाग्रगैरिकैः ।
 दग्ध्वापनौसैन्धवंलोध्रंमधूच्छिष्टयुतेघृते ३२ पिष्टमञ्ज
 नलेपाभ्यांसद्योनेत्ररुजापहम् । लोहस्यपात्रेसंघृष्टोरसो
 निम्बफलोद्भवः ३३ किञ्चिद्घनोबहिल्लेपोनेत्रवाधां
 व्यपोहति । संचूर्णमरिचकेशराजस्वरसंमर्दनात् ३४
 लेपनादर्मणां नाशं करोत्येपः योगराट् । स्वित्नांभिस्त्वा
 विनिष्पीड्यभिन्नामञ्जननामिकाम् ३५ शिलैलानत
 सिन्धूत्थैः सक्षौद्रैः प्रतिसारयेत् । अथतर्पणवं वच्मिनेत्र
 तृप्तिकरं परम् ३६ यद्रूपं परिशुष्कञ्चनेत्रं कुटिलमाविल

धान) आसि मूँद तले ऊपरकी पलकपर लेपकरे यकी बरायदे इसे विटाल कहें
 इगकी भाषा मुखलेप रागान जानौ ॥ २९ ॥ (सर्वाक्षिरोग पर विटाल)
 मुलेवी, गेरु, संधं, दाहल्ली व सररियां ये पांचों समान पानीमें पीसि लेपकरे
 ती सब नेत्रभिष्यन्द जायें ॥ ३० ॥ (पुनः) रसांत जत्रमें पीसि लेपकरे अथवा
 पट्ट, सौंठ धीकुवार, चीता, अनारपत्र ॥ ३१ ॥ अथवा वच, हल्ली व मोंठ या ताठ,
 गेरु ये भिन्न २ पानी में पीसि लेप कियेसे सब नेत्ररोग दूरहोयें (पुनः) संध व
 लोचको भूने मोम थीमें रगरि अंजन करि लेप भी करे ती येही नेत्ररोग अन्धे
 होयें (पुनः) नीचूरतको लोहपात्रमें रगरि ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ मादामये लेप किये से
 नेत्रवाधा हन होय (अर्धरोगपर लेप) भारेक रसमें मरिचको रगरि ॥ ३४ ॥
 लेप करे ती सब अर्धरोग नाश करे यह सभयोगा है (प्रतिसारण अंजन-
 नामिका पिष्टिकी पर) यह आंगिनी की डोरर होनी है इत अग्निदी पर
 पकरावे फेरि रंगुनी से टागि भित्तार ॥ ३५ ॥ भांशिल, इलायची, तगेर,
 संध व पीसि शुकटयें रगरि लगाने ती पिष्टिकी को दूर करे ॥ (नेत्रपर त-
 र्पण) नेत्रके मंदुष्ट करने को तरपण कहते हैं ॥ ३६ ॥ दर्शय योग्य जो नेत्र

म् । शीर्णपक्ष्मशिरोत्पातकृच्छ्रोन्मीलनसंयुतम् ३७ ति
 मिरार्जुनशुक्राद्यैरभिष्यन्दाधिमन्थकैः । शुक्राक्षिपाक
 शोथाभ्यायुक्तं वातविपर्ययैः ३८ तन्नेत्रं तर्पणैर्यज्यं नेत्रक
 र्मविशारदैः । दुर्दिनात्युष्णशीतेषु चिन्तायासभ्रमेपु
 च ३९ अशान्तोपद्रवैर्वाक्षिणतर्पणं न प्रशस्यते । वाता
 तपग्जोहीनेदेशे चोत्तानशायिनः ४० आधारीमापचर्णे
 नक्लिन्नेन परिमण्डलौ । समौदढावसम्बाधौ कर्त्तव्यौनेत्र
 कोशयोः ४१ पूरयेद्घृतमण्डेन विलीनेन सुखोदकैः ।
 अथवा शतधौतेन सर्पिषाक्षीरजेन वा ४२ निमग्नान्य
 क्षिपक्ष्माणि यावत्स्युस्तावदेव हि । परयेन्मीलितेनेत्रे त
 तउन्मीलयेच्छनैः ४३ धारयेद्दूर्तमरोगेषु वा द्वात्राणांश
 तं युधः । स्वच्छेकफेसन्धिरोगे मात्रापञ्चशतं हितम् ४४
 शुक्ले च षट्शतं कृष्णरोगे सप्तशतं मतम् । दृष्टि रोगेष्वष्ट

रुचे २ कठोरता व गुरुता युक्तहो भरित वरुनी शिर उत्पात, कृच्छ्रोन्मीलन
 कदे जल्दी पलकें लगे ॥ ३७ ॥ तिमिर, अर्जुन, कुली, अभिष्यन्द, अधिमन्थ
 शुक्राक्षिपाक, सूजन और वातसंबन्धी ध्यया ॥ ३८ ॥ ये रोग हृत्तियोप्य है
 (तर्पण यर्जित) दुर्दिनमें अति उष्णकाल में अतिशीतकाल में चिन्ता परि
 श्रम और भ्रमों में ॥ ३९ ॥ और यदि नेत्र उपद्रव शान्त न हों तो ये तर्पण
 लायक नहीं कहाते हैं (तर्पणविधान) जिस स्थानमें बपारि, गरमी व घूरि
 न जाय इनके उच्चावको ठौर रोगी उताना पाँदे ॥ ४० ॥ तत्र उतके नेत्रों के चारों
 ओर जो हड्डी है तिसपर उदृक्की पीठीले मेडवापै जैसे कटोरी दिवली होती है
 तत्र आसि मुँदवाय उसमें टिपला घी वा औषधों का मंड करि वा सुखोष्ण जल
 वा सौवारका धोया घृत वा दूधरा फेन वा नक्नीत (नथनू) इनमें से कोई
 भरे ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ कुद्द वेरमें धीरे धीरे पलक पित्तमिलाने जिसमें सूक्ष्मसी
 औषध भीतर भी जाय ॥ ४३ ॥ (तर्पणमात्रा) जो पलक वा पोटे के रोपों
 पर तर्पण हो नौ सी वाइभावा ताई औषध भरी राखें जो कफादिजन्य नेत्रमें
 कोई बग़रिहो तो पात्रमें मात्रा तर्पण औषध स्थिर रहे ॥ ४४ ॥ सफेदी के

शतमधिमन्थसहस्रकम् ४५ सहस्रं वातरोगेषु धार्यमेवं हि
 तर्पणे । स्थिन्नैनयवपिष्टेनस्नेहवीर्यैरितंततः ४६ यथा
 स्वंधुमपानेनकफमस्यविशोधयेत् । एकाहंवात्र्यहंवापि
 पञ्चाहंचेष्यतेपरम् ४७ तर्पणेतृप्तलिङ्गानिनेत्रस्येमानी
 भावयेत् । सुखस्वप्नावबोधत्वंवैशद्यं वर्णपाटवम् ४८ नि
 वृत्तिर्व्याधिशान्तिश्चक्रियालाघवमेवच । अथसाश्रुगुरु
 स्निग्धनेत्रंस्यादतितर्पितम् ४९ रूक्षमस्त्राविलंरुग्णं
 नेत्रंस्याद्धीनतर्पितम् । रूक्षस्निग्धोपचाराभ्यामेतयोः
 स्यात्प्रतिक्रिया ५० अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामिपुटपाकस्य
 साधनम् । द्वौविल्वमात्रौमांसस्यपिण्डौस्निग्धौसुपेषि
 तौ ५१ द्रव्याणां विल्वमात्रन्तुद्रवाणांकुडयोमतः । तदे
 कस्थं समा लोड्यपत्रैः सुपरिवेष्टितम् ५२ पुटपाकेन तस्य
 रोग में द्रव्यै ताई काने डेले के रोगमें सातसै ताई रहै पुतरी रोग में आठसै
 ताई अधिमन्थ ॥ ४५ ॥ वा वात रोग में हजार मात्रा ताई औषध भरे, रहै
 (तर्पण में कफाधि के उपाय) जो स्निग्ध तर्पण से कफ उत्पन्नहो तो यह
 पीसि घूपान कराय कफका शोधनकरै (तर्पणमें दिनप्रमाण) तर्पण एक
 दिन व तीन दिन व पांच दिन करै ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ (सम्यक् तर्पणलक्षण)
 तर्पण अच्छाहो तो सुखसे सोवै जागे नेत्र निर्मलहों और कांति बढ़ै ॥ ४८ ॥
 दृष्टि शुद्धहो रोग नाश पलकें इलकी ये लक्षण अच्छे तर्पण के हैं (अनि-
 तर्पणलक्षण) अतितर्पण से नेत्र पानी बहावै भारी रहै व चिर चिररै ॥
 ४९ ॥ (हीनतर्पणलक्षण) नेत्र तेज लाल पीढ़ी युक्त व रोग करारन्ति
 हो (नेत्र सूक्ष्म स्निग्ध यत्न) जो नेत्र चिकने हों तो रूक्ष उत्पन्न करै
 रुवेहों तो स्निग्ध उपायकरै ॥ ५० ॥ (पुटपाक की रीति कहने हैं) हरि-
 यादि मांस दोपल महीन करि एकपल घृतादि स्निग्ध मित्राय ॥ ५१ ॥ दूधरत्न
 सूखी औषध दूध व द्रवपदार्थ कुड़ुवभर पे सब मिलाय गेहूँ चाबि यथा कार्य
 पत्र से वेष्टितकरि ॥ ५२ ॥ काढ़ाटी माटी चट्टान हुटगक करलेय व व गोला

१ तर्पणरूप धारण को नेत्र मुँदाय ऊपरसे बानने हैं । २ इन्द्रजिह्वान्तो रसका नेत्र स-
 भाय पीयोपीच गेहूँ हैं केवळ ह्मनादी नेत्र पातक्याय ई ३

क्त्वांगृहीयात्तद्रसम्बुधः । तर्पणोक्तविधानेनयथावदुपचा
 रयेत् ५३, दृष्टिमध्येनिपेच्यःस्यान्नित्यमुत्तानशायिनः ।
 स्नेहनोलेखनश्चैवरोपणश्चेतिमात्रिधा ५४ हितःस्नि
 ग्धोतिरुक्षस्यस्निग्धस्यापिहिलेखनः । दृष्टेर्बलार्थमित
 रःपित्ताम्बुणवातनुत् ५५ सर्पिर्मांसवसामज्जामेदः
 स्वाद्दौषधैःकृतः । स्नेहनःपुटपाकश्च धार्योद्वेवाक्छते
 दृशोः ५६ जाङ्गलानांयकृन्मारौलेखनद्रव्यसंयुतैः । कृ
 णालोहरजस्ताम्रशङ्खविद्रुमसिन्धुजैः ५७ समुद्रफेनं
 कासीसस्रोतोजलधिमस्तुभिः । लेखनोवाक्छतंधार्यस्त
 स्यतावद्विधारणम् ५८ स्तन्यजाङ्गलमध्वाज्यतिक्तकद्र
 व्यपाचितः । लेखनात्त्रिगुणोधार्यः पुटपाकस्तुगोपणः
 ५९ वितरेत्तर्पणोक्तांतु क्रियांव्यापत्तिदर्शने । अथसम्प

निकालि रस निचौरि नेत्रपर भेरला वापि रसभरै ॥ ५३ ॥ (नेत्रपुटपाक
 रस धारण विधान) पुटपाक रस स्नेहन, लेखन व रोपण भेदकरि ये तीन
 प्रकारका है रोगी को उताना मुलाय नेत्र खोलिकै,भीतर डारै ॥ ५४ ॥ (स्ने-
 हादि भेद ॥ पुटपाकक्रिया) रुग्ने नेत्रर चिकना चिकनेपर रुखा पुटपाक
 करना संश्लष्टि पर रोपण पुटपाक।योग्यहै जो नेत्रमें दृष्टरोग व रक्तपित्तप्रण
 व वायु उपद्रवहो तो ज्ञानेवाले दलोक में वही द्रव्य दारेण पुटपाक करी ॥
 ५५ ॥ (स्नेहन पुटपाक) घृतमें हरिणादि माम, वसा, मज्जा, मेदा और स्वा-
 दौषध “वाकोल्यादिगणना चूर्ण” शरार एककरि पीसि गोल्याधि पुटपाक
 करि रसले नेत्रमें देय दोसै मात्रा तक राखै इसे पुटपाक कहते हैं ॥ ५६ ॥
 लेखन पुटपाक यथोचित करै मुग्धाका यहवृ-मास, लोहजून, तांग, शंख, भूंगा,
 सेंचन ॥ ५७ ॥ समुद्रफेन, कसीस, सुरमा व बकरी के दहीका पानी, पूर्वोक्त
 रीति पुटपा करस नेत्रमें सौमान्नाताई राखै यह लेखन पुटपाक कहाताहै ॥ ५८ ॥
 (रोपण पुटपाक) खीका दूध, मृगामांस, मधु, घृत व कुटकी ये सब मिलाय
 पुटपाककरि रसले अरुखों में देय यह रोपण पुटपाक है तीनसै मात्रातक राखै
 जो पुटपाक भूनाधिक होय तो नेत्र भारी रहै व निम्नोन्मत्ता दीप उत्पन्न होय

कदोपस्य प्राप्तमञ्जनमाचरेत् ६० हेमन्तेशिशिरेत्रैवं
 मध्याह्नेऽञ्जनमिष्यते । पूर्वाह्णेचापराह्णे च ग्रीष्मे शरदि
 चेष्प्यते ६१ वर्षास्वनभ्रेनात्युष्णेष्वसन्ते च सदाहितः ।
 लेखनरोपणंचैव तथास्यात्स्नेहनाञ्जनम् ६२ लेखनं
 चारतीक्ष्णाम्लरसैरञ्जनमिष्यते । कपायतीक्ष्णरसयुक्
 सस्नेहंरोपणंमतम् ६३ मधुरस्नेहसम्पन्नमञ्जनं च प्रसाद
 नम् । गुटिकारसचूर्णानित्रिविधान्यञ्जनानि च ६४ कुर्या
 च्छलाक्याङ्गुल्याहीनानि च यथोत्तरम् । श्रान्ते प्ररुदिते
 भीतेपीतमध्येन वज्ररे ६५ अजीर्णवैगघाते च नाञ्जनं संप्र
 शस्यते । हरेणुमात्रां कुर्धीतवर्तिन्तीक्ष्णाञ्जनेभिषक् ६६
 प्रमाणं मध्यमेध्यर्द्धद्विगुणं तु मृदा भवेत् । रसक्रियात्तत्तमा

तत्र पदे द्वये सदृश तर्पणक्रिया करै तो पूर्वोक्तहोय (संपक दोप अञ्जन)
 जिसकी आदिदेसे भलीभाति पकचुकीहो तो उसके नेत्रों में अञ्जन लगाना
 फिर पंचयें दिन लगावै ॥ ५६ । ६० ॥ और साधारण में हेमंत व शि
 शिरऋतु में मध्याह्न में लगावै तथा ग्रीष्म व शरद् में पहर दिन चढ़े और
 पहर दिन रहे लगावै ॥ ६१ ॥ वर्षा में घरसता न हो बदरी न हो जम्पा
 अधिक न हो तत्र लगावै वसन्त में सब समय अञ्जन लगाना हितहै (अञ्जन
 भेद) अञ्जन लेसन, रोपण और स्नेहन भेदसे तीन प्रकारकाहै ॥ ६२ ॥ सो
 तीक्ष्ण खट्टा, दो रस लेखन अञ्जन जानना कपाय कटु स्नेहन युक्त दो रस
 रोपण जानो ॥ ६३ ॥ मधुर रस स्नेह युक्त प्रसादन स्नेह जानो (अञ्जन
 प्रकार) गोली अञ्जन, रस अञ्जन, चूर्ण अञ्जन ॥ ६४ ॥ गोलीसे रसाज
 नेष्ट रसित चूर्णाञ्जन श्रेष्ठ ये एकसे एक उत्तमहैं सो सलाई व अट्टली से लगावे
 (अञ्जन अयोग्य) यकित, रोनेवाला, भयभीत, मद्यपिये, नवीनञ्चरी ॥ ६५ ॥
 अजीर्णों व मूत्रादिरोगी रूहे अञ्जन अयोग्यहै (तीक्ष्णाञ्जन की चर्ती)
 भोजनीजीव सम मोटी चर्ताहै ॥ ६६ ॥ मध्यम में देह बीज सम मृदु में दो बीज
 सम गीले अञ्जन में मीन तीन विडंगसम उत्तमहै दो विडंगसम मध्यमहै एक
 विडंग समान खोटी मात्राहै (शुष्क वैरेचनाञ्जन प्रमाण) वैरेचन अञ्जन

स्यात्त्रिविडङ्गमिताहिता ६७ मध्यमाद्विविडङ्गास्याद्धीः
 नात्वेकविडङ्गा । वैरेचनिकचूर्णतुद्विशलाकंविधीयते-
 ६८ मृदौतुत्रिशलाकंस्याच्चतस्रःस्नेहिकेञ्जने । मुखयोःकु-
 ष्ठिताइलक्षणाशलाकाष्टाङ्गुलीन्मिता ६९ अश्मजाघा-
 तुजावास्यात्कलायपरिमण्डला । ताचलोहाश्मसञ्जाता-
 शलाकालेखनेमता ७० सुवर्णरजतोद्भूताशलाकास्नेहने-
 मता । अङ्गुलीचमृदुत्वेनकथितारोपणेवुधैः ७१ सायं
 प्रातश्चाञ्जनंस्यात्तत्सदानैवकारयेत् । नातिशीतोष्णवाता-
 भवेलायांसम्प्रशस्यते ७२ कृष्णभागादधःकुर्यादपाङ्ग्या-
 वदञ्जनम् । शङ्खनाभिर्विभीतस्य मञ्जापथ्यमनःशिला
 ७३ पिप्पलीमरिचकुष्ठं वचाचेतिसमांशकम् । छागीक्षीरे
 णसम्पिप्यवर्तिकुर्याद्यथोन्मिताम् ७४ हरेणुमात्रांसंघृष्य
 जलैःकुर्यादथाञ्जनम् । तिनिरंमांसवृद्धिञ्चकाचंपटलम-
 र्बुदम् ७५ रात्र्यन्धंवापिकंपुष्पवर्तिश्चन्द्रोदयाभवेत् ।

सलाई से नेत्रमें दोवार देय ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ मृदु अञ्जन का चूर्ण तीन बार फेरे
 मृतादि युक्त चूर्ण चारवार देय, वैरेचन कहे जिसके लगाने से नेत्रन से पानी
 गिरे (शलाका प्रमाण) पत्थर-वा घातु की सलाई आठ अंगुल की
 मृदंगाकार मुख दोनों तिल समान महीन अति चिकने लेखन शलाका प्रमाण
 लेखन सलाई ताबे वा लोहेकी वनावै ॥ ६८ ॥ ७० ॥ स्नेहन अञ्जनकी सोने
 वा चाटी की वनावै रोगण मृदुता से अंगुली बोरि नेत्रन में आजै ॥ ७१ ॥
 (अञ्जनसमय) अञ्जन सन्ध्या वा प्रभातकाल-करै सहज समय न करै
 न अनिश्चित न उष्ण कालमें न अतिवायु में न वदरी में अञ्जन करै ॥ ७२ ॥
 और नेत्र में काले भाग के तरे करै (चन्द्रोदयवर्ती) शूलपेंदी, बहेड़े-की
 भींगी, इड़, भैरशिन्त ॥ ७३ ॥ पीपरी, भिच, फूट और बच ये आठों समानभाग
 ले बकरी के दूध में बहुत धोष्टि यथभरि ॥ ७४ ॥ मेवड़ी बीजके समान बटी
 वनाय पानी में रगरि नेत्र में आजै जो तिमिर, मांसवृद्धि, काच बिंदु, पटलरोग,
 बर्तुः ॥ ७५ ॥ रतींधी वर्षभरकी और फुल्ली ये सब वरहोषे (श्लुकादिकपर

पलाशपुष्पस्वरसैर्वहुशःपरिभाविता ७६ करञ्जबीजव
 तिस्तुशुक्रादीञ्छस्त्रवल्लिखेत् । समुद्रफेनसिन्धूत्थशङ्ख
 शौण्ड्यण्डवल्कलैः ७७ शिशुबीजयुतैर्वर्तिःशुक्रादीञ्छस्त्र
 वल्लिखेत् । दन्तैर्दन्तवराहोष्ट्रगोहयाजखरोद्वयैः ७८ श
 ङ्खमुक्ताम्भोधिकेनयुतैःसर्वैर्विचूर्णितैः । दन्तवर्तिःकृता
 श्लक्ष्णशुक्राणांनाशिनीपरा ७९ नीलोत्पलंशिशुबीजना
 गकेसरकन्तथा । एतत्कल्कैःकृतावर्तिरतितन्द्राविनाश
 येत् ८० तिलपुष्पाण्यशीतिःस्युःषष्टिसङ्ख्याकणाभवे
 त् । जातीकुसुमपञ्चाशन्मरिचानिचषोडश ८१ सूक्ष्मपि
 ष्ट्वाम्बुनावर्तिःकृताकुसुमिकाभिधा । तिभिरार्जुनशुक्राणां
 नाशिनीमांसवृद्धिदत् ८२ एतस्याश्चाञ्जनेनात्राप्रोक्ता
 सार्धहरेणुकारसाञ्जनंहरिद्रेद्वेद्वेमालतानिम्बपल्लवाः ८३

लेखनवर्ती) डाक के फूलका रस करंज की मींगी कईवार घोटि घोटि यत्र
 स्वरूप वर्ता बनाय पानी में रगरि नेत्रमें आजै तो फुली व मासवृद्धि आदिको
 दूर करती है जैसे शस्त्र से शुद्ध होजाती है (पुनः) समुद्रफेन, संधय, शङ्ख,
 मुरगे के थापडे का झिलका ॥ ७६ । ७७ ॥ सर्हिजन के बीज ये पांचों समान
 भागले महीनकरि जलमें पीसि गोली चाय सुखाय पानीमें घिसि अञ्जनकरैतो
 शस्त्रादि का कुट्ट काम नहीं रहता (लेखनी दन्तवर्ती) हाथी, पोड़ा,
 वंराह, ऊंट, बैल, वरुआ, सर इन सातोंके ॥७८॥ दात शंख, मोती व समुद्रफेन
 इन सत्रोंका चूर्णकरि जलमें पीसि गोली चाय सुखाय पानीमें घिसि अञ्जनकरे
 सें फुली गिरिजाती है ॥७६॥ (तन्द्रानिवारण लेखनीवर्ती) नीलकमल,
 सर्हिजनबीज और नामकेसर ये तीनों सम अति महीन पानीमें पीसि गोली
 करि सुखाय पानीमें घिसि आजै तो तंद्रा दूरे ॥ ८० ॥ (रोपणीकुसुमवर्ती)
 तिलपुष्प अस्सी =० पीपरि टांजा साठि ६० चमेला पुष्प ५० मिर्च १६ इन्हें
 महीन पीसि देव भेन्डीबीज तुल्य दही बनाइये इमे कुसुमिका वर्ती कहते हैं
 इसको आजै तो तिभिर, अर्जुन, फुली व मासवृद्धि ये नत्र दूरहोयें ॥ ८१ ॥ ८२ ॥
 इसके आजैतो माता देहमेवटीबीज मग रही है (रतौपीपर वर्ती) रतौत

गोशकृद्रससंयुक्तावर्तिर्नक्तान्ध्यनाशिनी । धाञ्चक्षपथ्या
 वीजानिएकद्वित्रिगुणानि च ८४ पिण्डावर्तिऽजलैः कुर्या
 दञ्जनद्विहरेणकम् । नेत्रस्त्रावंहरत्याशुवातरक्तरुजन्त
 था ८५ तुत्यमाक्षिकसिन्धूत्थसितागङ्गमनःशिलाः । गै
 रिकोदधिकेनौचमरिचंचेतिचूर्णयेत् ८६ संयोज्यमधुना
 कुर्यादञ्जनार्थरसक्रियाम् । वर्त्मरोगार्भितिमिरकाचशुक्रा
 पहारकम् ८७ वटक्षीरेणसंयुक्तंमुख्यःकर्पूरजंरजः । क्षिप्र
 मञ्जनतोहन्तिकुसुमंचद्विमासिकम् ८८ त्रौद्राश्वत्थालासं
 घृष्टैर्मरिचैर्नेत्रमञ्जयेत् । अतिनिद्राशमंयातितमःसूर्योद
 यादिव ८९ ज्ञातीपुष्पंप्रवालंचमरिचंचकटुकीवचा । सैन्ध
 वंवस्तमूत्रेणपिष्टं तन्द्राघ्नमञ्जनम् ९० शिरीषबीजगोमूत्र
 कृष्णामरिचसैन्धवेः॥ अञ्जनंस्यात्प्रबोधायसरसोनशिला

हल्दी, दासहल्दी, चमेनी पत्र और नींबूपत्र ये पांचों समान ॥ ८३ ॥ गोबरकेपानी
 में गोली बनाय आजसे रतौंधी नाशहोयें (नेत्रस्त्राव पद स्नेह्यती) आदला
 मिंगी १ भाग बहेडा मिंगी २ भाग इड़मिगी ३ भाग ॥ ८४ ॥ जलमें महीन
 पीसि दो मेवड़ी बीजसम गोलीकरि पानीमें घिसि आजनेसे पानी वहना च वात
 रक्त जन्य पीडा मिजजातीहै ॥ ८५ ॥ (रसक्रिया) हूतिया, सोनामाखी, संधव,
 मिश्री, शरप, पैनशिन, गेरु, समुद्रकेन और मिरच ये नव सम भागले सूक्ष्म पीसि ॥
 ८६ ॥ शहद मिलाय भोली वाधि अञ्जन करेसे पलकरोग, तिभिर, अर्भ, काच-
 बिन्दु और कुली ये रोग दूरहोयें ॥ ८७ ॥ (शुक्रपर रसक्रिया) वटदुग्ध
 च गुद्धकपूर पीसि अञ्जनकरे दोमासकी कुली परी दूरहो ॥ ८८ ॥ (तन्द्रापर
 लेखनी रसक्रिया) शहद और घोंडेकी लारसे मरिच पिसके अञ्जन करेसे
 देने तन्द्रा दृष्टो जैसे सूर्यके सदयसे अन्धकार दूर होताहै ॥ ८९ ॥ (पुनरञ्जन)
 चमेनी के पुष्प मूंगा, मरिच, कुटरी, वच और संधव ये सत्र समान भागले
 द्वागके घृत्तमें गोलीवापि टागायै तो तन्द्रा निवारणहो ॥ ९० ॥ (सन्निपात
 परलेखन रसक्रिया) सिरसबीज, पीपरि, मरिच, संधव, लहसुन, मैनशिल
 और वच ये सातों समानभागले नोग्म में पीसि आजै तो सनिपात शस्त

व्रचैः ९१ दावीपटोलंमधुकंसनिम्बंपद्मकोत्पलम् । प्रपौ
ण्डरीकंथैतानिपचेत्तोयेचतुर्गुणे ९२ विपाच्यपादशेषंतु
शृनंनीत्वापुनःपचेत् । शीतेतस्मिन्मधुसितांदद्यात्पादां
शकांतरः ९३ रसक्रियैषादाहाश्रुरक्तरोगरुजंहरेत् । र
साञ्जनंसर्जरसोजानीपुष्पमनःशिला ९४ समुद्रफेनोल
वणंगैरिकंमरिचानिच । एतत्समांशंमधुनापिण्ड्वाप्रच्छिन्न
वर्त्मनि ९५ अञ्जनंछेदकण्डूघ्नम्पद्माणिचप्ररोहति । गुडू
चीस्वरसःकर्षःक्षौद्रंस्यान्माषकोन्मितम् ९६ सैन्धवक्षौद्र
तुल्यंस्यात्सर्वमेकत्रमर्दयेत् । अञ्जयेन्नयनेतेनविस्तारतिमि
रंजयेत् । काचंकण्डूलिङ्गनाशंशुककृष्णगतान्गदान् ९७
दुग्धेनकण्डूक्षौद्रेणनेत्रस्त्रावंचसर्पिषा । पुष्पंतैलेनतिमिरं
काञ्जिकेननिशान्धताम् ९८ पुनर्नवाजयेदाशुभास्करस्ति

हो ॥ ९१ ॥ (नेत्रदाहपर रसक्रिया) दाहहृदी, पटोल, मुलेठी, नीर, पयास
कमल और स्वेतकमल ये सातों समभागले कूटके चौगुने पानी में फायकरि ॥ ९२ ॥
चौध्पाई रहै तब उतारि छानै फिर औटाय गाढारोग जन सिराय तब मधु
मिथी मिलाय अंजनकरै तौ नेत्र जलना, बहना, रक्तविकार व नेत्ररोग दूरहोयै
(यरुनी रोगपर रसक्रिया) रसांत, राल, चमेली फूल, मैनाशिल ॥ ९३ ॥
९४ ॥ समुद्रफेन, संधव, गेरू और मिरच ये आठों समानभागले शहदेके अञ्जन
करै तौ पाकरोग बर्ध ॥ ९५ ॥ चिपचिपाहट और खाज ये सय दूरहों और पलक
भरना न भरै फिर जमै (तिमिररोगपर रोपणी रसक्रिया) गुर्घका
स्वरस कर्षभर मधु व संधव माशे माशे भर सब सूक्ष्म पीसि अंजन करै तौ
पिड्मार्य, तिमिर, काचकिन्दु, मुजली, लिंगनाश, सक्केद कृष्ण डेलै के सय रोग
दूरहों ॥ ९६ ॥ (अंजनांति अनोपान) जो अञ्जन करे रामहो तौ दूध
घसि लगायै तौ मुजली मिटै शहद में लगाये तो जल बचना दूरहो पृथपुक्त से
फुली दूरहो तिल युक्त लगाये से तिमिररोग दूरहो कांभी में लगाये से रतौधी
दूरहो ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ नैमे सूर्योदय से अंधकार दूरहो तीभे गदापुरना से अधि-
पान सहाय से सय नेत्र रोग दूर होतै है (नेत्रस्त्रावण रोपणी रसक्रिया)

मिरंयथा॥ब्रुवूलदलनिष्काथोलेहीभूतस्तदञ्जनात् ६६ ने
 त्रस्त्रात्रंजयत्येपःमधुयुक्तोनसंशयः । हिञ्जलस्यफलंघृष्टा
 पानीयेनित्यमञ्जनम् १०० चक्षुःस्त्रावोपशान्त्यर्थकार्यमे
 तन्महौषधम् । कतकस्यफलंघृष्ट्वा मधुनानेत्रमञ्जयेत् १३
 षत्कपूरसहितंस्मृतंनेत्रप्रसादनम् । सर्पिःक्षौद्रं चाञ्जनंस्या
 च्छिरोत्पातस्यशान्तये २ कृष्णसर्पवसाशङ्खः कतकाफल
 मञ्जनमारसक्रियेवनचिरादन्वानांदर्शनप्रियाश्चक्षुःश्ले
 त्वक्छिलाकाचैःशङ्खचन्दनगौरिकैः । द्रव्यैरञ्जनेयोगोयं
 पुष्पार्मादिविलेखनः ४ कणाच्छागयत्तन्मध्येपक्त्वात्तद्रस
 पेक्षिता॥अचिराद्वन्तिनक्तान्ध्यंतद्वत्सञ्चौद्रयुषणम् ५ शा
 णार्द्धमरिचंक्षौचपिप्पल्यर्णवफेनयोः । शणाद्धैसैन्धवंशा
 णानवसौवीरकांजनात् ६ पिष्टंसुसूक्ष्मं चित्राद्यांचूर्णांजनमि

यद्वरपत्रका ह्याय अतिगाढाभये ॥ ६६ ॥ शब्द मिलाय आंजै तौ निश्चय नेत्र
 से पानी बहना दूरहो (पुनर्नेत्रस्त्राव पर) निर्मली फल पानी में रगरि
 लगावै तौ नेत्रसे पानी बहना बन्दहोय ॥ १०० ॥ (नेत्रशुद्ध होने के अर्थ
 स्नेहनी रसक्रिया) निर्मली शब्दमें यसि किंचित् कपूर मिलाय आंजै तौ
 नेत्र अरोग होयें ॥ १ ॥ (शिरोत्पानपर रसक्रिया) घृत व शब्द मिलाय
 अंजनकरै तौ शिरोत्पातरोग दूर होयें ॥ २ ॥ (घृष्टपर रसक्रिया) काले
 सापकी चरबी, शंख और निर्मली ये सब सरलकरि आंजै तौ शीघ्रपारा दिराई
 देना दूरहोकर साफ दिराई देय ॥ ३ ॥ (लेखनचूर्ण अञ्जन) मुर्गेके अण्डे
 का बिल्ला सफेद कांच, शंख, चन्दन, गेरू व सैन्धव ये चारों समान अञ्जन
 करि आंजने से फुली मांसार्मादि नाशहो ॥ ४ ॥ (रतौषी पर चूर्ण) ह्याग
 की करेजीपर पीपरि धरि पकाय पीपरि ले उसी मांसके रसमें रगरि आंजै वा
 सौंठि, विर्य और पीपरि को शब्द में यिसि आंजै तौ रतौषी न रहै ॥ ५ ॥
 (फंहआदि पर) मरिच अर्द्धशाण, पीपरि व समुद्रफेन दोदो शाय सुरमा
 चत्र शाण ॥ ६ ॥ ये सब द्रव्य चित्रा नक्षत्रमें ले महीन सुरमा घनाय नेत्रों में
 अजने से भाग्य खजुआना, कानाविन्दु, कफत्रय पीडा व गल इनमें नेत्रको

दंशुभमाकण्डूकाचकफार्तानांमलानांच्चविशोधनम् ७ शि
 लायारसकंपिष्टासम्यगाह्लाव्यवारिणा । गृह्णीयात्तज्जलंस
 र्वेत्यजेच्चूर्णमधोगतम् ८ शुष्कंचतज्जलंसर्वपर्पटीसन्निभं
 भवेत् । विचूर्ण्यभात्रयेत्सम्यक्त्रिवेलंत्रिफलारसैः ९ कर्पूर
 स्वरजस्तत्रदशमांशेननिक्षिपेत् । अजयेन्नयनेतेनसर्वदौ
 षहरंहितम् १० सर्वरोगहरंचूर्णचक्षुषोःसुखकारिच । अ-
 ग्नितप्तंचसौवीरंनिषिञ्चेत्त्रिफलारसैः ११ सप्तवेलंतथा
 स्तन्यैः स्त्रीणांसिक्लविचूर्णितम् । अजयेन्नयनेतेनप्रत्यहं
 चक्षुषोर्हितम् १२ सर्वानक्षिविकारांस्तुह्न्यादेतन्नसंशयः ।
 गतदोषमपेताश्रुसंपश्येत्सम्यगाशुतम् १३ त्रिफलाभृङ्ग
 शुण्ठीनारसैस्तद्वच्चसर्पिषा । गोमूत्रमध्वजाक्षीरैःसिक्तोना
 गःप्रतापितः १४ तच्छलाकाहरत्येवसर्वाश्रेत्रभवान्गदा
 न् । गतदोषमपेताश्रुसंपश्यन्सम्यगम्भसि १५ प्रक्षाल्या
 क्षियथादोषंकार्यप्रत्यञ्जनंततः । नवानिर्गतदोषेक्षिण्वा

शुद्ध करे ॥ ७ ॥ (सर्व नेत्ररोगपर स्रुचूर्णांजन) खपरियाले अति
 महीन खरलकरि वासन में पानी भरि घोलि थैरोइले पानी निकारि पात्रमें भरि
 धांच में जरायकै खुरचि लेय सो खरल में ढारि त्रिफलाकापकी तीनभागना
 देय ॥ ८ ॥ तत्र उसका दशवा अंश कपूर भिलाय फिर घोटै सो नेत्र में
 ध्राजे से सत्र रोग दूरहों ॥ १० ॥ नेत्र सुत पावै (सर्वाक्षिरोगपर सौवीर
 अंजन) सुरमा सातवार खरल करि करि तपाय त्रिफलाकाय में बुझाय ॥
 ११ ॥ चैसेही सातवार स्त्री के दूध में बुझाय अतिमहीन पिसाय नेत्रांजन
 करेसे सत्र नेत्ररोग दूरहोय यह नेत्रनको निःसंदेह हितकारकहै ॥ १२ ॥ १३ ॥
 (सीसशलाका विधान) त्रिफलाकाय, भंगरारस व सौंठिकाय इनकी
 पुट दिया सीसा गलाय गलाय धी, गोमूत्र, शहद, जगरीदूध सवनमें सातसात
 वार बुझाय ॥ १४ ॥ शलाई बनाय नेत्रमें फेरसे सत्ररोग दूरहों इसलिये धोर
 अंजनादि भी इससे लगाना भला है ॥ १५ ॥ (प्रत्यंजनविधि) जन, सीस-
 शलाका फेरने से टोप दूरहोके नेत्रसे आंमू गिरते हैं तिसके पीछे शीतल बदे

वनसम्प्रयोजयेत् १६ प्रत्यञ्जनंतीक्ष्णतप्तेनेत्रेचूर्णः प्रसा-
दनः । शुद्धेनागेद्रुतेतुल्यं शुद्धं सूतं विनिक्षिपेत् १७ कृष्णा
ञ्जनंतयोस्तुल्यं सर्वमेकत्र चूर्णयेत् । दशमांशेन कर्पूरं तस्मिन्
श्चूर्णैः प्रदापयेत् १८ एतत्प्रत्यञ्जनेनेत्रगदजिन्नयनासृ-
तम् । जंयपालस्य मञ्जानं भावयेद्विम्बुकद्रवैः १९ एक
विंशतिवेलंतत्ततो घृतिं प्रकल्पयेत् । मनुष्यलालया घृष्ट्वा त-
तोनेत्रे तथाञ्जयेत् २० सर्पदंष्ट्रविषं जित्वा सञ्जीवयति मान-
वम् । भुक्त्वा पाणितलं घृष्ट्वा चक्षुषोर्यदि दीयते । जातरोगा वि-
नश्यन्ति तितिभिराणितथैव च २१ शीताम्बुपूरितमुखः प्रति
वासरं यः कालत्रयेण नयनं द्विनयं जलेन । आसिञ्चति ध्रुवम-
सौनकदाचिदक्षिरो गव्यथा विधुरतां भजते मनुष्यः २२ आ-
युर्वेदसमुद्रस्य गूढार्थमणिसञ्चयम् । ज्ञात्वा कौरिचद्रुधै-

पात्रमें जलभरि शिरवोरि उस पानी में आंखि सोलि देखे फिर नेत्रधोय प्रत्यं-
जन लगावै सो आगे कहेंगे ॥ १६ ॥ (सदोपनेत्रपर निषेध) जिस नेत्रमें
दोपकी है सो नेत्र धुवावै क्योंकि तीक्ष्णअंजन कर नेत्र सन्तप्तहो तिससे प्रत्यं-
जन प्रसाधनकरै सो कहते हैं (प्रत्यञ्जन चूर्ण) शुद्ध सीसागलाय समभाग
शुद्ध पारादे ॥ १७ ॥ तब दो भाग सुरमादे उतारिले सब खरलकरि दशवां
अंश कपूर दे फिर जेटै ॥ १८ ॥ इसे मर्त्यजन बहते हैं इससे सम्पूर्ण नेत्ररोग
नाश होते हैं और यह आंखिको धमृत है (सर्पविषनिवारण अञ्जन)
भीतररा शंखुर दूर किया जमालगोटा नीरूरस में इकीस पुटदे घोटि गोली
यनाय मनुष्यको लारसे जिस सर्प बसे की आंखिमें धराजै ॥ १९ ॥ २० ॥ तौ
विष शान्तहो मनुष्य जिये भोजन करके हाथ में घसै और नेत्रों में लगावै तो
नेत्रों के तिमिरादि रोग नाश होयें ॥ २१ ॥ (क्षीतलजल प्रकार) जो
मनुष्य नित्यप्रति भीन बेला शीतल जल से गुल्ले कियाकरै व सुप्त घोषा करै
और नेत्रों को छीटेदेकै सोंचारै ना पात्रमें भरि नेत्र उन्मीलन किया करै उस
मनुष्य को नेत्रचापा कभी न होय ॥ २२ ॥ (अध ग्रन्थप्रशंसा) आयुर्वे-
दसमुद्र के विषय गूढार्थरूपी मणि संचित है तिनको अरिचनीफुमार व अग्नि-

स्तैस्तुकृताविविधसंहिताः २३ किञ्चिदर्थततोनीत्वाकृते
 यंसंहितामया । कृपाकटाक्षविक्षेपमस्यांकुर्वन्तुसाधवः
 २४ विविधगंदार्तिदरिद्रनाशनंयाहरिरमणीवकरोतियो
 गरत्नैः । विलसतुशार्ङ्गधरस्यसंहितासाकविहृदयेषुसरो
 जनिर्मलेषु २५ अल्पायुषामल्पधियामिदानींकृतंसमस्तं
 श्रुतिपाठशक्ति । तदत्रयुक्तम्प्रतिबीजमात्रमभ्यस्यतामा
 त्महितंप्रयत्नात् २६ इति त्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥ इति
 तृतीयःखण्डः ॥

वेशादिक मुनियोंने सम्यक्प्रकार स्वसंहिता शुद्धकरि राखा ॥ २३ ॥ किञ्चिन्
 सारांश ले शार्ङ्गधर ने सञ्चय करी इसे साधुजन कृपाकरि देंतें ॥ २४ ॥ (अ-
 न्यपाठफलम्) जिन वैद्य कविके निर्मल हृदयकमल में कायादि योगरत्न
 विलास करें ते शार्ङ्गधरसंहिता लक्ष्मी इव धारण करें हैं वैसे लक्ष्मी हैं कि रोग-
 ग्रसित दरिद्रनके दरिद्रकी नाश करती है ॥ २५ ॥ इस कलियुगने मनुष्यों की
 आयु और बुद्धिको अल्प करदिया इस कारण आयुर्वेद पढ़ने की शक्ति नहीं
 इससे आत्मरक्षणार्थ इस आयुर्वेद बीजमात्र में अभ्यास करें ॥ २६ ॥

इति श्रीशार्ङ्गधरमुयाकरेउत्तरखण्डेजयपालकृतेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

इति शार्ङ्गधरस्पृतीपरखण्डस्तमाप्तः ॥

(समाप्तोयंग्रन्थः)

२०२५५